CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5265

नित्य पूजन पाठ संग्रह

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रकाशक

श्रीमती दानशीला सेठानी चन्दाबाई सा. सेठी

आनन्द भवन, तुकोगंज

इन्दौर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

卐 श्री वीतरागाय नमः 卐

ॐ

5265

श्री दिगम्बर जैन

नित्य पूजन पाठ संग्रह

सम्पादक :

जयसेन जैन

एम. ए., बी. एड., साहित्य रत्न

प्रकाशक :

श्रीमती दानशीला सेठानी चन्दाबाई सा. सेठी

आनन्द भवन, तुकोगंज

इन्दौर

की ओर से

श्री भगवान महावीर के २५००वें निर्वाण महोत्सव

के

पुनीत अवसर पर

सस्नेह भेंट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमती श्रध्देया दानशीला सेठानी चंदाबाईजी सा. का

(आनंद भवन वाले मा. साहब का)

संक्षिप्त परिचय

श्रीमती श्रध्देया धर्मज्ञा, आर्जवादि गुणमंडिता मा. सा का जीवन सदैव से ही स्व-पर का उपकारी रहा है। आप वर्षों से श्राविका के १२ व्रतों का दृढ़ श्रद्धा के साथ पालन कर रही हैं। जीवन का बहुभाग श्रावक के दैनिक षट् आवश्यक कर्त्तव्यों के पालन में ही व्यतीत होता आ रहा है। १ देवपूजा, २ गुरुपास्ति, ३ स्वाध्याय ४ संयम ५ तप और ६ दान ये ही आपके मुख्य-कर्त्तव्य है। आपकी पवित्र भावनानुसार श्री दि. जैन उदासीन श्राविकाश्रम तुकोगंज इन्दौर प्रारम्भ से ही उन्नत होता आ रहा है, और वर्तमान में भी आप ही के अधिष्ठातृत्वपने में फल फूल रहा है, जिसमें श्राविका बहिनों को धर्माराधन के सर्व साधन उपलब्ध हैं। आप श्री अपने धार्मिक विशाल कुटुम्ब में सबसे वयोवृद्ध हैं और सर्व ही परिवार धार्मिक कर्त्तव्यों में आगे बढ़े यही आपकी शुभ भावना सदैव रहा करती है। आपका दीर्घ जीवन अनेकानेक धार्मिक प्रभावना के महोत्सवों से संयुक्त है ऐसा कोई भी धार्मिक अनुष्ठान नहीं होगा जो आपके द्वारा सुसम्पन्न न हुआ हो, अस्तु आप चिरजीवी हो। आत्मानुभव को प्राप्त कर परम सुखी हो।

आपका कृतज्ञ
पं. रतनलाल जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राक्कथन

परमात्मपद की प्राप्ति के लिए वीतराग और सर्वज्ञ की प्रतिमा का दर्शन, पूजन और स्मरण आवश्यक है। यह हमारी भावना को शुद्ध करने का साधन है। इससे अशुभ कर्म छूटकर शुभ कर्मों का बल बढ़ता है। आत्मा के परिणाम निर्मल करने का यह सहज मार्ग है। वीतराग प्रतिमा के द्वारा हम वीतराग प्रभु की आराधना करते हैं। उनसे शांति एवं सन्तोष आदि गुणों की अभिलाषा की जा सकती है, पर धन आदि सांसारिक कामनाओं की इच्छा करना भूल है। किसान का लक्ष्य अन्न प्राप्ति के लिए खेती करना है। उसे गेहूँ आदि के साथ भूसा प्राप्त हो ही जाता है उसी प्रकार भक्त को परमात्म दशा की प्राप्ति के लक्ष्य रखते हुए धर्मानुराग से अभ्युदय पद स्वयमेव मिल जाते हैं अतः प्रतिमा पूजा का लक्ष्य आत्मगुणों के विकास का ही रहना चाहिए।

गृहस्थ के देवपूजा, गुरूपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान इन षट् आवश्यक कर्मों में भी पूजा और दान प्रमुख हैं।

'रयणसार' में आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने गृहस्थ और मुनिधर्म के मुख्य कर्तव्यों में बताया है: —

दाणं पूजा मुक्खं सावयधम्मे ण सावया तेण विणा।
झाणाज्झयणं मुक्खं जइधम्मे ण तं विणा सोवि ।।११।।

गृहस्थधर्म में दान व पूजा ही मुख्य है उनके बिना श्रावक नहीं होता। मुनि मार्ग में ध्यान और अध्ययन (स्वाध्याय) मुख्य है।

पूजा भक्ति गुणानुराग को कहते हैं। जिन प्रतिमा में आत्मा के निर्विकार शुद्ध स्वरूप को देखता हुआ सम्यग्दृष्टि अपने स्वरूप को वैसा ही बनाने की ओर प्रयत्नशील रहता है उसके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचरण में प्रवृत्ति और निवृत्ति रूप दोनों अंश दिखलाई पड़ते हैं उसकी पूजा भक्ति विलक्षणता को लिये हुए होती है जिसमें प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों धारायें अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों के फल को प्राप्त कराने में कारण होती है अर्थात् वह परिणति संवर, निर्जरा और सातिशय पुण्य का कारण होती है। वास्तव में भगवान की भक्ति से भक्त भगवान बन जाता है।

प्रस्तुत नित्य पूजन पाठ संग्रह में अभिषेक, संस्कृत हिंदी नित्य एवं नैमित्तिक पूजायें, आवश्यक स्तोत्र, पाठ, स्तुति, भजन आदि संग्रहीत हैं। साथ ही हिंदी सामायिक पाठ, सूतक, सम्मेद शिखर विधान, समाधिमरण, छहढाला आदि भी दे दिये गये हैं इस प्रकार यह संग्रह उपयोगी बन गया है। हमें नित्य नैमितिक पूजाओं में पहले से चली आ रही अशुद्धियां खटकती हैं, पर कोई उन पर ध्यान नहीं देते। यदि पूजायें अर्थ पर विचार करते हुए ध्यान पूर्वक की जावें तो ये त्रुटियां दूर हो सकती हैं।

हमारा इस प्रसंग पर यही नम्र सुझाव है कि अभिषेक मंगल बोलकर नहीं किया जावे क्योंकि हम वीतराग अर्हंत परमेष्ठी की प्रतिमा का अभिषेक करते हैं न कि जन्म कल्याणक की प्रतिमा का। इस ग्रंथ में संस्कृत अभिषेक पाठ इसी हेतु दिया गया है। अभिषेक जल को सिर व आंखों में लगाकर किसी उच्च स्थान में क्षेपण करना चाहिए। अभिषेक जल को पीना व जलाशय में क्षेपण उचित नहीं।

आशा है आत्महित के अभिलाषी बंधु इस सुन्दर संकलन का अपनी दैनिक आराधना में उपयोग कर भेंटकर्त्ता के द्रव्य का सदुपयोग करेंगे।

नाथूलाल शास्त्री, इन्दौर

卐

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

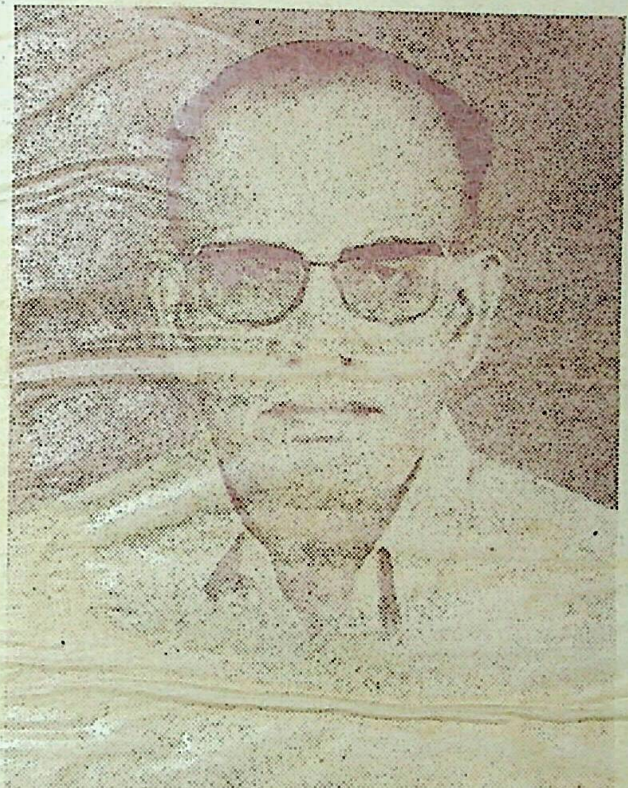

स्व० श्रीमान् बाबूलालजी सा. सेठी

आनन्द भवन, तुकोगंज इन्दौर

की पावन स्मृति में

समर्पित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय-सूची

दर्शन प्रकरण

	पृष्ठ संख्या
अनादि निधन णमोकार मन्त्र	१
सामायिक पाठभाषा	२
आलोचना	९
जिनेन्द्र पञ्चकल्याणक	१३
मंगलाष्टक (संस्कृत)	१७

पूजन प्रकरण

अभिषेक पाठः	१९
लघु शान्तिधारा मन्त्र	२४
विनयपाठ दोहावली	२८
श्री देवशास्त्र गुरुपूजा (संस्कृत)	३१
" " " (भाषा)	४३
श्री तीस चौबीसीजी की पूजा	४८
श्री बीस तीर्थंकर पूजा (भाषा)	५६
" अकृत्रिम चैत्यालय पूजन	६०
" अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ	६७
" सिद्ध पूजा (संस्कृत)	७०
" सिद्ध पूजा का भावाष्टक	७५
" समुच्चय चौबीसी पूजा	७९
" सप्तऋषि पूजा	८३
" चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाणक्षेत्र पूजा	८७
" पञ्चमेरु पूजा(पर्व पूजा)	९१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	पृष्ठ संख्या
श्री नन्दीश्वर द्वीप पूजा (अष्टाह्निका पर्व पूजा)	९३
" सोलहकारण पूजा (पर्व पूजा)	९६
" दशलक्षण धर्म पूजा (पर्यूषण पर्व पूजा)	९९
" रत्नत्रय पूजा (पर्व पूजा)	१०६
रत्नत्रय पूजा	११४
संयुक्त भाषा पूजा	१२१
देव शास्त्र गुरु पूजन	१२४
सिद्ध चक्र पूजा	१२९
श्री बीस विरहमाण पूजन	१४०
" आदिनाथ जिन पूजा	१४४
" चन्द्र प्रभ जिन पूजा	१५०
" शीतलनाथ जिन पूजा	१५७
" अनन्तनाथ " "	१६३
" शान्तिनाथ " "	१६८
" मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजा	१७४
" नेमिनाथ जिन पूजा	१८०
" पार्श्वनाथ " "	१८५
" वर्द्धमान " "	१९१
अनन्तव्रत पूजा	१९४
सरस्वती "	१९८
बाहुबली की पूजा	२०१
अनादि सिद्ध यन्त्र पूजा	२०५
प्रत्येक पूजनम्	२०७
पुण्याह वाचनम्	२१२
कूटों के दर्शन करने का फल बोधक कोष्ठ	२१६
श्री सम्मेद शिखर माहात्म्य विधान	२२१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	पृष्ठ संख्या
अथ समुच्चय पूजा	२४०
श्री रक्षाबन्धन (सलूना) पूजा	२५६
" विष्णुकुमार मुनि की "	२६०
अथ शान्ति पाठः प्रारभ्यते	२६५
श्री शान्ति पाठ भाषा	२६७
श्री भाषा स्तुति पाठ	२६९
श्री विसंर्जनम्	२७०

भजन संग्रह

शिक्षाप्रद भजन, कीर्तन और प्रभात फेरियां	२७२

स्तुति संग्रह

दौलतकृत स्तुति	२७७
बुधजनकृत स्तुति	२७९
दुखहरण विनती	२८०
जिनेन्द्र स्तुति	२८३
भूधरकृत स्तुति ..	२८५
श्रीपार्श्वनाथ स्तुति	२८६
जिनवाणी की स्तुति (भूधर)	२८८
शारदा स्तवन	२९०
जिनवाणी स्तुति	२९०
पार्श्वनाथ स्तोत्र (द्यानत)	२९१
मेरी भावना	२९२

पाठ संग्रह

छहढाला (दौलतरामजी)	२९४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	पृष्ठ संख्या
समाधिमरण भाषा (छोटा)	३०८
" " बड़ा	३१०
संक्षिप्त सूतक विधि	३१९
बारहभावना (भूधर)	३२१
बाईस परीषह (भूधर)	३२३
निर्वाणकाण्ड (भाषा)	३३०
स्तोत्र संग्रह	
शास्त्र स्वाध्याय	३३३
आदिनाथ स्तोत्रम् (भक्तामरजी संस्कृत)	३३४
श्री दशाध्याय सूत्र पूजा	३४३
मूल तत्वार्थसूत्रम्	३५३
परमात्म पूजन	३७०
महावीराष्टक स्तोत्रम् (पं० भागचन्दजी)	३७४
एकीभावस्तोत्र भाषा	३७५
मंगलाष्टक स्तोत्र भाषा	३८०
चैत्यवन्दन स्तोत्र संस्कृत	३८२
नित्यजाप्य मंत्र	३८४
जिन सहस्रनामस्तोत्रं	३८५
अथ स्वयंभूस्तोत्र भाषा	४०२
मेरी चाह	४०५
मंगलाचरण	४०६

मुद्रक :—
लखमीचन्द जैन
नरेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस, ३३, किबे कम्पाउन्ड, इन्दौर ४५२००१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5265

ॐ

❁ श्री वर्द्धमानाय नमः ❁

श्री दिगम्बर जैन

नित्य पूजन पाठ संग्रह

प्रातः क्रिया व पूजन प्रकरण

श्री अनादि निधन नमस्कार महामंत्र

गाथा

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हंत्‌सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।

प्रत्येक जैन बन्धु को सुबह उठकर ऊपर लिखा मन्त्र और पाठ बोलना चाहिये और सामायिक करना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री वीतरागाय नमः ।

स्वर्गीय पं० महाचन्द्रजी कृत

सामायिकपाठ भाषा

अथ प्रथम प्रतिक्रमणकर्म ।

काल अनंत भ्रम्यो जग में सहिये दुख भारी ।
जन्म मरण नित किये पाप को व्है अधिकारी ।।
कोडिभवांतर मांहि मिलन दुर्लभ सामायिक ।
धन्य आज मैं भयौ योग मिलियो सुखदायक ।।१।।

हे सर्वज्ञ जिनेश किये जे पाप जु मैं अब ।
ते सब मनवचकाययोगकी गुप्ति बिना लभ ।।
आप समीप हजूरमांहि मैं खड़ो खड़ो सब ।
दोष कहूं सो सुनो करो नठ दुःख देंहि जब ।।२।।

क्रोध मान मद लोभ मोह माया वश प्रानी ।
दुःखसहित जे किये दया तिनकी नहिं आनी ।।
बिना प्रयोजन एकइन्द्रि बि ति चउ पंचेन्द्रिय ।
आप प्रसादहिं मिटै दोष जो लग्यो मोहि जिय ।।३।।

आपसमें इक ठौर थापिकरि जे दुख दीने ।
पेलि दिये पगतलें दाबि करि प्राण हरीने ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप जगतके जीव जिते तिन सबके नायक।
अरज करूँ मैं सुनो दोष मेटो दुखदायक ॥४॥
अंजन आदिक चोर महा घनघोर पापमय।
तिनके जे अपराध भये ते क्षमाक्षमा किय॥
मेरे जे अब दोष भये ते क्षमहु दयानिधि।
यह पड़िकोणों कियो आदि षटकर्ममांहि विधि ॥५॥

अथ द्वितीय प्रत्याख्यानकर्म।

इसके आदि या अंत में आलोचना पाठ बोलकर फिर तीसरे सामायिक कर्म का पाठ करना चाहिए।

जो प्रमादवश होय विराधे जीव घनेरे।
तिनको जो अपराध भयो मेरे अघढेरे॥
सो सब झूंठो होहु जगतपतिके परसादै।
जा प्रसादतैं मिलै सर्व सुख दुःख न लाधै ॥६॥
मैं पापी निर्लज्ज दयाकरि हीन महाशठ।
किये पाप अघढेर पापमति होय चित्तदुठ॥
निंदूं हूं मैं बारबार निज जियको गरहूं।
सब विधि धर्म उपाय पाय फिरि पापहि करहूं ॥७॥
दुर्लभ है नर जन्म तथा श्रावककुल भारी।
सत्संगति संयोग धर्मजिन श्रद्धाधारी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन वचनामृत धार समावर्तै जिनवानी ।
तो हू जीव सँघारे धिक् धिक् धिक् हम जानी ॥८॥
इन्द्रियलंपट होय खोय निज ज्ञानजमा सब ।
अज्ञानी जिम करै तिसी विधि हिंसक व्है अब ॥
गमनागमन करंतो जीव विराधे भोले ।
ते सब दोष किये निंदूं अब मनवचतोले ॥९॥
आलोचनाविधिथकी दोष लागे जु घनेरे ।
ते सब दोष विनाश होउ तुमतैं जिन मेरे ॥
बार बार इस भांति मोह मद दोष कुटिलता ।
ईर्षादिकतैं भये निंदिये जे भयभीता ॥१०॥

अथ तृतीय सामायिक भावकर्म ।

सब जीवनमें मेरे समताभाव जग्यो है ।
सब जिय मोसम समता राखो भाव लग्यो है ॥
आर्त रौद्र द्वय ध्यान छांडि करिहूं सामायिक ।
संयम मो कब शुद्ध होय यह भाव बधायक ॥११॥
पृथिवी जल अरु अग्नि वायु चउ काय वनस्पति ।
पंचहि थावरमांहि तथा त्रसजीवबसैं जित ॥
बेइन्द्रिय तिय चउ पंचेन्द्रिय मांहि जीव सब ।
तिनसैं क्षमा कराऊँ मुझ पर क्षमा करो अब ॥१२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस अवसर में मेरे सब सम कंचन अरु त्रण ।
महल मसान समान शत्रु अरु मित्रहिं समगण ॥
जामन मरण समान जानि हम समता कीनी ।
सामायिकका काल जितै यह भाव नवीनी ॥१३॥
मेरो है इक आतम तामें ममत जु कीनों ।
और सबै मम भिन्न जानि समता रसभीनों ॥
मात पिता सुत बंधु मित्र तिय आदि सबै यह ।
मोतैं न्यारे जानि जथारथ रूप करयो गह ॥१४॥
मैं अनादि जगजाल मांहि फँसि रूप न जाण्यो ।
एकेंद्रिय दे आदि जंतुको प्राण हराण्यो ॥
ते सब जीवसमूह सुनो मेरी यह अरजी ।
भवभवको अपराध क्षमा कीज्यो करि मरजी ॥१५॥

अथ चतुर्थ स्तवनकर्म

नमौं रिषभ जिनदेव अजित जिन जीति कर्मको ।
संभव भवदुखहरण करण अभिनंद शर्मको ॥
सुमति सुमतिदातार तार भवसिंधु पार कर ।
पद्मप्रभ पद्माभ भानि भवभीती प्रीति धर ॥१६॥
श्रीसुपार्श्व कृति पाश नाश भव जास शुद्धकर ।
श्रीचंद्रप्रभ चंद्रकांतिसम देह कांतिधर ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुष्पदंत दमि दोष कोश भविपोष रोषहन ।
शीतल शीतलकरण हरण भवताप दोषहर ॥१७॥
श्रेयरूप जिनश्रेय ध्येय नित सेय भव्यजन ।
बासुपूज्य शत पूज्य वासवादिक भव भयहन ॥
विमल विमलमति देन अंतगत हैं अनंत जिन ।
धर्म शर्म शिवकरण शांति जिन शांति विधायिन ॥१८॥
कुंथु कुंथु मुख जीवपाल अरनाथ जालहर ।
मल्ल मल्लसम मोह मल्लमारण प्रचार धर ॥
मुनिसुव्रत व्रत करण नमत सुरसंघहि नमिजिन ।
नेमिनाथ जिन नेमिधर्मरथ माहिं ज्ञानधन ॥१९॥
पर्श्वनाथ जिन पार्श्व उपलसम मोक्षरमापति ।
वर्धमान जिन नमूं वमूं भवदुःख कर्मकृत ॥
या विधि मैं जिन संघरूप चउवीस संख्यधर ।
स्तवूं नमूं हूँ बारबार वन्दूं शिवसुखकर ॥२०॥

अथ पंचम वन्दनाकर्म

वंदूं मैं जिनवीर धीर महावीर सु सन्मति ।
वर्धमान अतिवीर वंदि हौं मनवचतनकृत ॥
त्रिशलातनुज महेश धीश विद्यापति वन्दूं ।
वंदौ नित प्रति कनकरूप तनुपाप निकंदूं ॥२१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धारथनृपनंद द्वंददुख दोषमिटावन ।
दुरित दवानल ज्वलित ज्वाल जगजीव उधारन ।।
कुंडलपुर करि जन्म जगत जिय आनन्दकारन ।
वर्षबहत्तरि आयु पाय सबही दुखटारन ।।२२।।
सप्त हस्त तनु तुंग भंग कृत जन्ममरणभय ।
बाल ब्रह्ममय ज्ञेय हेय आदेय ज्ञानमय ।।
दे उपदेश उधारि तारि भवसिंधु जीवघन ।
आप बसे शिवमांहि ताहि वंदौ मनवचतन ।।२३।।
जाके वंदन थकी दोष दुख दूरहि जावे ।
जाके वंदन थकी मुक्तितिय सन्मुख आवे ।।
जाके वंदन थकी वंद्य होवैं सुरगनके ।
ऐसे वीर जिनेश वंदिहूं क्रमयुग तिनके ।।२४।।
सामायिक षट्कर्ममांहि वंदन यह पंचम ।
वंदौ वीरजिनेंद्र इंद्रशतवंद्य वंद्य मम ।।
जन्म मरण भय हरो करो अघ शाँति शांतिमय ।
मैं अघकोश सुपोष दोष को दोष विनाशय ।।२५।।

अथ षष्ट कायोत्सर्ग ।

कायोत्सर्ग विधान करूँ अंतिम सुखदाई ।
कायत्यजनमम होय काय सबको सुखदाई ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूरब दक्षिण नमूं दिशा पश्चिम उत्तर में।
जिनगृह वंदन करूँ हरूँ भवपाप तिमिर मैं ॥२६॥

शिरोनति मैं करूँ नमूं मस्तककर धरिकै।
आवर्तादिक क्रिया करूँ मनवचमद हरिकै॥
तीनलोक जिन भवन मांहि जिन बिम्ब अकृत्रिम।
कृत्रिम हैं द्वयअर्द्ध द्वीपमांही वंदौं जिम ॥२७॥

आठकोड़परि छप्पन लाख जु सहस सत्याणूं।
च्यारि शतक पर असी एक जिनमन्दिर जाणूं॥
व्यंतर ज्योतिषिमांहि संख्य रहते जिनमंदिर।
जिनगृह वंदन करूँ हरहु मम पाप संघकर ॥२८॥

सामायिक सम नांहि और कोउ वैर मिटायक।
सामायिक सम नांहि और कोउ मैत्रीदायक॥
श्रावक अनुव्रत आदि अंत सप्तम गुणथानक।
यह आवश्यक किये होय निश्चय दुख हानक ॥२९॥

जे भवि आतमकाज करण उद्यमके धारी।
ते सब काज विहाय करो सामायिक सारी॥
राग दोष मद मोह क्रोध लोभादिक जो सब।
'बुध महाचन्द्र' विलाय जाय तातैं कीज्यो अब ॥३०॥

॥ इति सामायिक पाठ समाप्तम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आलोचना पाठ

(पं० भूधरदासजी कृत)

यह आलोचनापाठ सामायिक काल में द्वितीय प्रत्याख्यान कर्म है उसके आदि वा अन्त में बोलना चाहिए।

दोहा

बन्दौं पांचों परमगुरु, चौबीसों जिनराज।
करूं शुद्ध आलोचना, शुद्धि करन के काज ॥१॥

छन्द

सुनिये जिन अर्ज हमारी, हम दोष किये अतिभारी।
तिनकी अब निवृत्ति काज, तुम शरण लही जिनराज ॥२॥
इक वे ते चउ इन्द्रीवा, मन रहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहिं करुणा धारी, निर्दय ह्वै घात विचारी ॥३॥
समरम्भ समारम्भ, आरम्भ, मनवचतन कीने प्रारम्भ।
कृतकारित मोदन करके, क्रोधादि चतुष्टय धरके ॥४॥
शत आठ जु इन भेदनते, अघ कीने परछेदनते।
तिनकी कहुं कौलों कहानी, तुम जानत केवल ज्ञानी ॥५॥
विपरीत एकान्त विनय के, संशय अज्ञान कुनय के।
वश होय घोर अघ कीने, बचतैं नहीं जात कहीने ॥६॥
कुगुरुन की सेवा कीनी, केवल अदया कर भीनी।
या विधि मिथ्यात्व बढ़ायो, चहुँगति मधि दोष उपायो ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिंसापुनि झूठ जो चोरी, पर बनिता से दृगजोरी ।
आरम्भ परिग्रह भीने पनपाप जो याविधि कीने ॥८॥
सपरस रसना घ्राणनको, दृगकानविषय सेवन को ।
बहुकर्म किये मनमाने, कुछ न्याय अन्याय न जाने ॥९॥
फल पंच उदम्बर खाये, मद्य मांस मधु चित चाहे ।
नहिं अष्टमूल गुण धारे, सेये कुविसन दुःखकारे ॥१०॥
बाईस अभक्ष जिन गाये, सोभी निशिदिन भुञ्जाये ।
कुछ भेदाभेद न पायो, ज्यों त्यों कर उदर भरायो ॥११॥
अनन्तानुबन्धी सो जानो, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो ।
संज्वलन चौकड़ी गुनिये, सब भेद जु षोडश मुनिये ॥१२॥
परिहास्य अरति रति शोक, भय ग्लानि त्रिवेद संयोग ।
पनवीस जो भेद भये इम, इनके वश पाप किये हम ॥१३॥
निद्रा वश शयन कराया, स्वप्ने में दोष लगाया ।
फिरजाग विषयवनधायो, नानाविधि विषफलखायो ॥१४॥
आहार बिहार निहारा, इनमें नहीं यत्न विचारा ।
बिन देखे धरा उठाया, बिन सोधा भोजन खाया ॥१५॥
तबही प्रमाद सतायो, बहुबिधि विकल्प उपजायो ।
कुछ सुधि बुधि नाहिं रही है, मिथ्या मति छाय गई है ॥१६॥
मर्यादा तुम ढिग लीनी, ताहू में दोष जु कीनी ।
भिन्न-भिन्न अबकैसे कहिये, तुम ज्ञान विषैं सब पइये ॥१७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हाहा मैं दुष्ट अपराधी, त्रस जीवन राशि विराधी ।
थावर की जतन न कीनी, उर में करुणा नहीं लीनो ।।१८।।

पृथिवी बहु खोद कराई, महलादिक जाँगा चुनाई ।
बिन छान्यो पानी ढोल्यो, पंखा तें पवन बिलोल्यो ।।१९।।

हाहा मैं अदयाचारी, बहुहरित जो काय विदारी ।
यामें जीवों के खंदा, हम खाये धरि आनन्दा ।।२०।।

हाहा मैं प्रमाद बसाई, बिन देखे अग्नि जलाई ।
ता मध्य जीव जो आये, ते हू परलोक सिधाये ।।२१।।

बींधो अन्नरात्रि पिसायो, ईंधन बिन सोधि जलायो ।
झाड़ू ले जागां बुहारी चिंटिआदिक जीव विदारी।।२२।।

जल छानि जिवानी कीनी, सो हू पुनि डारजो दीनी ।
नहीं जल थानक पहुंचाई, किरिया बिन पाप उपाई।।२३।।

जल मल मोरिन गिरवायो, कृमि कुल बहु घात करायो ।
नदियों में चीर धुवाये' कोसों के जीव मराये ।।२४।।

अन्नादिक सोध कराई, ता मध्य जीव निसराई ।
तिनको नहिं यत्न करायो, गलियारें धूप डरायो ।।२५।।

फिर द्रव्य कमावन काजे, बहु आंरम्भ हिंसा साजे ।
कीये तृष्णा वश भारी, करुणा नहिं रंच विचारी ।।२६।।

इत्यादिक पाप अनन्ता, हम कीने श्री भगवन्ता ।
सन्तति चिरकाल उपाई, वाणी ते कहिय न जाई ।।२७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताको जो उदय अब आयो, नाना विधि मोहि सतायो।
फल भुंजत जो दुख पाऊँ, बच ते कैसे करगाऊँ ॥२८॥

तुम जानत केवल ज्ञानी, दुख दूर करो शिव थानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारण विरद सही है॥२९॥

एक ग्रामपती जो होवे, सो भी दुःखिया दुःख खोवे।
तुम तीन भुवन के स्वामी, दुःख मेटो अन्तर्यामी ॥३०॥

द्रौपदि को चीर बढ़ायो, सीता प्रति कमल रचायो।
अञ्जन से किये अकामी, दुःख मेटो अन्तर्यामी ॥३१॥

मेरे औगुण न चितारो, प्रभु अपना विरद निहारो।
सब दोष रहित कर स्वामी, दुख मेटो अन्तर्यामी ॥३२॥

इन्द्रादिक पद नहिं चाहूं, विषयों में नाहि लुभाऊँ।
रागादिक दोष हरी जे, परमातम निज पद दीजे ॥३३॥

दोहा।

दोष रहित जिन देवजी, निजपद दीजे मोहि।
सब जीवन को सुख बढ़े, आनन्द मंगल होहि ॥३४॥

अनुभव माणिक पारखी, जौहरी आप जिनन्द।
ये ही वर मोहि दीजिये, चरण शरण आनन्द ॥

॥ इति आलोचना पाठ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगल ।

जिनेन्द्र पंचकल्याणक ।

पणविवि पंच परमगुरु, गुरुजिनशासनो ।
सकलसिद्धिदातार सु, विघनविनासनो ।।
शारद अरु गुरु गौतम, सुमति प्रकासनो ।।
मंगलकर चउ-संघहिं, पाप-पणासनो ।।
पापहि पणासन गुणहिं गरुआ, दोष अष्टा-दश-रहिउ ।
धरिध्यान करमविनासि केवलज्ञान अविचल जिनलहिउ ।।
प्रभु पंचकल्याणक विराजित, सकल सुर नर ध्यावहीं ।
त्रैलोक्यनाथ सुदेव जिनवर, जगत मंगल गावहीं ।।१।।

१ । गर्भ कल्याणक ।

जाके गरभकल्याणक, धनपति आइयो ।
अवधिज्ञान- प्रमाण सु, इन्द्र पठाइयो ।।
रचि नव बारह योजन, नयरि सुहावनो ।
कनकरयणमणिमंडित, मंदिर अति बनो ।।
अति बनो पौरि पगार परिखा, सुवन उपवन सोहिये ।
नर नारि सुन्दर चतुरभेष सु, देख जनमन मोहिये ।।
तहँ जनकगृह छहमास प्रथमहिं, रतनधारा बरसियो ।
पुनि रुचिक वासिनि जननि-सेवा, करहिं सबविधि हरषियो ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुर-कुंजरसम कुंजर, धवल धुरंधरो।
केहरि केशरशोभित, नख शिखसुंदरो ।।
कमलाकलस-न्हवन, दुइदाम सुहावनी ।
रविशशि मंडल मधुर, मीनजुग पावनी।।
पावनिकनक घट जुगम पूरन, कमलकलित सरोवरो ।
कल्लोलमाला कुलितसागर, सिंहपीठ मनोहरो ।।
रमणीक अमरविमान फणपति-भुवन रवि छबि छाजई ।
रुचि रतनरासि दिपंत, दहन सु तेजपुंज विराझई ।।३।।
ये सखि सोलह सुपने सूती सयनहीं ।
देखे माय मनोहर, पच्छिम रयनहीं ।।
उठि प्रभात पिय पूछियो, अवधि प्रकाशियो ।
त्रिभुवनपति सुत होसी, फल तिहँ भासियो ।।
भासियो फल तिहिं चिन्ति दंपति परम आनंदित भये ।
छहमासपरि नवमास बीते रैन दिन सुखसों गये ।।
गर्भावतार महंत महिमा, सुनत सब सुख पावहीं ।
भणि 'रूपचंद' सुदेव जिनवर जगत मंगल गावहीं ।।४।।

२ । जन्म कल्याणक ।

मतिश्रुतअवधिविराजित, जिन जब जनमियो ।
तिहुँलोक भयो छोभित, सुरगन भरमियो ।।
कल्पवासि घर घंट, अनाहद बज्जिया ।
ज्योतिषघर हरिनाद, सहज गल गज्जिया ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गज्जिया सहजहिं संख भावन, भुवन शब्द सुहावने।
वितरनिलय पटु पटह बज्जहि, कहत महिमा क्यों बने ॥
कंपित सुरासन अवधिबल जिन जनम निहचै जानियो ।
धनराज तब गजराज माया-मयी निरमय आनियो ॥५॥

जोजन लाख गयंद, बदन सो निरमये ।
बदन बदन वसुदंत, दंत सर संठये ॥
सरसर-सौ पनवीस, कमलिनी छाजहीं ।
कमलिनि कमलिनि कमल पचीस विराजहीं ॥

राजहीं कमलिनि कमलऽठोतर सो मनोहर दल बने ।
दल दलहिं अपछर नटहिं नवरस, हाव भाव सुहावने ॥
मणि कनककिंकणि वर विचित्र सु अमरमंडप सोहये ।
धन घंट चँवर धुजा पताका, देखि त्रिभुवन मोहये ॥६॥

तिहिं करि हरि चढ़ि आयउ, सुरपरिवारियो ।
पुरिहि प्रदच्छन दे त्रय, जिन जयकारियो ॥
गुप्तजाय जिनजननिहिं, सुखनिद्रा रची।
मायामयि शिशु राखि तौ, जिन आन्यो सची ॥

आन्यो सची जिनरूप निरखत, नयन तृपित न हूजिये ।
तब परम हरषित हृदय हरिने सहस लोचन पूजिये ।
पुनि करि प्रणाम जु प्रथम इंद्र, उछंग धरि प्रभु लीनऊ।
ईसान इंद्र सु चंद्र छवि सिर, छत्र प्रभु के दीनऊ ॥७॥

सनतकुमार माहेंद्र, चमर दुइ ढारहीं ।
शेष सक्र जयकार, सबद उच्चारहीं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उच्छव सहित चतुरविधि, सुर हरषित भये ।
जोजन सहस निन्यानवे, गगन उलँघि गये ।।
लँघिगये सुरगिरि जहाँ पांडुक वन विचित्र विराजहीं ।
पांडुकशिला तहँ अर्द्ध चंद्र समान, मणि छवि छाजहीं ।।
जोजन पचास विशाल दुगुणायाम, वसु ऊंची गनी ।
वर अष्ट-मंगल-कनक कलसनि सिंहपीठ सुहावनी ।।८।।
रचि मणिमंडप शोभित, मध्य-सिंहासनो ।
थाप्यो पूरव मुख तहँ, प्रभु कमलासनो ।।
बाजहिं ताल मृदंग, वेणु वीणा घने ।
दुंदुभि प्रमुख मधुर ध्वनि, अवरजु बाजने ।।
बाजने बाजहिं सची सब मिलि, धवलमंगल गावहीं ।
पुनि करहिं नृत्य सुरांगना सब, देव कौतुक धावहीं ।।
भरि छीरसागर जल जु हाथहि, हाथ सुरगिरि ल्यावहीं ।
सौधर्म अरु ईशान इंद्रसु कलस ले प्रभु न्हावहीं ।।९।।
वदन उदर अवगाह, कलसगत जानिये ।
एक चार वसु जोजन, मान प्रमानिये ।।
सहस-अठोतर कलसा, प्रभुके सिर ढरइँ ।
पुनि सिंगार प्रमुख आचार सबै करइँ ।।
करि प्रगट प्रभु महिमा महोच्छव, आनि पुनि मातहिं दये ।
धनपतिहिं सेवा राखि सुरपति, आप सुरलोकहिं गये ।।
जनमाभिषेक महंत महिमा, सुनत सब सुख पावहीं ।
भणि 'रूपचंद' सुदेव जिनवर जगत मंगल गावहीं ।।१०।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगलाष्टकम्

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा–
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनांभोधींदवः स्थायिनः ।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥१॥

नाभेयादि–जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयस्तैश्चक्रियाभिःपूजिताः
ये विष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः तैरेव संपूजिता,
स्त्रैलोक्ये प्रथिताःसुतीर्थपुरुषाः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥२॥

ये सर्वोषधिऋद्धयः सुतपसो, वृद्धिगताः पंच ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशलाश्चाष्टौ विधाश्चारिणः ।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलाश्चते मुनिवराः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥३॥

ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु ।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥४॥

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हतां ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतः,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥५॥

जायन्ते जिनचक्रवर्तिबलभृद्भोगीन्द्रकृष्णादयोधर्मादेव
दिगंगनांगविलसच्छश्वद्यशश्चन्दनाः । तद्धीना
नरकादियोनिषु नरा दुःखं सहन्ते ध्रुवं,
स स्वर्गात्सुखरामणीयकपदं कुर्यात्सदा मंगलम् ॥६॥

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
संपद्येत रसायनं विषमपि, प्रीतिं विधत्ते रिपुः ।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः, किंवा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्यात्सदा मंगलम् ॥७॥

यो गर्भावतरोत्सवेऽप्यर्हतां जन्माभिषेकोत्सवे,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ।
यःकैवल्यपुरप्रवेशमहिम संम्भावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥८॥

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्करं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषा ।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः धर्मार्थकामान्विता
लक्ष्मीराश्रियते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥९॥

इति मंगलाष्टकम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभिषेक पाठः

ॐ जय जय जय, णमोऽस्तु णमोऽस्तु णमोऽस्तु णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।

श्रीमन्नतामरशिरस्तटरत्नदीप्ति,
तोये विभासि चरणांबुजयुग्ममीशं।
अर्हन्तमुन्नतपदप्रदमाभिनम्य,
त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेकविधिं करिष्ये ॥१॥

अथ पौर्वाह्लिकमाध्याह्निकापराह्लिकदेववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजास्तववन्दनासमेतं श्रीयंचमहा गुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्।

इसको पढ़कर २७ श्वासोच्छ्वास में ९ वार णमोकार मन्त्र का जाप देना चाहिये।

प्रातःकाल के समय पौर्वाह्लिक मध्यकाल में मध्याह्निक सायंकाल में अपराह्निक देववंदना बोलना चाहिये। यह बात प्रत्येक कायोत्सर्ग करते समय ध्यान में रखना चाहिये।

याः कुत्रिमास्तदितराः प्रतिमा जिनस्य,
संस्नापयंति पुरुहूतमुखादयस्ताः
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगा—
त्तत्रैवमुज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि ॥२॥

इति अभिषेक प्रतिज्ञानाय पुष्पांजलिं क्षिपामि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्षतोये
श्रीप्रस्तरे पूर्णशशांककल्पे ।
श्रीवर्तकेचन्द्रमसीति वार्ता
सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि ॥३॥

ॐ ह्री श्रीं अर्हं श्रीलेखनं करोमि (स्नपन स्थाल्यां श्रीलेखनम् स्नपन की थाली में "श्री" लिखें)

कनकादिनिभं कम्रं पावनं पुण्यकारणम् ।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री पीठ (सिंहासन) स्थापनम् । श्री के ऊपर सिंहासन रखें ।

भृंगारचामरसुदर्पणपीठकुंभ—
तालध्वजातपनिवारकभूषिताग्रे ।
वर्धस्व नंद जय पाठपदावलीभिः—
सिंहासने जिनभवंतमहं श्रयामि ॥५॥

ॐ ह्री अर्हं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ ! भगवन्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ । इति प्रतिमास्थापनम् ।

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धिवारिभिपूरयदर्थंकुम्भान् ।
तान्तादृशानिव विभाव्य यथार्हनीयान्,
संस्थापयामि शुचि सुवासिपूरितान्तान्॥६॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आनंदनिर्भरसुरप्रमदादिगानै—
र्वादित्रपूरजयशब्दकलप्रशस्तैः।
उद्गीयमानजगतीपतिकीर्तिरेषः,
पीठस्थलीं-वसुविधार्चनयोल्लसामि ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीस्नपनपीठस्थितायार्घम्। वाद्यघोषणम्। जयशब्दोच्चारणम्।

कर्मप्रबन्धनिगडैरपि हीनताप्तं-
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम्।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव,
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थतत्वम् ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेकयामि स्वाहा

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटि
संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रि।
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपिप्रकृष्टै र्भक्त्या
जलैर्जिनपतिंबहुधाभिषिंचे ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवं मध्यलोके जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे ········देशे········नाम्निनगरे········ चैत्यालये वीरनिर्वाण संवत्सरे मासानामुत्तमेमासे ···· पक्षे···· ··· शुभदिने मुनिआर्यिका श्रावकश्राविकानां सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषिंचे।

पानीयचन्दनसदक्षतपुष्पपुंज—
नैवेद्यदीपकसुधूपफलव्रजेन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्माष्टकक्रथनवीरसनंतशक्ति,
संपूजयामि सहसा महसां निधानम् ।।१०।।
ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादि वीरान्तेभ्योऽर्घंम् ।

हे तीर्थपा निजयशोधवलीकृताशाः ।
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानां ।
सद्भव्यहृज्जनितपंकजबंधकल्पा—
यूयं जिनाः सततशांतिकरा भवंतु ।।११।।
इत्युक्त्वा शान्त्यर्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादघसंचयं मे ।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद्—
भूयाद्भवातपहरं धृतमादरेण ।।१२।।

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं पुण्यांकुरोत्पादकं,
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्रचक्रपदवीराज्याभिकोदकम् ।
सम्यग्ज्ञानचरित्रदर्शनलतासंवृद्धिसम्पादकं
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन ! स्नानस्य गन्धोदकम् ।।१३।।

इति प्रदक्षिणां नमस्कारं च कृत्वा जिनचरणोदकं शिरसि धारयामि ।

प्रदक्षिणा देकर श्रीजिनेश को नमस्कार करके अपने उत्तम अंगों में गंधोदक लगाना चाहिए ।

नत्वा मुहुर्निजकरैरमृतोपमेयैः,
स्वच्छैर्जिनेन्द्र तव चन्द्रकरावदातैः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये,
देहे स्थिताञ्जलकणान्परिमार्जयामि ॥१४॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनविम्वमार्जनं करोमि।

इस श्लोक को पढ़कर निर्मल वस्त्र से जिनविम्व के शरीर पर स्थित जलकणों को साफ करना चाहिये।

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्र नाम्ना—
मुच्चारणेह मनसो वचसो विशुद्धि।
जिघृक्षुरिष्टमिन तेऽष्टतयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि ॥१५॥

इति सहस्रनामस्तोत्रं तदशं वा पठित्वा जिनबिम्बं सिंहासने स्थापयित्वा पूजनप्रतिज्ञानाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्। (श्रीजी को वेदी में विराजमान करना)।

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीपसुधूपकैः,
फलैरर्घैर्जिनमर्चे जन्मदुखापहानये ॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थितजिनाय अर्घम् निर्वपामिति स्वाहा।

इमे नेत्रे जाते सुकृतजलसिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं कृतिजनगणादेयमभवत्।
मदीयाद्भालाद्वादशुभकर्माटनमभूत
सदेदृक् पुण्यार्हः मम भवतु ते पूजनविधौ ॥१७॥

इतीष्टप्रार्थनां कृत्वा पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

॥ इति अभिषेकविधिः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लघु शान्ति धारा मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।

चत्तारिमंगलं–अरहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहु मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा–अरहंता, लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा, चत्तारिसरणं पव्वज्जामि–अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहु सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि, ह्रौं अनादिसिद्ध मंत्रभक्तिप्रसादात् सर्वशांतिर्भवतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्व शांतिर्भवतु।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः शांति मंत्र भक्तिप्रसादात् सर्व शांतिर्भवतु।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः सर्व दिगागतविघ्नविनाशनं भवतु। ॐ नमोर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं ऋषभादि वीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजन भक्तिप्रसादात् सर्वेषां शांतिर्भवतु।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि–ऋद्धि–पूजन–भक्ति–प्रसादात् तापादिरोगविनाशनं भूतादिभयविनाशनं भवतु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्री पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगण-परिवेष्टिताय शुक्लध्यानपवित्राय सर्वज्ञाय स्वयंभुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्य पूजिताय अनन्तसंसारचक्रपरिमर्दनाय अनन्तदर्शनाय अनन्त-वीर्यायअनन्त-सुखाय त्रैलोक्यवशंकराय सत्यज्ञानाय सत्य ब्रह्मणे ऋष्यार्यिकाश्रावकश्राविकाप्रमुखचतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय घातिकर्मविनाशनाय इन्द्रधरणेन्द्रचक्रवर्त्यादि-पूजितपद्माय अष्टादशदोषरहित षट्चत्त्वारिंशत्गुणसं-युक्ताय सर्वसत्त्वहितंकराय धर्मचक्राधीश्वराय सर्वविद्या-परमेश्वराय अनेकदैत्यदानव मुकुट-कोटि घृष्टपादपीठाय चतुराननविष्णुरुद्रनारदखेचरपूजिताय सर्वभव्यजनानंदक-राय सर्वरोगापमृत्यु घोरोपसर्गविनाशनाय सर्वदेशग्रामपुर-नरपति-प्रजाजन-शांतिकराय श्रीदेवाधिदेवाय नमोऽस्तु । श्रीजिनराज-पूजन-भक्तिप्रसादात् अस्माकं सेवकानां सर्व-दोष-रोग-शोक-भयपीड़ाविनाशनं भवतु पापविनाशनं भवतु परदुष्टजनोपकृतमंत्रतंत्रदृष्टिमुष्टि छलछिद्रदोषविनाशनं भवतु । अग्नि-चोर-जल-भय-सर्व-व्याधि-विनाशनं भवतु । डाकिनी-शाकिनी भूत-भैरवादिकृतोपद्रवविनाशनं भवतु । सर्वभैरव-देव-दानव-वीर-नरसिंह योगिनी कृत विघ्नविना-शनं भवतु । भवनवासिव्यंतरज्योतिषीर्देवदेवीकृत दोष-विनाशनं भवतु । अग्निकुमार-उदधिकुमार द्वीपकुमार-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिक्कुमार-वातकुमार मेघकुमारकृतविघ्नविनाशनं भवतु। इन्द्रादिदशदिक्पाल-कृत-विघ्नविनाशनं भवतु।

जयविजयापराजित मणिभद्रादिक्षेत्रपालकृतविघ्न-विनाशनं भवतु। राक्षस वैताल-दैत्यदानव-यक्षादिकृत विघ्नविनाशनं भवतु। सर्वाष्टकुली नागजनितविषभय-विनाशनं भवतु। सर्वं ग्राम नगर देश मारीरोग विनाशनं भवतु। सर्वं स्थावर जंगम वृश्चिक दृष्टि विषजाति सर्पादि कृत-विषदोष-विनाशनं भवतु। सिंहाष्टापदव्याघ्रव्याल वनचरजीव-भय-विनाशनं भवतु।

परशत्रुकृतमारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि दोष-विनाशनं भवतु। सर्वहस्तिघोटकगौवृषभादिपशु-मारिविनाशनं भवतु। सर्वसस्यधान्यवृक्षलता गुल्मपत्रपुष्प फल-मारिविनाशनं भवतु। सर्ववेदनीय मोहनीय विनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरभक्तिप्रसादात् चक्रविक्रमसत्त्वतेजोबल-शौर्यं शांतयः भवन्तु। सर्वजीवानानंदनं भवतु भव्यानंदनं गोकुलानंदनं राजानंदनं च भवतु सर्वानंदनं भवतु।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यसन-वर्जितं।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते ॥
श्रीशांतिरस्तु शिवमस्तु जयोऽस्तु नित्य-
मारोग्यमस्तु मम पुष्टिः समृद्धिरस्तु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कल्याणमस्तु सुखमस्त्वभिवृद्धिरस्तु,
दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनं सदास्तु ।।

आयुर्वल्लीविलासं सकलसुखफलैर्द्राघयित्वाश्वनल्पं ।
धीरं हीरं शरीरं निरमयमुपनयत्त्वातनोत्त्वच्छकीर्ति ।।
सिद्धि वृद्धि समृद्धि प्रथयतु तरणिस्फूर्यदुच्चैः प्रतापं ।
कांति शांति समाधि वितरतु भवतामुत्तमा शांतिधारा ।।

(पुष्पांजलि) इति लघुशांतिमन्त्रपाठः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयपाठ दोहावली

इहि विधि ठाड़ो होयके, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ॥१॥

अनंत चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति बधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज ॥२॥

तिहुँ जगकी पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार ॥३॥

हरता अघ अँधियारके, करता धर्मप्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास ॥४॥

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरणसरोज को, नावत तिहुँ जग भूप ॥५॥

मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निरमल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछु उपाव ॥६॥

भविजन को भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुणभंडार ॥७॥

चिदानंद निर्मल कियो, धोये कर्मरज मैल।
सरल करी या जगतमें, भविजन को शिवगैल ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुमपदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता कों धरैं, विष निरविषता थाय ॥९॥

चक्रीखगधरणेंद्रपद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ॥१०॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्मजरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥११॥

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव ॥१२॥

थकी नाव भवदधिविषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव ॥१३॥

रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबैं, मेटो राग कुटेव ॥१४॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष, भयो, पायो जिनवर थान ॥१५॥

तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥१६॥

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिंधु में, खेय लगाओ पार ॥१७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इंद्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान ।
अपनो विरद निहारकैं, कीजे आप समान ॥१८॥

तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार ।
हाहा डूबो जात हों, नेक निहार निकार ॥१९॥

जो मैं कह हूं औरसों, तो न मिटै उरझार ।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार ॥२०॥

बंदों पाँचौं परमगुरु, सुरगुरु बंदत जास ।
विघन हरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ॥२१॥

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय ।
शिवमग साधक साधु नमि, रचों पाठ सुखदाय ॥२२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवशास्त्र गुरुपूजा संस्कृत

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु। णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं— अरहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि— अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णतं धम्मं सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हंते स्वाहा (यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना)।

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१॥

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ॥२॥

अपराजितमंत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥३॥

एसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्हंमित्यक्षरं ब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्यसदबीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥५॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनं ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ॥६॥
विघ्नोघाः प्रलयं यांति शाकिनीभूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥७॥

(पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

यदि अवकाश हो, तो यहां पर सहस्रनाम पढ़ कर दश अर्घ देना चाहिये। नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़ कर एक अर्घ चढ़ाना चाहिये।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे॥७॥

ओं ह्री श्रीभगवज्जिनसहस्रनामभ्योऽर्घं निर्वपामिति स्वाहा ।

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं स्याद्वादनायकमनंत-चतुष्टयार्हं। श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्जैनेन्द्रयज्ञविधि-रेषमयाऽभ्यधायि॥८॥ स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुंगवाय स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय स्वस्ति प्रकाशसहजो-र्ज्जितदृङमवाय, स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय ॥९॥ स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय, स्वस्तिस्वभावपरभाव विभासकाय, स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय॥१०॥ द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं, भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः आलंबनानि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विविधान्यवलंब्य वल्गन्, भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञम् ॥११॥ अर्हन्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि, वस्तूनि नूनमखिलान्ययमेकएव । अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोधवह्नौ, पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥

(पुष्पांजलि क्षेपण करना)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः । श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः । श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः । श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचंद्रप्रभः । श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः । श्रीश्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः । श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः । श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशांतिः । श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः । श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः । श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः । श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ।

(पुष्पांजलि क्षेपण)

नित्याप्रकंपाद्भुतकेवलौघाः स्फुरन्मनःपर्यय शुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्तिक्रियासुः ॥परमर्षयो नः

यहां व आगे भी प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये ॥१॥

कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं संभिन्न संश्रोतृपदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः ॥२॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादनघ्राणविलोकनानि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिव्यान्मतिज्ञानबलद्वहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। ।।३।। प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।४।। जंघावलिश्रेणिफलांबुतंतुप्रसूनबीजांकुरचारणाह्वाः । नभोऽङ्गणस्वैरविहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः ।। ५।। अणिम्निदक्षाः कुशलाःमहिम्नि लघिम्नि शक्ता कृतिनो गरिम्णि । मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।६।। सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं प्राकाम्य-मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः । तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।७।। दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः । ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।८।। आमर्षसर्वौषध-यस्तथाशीविषंविषादृष्टिविषंविषाश्च । सखिल्ल विड्जल्ल-मलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।९।। क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः । अक्षीण संवास महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।१०।।

इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानं ।

सार्वः सर्वज्ञनाथः सकलतनुभृतां पापसंतापहर्ता, त्रैलो-क्याक्रांतकीर्तिः क्षतमदनरिपुर्घातिकर्मप्रणाशः । श्रीमान्नि-र्वाणसंपद्वरयुवतिकरालीढकंठः सुकंठैर्देवेंद्रै वंद्यपादो जयति जिनपतिःप्राप्तकल्याणपूजः ।।१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जय जय श्रीसत्कांतिप्रभो जगतां पते !
जय जय भवानेव स्वामी भवांभसि मज्जतां ।
जय जय महा मोहध्वांतप्रभातकृतेऽर्चनं ।
जय जय जिनेश त्वं नाथ प्रसीद करोम्यहम् ॥२॥

ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् (इत्याह्वानम्) ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः (इति स्थापनम्) ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधिकरणम्)

देवि श्रीश्रुतिदेवते भगवति ! त्वत्पादपंकेरुह,
द्वंदे यामि शिलीमुखत्वमपरं भक्तचामया प्रार्थ्यते ।
मातश्चेतसि तिष्ठ मे जिनमुखोद्भूते सदा त्राहि मां,
दृग्दानेन मयि प्रसीद भवतीं संपूजयामोऽधुना ॥३॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूतद्वादशांगश्रुतज्ञान ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् । ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूतद्वादशांगश्रुतज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूतद्वादशांगश्रुतज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

संपूजयामि पूज्यस्य पादपद्मयुगं गुरोः ।
तपःप्राप्तप्रतिष्ठस्य गरिष्ठस्य महात्मनः ॥४॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुसमूह ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् । ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवेंद्रनागेन्द्रनरेन्द्रवंद्यान् शुंभत्पदान् शोभितसारवर्णान् ।
दुग्धाब्धिसंस्पर्धिगुणैर्जलोघैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

ताम्यत्त्रिलोकोदरमध्यवर्तिसमस्तसत्त्वाहितहारिवाक्यान् ।
श्रीचंदनैर्गंधविलुब्धभृंगैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

अपारसंसारमहासमुद्रप्रोत्तारणे प्राज्यतरीन् सुभक्त्या ।
दीर्घाक्षतांगैर्धवलाक्षतौघैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

विनीतभव्याब्जविबोधसूर्यान्वर्यान् सुचर्याकथनैकधुर्यान् ।
कुंदारविंदप्रमुखैः प्रसूनैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन यजेऽहम् ॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

कुदर्पकंदर्पविसर्प्पसर्प्पप्रसह्यनिर्णाशनवैनतेयान् ।
प्राज्याज्यसारैश्चरुभी रसाढ्यैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहं ॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

ध्वस्तोद्यमांधीकृतविश्वविश्वमोहांधकारप्रतिघातदीपान् ।
दीपैः कनत्कांचनभाजनस्थैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुष्टाष्टकर्मेन्धन पुष्टजालसंधूपने भासुरधूमकेतून् ।
धूपैर्विधूतान्यसुगंधगंधैर्जिनेंद्र सिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ।।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

क्षुभ्यद्विलुभ्यन्मनसाप्यगम्यान् कुवादिवादाऽस्खलितप्रभावान्
फलैरलं मोक्षफलाभिसारैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ।।
ॐ ह्रीं [देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

सद्वारिगंधाक्षतपुष्पजातैर्नैवेद्य दीपामलधूपधूम्रैः ।
फलैर्विचित्रैर्घनपुण्ययोगान् जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ।।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

ये पूजां जिननाथशास्त्रयमिनां भक्त्या सदा कुर्वते,
त्रैसंध्यं सुविचित्रकाव्यरचनामुच्चारयंतोनराः ।
पुण्याढ्या मुनिराजकीर्तिसहिता भूत्वा तपोभूषणास्ते
भव्याः सकलावबोधरुचिरां सिद्धि लभन्ते पराम् ।।१।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

वृषभोऽजितनामा च संभवश्चाभिनंदनः । सुमतिः पद्मभासश्च सुपार्श्वो जिनसत्तमः ।।१।। चंद्राभः पुष्पदंतश्च शीतलो भगवान्मुनिः । श्रेयांश्च वासुपूज्यश्च विमलो विमलद्युतिः ।।२।। अनंतो धर्मनामा च शांति कुंथुर्जिनोत्तमः । अरश्च मल्लिनाथश्च सुव्रतो नमितीर्थकृत् ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हरिवंशसमुद्भूतोऽरिष्टनेमिर्जिनेश्वरः । ध्वस्तोपसर्गदैत्यारिः पार्श्वो नागेंद्रपूजितः ।।४।। कर्मांतकृन्महावीरः सिद्धार्थकुल-संभवः । एतेसुरासुरौघेण पूजिता विमलत्विषः ।। पूजिता भरताद्यैश्च भूपेंद्रै र्भू रिभूतिभिः । चतुर्विधस्य संघस्यशांति कुर्वंतु शाश्वतीम् ।।६।। जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिः सदास्तु मे । सम्यक्त्वमेव संसारवारणं मोक्षकारणम् ।।७।।

पुष्पांजलि क्षेपण करना ।

श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः सदाऽस्तुमे ।
सज्ज्ञानमेव संसारवारणं मोक्षकारणम् ।।८।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

गुरौ भक्तिर्गुरौ भक्तिर्गुरौ भक्तिः सदाऽस्तुमे ।
चारित्रमेव संसारवारणं मोक्षकारणम् ।।९।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथ देवजयमाला प्राकृत ।

वत्ताणुट्ठाणे जणदणुदाणे पइपोसिउ तुहु खत्तधरु ।
तुहु चरण विहाणे केवलणाणे तुहु परमप्पउ परमपरु ।।१।।

जय रिसहरिसीसर णमियपाय । जय अजिय जियंगमरोस-राय ।। जय संभव संभवकयविओय । जय अहिणंदण-णंदिय पओय ।। जय सुमइ सुमइसम्मयपयास, जय पउम-प्पह पउमाणिवास ।। जय जयहि सुपास सुपासगत्त । जय चंदप्पह चंदाहवत्त ।।३।। जय पुप्फयंत दंततरंग । जय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीयल सीयलवयणभंग ।। जय सेय सेयकिरणोहसुज्ज । जय वासुपुज्ज पुज्जाण पुज्ज ।।४।। जय विमल विमल-गुणसेढिठाण । जय जयहि अणंताणंतणाण । जय धम्म धम्मतित्थयर संत । जय सांति सांति विहियायवत्त ।।५।। जय कुंथु कुंथुपहुअंगिसदय । जय अर अर माहर विहिय-समय ।। जय मल्लि मल्लि आदामगंध । मुणिसुव्वय सुव्वयणिबंध ।।६।। जय णमि णमियामरणियरसामि । जय णेमि धम्मरहचक्कणेमि । जय पास पासछिदणकिवाण जय बड्ढमाण जसबड्ढमाण ।।७।।

घत्ता—

इह जाणिय णामहिं दुरियविरामहिं परहिंवि णमिय सुरा-वलिहिं । अणहणहिं अणाइहिं समिय कुवाइहिं पणिविवि अरहंतावलिहिं ।।

ॐ ह्रीं वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं निर्वं० ।।

अथ शास्त्रजयमाला ।

संपइसुहकारण कम्मवियारण भवसमुद्दतारणतरणं । जिणबाणि णमस्समि सत्तिपयासमि सग्गमोक्खसंगमकरणं ।।१।। जिणंदमुहाओ विणिग्गयतार । गणिंदविगुंफिय गंथपयार ।। तिलोयहिमंडण धम्मह खाणि । सयापण-मामि जिणिंदहवाणी ।।२।। अवग्गह ईह अवाय जु एहिं । सुधारण भेयहिं तिण्णि सएहिं ।। मई छत्तीस बहुप्प-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुहाणि। सया पणमामि जिणिदह वाणि ॥३॥ सुदं पुण दोण्णि अणेयपयार। सुबारहभेय जगत्तयसार॥ सुरिंद-णरिंदसमुच्चिओ जाणि। सयापणमामि जिणिदह वाणि ॥४॥ जिणिदगणिदणरिंदह रिद्धि। पयासइ पुण्ण पुरा-किउलद्धि॥ णिउग्गुपहिल्लउ एहु वियाणि। सया पण० ॥५॥ जु लोय अलोयह जुत्ति जणेइ। जु तिण्णि विकाल सरूव भणेइ॥ चउग्गइ लक्खण दुज्जउ जाणि सयापण-मामि जिणिदह वाणि ॥६॥ जिणिदचरित्तविचित्त मुणेइ। सुसावहिधम्मह जुत्ति जणेइ॥ णिउग्गु वि तिज्जउ इत्थु वियाणि। सया पणमामि जिणिदहवाणि ॥७॥ सुजीव अजीवह तच्चह चक्खु। सुपुण्ण विपाव विबंध विमुक्खु॥ चउत्थुणिउग्गुविभासिय जाणि। सया पणमामि जिणिदह-वाणि ॥८॥ तिभेयहिं ओहिविणाणविचित्तु। चउत्थरि-जोविउलं मइउत्तु॥ सुखाइय केवलणाण वियाणि। सया पणमामि जिणिदहवाणि ॥९॥ जिणिदह णाणु जगत्तय भाणु। महातमणासिय सुक्खणिहाणु॥ पय-च्चउ भत्तिभ-रेण वियाणि। सया पणमामि जिणिदह वाणि ॥१०॥ पयाणि सुबारहकोडि सयेण। सुलक्ख तिरासिय जुत्ति-भरेण॥ सहस अट्ठावण पंच वियाणि॥ सया पणमामि जिणिदह वाणि ॥११॥ इक्कावण कोडिउ लक्ख अठेव। सहसचुलसीदिसया छक्केव॥ सढाइगवीसह गंथ पयाणि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सया पणमामि जिणिंदहवाणि ॥१२॥

धत्ता–

इह जिणवरवाणि विशुद्धमई। जो भवियणणियमण धरई।
सो सुरणरिंद संपइ लहई। केवलणाणवि उत्तरई ॥१३॥
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ गुरु जयमाला प्राकृत।

भवियह भवतारण, सोलहकारण, अज्जवि तित्थयरत्तणहं।
तवकम्म असंगइ दयधम्मंगइ पालवि पंचमहव्वयहं ॥१॥
बंदामि महारिसि सोळवंत। पंचेंदियसंजम जोगजुत्त ॥
जे ग्यारह अंगह अणुसरंति। जे चउदह पुव्वह मुणि थुणंति ॥२॥पादाणु सारवर कुट्ठबुद्धि। उप्पुण्णु जाह आयासरिद्धि ॥ जे पाणाहारी तोरणीय। जे रुक्खमूल आतवणीय ॥३॥ जे मोणिधाय चंदाहणीय। जे जत्थत्थवणि णिवासणीय ॥ जे पंचमहव्वय धरणधीर। जे समिदिगुत्ति पालणहि वीर ॥४॥ जे वड्ढहि देहविरत्तचित्त। जें रायरोसभयमोहचित्त ॥ जे कुगइहि संवरु विगयलोह। जे दुरियविणासणकामकोह॥५॥ जे जल्लमल्लतणलित्त गत्त। आरंभपरिग्गह जे विरत्त ॥ जे तिण्णकाल बाहरगमंति। छट्ठट्ठम दसमउ तउ चरंति ॥६॥ जे इक्कगास दुइगास लिंति। जे णीरसभोयण रइ करंति ॥ ते मुणिवर बंदउं ठियमसाण। जे कम्मडहइ वर सुक्कझाण ॥७॥ बारह-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विहसंजम जे धरंति। जे चारिउ विकहा परिहरंति ॥ बावीस परीषह जे सहंति। संसारमहण्णउ ते तरंति॥८॥ जे धम्मबुद्धि महियलि थुणंति। जे काउस्सग्गो णिसि गमंति॥ जे सिद्धविलासणि अहिलसंति। जे पक्खमास आहार लिंति ॥९॥ गोदूहण जे वीरासणीय जे घणुहसेज वज्जासणीय। जे तववलेण आयास जंति। जे गिरि गुहकंदरविबरथंति ॥१०॥ जे सत्तु मित्त समभाव चित्त। ते मुनिवर वंदउं दिढचरित्त॥ चउवीसह गंथह जें विरत्त। ते मुनिवर वंदउं जगपवित्त ॥११॥ जे सुज्झाणिज्झा एकचित्त। वंदामि महारिसि मोखपत्त॥ रयणत्तयरंजिय सुद्धभाव। ते मुणिवर वंदउं ठिदिसहाव॥१२॥

घत्ता—जे तपसूरा, संजमधीरा, सिद्धवधू अणुराईया।
रयणत्तयरंजिय, कम्महगंजिय, ते ऋषिवरमइ झाईया॥

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ देवशास्त्र गुरु की भाषा पूजा

अडिल्ल छंद ।

प्रथम देव अरहंत सुश्रुत सिद्धांत जू ।
गुरु निर्ग्रंथ महन्त मुकतिपुर पन्थजू ।।
तान रतन जगमांहि सो ये भवि ध्याइये ।
तिनकी भक्ति प्रसाद परमपद पाइये ।।

दोहा ।

पूजों पद अरहंत के, पूजों गुरुपद सार ।
पूजों देवी सरस्वती, नितप्रति अष्ट प्रकार ।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

गीता छंद ।

सुरपति उरगनरनाथ तिनकर, बन्दनीक सुपदप्रभा ।
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छवि मोहित सभा ।।
वर नीर क्षीर समुद्र घट भरि, अग्र तसु बहुविधि नचूं ।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिर्ग्रंथ नित पूजा रचूं ।।१।।

मलिनवस्तु हर लेत सब, जलस्वभाव मलछीन ।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन ।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा: ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जे त्रिजग उदरमँझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहिततहरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे॥
तसु भ्रमरलोभित घ्राणपावन, सरस चंदन घसि सचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिर्ग्रंथ नित पूजा रचूं॥२॥

चंदन शीतलता करै, तपतवस्तु परवीन।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहाः।

यह भवसमुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठई।
अतिदृढ़ परमपावन जथारथ, भक्ति वर नौका सही॥
उज्वल अखंडित शालि तंदुल, पुंज धरि त्रयगुण जचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिर्ग्रंथ नित पूजा रचूं॥३॥

तंदुल शालि सुगंधि अति, परम अखंडित बीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहाः।

जे विनयवन्त सुभव्य उर, अंबुज प्रकाशन भान हैं।
जे एक मुख चारित्र भाषत, त्रिजगमांहि प्रधान हैं॥
लहि कुन्द कमलादिक पहुप, भव भव कुवेदनसों बचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिर्ग्रंथ नित पूजा रचूं॥४॥

विविध भाँति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा: ।।४।।

अति सबल मदकन्दर्प जाको, क्षुधा उरग अमान है।
दुस्सह भयानक तासु नाशनको, सुगरुड़ समान है।।
उत्तम छहों रसयुक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूं।
अरहन्त श्रुतसिद्धांतगुरुनिर्ग्रंथ नित पूजा रचूं।।५।।

नानाविधि संयुक्त रस, व्यञ्जन सरस नवीन।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा: ।।५।।

जे त्रिजग उद्यम नाश कीने, मोहतिमिर महाबली।
तिहिकर्मघाती ज्ञानदीपप्रकाशज्योति प्रभावली।।
इह भाँति दीप प्रजाल, कंचन के सुभाजन में खचूँ।
अरहन्त श्रुतसिद्धांतगुरुनिर्ग्रंथ नित पूजा रचूँ।।६।।

स्वपरप्रकाशक जोति अति, दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा: ।।६।।

जो कर्म ईंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगन्धि ताकरि, सकल परिमलता हँसै।।
इह भाँति धूप चढ़ाय नित, भवज्वलनमांहि नहीं पचूँ।
अरहन्त श्रुतसिद्धांतगुरुनिर्ग्रन्थ नितपूजा रचूँ।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अग्निमांहि परिमल दहन, चन्दनादि गुणलीन ।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन ॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहाः ।

लोचन सुरसना घ्राण उर, उत्साह के करतार हैं ।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फलगुणसार हैं ॥
सो फल चढ़ावत अर्थ पूरन, परम अमृतरस सचूँ ।
अरहन्त श्रुतसिद्धांतगुरुनिर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥८॥
जे प्रधान फल फल विषैं, पंचकरण रसलीन ।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन ॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहाः ।

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ ।
वर धूप निरमल फल विविध, बहुजनमके पातक हरूँ ॥
इहभाँति अर्घ चढ़ाय नित भवि, करत शिवपंकति मचूँ ।
अरहन्त श्रुतसिद्धांतगुरुनिर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥९॥
बसुविधि अर्घ संजोय कैं, अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन ॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहाः ॥

अथ जयमाला ।

देवशास्त्र गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार ।
भिन्न भिन्न कहुँ आरती, अल्प सगुण विस्तार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्धरी छन्द ।

कर्मन को त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादशदोषराशि ।
जे परमसुगुण हैं अनन्तधीर, कहवतके छयालिस गुणगंभीर ।।
शुभसमवशरणशोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर शीस धार ।
देवाधिदेव अरहन्तदेव, बन्दौं मनवचतनकरि सुसेव ।।३।।
जिनकी ध्वनि है ओंकाररूप, निरअक्षरमय महिमा अनूप ।
दश अष्ट महाभाषा समेत, लघुभाषा सात सतक सुचेत ।।४।।
सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूँथे बारह सु अंग ।
रवि शशि न हरैं सो तमहराय, सो शास्त्र नमों बहुप्रीतिलाय ।।
गुरु आचारज उवझाय साध, तननगन रतनत्रय निधि अगाध
संसारदेह वैराग्य धार, निरवांछि तपें शिवपद निहार ।।६।।
गुण छत्तिस पच्चिस आठबीस, भवतारनतरन जिहाज ईश ।
गुरुकी महिमा बरणी न जाय, गुरुनाम जपों मनवचनकाय ।।

सोरठा ।

कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति बिना श्रद्धा धरै ।
'द्यानत' श्रद्धावान, अजर अमर पद भोगवै ।।८।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

(इति देवशास्त्रगुरु की भाषा पूजा समाप्त)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री तीस चौबीसीजी की पूजा

स्थापना ।

पांच भरत शुभ क्षेत्र पांच ऐरावते
आगत नागत वर्तमान जिन शास्वते ।
सो चौबीसी तीस जजूं मन लायके
आह्वानन विधि करूं बार त्रय गायके ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु-संबंधि भरतैरावतक्षेत्राणां त्रिकालवर्ति चतुर्विंशतिजिनेन्द्राः विंशत्युत्तर सप्तशत संख्याकाः अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक ।

नीर दधि क्षीर सम ल्यायो, कनक की भृङ्ग भरवायो ।
अबै तुम चरण ढिग आयो, जनम जरा रोग नशवायो ।।
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे ।
सात शत बीस जिन राजे, पूजतां पाप सब भाजे ।।१।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधि भरतैरावतदशक्षेत्राणां त्रिकालवर्ति चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभजुत चन्दनं ल्यायो, संग करपूर घसवायो ।
धार तुम चरण ढरवायो, भव आताप नशवायो ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे ।
सात शत बीस जिन राजे, पूजतां पाप सब भाजे ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सबंधि भरतैरावतदशक्षेत्राणां त्रिकालवर्ति चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो चन्दनं नि० ।

चंद सम तंदुलं सारं, किरण मुक्ता जु उनिहारं ।
पुंज तुम चरण ढिग धारं, अक्षयपद प्राप्त के कारं ।।
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे ।
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ।।३।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु संवंधि भरतैरावतदशक्षेत्राणां त्रिकालवर्ति चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं नि० ।

पुष्प शुभ गंधजुत सोहै, सुगंधित नास मन मोहै ।
जजत तुम मदन क्षय होवै, मुक्ति पुर पलक में जोवै ।।
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे ।
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ।।४।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधि भरतैरावतदशक्षेत्राणां त्रिकालवर्ति चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं नि० ।

सरस व्यंजन लिया ताजा, तुरत बनवायकें खाजा ।
चरन तुम जजों हों महाराजा, क्षुधादिक पलक में भाजा ।।
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे ।
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ।।५।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधि भरतैरावतदशक्षेत्राणां त्रिकालवर्ति चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं नि० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीप तम नाशकारी है, सरस शुभ जोतिधारी है।
होंय दशों दिशा उजारी हैं, धूम्र मिस पाप-छारी है ॥
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे ।
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ॥६॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधि भरतैरावतदशक्षेत्राणां त्रिकालवर्ति चतुर्विंशतिजिनेद्रेभ्यो दीप नि० ।

सरस शुभ धूप दस अंगी, जलाऊँ अग्नि के संगी ।
करम की सैन चतुरंगी, चरन तुम पूजतें भंगी ।
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे ।
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ॥७॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधि भरतैरावत दशक्षेत्राणांत्रिकालवर्ति चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो धूपं नि० ।

मिष्ट उत्कृष्ट फल ल्यायो, अष्ट अरि दुष्ट नशवायो ।
चरण जिन भेंट धरवायो, कार्य मनवांछता पायो ॥
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजें ।
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ॥८॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधि भरतैरावतदशक्षेत्राणां त्रिकालवर्ति चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो फलं नि० ।

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ करमें नवीना है ।
पूजते पाप छीना है, 'भानुमल' जोर कीना है ॥
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे ।
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधि भरतैरावतदशक्षेत्राणां त्रिकालवर्ति चतुर्विशतिजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं नि० ।

आदि सुदर्शन मेरू तनी दक्षिण दिशा ।
भरत क्षेत्र सुखदाय सरस सुन्दर लसा ॥
तहाँ चौबीसी तीन यजूँ जिनराजजी ।
बहत्तर जिन सर्वज्ञ नमूँ शिर नायजी ॥१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु संबंधि दक्षिणभरतस्य त्रिकालवर्ति चतुर्विंशतिजिनेद्रेभ्योऽर्घ्यं नि० ।

याहि मेरू उत्तर ऐरावत सोहनो ।
आगत नागत वर्तमान मन मोहनो ॥
तहाँ चौबीसी तीन यजूँ जिनरायजी ।
बहत्तर जिन सर्वज्ञ नमूँ शिरनायजी ॥२॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु संबंधि उत्तरैरावत क्षेत्रस्य त्रिकालवर्ति चतुर्विंशतिजिनेद्रेभ्योऽर्घ्यं नि० ।

कुसुमलता छन्द ।

खण्ड धात को विजय मेरु के, दक्षिण दिशा भरत शुभ जान ।
तहाँ चौबीसी तीन विराजे, आगत नागत अरु वर्तमान ॥
तिनकेचरणकमल को निशिदिन, अर्घचढ़ायकरूँ उर ध्यान ।
इस संसार भ्रमण तें तारो, अहो जिनेश्वर ! करुणावान ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वविजयमेरु संबंधि दक्षिणभरतस्य त्रिकालवर्ति चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वं० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी दीप की प्रथम शिखिर की, उत्तर ऐरावत जु महान ।
आगत नागत वर्तमान जिन, बहत्तरि सदा सासते जान ।।
तिनकेचरणकमलको निशदिन,अर्घचढ़ाय करूं उर ध्यान ।
इस संसार भ्रमण तें तारो, अहो ! जिनेश्वर करुणावान ।।

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वविजयमेरु संबं उत्तरैरावत क्षेत्रस्य त्रिकालवर्ति चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्व०

खंड धातु की अचल सुमेर, दक्षिण तास भरत बहु घेर ।
तामें चौबीसी त्रय जान, आगत नागत और वर्तमान ।।५।।

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमअचलमेरु सबंधि दक्षिणभरतस्य त्रिकालवर्ति चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्व० ।

अचल मेरु उत्तर दिश जान, ऐरावत शुभ क्षेत्र बखान ।
तामें चौबीसी त्रय जान, आगत नागत और वर्तमान ।।६।।

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमअचलमेरु संबंधि उत्तरैरावतक्षेत्रस्य त्रिकालवर्ति चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं नि० ।

द्वीप पुष्कर की पूरव दिशा, मंदिर मेरुकी दक्षिण भरत-सा ।
ता विषैं चौबीसी तीन जू, अर्घलेय जजूं परवीन जू ।।७।।

ॐ ह्रीं पुष्कर द्वीप पूर्वमंदिरमेरु संबंधि दक्षिणभरतस्य त्रिकालवर्ति चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं नि० ।

गिरि सूं मंदिर उत्तर जानिये, क्षेत्र ऐरावत शुभ जानिये ।
ता विषें चौबीसी तीन जू, अर्घ लेय जजूं परवीन जू ।।८।।

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीप पूर्वमन्दिरमेरुसम्बन्धि उत्तरैरावत क्षेत्रस्य त्रिकालवर्ति चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं नि० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पश्चिम पुष्कर गिरि विद्यु तमाल, तासु दक्षिण भरत है विशाल ।
तामें चौबीसी हैं जु तीन, वसु द्रव्य लेय जजूं परवीन ।।९।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीप पश्चिमविद्यु न्मालीमेरुसम्बन्धि दक्षिण भरतस्य त्रिकालवर्ति चतुर्विंशति-जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं नि० ।

याही गिरि के उत्तर जु ओर, ऐरावत क्षेत्र बनो निहोर ।
तामें चौबीसी हैं जु तीन, वसु द्रव्यलेय जजूं परवीन ।।१०।।

ओं ह्रीं पुष्करद्वीप पश्चिम विद्यु न्मालीमेरुसम्बन्धि उत्तरैरावतक्षेत्रस्य त्रिकालवर्ति चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं नि० ।

दीप अढ़ाई के विषै, पंचमेरु है ताँह ।
दक्षिण उत्तर तासके, भरत ऐरावत भाय ।।
भरत ऐरावत भाय एक क्षेत्र के मांही ।
चौबीसी हैं तीन दसों दिशि ही के मांही ।।
दसों क्षेत्र के सर्व सातसैं बीस जिनेश्वर;
अर्घ ल्याय कर जोडि जजैं 'रविमल' सुमन कर ।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि दश क्षेत्राणाम् त्रिकालवर्ति चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः विंशत्युत्तरसप्तशतसंख्याकेभ्योऽर्घ्यं नि० ।

जयमाल ।

दोहा ।

चौबीसी तीसों नमों, पूजा परम रसाल ।
मन, बच, तन त्रय शुद्ध कर, अब वरणों जयमाल ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय दीप अढ़ाई में जुसार, गिर पांच मेरु उन्नत अपार ।। ता गिर पूर्व-पश्चिम जु ओर, शुभ क्षेत्र विदेह बसै जु ठौर । ता दक्षिण क्षेत्र भरत जानि, है उत्तर ऐरावत महान । गिर पाँच तनें दश क्षेत्र जोय, ताको वरणन अब सुनो लोय । जो भरत तनो वरणन विशाल तैसो ही ऐरावत विशाल ।। इस क्षेत्र बीच विजियार्द्ध एक, वा ऊपर विद्याधर अनेक । इस क्षेत्र विषें षट खंड जानि, तहाँ छहों काल बरतैं महान । जहँ तीन काल में भोग भूमि, दस जाति कल्पतरु रहे झूमि । तब चौथो काल लगै जु आय, तब कर्म भूमि वर्ते सुहाय । जब तीर्थंकर को जन्म होय, सुरलेय जजैं गिर पर सुजोय । बहु भक्ति करें सब देव आय ताथेई थेई थेई थई तान ल्याय । हरि तांडव नृत्य करे अपार, सब जीवन मन आनन्द कार । इत्यादि भक्ति करि के सुरेन्द्र, निज थान जाय जुत देव वृन्द । इह विधि पाँचों कल्यान होय, हरि भक्ति करै अति हर्ष जोय ।। या काल विषें पुण्यवंत जीव, नर जन्म धार शिव लहै अतीव ।। तब त्रेसठ पुरुष प्रवीन होय, सब याही काल विषै जु होय ।। जब पंचम काल करे प्रवेश, मुनिधर्म तणों नहीं रहे लेश । विरले कोई दक्षिन देश मांहि, जिनधर्मी नर बहुते जु नाहिं । जब आवत है षष्ठमजु काल, दुख में दुख प्रगटे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अति कराल। जहां माँस भक्षी नर सर्व होय, तहां धर्म नाम सुनिये न कोय। दश क्षेत्रन में रचना समान, जिनवाणी भाष्यो सो प्रमाण। चौबीसी है इक क्षेत्र तीन, दश क्षेत्रनि में जानो प्रवीन। आगत नागत अरू वर्तमान, सत सात शतक अरु बीस जानि। सब ही महाराज नमूँ त्रिकाल, मम भवसागर तें लेहु निकाल॥ यह बचन हिये मैं धार लेहु, मम रक्षा करहु जिनेन्द्र देव। 'रविमल' की बिनती सुनहु नाथ, मैं पाँय परूँ जुग जोरि हाथ। मम बांछित कारज करौ पूर, यह अरज हृदय में धरि जरूर॥

घत्ता

शत सात जु बीसं, श्री जगदीशं, आगत नागत वर्तंतु हैं।
मन बच्च तन पूजै, सुध मन हूजै, स्वर्ग मुक्ति पद पावत हैं।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि दश क्षेत्राणाम् त्रिकालवर्ति चतुर्विशति जिनेन्द्रेभ्यः विंशत्युत्तरसप्तशतसंख्याकेभ्योऽर्घ्यं नि०।

दोहा।

सम्वत् सत उन्नीस के, ता ऊपर पुनि आठ।
पोष कृष्ण तृतीया गुरु, पूरन भयो जु पाठ॥
अक्षर मात्रा की कसर, बुध जन शुद्ध करेय।
अल्प बुद्धि मो सोचकें, दोष कबहूं नहीं देय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पढ़्यो नहीं व्याकरण मैं, पिंगल देख्यो नाहिं ।
जिनवाणी परसाद तें, उमंग भई घट माहिं ।।
मान बड़ाई ना चहूं, चहूं धर्म को अंग ।
नित प्रति पूजा कीजियो, मनमें धारि उमंग ।।

इत्याशीर्वादः इति ।

बीस तीर्थंकर भाषा पूजा ।

दीप अढ़ाई मेरु पन, अब तीर्थंकर बीस ।
तिन सबकी पूजा करूँ, मनवचतन धरि शीस ।।१।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

इंद्रफणींद्रनरेंद्र,-वंद्य पद निर्मलधारी ।
शोभनीक संसार, सार गुण है अविकारी ।।
क्षीरोदधिसम नीरसों (हो), पूजों तृषा निवार ।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेहमंझार ।।
श्रीजिनराज हो, भव तारणतरण जिहाज ।।१।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो जन्ममृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामिति स्वाहाः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(इस पूजा में यदि वीस पुंज करने हों, तो इस प्रकार मंत्र वोलना चाहिये,)

ॐ ह्रीं सीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-संजात-स्वयंप्रभु-ऋषभानन-अनंतवीर्य-सूरप्रभू-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-चन्द्रबाहु-भुजंगम-ईश्वर-नेमिप्रभू-वीरसेण-महाभद्र देवयशोऽजितवीर्येति विंशतिविद्यमान तीर्थङ्करेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामिति स्वाहा।

तीनलोक के जीव, पाप आतापसताये।
तिनको साता दाता, शीतल वचन सुहाये॥
बावन चंदनसों जजूँ (हो,) भ्रमनतपन निरवार।
सीमं० ॥२॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं०।

यह संसार अपार, महासागर जिनस्वामी।
तातें तारे बड़ीभक्ति-नौका जगनामी॥
तंदुल अमल सुगन्धसों (हो,) पूजों तुम गुणसार।
सीमं० ॥३॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं।

भविक-सरोज-विकाश, निंद्यतमहर रवि से हो।
जति श्रावकआचार, कथनको तुमही बड़े हो।
फूलसुवास अनेकसों (हो), पूजों मदन प्रहार।
सीमं० ॥४॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कामनाग विषधाम, नाशको गरुड़ कहे हो ।
क्षुधा महादवज्वाल, तासुको मेघ लहे हो ।।
नेवज बहुघृत मिष्ठसों (हो) पूजों भूख विडार ।
सीमं० ।।५।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं० ।।

उद्यम होंन न देत, सर्व जगमांहि भरचो है ।
मोह महातम घोर, नाश परकाश करचो है ।।
पूजों दीपप्रकाश यों (हो), ज्ञानज्योति करतार ।
सीमं० ।।६।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं० ।।

कर्म आठ सब काठ, भार विस्तार निहारा ।
ध्यान अग्निकर प्रगट, सर्व कीनो निरवारा ।।
धूप अनूपम खेवतें (हो), दुःख जलैं निरधार ।
सीमं० ।।७।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं ।।

मिथ्यावादी दुष्ट, लोभऽहंकार भरे हैं ।
सबको छिनमें जीत जैनके मेर खरे हैं ।
फल अति उत्तम सों जजों (हो), वाञ्छितफल दातार ।
सीमं० ।।८।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल फल आठों दर्व,अरघ कर प्रीति धरी है। गणधर इन्द्रनिहूतैं, थुति पूरी न करी है। 'द्यानत' सेवक जानके (हो), जगतैं लेहु निकार। सीमं० ॥९॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं ॥

अथ जयमाला आरती।

सोरठा।

ज्ञानसुधाकर चंद, भविकखेतहित मेघ हो।
भ्रमतमभान अमंद, तीर्थंकर बीसों नमों ॥१॥

चौपाई।

सीमंधर सीमंधर स्वामी। जुगमंधर जुगमंधर नामी। बाहु बाहु जिन जगजन तारे। कर्म सुबाहु बाहुबल दारे ॥१॥ जात सुजात केवलज्ञानं। स्वयंप्रभू प्रभु स्वयं प्रधानं। ऋषभानन ऋषि भाननदोषं। अनन्त वीरज वीरज-कोषं ॥२॥ सौरीप्रभ सौरीगुणमालं। सुगुण विशाल विशाल दयालं। वज्रधार भवगिरिवज्जर हैं। चन्द्रानन चन्द्रानन वर हैं ॥३॥ भद्रबाहु भद्रनिके करता। श्रीभुजंग भुजंगम हरता। ईश्वर सबके ईश्वर छाजैं। नेमिप्रभु जस नेमि विराजैं ॥४॥ वीरसेन वीरं जग जानै। महाभद्र महाभद्र बखानै। नमों जसोधर जसधरकारी। नमों अजित-वीरज बलधारी ॥५॥ धनुष पांचसै काय विराजै। आव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोडिपूरब सब छाजै ।। समवशरण शोभित जिनराजा। भवजलतारन तरन जिहाजा ।।६।। सम्यक रत्नत्रयनिधि-दानी । लोकालोकप्रकाशक ज्ञानी ।। शत इन्द्रनिकरि बंदित सोहैं । सुरनर पशु सबके मन मोहैं ।।७।।

दोहा ।

तुमको पूजै बन्दना, करै धन्य नर सोय ।
'द्यानत' सरधा मन धरै, सो भी धरमी होय ।।८।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अकृत्रिम चैत्यालय पूजा ।

चौपाई ।

आठ करोड़ रु छप्पन लाख ।
सहस सत्यानव चतुशत भाख ।।
जोड़ इक्यासी जिनवर थान ।
तीन लोक आह्वान करान ।।१।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंध्यष्टकोटि : षट्पंचाशल्लक्षसप्तनवति सहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्रावतरवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् ।

क्षीरोदधिनीरं उज्ज्वल सीरं,छान सुचीरं भरि झारी। अति मधुर लखावन परम सु पावन, तृषा बुझावन गुण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारी ॥ वसु कोटि सु छप्पन लाख सत्तावण, सहस चार- सत इक्यासी । जिनगेह अकृत्रिम तिहुँजग भीतर, पूजत पद ले अविनाशी ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष सप्तनवति- सहस्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो जलं नि० ।

मलयागिर पावन चन्दन बावन, ताप बुझावन घसि- लीनो । धरि कनक कटोरी द्वै करजोरी, तुमपद ओरी चित दीनो ॥ वसु ॥२॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष सप्तनवति- सहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो चन्दनं नि० ।

बहुभांति अनोखे तन्दुल चोखे, लखि निरदोषे हम लीने । धरि कंचनथाली तुमगुणमाली, पुञ्जविशाली कर- दीने ॥ वसु० ॥३॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष सप्तनवति- सहस्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो अक्षतान् नि० ।

शुभ पुष्प सुजाती है बहुभांती, अलि लिपटाता लेय वरं । धरि कनक रकेबी करगह लेवी, तुमपद जुगकी भेट धरं ॥ वसु० ॥४॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष सप्तनवति- सहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो पुष्पं नि० ।

खुरमा जु गिंदोड़ा बरफी पेड़ा, घेवर मोदक भरि थारी । विधिपूर्वक कीने घृतपयभीने, खाँड में लीने सुख- कारी ॥ वसु० ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष सप्तनवति-सहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं नि०।

मिथ्यात महातम छाय रह्यो हम, निजपर परणति, नहिं सूझै। इहकारण पाकैं दीप सजा कैं, थाल धराकैं हम पूजैं ॥ वसु० ॥६॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष सप्तनवति-सहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो दीपं नि०।

दशगन्ध कुटाकैं धूप बनाकैं, निजकर लेकैं धरि ज्वाला। तसु धूम्र उड़ाई, दशदिश छाई, बहु महकाई अति आला ॥ वसु० ॥७॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंध्यष्टकोटिषट्पंचा शल्लक्ष सप्तनवति-सहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो धूपं नि०।

बादाम छुहारे श्रीफल धारे, पिस्ता प्यारे द्राखवरं। इन आदि अनोखे लखि निरदोषे, थाल पजोखे, भेंट धरं ॥ वसु० ॥८॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंध्यष्टकोटिषट्पंचा शल्लक्ष सप्तनवति सहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो फलं नि०।

जल चंदन तंदुल कुसुम रु नेवज, दीप धूप फल थाल रचौं ॥ जयघोष कराऊँ बीन बजाऊँ, अर्घ चढ़ाऊँ खूब नचूं ॥ वसु० ॥९॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंध्यष्ट कोटिषट्पंचा शल्लक्ष सप्तनवति-सहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं नि०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ प्रत्येक अर्घ

चौपाई।

अधोलोक जिन आगमसाख। सात कोडि अरु बहतर लाख ।। श्रीजिनभवन महा छवि देह। ते सब पूजौं वसुविध लेई ।।१।।

ॐ ह्रीं अर्घालोकसंबंधि सप्तकोटि द्विसप्ततिलक्षाकृतिम श्रीजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं।

मध्यलोक जिनमन्दिर ठाठ। साढे चारशतक अरु आठ ।। ते सब पूजौं अर्घ चढ़ाय। मनवच तन त्रयजोग मिलाय ।।२।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक संबंधि चतुः शताष्टपंचाशत् श्रीजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं।

अडिल्ल।

ऊर्ध्वलोकके मांहि भवनजिनजानिये।
लाखचुरासी सहस सत्याणव मानिये ।।
तापै धरि तेईस जजौं शिर नायकैं।
कंचन थाल मझार जलादिक लायकैं ।।

ॐ ह्रीं उर्ध्वलोकसम्बन्धिचतुरशीतिसप्तनवतिसहस्र त्रयोविंशति श्रीजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं।

वसुकोटि छप्पनलाख ऊपर,सहस्र सत्याणव मानिये।
शतच्यारपै गिनले इक्यासी, भवन जिनवर जानिये ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिहुँलोक भीतर सासते, सुर असुर नर पूजा करैं। तिन भवनकों हम अर्घ लेकैं, पूजि हैं जगदुख हरैं ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्नवति सहस्र-चतुः शतैकाशीति अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं ।

अथ जयमाला ।

दोहा।

अब वरणों जयमालिका सुनो भव्य चितलाय ।
जिनमंदिर तिहुँलोकके, देहु सकल दरसाय ॥१॥

पद्धरि छंद

जय अमल अनादि अनंत जान । अनिमित जु अकीर्तम अचल थान ॥ जय अजय अखंड अरूपधार । षटद्रव्य नहीं दीसै लगार ॥२॥ जय निराकार अविकार होय । राजत अनंत परदेश सोय ॥ जे शुद्ध सुगुण अवगाह पाय । दशदिशामांहि इहविध लखाय ॥३॥ यह भेद अलोकाकाश जान । तामध्य लोक नभ तीन मान ॥ स्वयमेव बन्यो अविचल अनंत । अविनाशि अनादि जु कहत संत ॥४॥ पुरषा अकार ठाढो निहार । कटि हाथ धारि द्वै पग पसार ॥ दच्छिन उत्तरदिशि सर्व ठौर । राजू जु सात भाख्यो निचौर ॥५॥ जय पूर्व अपर दिश घाटबाधि । सुन कथन कहूं ताको जु साधि ॥ लखि श्वभ्रतलैं राजू जु सात । मधिलोक एक राजू रहात ॥६॥ फिर ब्रह्मस्वर्ग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजू जु पांच। भूसिद्ध एक राजू जु सांच ॥ दश चार ऊंच राजू गिनाय। षटद्रव्य लये चतुकोण पाय ॥७॥ तसु वातवलय लपटाय तीन। इह निराधार लखियो प्रवीन ॥ त्रसनाड़ी तामधि जान खास। चतुकोन एक राजू जु व्यास ॥८॥ राजू उतंग चौदह प्रमान। लखि स्वयंसिद्ध रचना महान ॥ तामध्य जीव त्रस आदि देय। निजथान पाय तिष्ठें भलेय ॥९॥ लखि अधो भागमें श्वभ्रथान। गिन सात कहे आगम प्रमान ॥ षट थान-माहिं नारकि वसेय। इक श्वभ्रभाग फिर तीनभेय ॥१०॥ तसु अधोभाग नारकि रहाय। फुनि ऊर्ध्वभाग द्वय थान पाय ॥ बस रहे भवन व्यंतर जु देव। पुर हर्म्य छजै रचना स्वमेव ॥११॥ तिहं थान गेह जिनराज भाय। गिन सातकोटि बहतरि जु लाख ते भवन नमों मन वचन काय। गति श्वभ्रहरनहारे लखाय ॥१२॥ पुनि मध्यलोक गोला अकार। लखि दीप उदधि रचना विचार ॥ गिन असंख्यात भाखे जु संत। लखि संभुर-मन सबके जु अंत ॥१३॥ इक राजुव्यासमें सर्व जान। मधिलोक तनों इह कथन मान ॥ सबमध्यदीप जंबू गिनेय त्रयदशम रुचिकवर नाम लेय ॥१४॥ इन तेरहमें जिनधाम जान शतचार अठावन है प्रमान ॥ खग देव असुर नर आय आय। पद पूज जांय शिर नाय नाय ॥१५॥ जय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊर्ध्वलोक सुर कल्पवास। तिहँ थान छजैं जिन भवन खास॥ जय लाख चुरासीपै लखेय। जय सहससत्याणव और ठेय ॥१६॥ जय वीसतीन फुनि जोड़ देय। जिनभवन अकीर्तम जान लेय॥ प्रतिभवन एक रचना कहाय। जिनबिंब एकशत आठ पाय ॥१७॥ शतपंच धनुष उन्नत लसाय। पदमासनजुत वर ध्यान लाय॥ शिर तीनछत्र शोभित विशाल। त्रय पादपीठ मणिजडित लाल ॥१८॥ भामंडलकी छवि कौन गाय। फुनि चँवर ढुरत चौसठि लखाय॥ जय दुंदुभिरब अदभुत सुनाय। जय पुष्पवृष्टि गंधोदकाय ॥१९॥ जय तरु अशोक शोभा भलेय। विभूति राजत अमेय। घट तूप छजैं मणिमाल पाय। घटधूम्र धूम्र दिग सर्व छाय ॥२०॥ जयकेतुपंक्ति सोहै महान। गंधर्वदेवगुण करत गान॥ सुर जनमलेत लखि अवधि पाय। तिहँथान प्रथम पूजन कराय॥ जिनगेहतणो वरनन अपार। हम तुच्छबुद्धि किम लहत पार॥ जय देव जिनेश्वर जगत भूप। नमि 'नेम' मंगै निज देहरूप॥२२॥

दोहा।

तीन लोकमें सासते श्रीजिनभवनविचार।
मनवचतनकरि शुद्धता पूजौं अरघ उतार॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवति सहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिहुं जगभीतर श्री जिनमंदिर, बने अकीर्त्तम अति सुखदाय। नर सुर खगकरि वन्दनीक जे तिनको भविजन पाठ कराय ॥ धनधान्यादिक संपति तिनके,पुत्रपौत्र सुख होत भलाय ॥ चक्री सुर खग इन्द्र होयकें, करम नाश शिवपुर सुख थाय ॥२३॥

(इत्याशीर्वाद—पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ

अथ कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालयों के अर्घ

कृत्याऽकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्नित्यं त्रिलोकीगतान्,
वन्दे भावनव्यन्तरान् द्युतिवरान् कल्पामरान् सर्वगान् ।
सद्‌गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैःसद्दीप धूपैः फलै र्नीराद्यै श्च
यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शांतये ॥१॥

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसम्बन्धि जिनविम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा: ॥

वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु नन्दीश्वरे यानि च मंदरेषु ।
यावंति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि बंदे जिनपुंगवानां ॥
अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां । वनभवनगतानां
दिव्यवैमानिकानां ॥ इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां ।
जिनवरनिलयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥२॥ जम्बूधातकिपु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ष्करार्द्धवसुधाक्षेत्रत्रये ये भवाश्चन्द्राम्भोजशिखंडिकण्ठ-कनकप्रावृड्घनाभाजिनः ॥ सम्यग्ज्ञानचरित्रलक्षणधराः दग्धाष्टकर्मेन्धनाः। भूतानागतवर्त्तमानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः॥३॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जम्बु-वृक्षे। वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचिके कुण्डले मानुषांके। इष्वाकारेंऽजनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरेस्वर्गलोके ज्योति-र्लोकेऽभिबन्दे भुवनमहितले यानि चैत्यालयानि ॥५॥ द्वौ कुन्देदुतुषारहार धवलौ द्वाविन्द्रनीलप्रभौ, द्वौ बन्धूकसमप्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ। शेषाः षोड़श जन्ममृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रभा-स्ते संज्ञानदिवाकरा सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ॥६॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धोकृत्याकृत्रिमचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपा० ॥

इच्छामि भन्ते—चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सा-लोचेओ। अहलोय तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमा-किट्टिमाणि जांणि जिणचेईयाणि ताणि सव्वाणि, तीसुवि लोयेसुभवणवासियवाणंवितरजोयसियकप्पवासियत्ति चउ-विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गन्धेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धुव्वेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ह्वाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति बन्दन्ति णमस्संति। अहमवि इहसन्तो तत्थसन्ताइ णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बन्दामि णमस्सामि । दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

(इत्याशीर्वाद: । परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ पौर्वाह्निक-माध्याह्निक-अपराह्निक देवबंदनायां पर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजाबंदनास्तवसमेतं श्रीचैत्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(कार्योत्सर्ग करना और णमोकार मन्त्र का नौ बार जाप करना । जप करते समय आठ दिशाओं में आठ पंखुडी (दल) वाले हृदय कमल की मन में कल्पना करना चाहिये । फिर उन पँखुडी और कर्णिका के बीच में प्रत्येक पर पहिले उच्छ्वास में 'णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं' ये दो पद, दूसरे उच्छ्वास में 'णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं' ये दो पद और तीसरे उच्छ्वास में 'णमो लोए सव्वसाहूणं' यह एक पद उच्चारण करना चाहिये इस तरह सत्ताईस उच्छ्वास में नौ बार जाप देना उचित है)

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं । णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।। (ताव कार्यं पावकम्मंदुच्चरियंवोस्सरामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ सिद्ध पूजा प्रारभ्यते

ऊर्ध्वाधोरयुतं सविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्ठितं, वर्गापूरित-दिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितं। अंतः पत्रतटेष्वनाहत-युतं ह्लींकारसंवेष्टितं। देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः ॥१॥

ॐ ह्लीं श्री सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्लीं श्री सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्लीं श्री सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

द्रव्याष्टकं

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वन्देऽहं परमात्मान, ममूर्त्तमनुपद्रवम् ॥१॥
सकलामरेन्द्र सेव्यं, ज्ञानामृत पान तृप्त निजभावं।
संस्थापयामि सिद्धं, कर्मानलदाह मेघौघं ॥२॥

(सिद्धयन्त्र की स्थापना)

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्मगम्यं
हीनादि भावरहितं भववीतकायम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रेवापगावरसरो–यमुनोद्भवानां
नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्धचक्रम् ॥१॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

आनन्दकन्दजनकं घनकर्ममुक्तं
सम्यक्त्वशर्मगरिमं जननार्तिवीतम् ।
सौरभ्यवासितभुवं हरिचन्दनानां
गन्धैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥२॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व० ॥

सर्वावगाहनगुणं सुसमाधिनिष्ठं
सिद्धं स्वरूपनिपुणं कमलं विशालम् ।
सौगन्ध्यशालिवनशालिवराक्षतानां
पुंजैर्यजे शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम् ॥३॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० ॥२॥

नित्यं स्वदेहपरिमाणमनादिसंज्ञं
द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम् ।
मन्दारकुन्दकमलादिवनस्पतीनां
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरसिद्धचक्रम् ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् निर्वं० ॥४॥

ऊर्द्धस्वभावगमनं सुमनोव्यपेतं
ब्रह्मादिबीजसहितं गगनावभासम् ।
क्षीरान्नसाज्यवटकै रसपूर्णगर्भै—
नित्यं यजे चरुवरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥५॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविध्वंसनाय नैवेद्यं निर्वं० ॥५॥

आतङ्कशोकभयरोगमदप्रशान्तं
निर्द्वन्दभावधरणं महिमानिवेशम् ।
कर्पूरवर्तिबहुभिः कनकावदातै—
र्दीपैर्यजे रुचिबरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥६॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वं० ॥६॥

पश्यन्समस्तभुवनं युगपन्नितान्तं
त्रैकाल्यवस्तुविषये निविडप्रदीपम् ।
सद्द्रव्यगन्धघनसारविमिश्रितानां
धूपैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥७॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धासुराधिपतियक्षनरेन्द्रचक्रै–
ध्येयं शिवं सकलभव्यजनैः सुवन्द्यम् ।
नारिङ्गपूगकदलीफलनारिकेलैः
सोऽहं यजे वरफलैर्वरसिद्धचक्रम् ।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रतगणैः सङ्गं वरं चन्दनं
पुष्पौघं विमलं सदक्षतचयं रम्यं चरुं दीपकम् ।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वाञ्छितम् ॥९॥

ॐ ह्रीं सिध्दचक्राधिपतये सिध्दपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं
सूक्ष्मस्वभावपरमं यदनन्तवीर्यम् ।
कर्मौघकक्षदहनं सुखशस्यबीजं
वन्दे सदा निरुपमं वरसिद्धचक्रम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

त्रैलोक्येश्वरवन्दनीयचरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतीं
यानाराध्य निरुद्धचण्डमनसः सन्तोऽपि तीर्थङ्कराः ।
सत्सम्यक्त्वविबोधवीर्यविशदाऽव्याबाधताद्यैर्गुणै–
र्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान् ॥११॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ जयमाला ।

विराग सनातन शांतनिरंश, निरामय निर्भय निर्मल हंस।
सुधामविबोधनिधानविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥
बिदूरितसंसृतिभाव निरंग, समामृतपूरित देव विसंग।
अबंध कषायविहीन विमोह, प्रसीद विशुद्धसुसिद्धसमूह ॥
निवारितदुष्कृतकर्मविपाश, सदामलकेवलकेलिनिवास।
भवोदधिपारग शांत विमोह, प्रसीद विशुद्धसुसिद्धसमूह ॥
अनंतसुखामृतसागर धीर, कलंक रजोमल भूरिसमीर।
बिखण्डितकामविरामविमोह, प्रसीदविशुद्धसुसिद्धसमूह॥
विकारविवर्जिततर्जितशोक, विबोधसुनेत्रविलोकितलोक।
विहारविरावविरंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥
रजोमलखेदविमुक्तविगात्र, निरंतरनित्य सुखामृतपात्र।
सुदर्शनराजितनाथविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥
नरामरबंदित निर्मलभाव, अनंतमुनीश्वरपूज्य विहाव।
सदोदय विश्व महेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥
विदंभ वितृष्ण विदोष विनिद्र, परापरशंकर सार वितंद्र।
विकोप विरूप विशंक विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥
जरामरणोज्झितवीतविहार, विचिंतितनिर्मलनिरहंकार।
अचिन्त्यचरित्रविदर्पविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥
विवर्णविगंधविमानविलोभ, विमायविकायविशब्दविशोभ।
अनाकुल केवल सर्वविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता।

असमसमयसारं चारुचैतन्यचिह्नं, परपरणतिमुक्तं पद्मनंदीद्रवन्द्यम्। निखिलगुणनिकेतं सिद्धचक्रं बिशुद्धं, स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम् ॥१॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अडिल्ल छन्द।

अविनाशी अविकार परमरसधाम हो, समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो। शुद्धबुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत हो, जगतशिरोमणि सिद्ध सदा जयवंत हो ॥१॥ ध्यानअग्निकर कर्म कलंक सबै दहे, नित्य निरंजन देव स्वरूपी हो रहे। ज्ञायक के आकार ममत्व निवारकैं, सो परमातम सिद्ध नमूं सिर नायकैं ॥२॥

दोहा।

अविचल ज्ञान प्रकाशते, गुण अनन्त की खान।
ध्यान धरै सो पाइए, परम सिद्ध भगवान ॥१॥

यहाँ सिद्ध भक्तिपूर्वक कायोत्सर्ग करे।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथ सिद्ध पूजा का भावाष्टक

निजमनोमणिभाजनभारया, समरसैकसुधा रसधारया।
सकलबोधकलारमणीयकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोहि तृषा दुख देत, सो तुमने जीती प्रभू।
जल से पूजूं तोय, मेरो रोग निवारियो ।।१।। जलम् ।।

सहजकर्मकलंकविनाशनै रमलभावसुवासितचन्दनैः ।
अनुपमानगुणावलिनायकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ।।२।।

हम भव आतप मोहि, तुम न्यारे संसार से ।
कीज्यो शीतल छांह, चन्दन से :पूजा करूं ।।२।। चन्दनम् ।।

सहजभावसुनिर्मलतन्दुलैः सकलदोषविशालविशोधनैः ।
अनुपरोधसुबोधनिधानकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ।।३।।

हम अवगुण समुदाय, तुम अक्षय गुण के भरे ।
पूजूं अक्षत ल्याय, दोष नाश गुण कीजियो ।।३।। अक्षतम् ।।

समयसारसुपुष्पसुमालया सहजकर्मकरेण विशोधया ।
परमयोगबलेन वशीकृतं सहजसिद्धमहं परिपूजये ।।४।।

काम अग्नि है मोहि, निश्चय शील स्वभाव तुम ।
फूल चढ़ाऊँ तोय, मेरो रोग निवारियो ।।४।। पुष्पम् ।।

अकृतबोधसुदिव्यनैवेद्यकैर्विहित जातजरामरणान्तकैः ।
निरवधिप्रचुरात्मगुणालयं सहजसिद्धमहं परिपूजये ।।५।।

मोहि क्षुधा दुख भूर, ध्यान खड्ग करि तुम हती ।
मेरी बाधा चूर, नेवेज से पूजा करूँ ।।५।। नैवेद्यम् ।।

सहजरत्नरुचिप्रतिदीपकैः रुचिविभूतितमः प्रविनाशनैः ।
निरवधिस्वविकाशप्रकाशनैः सहजसिद्धमहं परिपूजये ।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोह तिमिर हम पास, तुमपै चेतन ज्योति है।
पूजों दीप प्रकाश, मेरो तिमिर निरवारियो ॥६॥ दीपम् ॥

निजगुणाक्षयरूपसुधूपनैः स्वगुणघातिमलप्रविनाशनैः।
विशदबोधसुदीर्घसुखात्मकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥७॥

अष्टकर्म बन जाल, मुक्त मोहि स्वामी सुख करो।
खेऊँ धूप रसाल, अष्टकर्म निवारियो ॥७॥ धूपम् ॥

परमभावफला वलिसम्पदा सहजभावकुभावविशोधया।
निजगुणास्फुरणात्म निरंजनंसहजसिद्धमहंपरिपूजये ॥८॥

अन्तराय दुख टाल, तुम अनन्त थिरता लही।
पूजूँ फल धरसार, विघन टाल शिव फल करो ॥८॥ फलम् ॥

नेत्रोन्मीलिविकाशभावनिवहैरत्यंतबोधाय वै।
वार्गंधाक्षतपुष्प दामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैः ॥
यश्चिन्तामणि शुद्धभावपरमज्ञानात्मकैरर्चयेत्।
सिद्धं स्वादुमगाध बोधमचलं, संचर्चयामोवयम् ॥९॥

हममें आठों ही दोष, जजहुं अर्घ ले सिद्धजी।
दीज्यो वसु गुण मोय, कर जोड़े द्यानत खड़ा ॥९॥ अर्घम् ॥

अर्घावली।

सोलह कारण का अर्घ।

जल फल आठों द्रव्य चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करों मनलाय।
परम गुरू हो जय जय नाथ परम गुरू हो ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय ।
परम गुरू हो, जय जय नाथ परम गुरू हो ।।

ओं ह्रीं दरशन विशुद्धयादि षोडश कारणेभ्यो अर्घं० ।

दश लक्षण का अर्घं ।

आठों द्रव्य सम्भार, द्यानत अधिक उछाह सों ।
भव आताप निवार, दश लक्षण पूजों सदा ।।

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो अर्घं० ।।

रत्नत्रय का अर्घं ।

आठों द्रव्य निरधार, उत्तम से उत्तम लिये ।
जन्म रोग निरवार, सम्यक रत्नत्रय भजो ।।

ओं ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय त्रयोदश प्रकार सम्यक चारित्राय च अर्घं० ।।

पचमेरू का अर्घं ।

आठ दरव मय अर्घ बनाय, द्यानत पूजों श्री जिनराय
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करूँ प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।

ओं ह्रीं पंचमेरू सम्बन्धि अशीति जिनालयेभ्यो अर्घं ।।

नन्दीश्वर द्वीप का अर्घं ।

यह अर्घं कियो निज हेत, तुमको अरपत हों ।
द्यानत कीनों शिव खेत, भूमि समरपत हों ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पूज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों ।।
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयेभ्यो अर्घं० ।।

महाव्रतों का अर्घ ।

उदकचन्दन तन्दुल पुष्पकैः चरू सु दीप सु धूप फलार्घकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिन व्रत महं यजे ।।
ॐ ह्रीं श्री १०८ महाव्रतेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहाः।

कविवर वृन्दावनजी कृत

समुच्चय चौबीसी जिनपूजा

छन्द कवित्त ।

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय । चन्द पुहुप शीतल श्रेयाँस नमि,वासुपूज पूजित सुरराय ।। विमल अनंत धरम जस उज्जवल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय । मुनि-सुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र अवतर अ०
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र मम सन्नि०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(चाल—द्यानतरायकृत नंदीश्वरद्वीपाष्टक की तथा गर्भाराग आदि अनेक चालों में)

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा ।
भरि कनक कटोरी धीर, दीनी धार धरा ॥
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही ।
पदजजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष मही ॥१॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी ।
जिन चरनन देत चढ़ाय, भव आताप हरी ॥चौ० २॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० ॥

तंदुल सित सोम समान, सुन्दर अनियारे ।
मुकताफल की उनमान, पुञ्ज धरौं प्यारे ॥चौ० ३॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वं० ॥

वरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगन्ध भरे ।
जिन अग्र धरों गुणमंड, काम कलंक करे ॥चौ० ४॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥

मन मोदन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधारि हने ॥चौ० ५॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगै ।
सब तिमिरमोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागै ॥चौ० ६॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशगंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खेवत हों।
मिस धूम करम जरि जांहि, तुम पद सेवत हों ।।चौ० ७।।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं० निर्वपामी० ।।

शुचिपक्वसरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो।
देखत दृगमनको प्यार, पूजत सुख पायो ।। चौ० ८।।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामी० ।।

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों।।
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ।।९।।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा: ।।

जयमाला।

श्रीमत तीरथ नाथ पद, माथ नाय हित हेत।
गाऊँ गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत ।।१।।

छन्द घत्तानन्द।

जय भवतम भंजन जनमनकंजन, रंजन दिन मनि स्वच्छकरा। शिव मग परकाशक,अरिगण नाशक चौबीसों जिनराज वरा ।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छन्द पद्धरी ।

जय रिषभदेव रिषिगन नमंत, जय अजित जीत वसुअरि तुरंत ।
जय संभव भवभय करत चूर, जय अभिनंदन आनंदपूर ॥
जय सुमति सुमति दायक दयाल, जय पद्म पद्मदुति तन रसाल ।
जय जय सुपास भवपास नाश, जय चंद चंदतनदुति प्रकाश ॥
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत, जय शीतल शीतल गुननिकेत ।
जय श्रेयनाथ नुतसहजभुज्ज, जय वासवपूजित वासुपुज्ज ॥
जय विमल विमलपद देनहार, जय जय अनंत गुनगन अपार ।
जय धर्म धर्म शिव शर्म देत, जय शांति शांति पुष्टी करेत ॥
जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय, जय अरजिन वसुअरि छय करेय ।
जय मल्लि मल्ल हत मोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रतशल्ल दल्ल ॥
जय नमि नित वासवनुत सप्रेम, जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम ।
जय पारसनाथ अनाथनाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ ॥

छन्द घत्तानन्द ।

चौबीस जिनंदा आनँदकंदा, पापनिकंदा सुखकारी ।
तिनपद जुगचंदा उदय अमंदा, वासववंदा हितकारी ॥१॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा: ॥

सोरठा ।

भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसौं जिनराजवर ।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै ॥१॥

इत्याशीर्वाद: ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ श्रीसप्तऋषि पूजा ।

छप्पय ।

प्रथम नाम श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋषीश्वर ।
तीसर मुनि श्रीनिचय सर्वसुन्दर चौथो वर ।।
पंचम श्रीजयवान विनयलालस षष्टम भनि ।
सप्तम जय मित्राख्य सर्व चारित्रधाम गनि ।।
ये सातौं चारणऋद्धिधर, करूं तासु पद थापना ।
मैं पूजूं मनवचकायकरि, जो सुख चाहूं आपना ।।

ॐ ह्रीं चारणादि ऋद्धिधर श्रीसप्तऋषीश्वरा:! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं चारणादि ऋद्धिधर श्रीसप्तऋषीश्वरा: ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: ।

ॐ ह्रीं चारणादि ऋद्धिधर श्रीसप्तऋषीश्वरा: अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

गीता छन्द

शुभतीर्थ उद्भव जल अनूपम, मिष्ट शीतल लायके ।
भव तृषा कंद निकंद कारण, शुद्ध घट भरवायके ।।
मन्वादि चारण ऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं ।
ता करें पातिक हरें सारे, सकल आनंद बिस्तरूं ।।

ॐ ह्रीं चारणादि ऋद्धिधर श्रीसप्तऋषिश्वरेभ्यो जलं नि० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीखण्ड कदलीनन्द केशर, मन्द मन्द घिसायके।
तसुगंध प्रसरति दिगदिगन्तर,भर कटोरी लायके।। मन्वा०
ॐ ह्रीं चारणादि ऋद्धिधर श्रीसप्तऋषीश्वरेभ्यो चन्दनं नि०।
अति धवल अक्षत खण्ड वर्जित, मिष्ट राजनभोगके।
कलधौत थारा भरत सुन्दर, चुनित शुभ उपयोगके।। मन्वा०
ॐ ह्रीं चारणादि ऋद्धिधर श्रीसप्तऋषीश्वरेभ्यो अक्षतान् नि०।
बहु वर्ण सुवरण सुमन आछे, अमल कमल गुलाबके।
केतकी चम्पा चारु मरुआ, चुने निजकर चावके।। मन्वा०
ॐ ह्रीं चारणादि ऋद्धिधर श्रीसप्तऋषीश्वरेभ्यो पुष्पं नि०।
पकवान नाना भांति चातुर रचित शुद्ध नये नये।
सदमिष्ट लाडू आदि भर बहु, पुरट के थारालये।। मन्वा०
ॐ ह्रीं चारणादि ऋद्धिधर श्रीसप्तऋषीश्वरेभ्यो नैवेद्यं नि०।
कलधौत दीपक जडित नाना, भरित गौघृत सारसों।
अतिज्वलितजगमगजोतिजाकि, तिमिरनाशनहारसों।।म०
ॐ ह्रीं चारणादि ऋद्धिधर श्री सप्तऋषीश्वरेभ्यो दीपं नि०।
दिक्चक्र गंधित होत जाकर, धूप दशअँगी कही।
सो लाय मनवचकाय शुद्ध लगायकर खेऊं सही।। मन्वा०
ॐ ह्रीं चारणादि ऋद्धिधर श्रीसप्तऋषीश्वरेभ्यो धूपं नि०।
बर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायके।
द्रावडी दाडिम चारु पुंगी, थाल भर भर लायके।। मन्वा०
ॐ ह्रीं चारणादि ऋद्धिधर श्री सप्तऋषीश्वरेभ्यो फलं नि०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित,अर्घ कीजे पावना।।मन्त्रा०

ॐ ह्रीं चारणादि ऋद्धिधर श्रीसप्तऋषीश्वरेभ्यो अर्घं नि० ।

अथ जयमाला ।

छन्द त्रिभंगी ।

बंदूं ऋषि राजा, धर्म जहाजा, निज पर काजा करत भले।
करुणाके धारी, गगन विहारी, दुख अपहारी, भरम दले ।।
काटत जमफंदा, भविजन वृन्दा, करत अनंदा चरणनमें।
जो पूजैं ध्यावैं, मंगल गावैं, फेर न आवैं भववन में ।।

पद्धरी छन्द ।

जय श्रीमनु मुनिराजा महंत, त्रस थावरकी रक्षा करंत ।
जय मिथ्यातम नाशक पतंग, करुणारसपूरित अङ्ग-अङ्ग ।।
जय श्रीस्वरमुनि अकलंक रूप,पदसेव करतनित अमर भूप।
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कंचन समान ।।
जय निचय सप्त तत्वार्थभास,तप रमातनौ तनमें प्रकाश ।
जय विषयरोध संबोधभान,परपरणतिनाशनअचलध्यान ।।
जयजयहि सर्व सुन्दर दयाल,लख इन्द्रजालवत जगतजाल।
जयतृष्णाहारी रमणराम,निजपरिणतिमें पायो विराम ।।
जय आनंदघन कल्याणरूप, कल्याण करत सबको अनूप ।
जयमदनाशन जयवान देव,निरमदविचरत सबकरत सेव।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जेय विनय लाल्लस अमान,सब शत्रु मित्र जानत समान।
जयकृशितकाय तप के प्रभाव,छवि छटा उड़ति आनंददाय।।
जयमित्रसकल जगके सुमित्र,अनगिनत अधम कीने पवित्र।
जय चंद्रवदन राजीवनैन, कबहूं विकथा बोलत न बैन ।।
जय सातौ मुनिवर,एक संग,नित गगन-गमन करते अभंग।
जय आये मथुरापुर मंझार,तहँ मरी रोगको अति प्रचार।।
जय जय तिन चरणनि के प्रसाद, सब मरी देवकृत भई बाद।
जयलोक करे निर्भय समस्त,हम नमत सदा नितजोरि हस्त।।
जय ग्रीषमऋतु पर्वत मंझार,नित करत अतापन योगसार।
जय तृषा परीषह करत जेर,कहुँ रंचचलत नहिं मन-सुमेर।।
जय मूल अठाइस गुणनधार, तप उग्र तपत आनंदकार ।
जय वर्षाऋतु में वृक्षतीर, तहँ अति शीलल झेलत समीर ।।
जय शीतकाल चौपट मंझार,कै नदी सरोवर तट विचार।
जय निवसत ध्यानारूढ होय,रंचत नहिं मटकतरोम कोय।।
जय मृतकासन वज्रासनीय, गोदूहन इत्यादिक गनीय ।
जय आसन नाना भाँतिधार,उपसर्ग सहित ममता निवार।।
जय जपत तिहारो नाम कोय,लख पुत्रपौत्र कुलवृद्धि होय।
जय भरे लक्ष अतिशय भंडार,दारिद्रतनो दुख होय छार।।
जयचोर अग्नि डांकिन पिशाच,अरुईति भीतिसब नसतसांच।
जयतुमसुमरतसुखलहत लोक,सुरअसुर नवत पद देत धोक।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रोला।

ये सातौं मुनिराज महातप लक्ष्मीधारी।
परम पूज्य पद धरैं सकल जगके हितकारी।
जो मनवचतन शुद्ध होय सेवै औ ध्यावै।
सो जन मनरंगलाल अष्ट ऋद्धिन कौं पावै॥

ॐ ह्रीं श्री मन्वादि सप्तर्षिभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा:॥

दोहा।

नमन करत चरनन परत, अहो गरीब निवाज।
पंच परावर्तन नितैं, निरवारौ ऋषिराज॥

इत्याशीर्वाद:

चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाणक्षेत्र पूजा

सोरठा।

परम पूज्य चौबीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये।
सिद्ध भूमि निशदीस, मनवचतन पूजा करौं॥१॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गीता छन्द ।

शुचि क्षीर दधि सम नीर निरमल, कनकझारी में भरौं ।
संसार पार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौं ।।
सम्मेदगढ़ गिरिनार चंपा, पावापुरि कैलाशकौं ।
पूजों सदा चौबीसजिन निर्वाण भूमि निवासकौं ।।१।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा: ।।१।।

केशर कपूर सुगंध चन्दन, सलिल शीतल विस्तरौं ।
भवताप को संताप मेटो, जोर कर विनती करौं ।।सम्मेद।।२।।
(चन्दनम्)

मोती समान अखंड तंदुल, अमल आनन्द धरि तरों ।
औगुण हरौ गुण करौ हमकों, जोर कर विनतीकरों।।सम्मेद।।
(अक्षतान्)

शुभफूलरास सुवासवासित, खेद सब मन की हरों ।
दुखधामकामविनाशमेरो, जोरिकर विनती करों।।सम्मेद।।
(पुष्पम्)

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरों ।
यह भूखदूषण टारप्रभुजी, जोर कर विनती करों ।।सम्मेद।।
(नैवेद्यम्)

दीपक प्रकाश उजास उज्जल, तिमिरसेती नहीं डरों ।
संशयविमोहविभ्रर्म तमहर, जोरकर विनती करों।।सम्मेद।।
(दीपम्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुभ धूप परम अनूप पावन, भाव पावन आचरों।
सब करम पुंज जलाय दीजो, जोर कर बिनती करों॥ सम्मेद॥
(धूपम्)

बहुफल मंगाय चढ़ाय उत्तम, चार गतिसों निरवरों।
निश्चै मुकति फल देहु मोकों, जोर कर बिनती करों॥ सम्मेद॥
(फलम्)

जल गंध अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूपायन धरों।
'द्यानत' करो निरभय जगततैं, जोर कर बिनती करों॥ सम्मेद॥
(अर्घम्)

अथ जयमाला।

सोरठा।

श्री चौबीस जिनेश, गिरि कैलासादिक नमो।
तीरथ महा प्रदेश, महापुरुष निरवान तें॥१॥

चौपाई १६ मात्रा।

नमों रिषभ कैलाश पहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं।
वासुपूज्य चंपापुर बंदों, सनमति पावापुर अभिनंदों॥
बंदों अजित अजित पददाता, बंदों संभव भव दुखघाता।
बंदों अभिनंदन गणनायक, बंदों सुमति सुमतिके दायक॥
बंदों पदम मुकति पदमाधर, बंदों सुपार्श्व आशपासाहर।
बंदों चन्द्र प्रभ प्रभु चंदा, बंदों सुविधि सुविधि निधिकंदा॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंदों शीतल अघतप शीतल,बंदों श्रियांस श्रियांस महीतल।
बंदों विमल विमल उपयोगी, बंदों अनंत अनंत सुखभोगी ।।
बंदों धर्म धर्म विसतारा, बंदों शांति शांति मनधारा ।
बंदों कुंथु कुंथु रखवालं, बंदों अर अरिहर गुनमालं ।।
बंदों मल्लि काममल्ल चूरन, बंदों मुनिसुव्रत व्रत पूरन ।
बंदों नमि जिननमितसुरासुर, बंदों पार्श्व पार्श्व भ्रमजगहर।।
बीसों सिद्ध भूमि जा ऊपर, शिखर समेद महागिरि भूपर।
भाव सहित बंदै जो कोई१, ताहि नरक पशुगत नहिं होई ।।
नरगति नृप सुर शक्र कहावै, तिहुँ जग भोगि भोग शिव पावै।
विघन विनाशन मंगलकारी, गुण विलास बंदौं भवतारी ।।

छन्द घत्तानन्द ।

जो तीरथ जावै, पाप मिटावै, ध्यावै गावै भगत करै ।
ताको जस कहिये, संपति लहिये, गिरि के गुणको बुध उचरै।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति० ।।

१ "एक बार बन्दे जो कोई" ऐसा भी पाठ है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ पंचमेरु पूजा

गीताछन्द

तीर्थंकरोंके न्हवनजलतैं, भये तीरथ शर्मदा।
तातैं प्रदच्छन देत सुरगन, पंचमेरन की सदा॥ दो जलधि ढाईदीपमें सब गनत मूल विराजही। पूजों असी जिनधाम प्रतिमा, होहि सुख, दुख भाजही ॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्। ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

चौपाई

शीतलमिष्टसुवास मिलाय, जलसों पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिंबेभ्यो जलं निर्वं०॥१॥

जलकेशरकरपूर मिलाय, गंधसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय।पांचों०॥ चंदनं०॥
अमल अखंड सुगंध सुहाय, अच्छतसौं पूजौं जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।पांचों।अक्षतान्॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वरन अनेक रहे महकाय, फूलनसौं पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।पांचों०। पुष्पं ।।
मनवांछित बहु तुरत बनाय, चरुसौ पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।पांचों०। नैवेद्यं ।।
तमहर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसों पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ।पांचों०। दीपं ।।
खेऊं अगर अमल अधिकाय, धूपसों पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ।पांचों०। धूपं ।।
सुरस सुवर्ण सुगंध सुभाय, फलसों पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ।।पांचों०।। फलं ।।
आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ।।पांचों।।अर्घं ।।

अथ जयमाला ।

सोरठा ।

प्रथम सुदर्शन स्वामि, विजय अचल मंदिर कहा ।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जगमें प्रगट ।। १ ।।
प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भूपर छाजै ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मनवचतन बन्दना हमारी ।
ऊपर पंच शतकपर सोहै, नंदनवन देखत मन मोहै ।।
चैत्या० ।।३।। साढ़े बासठ सहस उंचाई, वन सौमनस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शोभै अधिकाई ।।चै०।।४।। ऊंचा जोजन सहस छत्तीसं, पांडुकवन सोहै गिरिशीसं ।।चै०।।५।। चारों मेरु समान बखाने, भूपर भद्रसाल चहुँ जाने। चैत्यालय सोलह सुख-कारी, मनवचतन बंदना हमारी ।।६।। ऊंचे पांच शतक पर भाखे, चारों नंदनवन अभिलाखे ।।चैत्या०।।७।। साढे पचपन सहसउतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा ।। चैत्या० उच्चअठाइससहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये।। चैत्या० सुर नर चारन बंदन आवैं, सो शोभा हम किह मुख गावैं। चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मनवचतन बंदना हमारी।।१०।।

दोहा ।

पंचमेरुकी आरती, पढ़ै सुनै जो कोय ।
'द्यानत' फल जानै प्रभू, तुरत महासुख होय ।।११।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनर्बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वं०।।
(अर्घ के बाद विसर्जन करना चाहिये)

श्री नन्दीश्वर द्वीप [अष्टाह्निका] पूजा

अडिल्ल ।

सरब परब में बड़ो अठाई परब है,
नन्दीश्वर सुर जांहि लेय वसु दरब है।
हमें सकति सो नांहि इहां करि थापना,
पूजों जिन गृह प्रतिमा है हित आपना ।।१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमा समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमा समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

कंचनमणिमय भृंगार, तीरथनीरभरा,
तिहुंधारदयी, निरवार जामन मरन जरा ।
नन्दीश्वरश्रीजिनधाम, बावन पुञ्ज करों,
वसुदिन प्रतिमा अभिराम,आनन्दभावधरों ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.र्वपामीति स्वाहा ।

भवतपहर शीतल वास, सो चन्दन नाहीं,
प्रभु यह गुन कीजे सांच, आयौ तुम ठांहीं ।।नंदी०।।चंदनं।।
उत्तम अक्षत जिनराज, पुञ्ज धरे सोहैं,
सब जीते अक्षसमाज,तुम सम अरुको है ।।नंदी०।।अक्षतान्।।
तुम कामविनाशकदेव, ध्याऊँ फूलनसौं,
लहि शील लक्ष्मी एव, छूटूं सूलनसौं ।।नंदी०।।पुष्पं।।
नेवज इन्द्रियबलकार, सो तुमने चूरा ।
चरु तुम ढिग सोहै सार,अचरज है पूरा ।।नंदी०।।नैवेद्यं ।।
दीपककी ज्योति प्रकाश, तुम तनमांहि लसै ।
टूटै करमनकी राशि, ज्ञानकणी दरसै ।।नंदी०।।दीपं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्णागरुधूपसुवास, दशदिशिनारि बरै।
अति हरषभाव परकाश, मानों नृत्य करै ॥नंदी०॥ धूपं॥
बहुविधफल ले तिहुँकाल, आनन्द राचत है।
तुम शिवफल देहु दयाल, तो हम जाचत है ॥नंदी०॥फलं।
यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हों।
'द्यानत' कीनों शिवखेत,-भूमि समरपतु हों ॥नंदी०॥ अर्घ्यं

अथ जयमाला।

दोहा।

कातिक फागुन साढ़के, अंत आठ दिनमाँहिं।
नंदीश्वर सुर जात हैं, हम पूजें इह ठाँहिं ॥१॥

एकसौ त्रेसठ कोडि जोजनमहा। लाख चौरासि एक एक दिशमें लहा॥ आठमो द्वीप नंदीश्वरं भास्वरं। भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥२॥ चारदिशि चार अंजनगिरी राजहीं। सहस चौरासिया एकदिश छाजहीं। ढोलसम गोल ऊपर तले सुंदरं। भौन० ॥३॥ एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी। एक इक लाख जोजन अमल जलभरी। चहुंदिशा चार वन लाख जोजन वरं। भौन० ॥४॥ सोल वापीनमधि सोल गिरि दधि-मुखं। सहस दश महा जोजन लखत ही सुखं। बावरी-कोंन दोमांहि दो रतिकरं। भौन० ॥५॥ शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे। चार सोलह मिलैं सर्व बावन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लहे ।। एक इक सीसपर एक जिनमंदिरं । भौन० ।।६।।
बिंब आठ एकसौ रतनमइ सोंहही, देवदेवी सरव नयनमन मोहही। पांचसै धनुष तन पद्मआसन परं। भौन० ।।७।।
लाल नख मुख नयन स्याम अरु स्वेत हैं, स्यामरंग भोंह सिरकेश छवि देत हैं ।। वचन बोलत मनो हँसत कालुषहरं। भौन०।। कोटि शशि भानदुति तेज छिप जाता है, महावैराग परिणाम ठहरात । बयन नहिं कहैं लखिहोत लखि होत सम्यकधरं । भौन० ।।९।।

सोरठा ।

नंदीश्वर जिनधाम, प्रतिमामहिमाको कहै,
'द्यानत' लीनों नाम यहै भगति सब सुख करै ।:

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वंपश्चिमोत्तरदक्षिणे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो पूर्णार्घंनिर्वपामीति स्वाहा। (इत्याशीर्वादः)

अथ सोलहकारण पूजा

अडिल्ल

सोलहकारण भाय तीर्थंकर जे भये, हरषे इन्द्र अपार मेरुपै ले गये। पूजाकरि निजधन्यलख्यौ बहुचावसों, हमहू षोडशकारन भावें भावसौं ।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

चौपाई

कंचनझारी निरमल नीर, पूजौं जिनवर गुनगंभीर ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकरपदपाय ।
परमगुरु होय, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥१॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं नि० ।

चंदन घसों कपूर मिलाय, पूजौं श्रीजिनवर के पाय ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥दरश०॥चंदनं॥
तंदुल धवल सुगंध अनूप । पूजौं जिनवर तिहुँ जगभूप ।
परमगुरु हो,जयजय नाथ परमगुरुहो॥दरश०॥अक्षतान्॥
फूल सुगंध मधुपगुंजार । पूजौं जिनवर जगआधार ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥दरश०॥पुष्पं॥
सदनेवज बहुविध पकवान । पूजौं श्रीजिनवर गुणखान ।
परमगुरु हो,जय जय नाथ परमगुरु हो ॥दरश०॥नैवेद्यं॥
दीपकजोति तिमिर क्षयकार, पूजूं श्रीजिन केवलधार ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥दरश०॥दीपं॥
अगर कपूर गंध शुभखेय । श्रीजिनवर आगे महकेय ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥दरश०॥धूपं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीफल आदि बहुत फलसार। पूजों जिन वांछितदातार।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥दरश०॥फलं॥
जल फल आठों दरब चढ़ाय। 'द्यानत' वरत करों मनलाय।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥दरश०॥अर्घ्यं॥

अथ जयमाला।

दोहा।

षोडषकारण गुण करै, हरै चतुरगतिवास।
पाप पुण्य सब नाशकै, ज्ञानभान परकास ॥१॥

चौपाई।

दरशविशुद्धि धरै जो कोई। ताको आवागमन न होई॥ विनय महा धारै जो प्रानी। शिववनिता की सखी बखानी॥२॥शीलसदादिढ़ जो नर पालै। सोऔरनकी आपद टालै॥ ज्ञानाभ्यासकरै मनमाहीं। ताकै मोहमहातम नाहीं॥३॥ जो संवेगभाव विसतारै। स्वर्गमुकतिपद आप निहारै॥दान देय मन हरष विशेखै। इह भव जस परभव सुख देखै॥४॥ जोतप तपै खपै अभिलाषा। चूरै करमशिखर गुरु भाषा। साधुसमाधिसदा मन लावै। तिहुँजगभोग भोगि शिव जावै ॥५॥ निशदिन वैयावृत्य करैया। सो निहचै भवनीर तिरैया॥ जोअरहंतभगति मन आनै।सो जन विषयकषायन जानै॥६॥ जो आचारजभगति करैहै।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो निर्मल आचार धरै है ।। बहुश्रुतवंतभगति जो करई । सो नर संपूरन श्रुत धरई।।७।। प्रवचनभगति करै जो ज्ञाता । लहै ज्ञान परमानंद दाता ।।षट्आवश्यक नित जो साधै। सो ही रत्नत्रय आराधै ।।८।। धरमप्रभाव करैं जे ज्ञानी । तिन शिवमारग रीति पिछानी।। वत्सल अंग सदा जो ध्यावै। सो तीर्थंकर पदवी पावै ।।९।।

दोहा ।

एही सोलह भावना, सहित धरै व्रत जोय ।
देव इंद्र नरवंद्यपद, 'द्यानत' शिवपद होय ।।१०।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो: पूर्णार्घ्यं निर्व० ।

(इत्याशीर्वाद:)

अथ दशलक्षण धर्म पूजा

अडिल्ल ।

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं। सत्य शौच संजम तप त्याग उपाव हैं ।। आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं। चहुँगतिदुखतैं काढ़ि मुकतिकरतार हैं ।।१।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: ।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोरठा ।

हेमाचलकी धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि ।
भवआताप निवार, दशलक्षन पूजौं सदा ॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्य-ब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यो: जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

चंदन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा । भव० ।
चन्दनम् ॥

अमल अखंडितसार, तंदुल चंद्रसमान शुभ । भव० ॥
अक्षतान् ॥

फूल अनेकप्रकार, महकैं ऊरधलोक लों । भव० ।
पुष्पम् ॥

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरससंजुगत । भव० ॥
नैवेद्यम् ॥

वाति कपूर सुधार, दीपकजोति सुहावनी । भव० ।
दीपम् ॥

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगंधता । भव० ॥
धूपम् ॥

फलकी जाति अपार, घ्रान नयन मनमोहने । भव० ।
फलम् ॥

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों । भव० ॥
अर्घ्यं ॥

अंग पूजा ।

सोरठा ।

पीड़ैं दुष्ट अनेक, बांध मार बहुविधि करैं ।
धरिये क्षिमा विवेक, कोप न कीजे प्रीतमा ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौपाई मिश्रित गीता छन्द ।

उत्तमक्षमा गहोरे भाई । इहभव जस परभव सुखदाई ॥
गाली सुनि मन खेद न आनो । गुनको औगुन कहै अयानो ॥
कहि है अयानो वस्तु छीनै, बांध मार बहुविधि करै ।
घरतैं निकारै तन विदारै, वैर जो न तहां धरै ॥
तैं करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा ।
अतिक्रोधअगनि बुझाय प्रानी, साम्य जल ले सीयरा ॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

मान महाविषरूप, करहि नीचगति जगतमें ।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा ॥

उत्तम मार्दवगुन मनमाना । मान करनको कौन ठिकाना ।
वस्यो निगोदमाहितैं आया । दमरी रूँकन भाग बिकाया ॥
रूकन बिकाया भागवशतैं, देव इकइन्द्री भया ।
उत्तम मुआ चांडाल हूवा, भूप कीड़ों में गया ॥
जीतव्य-जोवन-धनगुमान कहा करै जलबुदबुदा ।
करि विनय बहुगुन बड़े जनकी ज्ञानका पावै उदा ॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

कपट न कीजै कोय, चोरनके पुर ना बसै ।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु संपदा ॥

उत्तमआर्जवरीति बखानी । रंचक दगा बहुत दुखदानी ।
मनमें हो सो वचन उचरिये । वचन होय सो तनसौं करिये ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करिये सरल तिहुँजोग अपने, देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपटप्रीति अंगारसी ॥
नहिं लहै लछमी अधिक छलकरि, करमबंध विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता ॥

ॐ ह्रीं उत्तमार्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

कठिन वचन मति बोल, परनिंदा अरु झूठ तज।
सांच जवाहर खोल, सतवादी जगमें सुखी ॥

उत्तम सत्यवरत पालीजै, परविश्वासघात नहिं कीजै।
सांचे झूठे मानुष देखो, आपनपूत स्वपास न पेखो ॥
पेखो तिहायत पुरुष सांचेको, दरब सब दीजिये।
मुनिराज श्रावककी प्रतिष्ठा, सांचगुण लख लीजिये ॥
ऊँचे सिंहासन बैठि वसुनृप, धरमका भूपति भया।
वच झूठसेती नरक पहुँचा, स्वर्ग में नारद गया ॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

धरि हिरदै संतोष, करहु तपस्या देहसों।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसार में ॥

उत्तम शौच सर्व जग जाना। लोभ पापको बाप बखाना।
आसापास महादुखदानी। सुख पावै संतोषी प्रानी ॥
प्रानी सदा शुचि शीलजपतप, ज्ञानध्यानप्रभावतें।
नित गंगजमुन समुद्र न्हाये, अशुचिदोष सुभावतैं ॥
ऊपर अमल, मल भरचो भीतर, कौन विध घट शुचि कहै।
बहु देह मैली सुगुनथैली, शौच गुन साधू लहै ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करौ ।
संजमरतन संभाल, विषय चोर बहु फिरत हैं ॥
उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव भवके भाजैं अघ तेरे ॥
स्वर्ग नरकपशुगति में नाहीं, आलसहरन करन सुख ठाहीं।
ठाहीं पृथी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो ।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करौ ॥
जिस बिना नहिं जिनराज रीझे, तू रुल्यो जगकीच में ।
इक घरी मत विसरो करो नित, आव जममुख बीच में ॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीतिं स्वाहा ॥६॥

तप चाहैं सुरराय, करमसिखर को वज्र है ।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकति सम ॥
उत्तम तप सबमांहि बखाना । करमशैलको वज्र समाना॥
बस्यो अनादिनिगोदमंझारा । भूविकलत्रय पशुतन धारा॥
धारा मनुषतन महादुर्लभ, सुकुल आव निरोगता ।
श्रीजैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषयपयोगता ॥
अति महादुरलभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरै ।
नरभव अनूपम कनक घर पर, मणिमयी कलसा धरै ॥

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

दान चार परकार, चारसंघको दीजिये ।
धन विजुली उनहार, नरभवलाहो लीजिये ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तमत्याग कह्यो जगसारा। औषध शास्त्र अभय आहारा॥
निश्चै रागद्वेष निरवारै। ज्ञाता दोनों दान संभारै॥
दोनों संभारै कूपजलसम, दरब घरमें परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया॥
धनि साध शास्त्र अभयदिवैया, त्याग राग विरोधकों॥
विन दान श्रावक साध दोनों, लहै नाहिं बोधकों॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए॥
उत्तम आकिंचन गुण जानौ। परिग्रहचिंता दुख ही मानौ॥
फांस तनकसी तनमें सालै, चाह लंगोटीकी दुख भालै॥
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि मुद्रा धरैं।
धनि नगनपर तन-नगन ठाड़े, सुर असुर पायनि परैं॥
घरमांहि तिसना जो घटावै, रुचि नहीं संसारसों।
बहुधन बुरा हू भला कहिये, लीन पर उपगारसों॥

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

शीलबाड़ नौ राख, ब्रह्मभाव अंतर लखो।
करि दोनों अभिलाष, करहु सुफल नरभा वसदा॥
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ॥
सहै बानवरषा बहु सूरे। टिकैं न नैन बान लखि कूरे॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कूरे तियाके अशुचितनमें, कामरोगी रति करै ।
बहु मृतक सड़हिं मसानमाहीं, काक ज्यों चोंचैं भरै ॥
संसारमें विषबेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा ।
'द्यानत' धरमदशपैंडि चढ़िकैं, शिवमहलमें पग धरा ॥
ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

अथ समुच्चय जयमाला ।

दोहा ।

दशलक्षन बंदौं सदा, मनवांछित फलदाय ।
कहों आरती भारती, हमपर होहुं सहाय ॥१॥

वेसरी छन्द ।

उत्तमछिमा जहां मन होई, अंतरबाहिर शत्रु न कोई ।
उत्तममार्दव विनयप्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै ॥२॥
उत्तमआर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्यागि सुगति उपजावै ।
उत्तम सत्यवचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै ॥
उत्तमशौच लोभपरिहारी, संतोषी गुणरतनभंडारी ।
उत्तमसंयम पालै ज्ञाता । नरभव सफल करै ले साता ॥
उत्तमतप निरवांछित पालै, सो नर करमशत्रु को टालै ।
उत्तमत्याग करै जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिव सुख होई ॥
उत्तमआर्किचनव्रत धारै, परमसमाधि दशा विसतारै ।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुकतिफल पावै ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा ।

करै करमकी निरजरा, भवपींजरा, विनाशि ।
अजर अमरपदकों लहै, 'द्यानत' सुखकी राशि ।।७।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपत्यागाकिंचन्य-ब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्माय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

अथ रत्नत्रय पूजा

दोहा ।

चहुँगतिफनिविषहरनमणि, दुखपावक जलधार ।
शिवसुखसुधासरोवरी, सम्यकत्रयी निहार ।।१।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा ।

क्षीरोदधि उनहार, उज्वल जल अति सोहनो ।
जनमरोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजूं ।।१।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशाय जलं निर्वपामीति हावा .

चंदन केसर गारि, परिमल महासुरं गमय। जन्म० ।। चंदनं
तंदुलअमल चितार,वासमतिसुखदासके।जन्म० ।। अक्षतान्
महकैं फूल अपार, अलि गुजैं ज्यों थुति करैं।जन्म०।। पुष्पं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगंधयुत ।।जन्म०।।नैवेद्यं ।।
दीपरतनमय सार, जोत प्रकाशै जगतमें ।जन्म०।।दीपं।।
धूप सुवास विथार, चंदन अगर कपूरकी ।जन्म०।।धूपं।।
फल शोभा अधिकार,लोंग छुहारे जायफल ।जन्म०।।फलं।।
आठदरब निरधार,उत्तमसो उत्तम लिये ।जन्म०।।अर्घ्यं।।

सम्यकदरशनज्ञान, व्रत शिवमग तीनों मयी ।
पार उतारन जान, 'द्यानत' पूजों व्रतसहित ।।१०।।

दर्शनपूजा ।

दोहा ।

सिद्ध अष्टगुनमय प्रगट, मुक्तजीवसोपान ।
जिहविन ज्ञानचरित अफल,सम्यकदर्श प्रधान ।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्रावतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा ।

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल क्षय करै ।
सम्यकदर्शनसार, आठअंग पूजों सदा ।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै । सम्य० ।
चंदनम् ।।
अक्षत अनूप निहार, दारिद्र नाशै सुख भरै । सम्य० ।
अक्षतान् ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै। सम्य०।
पुष्पम् ।।

नेवज विविधप्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै। सम्य०।
नैवेद्यम् ।।

दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा। सम्य०।
दीपम् ।।

धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जड़ता हरै। सम्य०।
धूपम् ।।

श्रीफलआदि विथार, निश्चै सुरशिवफल करै। सम्य०।
फलम् ।।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फलफूल चरु। सम्य०।
अर्घं ।।

अथ जयमाला।

दोहा।

आप आप निश्चै लखै, तत्त्वप्रीति व्योहार।
रहितदोष पच्चीस है, सहित अष्ट गुण सार ।।१।।

चौपाई-मिश्रित गीताछन्द।

सम्यकदरशन रतन गहीजै, जिनवचमें संदेह न कीजै।
इहभव विभवचाह दुखदानी, परभवभोग चहै मत प्रानी ।।
प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरमगुरुप्रभु परखिये।
परदोष ढकिये धरम डिगतेको, सुथिर कर हरषिये ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चहुसंघको वात्सल्य कीजे, धरमकी परभावना ।
गुन आठसों गुन आठ लहिकैं, इहां फेर न आवना ॥२॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसहितपंचविंशतिदोषरहितायसम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं०॥

ज्ञानपूजा ।

दोहा ।

पंचभेद जाके प्रगट, ज्ञेयप्रकाशन भान ।
मोह-तपन-हर-चन्द्रमा, सोई सम्यकज्ञान ॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

सोरठा ।

नीरसुगंध अपार, त्रिषा हरै मल क्षय करै ।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजों सदा ॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

जलकेसर घनसार, ताप हरै शीतल करै । सम्य० ।
चन्दनं ॥

अक्षत अनूप निहार, दारिद्र नाशै सुख भरै । सम्य० ।
अक्षतान् ॥

पहुपसुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै । सम्य० ।
पुष्पं ॥

नेवज विविधप्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै । सम्य० ।
नैवेद्यं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीप ज्योति तमहार, घटपट प्रकाशै महा। सम्य०।
दीपं ॥

धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जड़ता हरै। सम्य०।
धूपं ॥

श्रीफल आदि विथार, निश्चै सुरशिवफल करै। सम्य०।
फल ॥

जल गंधाक्षत चारु दीप धूप फल फूल चरु। सम्य०।
अर्घं ॥

अथ जयमाला।

दोहा।

आप आप जानै नियत, ग्रंथपठन व्योहार।
संशय विभ्रम मोह विन, अष्टभंग गुनकार ॥१॥

चौपाई-मिश्रित गीता छन्द।

सम्यकज्ञान रतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया।
अक्षर शुद्ध अरथ पहिचानो, अक्षर अरथ उभय संग जानौं॥
जानौं सुकालपठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइये।
तपरीति गहि बहु मान देकैं, विनयगुन चित लाइये॥
ये आठ भेद करम उछेदक, ज्ञान-दर्पन देखना।
इस ज्ञानही सों भरत सीझा, और सब पटपेखना ॥२॥
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्र पूजा ।

दोहा ।

विषयरोग औषध महा, दवकषायजलधार ।
तीर्थंकर जाकौं धरैं, सम्यकचारितसार ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ ।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा ।

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल क्षय करैं ।
सम्यकचारितसार, तेरहविध पूजौं सदा ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।१।

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै । सम्यक० ।
चन्दनम् ॥

अक्षत अनूप निहार, दारिद्र नाशै सुख भरै । सम्य० ।
अक्षतान् ॥

पहुपसुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करैं । सम्य० ।
पुष्पम् ॥

नेवज विविधप्रकार, क्षुधा हरै थिरता करैं । सम्य० ।
नेवैद्यम् ॥

दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा । सम्य० ।
दीपम् ॥

धूप घ्रान सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै । सम्य० ।
धूपम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीफल आदि विथार, निश्चै सुरशिवफल करै। सम्य०
फलम् ॥

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु। सम्य०।
अर्घं ॥

अथ जयमाला।

दोहा।

आप आप थिर नियत नय, तपसंजम व्योहार।
स्वपर दया दोनों लिये, तेरहविध दुखहार ॥१॥

चौपाई-मिश्रित गीताछन्द।

सम्यकचारित रतन संभालौ, पांच पाप तजिकैं व्रत पालौ।
पंचसमिति त्रय गुपति गहीजै, नरभव सफल करहु तन छीजै।
छीजै सदा तनको जतन यह, एक संजम पालिये।
बहु रुल्यो नरक निगोदमाहीं, विषयकषायनि टालिये।
शुभकरम जोग सुघाट आया, पार हो दिन जात है।
'द्यानत' धरमकी नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है ॥२॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ समुच्चय जयमाला।

दोहा।

सम्यकदरशन-ज्ञान-व्रत, इन विन मुकति न होय।
अंध पंगु अरु आलसी, जुदे जलैं दव-लोय ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौपाई।

जापै ध्यान सुथिर बन आवै। ताके करमबंध कट जावै। तासों शिवतिय प्रीति बढ़ावै। जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै।।१।। ताको चहुँगतिके दुख नाहीं। सो न परै भव-सागरमाहीं।। जनमजरामृतु दोष मिटावै। जो सम्यकरतन-त्रय ध्यावै।।३।। सोई दशलक्षनको साधै। सो सोलह कारण आराधै। सो परमातम-पद उपजावै। जो सम्यक रतनत्रय ध्यावै।।४।। सोई शक्रचक्रिपद लेई। तीनलोकके सुख विलसेई।। सो रागादिक भाव बहावै। जो सम्यकरतन त्रय ध्यावै।। सोई लोकालोक निहारै परमानंददशा विसतारै।। आप तिरे औरन तिरवावै। जो सम्यक-रतनत्रय ध्यावै।।

दोहा।

एकस्वरूपप्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय।
तीन भेद व्योहार सब, 'द्यानत' को सुखदाय।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यकचारित्रेभ्य: महार्घ्यं निर्वं०।।

(अर्घके बाद विसर्जन करना चाहिये)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्नत्रय पूजा

दरस सम्यक ज्ञान चारित तीन ये सुखदाय हैं :
त्रिय लोक पूजै भाव धरि फल ताहि पूज कहाय हैं ।।
इम जान भवि त्रिय रतन उर धरि ध्याय हर्ष बढ़ाइये ।
ताके सुफल सब कर्म आठौं नासकैं सिव जाइये ।।१।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि अत्र अवतरत अवतरत सवौष्ट ।
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि अत्रमम सन्निहितानि भवत भवत वष्ट ।

कनकपात्र मणिजडित बनाऊं,छीरोदधिको नीर सु ल्याऊं ।
पूजों सम्यक् दर्शन भाई, ज्ञान चरित्र महा सुखदाई ।।
सुखदाय सबकौ रतन तीनौ नीर इन्हैं चढ़ाइए ।
तिस फलै जामन मरण नासै मुक्ति–रसनी पाइए ।।
इम जानि भवि उर हर्ष धरकै भगति इनकी कीजिये ।
अब कठिन अवसर पाय ऐसौ मनुसभवफल लीजिये ।।२।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः जलं नि० ।

पावनचंदन कर लै भाई, घसिकै निरमल नीर मिलाई ।
दर्शनज्ञान चरन सुधि आनौ,पूजौ नित प्रति हर्ष बढ़ानौ ।।
बड़ाय उरमें हर्ष ध्याऊं रतन तीनौ सुखकरा ।
ताफलै भव आताप नासै और कहा भाखों खरा ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इम जान भवि उरि हर्ष धरिकैं भगति इनकी कीजिये।
अब कठिन अवसर पाय ऐसौ मनुसभवफल लीजिये ॥३॥
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: चंदनं नि०।

बीन अखंडित अक्षत भाई, उज्ज़ल मुकताफलसम थाई।
ताकरि पूजौ मन बच आनौ,दर्शन ज्ञान चरण सुखदानी॥
सुखदाय सेऊं रतन तीनौ सुभग अक्षतसौं सही।
ताफलै पदवी अखय पावै वानि जिन ऐसे कही॥
इम जान भवि उर हर्ष धरिकैं भगति इनकी कीजिये।
अब कठिन अवसर पाय ऐसो मनुसभवफल लीजिये ॥४॥
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: अक्षतं नि०।

बहु विध सुरतरुके पुष्प आनौ, इष्ट वर्ण सुभ गंध सुथानौ।
तिन करि पूजौ दर्शन ज्ञानौ,चारित सम्यक सिवपद जानौ॥
जानौ सु सिवपद रतन इनकी सेव फूलनतैं करे।
सो विषयविरकत भव्य प्रानी काम-भटमदकौ हरैं॥
इम जान भवि उर हर्ष धरिके भगति इनकी कीजिये।
अब कठिन अवसर पाय ऐसौ मनुसभवफल लीजिये ॥५॥
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: पुष्पं नि०।

षट रज जुत नैवेद्य बनाऊं, मेवा बहुविध सार मिलाऊं।
खाजा फेनीमोदक आनौ, पूजा रतन तीन की ठानौ॥
ठानौ जु पूजा ज्ञान दर्शन अरु चरित सुखदा सही।
ताफलैं छुधा रोग नासै वानी जिन ऐसी कही॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इम जान भवि उर हर्ष धरिके भगति इनकी कीजिये ।
अब कठिन अवसर पाय ऐसौ मनुसभवफल लीजिये ।।६।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः नैवेद्यं नि० ।

दीपक रतनतनौ कर लीजे, कनकपात्र में ताहि धरीजे ।
तीनौगुण परिया विधि लावो, हरिष हरिष करताहि चढ़ावो।।
हरषे जु चित चढ़ाय दीपक आरती सुभ चित करौ ।
ताके सुफल मिथ्या-अधेरौ खेद विन निश्चै हरौ ।।
इम जान भवि उर हर्ष धरिके भगति इनकी कीजिये ।
अब कठिन अवसर पाय ऐसौ मनुसभवफल लीजिये ।७।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः दीपं नि० ।

धूप कपूर अगरकी आनी, सुगंध बसी तहां अलि भरमानी ।
ऐसी धूप आगिनमें खेऊं दर्शन ज्ञान चरण गुण सेऊं ।।
सेऊं जु तीनों रतन मन वच काय जो गलगायकै ।
ताफलै आठों करम-जरि छय होय सिव ले जायकै ।।
इम जान भवि उर हर्ष धरिके भगति इनकी कीजिये ।
अब कठिन अवसर पाय ऐसौ मनुसभवफल लीजिये ।८।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः धूपं नि० ।

श्रीफल लौंग बदाम सुपारी, खारक पिस्ता अति सुखकारी ।
इत्यादिक फल बहु विध ल्याऊं, तीनों रतन पूज हरसाऊं ।।
हरषाय दर्शन ज्ञान चारित पूजिये हित लायजी ।
ताके फले सिवथान पावे अचल पदवी थायजी ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इम जान भवि उर हर्ष धरिकै भगति इनकी कीजिये।
अब कठिन अवसर पाय ऐसौ मनुसभवफल लीजिये।९।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः फलं नि०।

जल चंदन अक्षत पुष्प लाए, सुभ नेवेद्य घिरत मिलवाय।
दीप धूप फल ले सुखकारी, अर्घ किया अरपौ भवतारी॥
तारी वसु विधि अर्घ सुखदा रतन तीनों पूजिये।
ताफलै सब अघ दूर भागे लोक त्रय सब सूझिये॥
इम जान भवि उर हर्ष धरिकै भगति इनकी कीजिये।
अब कठिन अवसर पाय ऐसौमनुसभवफललीजिये।१०॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः अर्घं नि०।

ये तिय दर्शन ज्ञान चारिता, पूजौ मन वच तन करि सिता।
ये ही सिवमग जिनधुनि गाए, इन त्यागें सिववाट भुलाये।
भूले जु सिवमग छांड इनको खेद बहुतेरा सहा।
नहीं मोक्षमारग दृष्टि आवै भटक भव वन ही रहा॥
इम जान भवि उर हर्ष धरिके भगति इनकी कीजिये।
अब कठिन अवसर पाय ऐसौ मनुसभवफल लीजिये।११।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः अर्घं नि०।

मोक्ष-बटकौ बीज सम्यकदर्श जिनवानी कह्यो।
था विना चारित ज्ञान सिवदा नाहीं इम भवि सरदह्यो।
सो भाव सम्यंक मोक्षदाइक सकलकौ सुखदाय है।
तातैं जु द्रव्य मिलाय आठों जजौं अर्घ चढ़ाय है॥१॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय अर्घं नि०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान सम्यक होय तब ही मोक्षमारग जानि है।
विन ज्ञान मारग मोक्ष नाहीं होय निज गुणहानि है।२।
तातै जु सुद्ध सरूप जानौ ज्ञान सम्यक चक्षुसम।
याकौ जे पूजै द्रव्य वसु लै ते गहैं सिवथल परम ।।२।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय अर्घं नि०।

संसार-सागर तार सम्यक धारि चारित जानिये।
या समा नौका अवर नाहीं जगतपूजित मानिये ।।
इस विना सम्यक ज्ञान दर्शन मोक्षथानक नहिं धरे।
तातै बसु द्रव्य लेय चारित पूजिहैं सो अब हरे ।।३।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय अर्घं नि०।

नहिं एक सम्यक मोक्षदायक ज्ञान इक सिव ना करे।
सिवदाय चारित एकला नहिं तीन ही मिल अघ हरे ।।
तातै जु सम्यक ज्ञान दर्शन चारित त्रय सुखकरा।
वसु द्रव्य अर्घ बनाय सुन्दर पूजिहों जग-तिय-धरा ।।४।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: अर्घं नि०।

जयमाला।

दर्शन ज्ञान चरन त्रय भाई, सम्यक मिलै होय सिवदाई।
तिनमें सम्यक भाव न जानौ, ताकी होय नहीं सिवथानौ ।।
सो सम्यक दर्शन वसु भेवो, सम्यक ज्ञान पांच विधि सेवो।
त्रयोदश चारित सम्यक होई, अब सुनभेद कहौ भिन सोई ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यकगुण निसंक सो जानौ धर्मविषैं नहिं संका आनौ।
साध इसे अंजन सिव पायौ, देव निरंजन सिद्ध कहायौ ॥
धर्म सेय फल इच्छे नाहीं, सो निकांछ गुण सम्यक पाहीं।
सेठसुता गुणवती सु पायौ, ताकौ जस जिनमारग गायौ ॥
निरविचिकितसित सो गुण कहिये, नहीं गिलान देख पर लहिये।
सो उद्यायन भूपने पायौ, ताकौ कथन वानि जिन गायौ ॥
दिष्टि अमूढ़ सुभग गुण वेवै, जो न कुदेव-धर्म-गुरु सेवै।
यह गुण रानी रेवति पायौ, सो भी जिनधुनि प्रगटैं गायौ ॥
उपगूहन गुण ताकौ कहिये, जात परका दोष न लहिये।
सेठ जिनेंद्रभक्त सो पायौ, ताकौ भी जस जग भरमायौ ॥
थितीकरण गुण सो पुन जानौ, डिगत धर्म राखै थिर थानौ।
सो मुनि वारिषेणने पायौ, सो भी जिनधुनितैं दर्शायौ ॥
वाछल गुण सो जानौ भाई, लखि धर्मी अति नेह उपाई।
सो मुनि विष्णुकुमारने पायौ, बहु मुनिकेरौ कष्ट गमायौ ॥
धरमप्रभावन ताकौ कहिये, धर्म उद्योत जासतैं लहिये।
सो मुनि वज्रकुमारने पायौ, ताकौ भी वर्णन श्रुति गायौ ॥
ये वसु गुण सम्यकके गाए, अब सुनि पंच ज्ञान जिम थाए।
पंचेद्रिय मनसैं जो जानौ, सो मतिज्ञान जिनेस वखानौ ॥
देखि अर्थ अर्थांतर जानौ, श्रुतज्ञान ताकौ भवि मानौ।
अगली पिछली कहै सु भाई अवधिज्ञान जानौ सुखदाई ॥
जो परके मनकी सब पावै, मनपरजय सो ज्ञान कहावे।
तीन लोक त्रय काल सु जानै, ताकौ केवलज्ञान वखानै ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब सुनि चारित दस तिय भाई, महाव्रत समिति पांच सु थाई।
तीन गुतति मिल सिवमग होई, अब सुन कथा इन्होंकी सोई।।
विरत अहिंसा ताकौ कहिये, जामें सब जिय निजसम लखिये।
सत्य महाव्रतसौ सत बोले, चोरी तज पर दाम न खोलै।।
ब्रह्मचर्यव्रत वाकौ कहिये, सब जगनारि मातसम लखिये।
परिग्रहत्यागविरत सो जानौ, अंतर बाहिर नगन बखानौ।।
समितिईरजातै भुवि चालै, भाषासमति वचन सुभ हालै।
देख कर खाय एषणा सोई, ग्रह-निक्षेप देखकर होई।।
प्रतिष्ठापना समिति सु जानौ, मल-मूत्रादि करें जोय थानौ।
मन वच काय आपबस राखै, ताकौ गुपति तीन मुनि भाखै।।
ये ही दर्शन ज्ञान चारित्ता, मोक्ष गमन का है सुभ पत्ता।
इन विन मुकति राह नहिं पावै, या मन लगे सकल सिव जावै।।

रतन तीन इनकी परख जानत सम्यक धार।
सो पावै सिव टेक तजि सुख अनंतकरतार ।।२०।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: महार्घं नि०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री देवशास्त्रगुरु, विद्यमानबीसतीर्थङ्कर तथा श्रीसिद्ध परमेष्ठी की

संयुक्त भाषा पूजा

देव शास्त्र गुरु नमन करि, बीस तीर्थंकर ध्याय।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूं चित्त हुलसाय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह, श्री विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यः श्री अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठि नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(चाल—करले करले तू नित प्रानी, श्रीजिनपूजन करलेरे)

अनादि काल से जगमें स्वामिन्, जलसे शुचिताको माना।
शुद्ध निजातम सम्यक्रत्नत्रय, निधिको नाहिं पहिचाना॥
अब निरमल रत्नत्रय जलसे, देवशास्त्रगुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह श्रीविद्यमानविंशतितीर्थङ्करः श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो जलम्।

भव आताप मिटावन की, निज में ही क्षमता समता है।
अनजाने अब तक मैंने, पर में की झूंठी ममता है॥
चंदनसम शीतलता पाने, श्री देवशास्त्रगुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्धप्रभु के गुण गाऊँ॥

चन्दनम्

अक्षयपद बिन फिरा जगत को, लख चौरासी योनी में।
कर्मतुषाके नाश करनकी, अक्षत तुम ढिग लाया मैं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षयनिधि निजकी पाने अब, देवशास्त्रगुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्धप्रभु के गुण गाऊँ ।।

अक्षतम्

पुष्पसुगन्ध से आतम ने, शीलस्वभाव नशाया है ।
मन्मथवाणोंसे विध करके, चहुँगति दुख उपजाया है ।।
स्थिरता निज में पानेकी श्री देवशास्त्रगुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्धप्रभु के गुण गाऊँ ।।

पुष्पम्

षट्रसमिश्रित भोजनसे ये, भूख न मेरी शान्त हुई ।
आतम रस अनुपम चखने, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई ।।
भूख सर्वथा मेटन को, श्री देवशास्त्रगुरु को ध्याऊँ ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थङ्कर, सिद्धप्रभु के गुण गाऊँ ।।

नैवेद्यम्

दीप विनश्वर जड़ को अब तक समझा था मैने उजियारा ।
निजगुण द्योतक ज्ञान दीपसे, मिटा मोह का अंधियारा ।।
ये दीप समर्पित करके मैं श्री, देवशास्त्रगुरुको ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर सिद्धप्रभुके गुण गाऊं ।।

दीपम्

ये धूप अनिल में खेनेसे, कर्मों को नहीं जलायेगी ।
निजमें निजकी शक्ती ज्वाला, जो राग द्वेष नसायेगी ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उस शक्ति दहन प्रगटाने को, श्री देवशास्त्र गुरु को ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्धप्रभुके गुण गाऊं ॥
धूपम्

पिस्ताबदाम श्रीफललवंग, चरणन तुमढिग मैं ले आया।
आतमरस भीने निजगुणफल, मम मन अब उनमें ललचाया।
अब मोक्ष महाफल पाने को, श्रीदेवशास्त्रगुरुको ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्धप्रभुके गुण गाऊं ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह श्रीविद्यमानविंशति तीर्थङ्कर
श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो फलम्

अष्टमवसुधा पीने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निजमें निजगुण प्रकट किये ॥
ये अर्घ्य समर्पण करके मैं, श्रीदेवशास्त्रगुरु को ध्याऊं।
विद्यमान श्रीबीसतीर्थंकर, सिद्धप्रभु के गुण गाऊं ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह श्रीविद्यमानविंशतितीर्थङ्कर
सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यम् :

जयमाल (स्तवन)

हनें घातिया कर्म अरिहंत देवा,
करें सुरअसुरनरमुनी नित्य सेवा।
दरश ज्ञान सुखबल अनन्तों के स्वामी,
छियालीस गुणयुत महाईश नामी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेरी दिव्य वाणी सदा भव्यमानी, महामोहविध्वंसिनी मोक्षदानी। अनेकान्तमय द्वादशांगी बखानी, नमों लोकमाता श्री जैनवाणी॥ बिरागी अचारज उवज्झाय साधू, दरशज्ञान भण्डार समता के स्वादू। नगन वेशधारी सुएकाबिहारी, निजानन्दमण्डित मुकतपथ प्रचारी॥ विदेहक्षेत्र में बीसतीर्थंकराजें, बिहरमान बन्दूं सभी पाप भाजें। नमूं सिद्धनिर्भय निरामय सुधामी, अनाकुल समाधान महजाभिरामी॥

देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध हृदयचित धरले रे।
पूजन ध्यान गान गुन करके, भवसागर जिय तरले रे॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह श्रीविद्यमानविंशति तीर्थंकर श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम्।

देवशास्त्रगुरु पूजन

(पं० हुकमचन्दजी कृत)

शुद्ध ब्रह्म परमात्मा शब्द ब्रह्म जिनवाणि।
शुद्धातम साधकदशा नमो जोड़ जुग पाणि॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह अत्रावतरावतर सवौषट् इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथाष्टक

आशा की प्यास बुझाने को,अब तक मृग तृष्णामें भटका।
जलसमझ विषय विषभोगोंको, उसकीममता मेंथाअटका।।
लख सौम्य दृष्टि तेरी प्रभुवर, समता रस पीने आया हूं।
इस जल ने प्यास बुझाई ना, इसको लौटाने आया हूँ ।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

क्रोधानल से जब जला हृदय, चन्दन ने कोई न काम किया । तन को तो शान्त किया इसने, मन को न मगर आराम दिया ।। संसार ताप से तप्त हृदय, सन्ताप मिटाने आया हूँ । चरणों में चन्दन अर्पण कर,शीतलता पाने आया हूं ।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो चन्दनम् ।

अभिमान किया अब तक जड़ पर, अक्षय निधि को ना पहिचाना । मैं जड़ का जड़ मेरा है, यह सोच बना था मस्ताना ।। क्षत में विश्वास किया अब तक, अक्षत को प्रभुवर ना जाना । अभिमान की आन मिटाने को, अक्षय निधि तुमको पहिचाना ।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षतम् ।

दिन रात वासना में रह कर, मेरे मन ने प्रभु सुख माना । पुन्सत्व गमाया पर प्रभुवर, उसके छल को न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहिचाना ।। माया ने डाला जाल प्रथम, कामुकता ने फिर बांध लिया । उसका प्रमाण यह पुष्प बाण, लाकरके प्रभुवर भेंट किया ।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो पुष्पम् ।

पर पुद्गल का भक्षण करके, यह भूख मिटाना चाही थी । इस नागिन से बचने को प्रभु, हर चीज बनाकर खाई थी ।। मिष्ठान्न अनेक बनाये थे, दिन रात भखे न मिटी प्रभुवर । अब संयम भाव जगाने को, लाया हूँ ये सब थाली भर ।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो नैवेद्यम् ।

पहिले अज्ञान मिटाने को, दीपक था जग में उजियाला । उससे न हुआ कुछ तब युग ने, बिजली का बल्ब जला डाला ।। प्रभु भेद-ज्ञान की आँख न थी, क्या कर सकती थी वह ज्वाला । यह ज्ञान है कि अज्ञान कहो, तुमको भी दीप दिखा डाला ।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो दीपम् ।

शुभ कर्म कमाऊं सुख होगा, मैंने अब तक यह माना था । पाप कर्म को त्याग, पुण्य को चाह रहा अपनाना था ।। किन्तु समझ कर शत्रु कर्म को, आज जलाने आया हूँ । लेकर दशांग यह धूप, कर्म की धूम उड़ाने आया हूं ।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो धूपम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भोगों को अमृत फल जाना, विषयों में निश दिन मस्त रहा। उनके संग्रह में हे प्रभुवर मैं, व्यस्त त्रस्त अभ्यस्त रहा॥ शुद्धात्म प्रभा जो अनुपम फल मैं उसे खोजने आया हूं। प्रभु सरस सुवासित ये जड़फल, मैं तुम्हें चढ़ाने लाया हूं॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो फलम्।

बहु मूल्य जगत का वैभव यह, क्या हमको सुखी बना सकता। अरे पूर्णता पाने में क्या, इसकी है आवश्यकता॥ मैं स्वयं पूर्ण हूं अपने में, प्रभु है अनर्घ मेरी माया। बहु मूल्य द्रव्य मय अर्घ लिये, अर्पण के हेतु चला आया॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला।

समय सार जिनदेव है, जिन प्रवचन जिनवाणि। नियमसार निर्ग्रन्थगुरु, करें कर्म की हानी॥ हे वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, तुमको ना अब तक पहिचाना। अतएव पड़ रहे हे प्रभुवर, चौरासी के चक्कर खाना॥ करुणानिधि तुमको समझ नाथ, भगवान भरोसे पड़ा रहा। भरपूर सुखी कर दोगे तुम, यह सोचे सन्मुख खड़ा रहा॥ तुम वीतराग हो लीन स्वयं में, कभी न मैंने यह जाना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम हो निरीह जग से कृत-कृत, इतना ना मैंने पहिचाना ।। प्रभु वीतराग की वाणी में, जैसा जो तत्व दिखाया है। जो होना है सो निश्चित है केवल ज्ञानी ने गाया है ।। उस पर तो श्रद्धा ला न सका, परिवर्तन का अभिमान किया। बनकर पर का कर्ता अब तक, सत् का न प्रभो सम्मान किया ।। भगवान तुम्हारी वाणी में, जैसा जो तत्व दिखाया है। स्याद्वाद नय अनेकान्त मय, समयसार समझाया है ।। उस पर तो ध्यान दिया न प्रभो, विकथा में समय गमाया है। शुद्धात्म रुचि न हुई मन में, ना मन को उधर लगाया है ।। मैं समझ न पाया था अब तक जिनवाणी किसको कहते हैं। प्रभु बीतराग की वाणी में, कैसे क्या तत्व निकलते हैं ।। राग धर्म मय धर्म राग मय, अब तक ऐसा जाना था। शुभ कर्म कमाते सुख होगा, बस अब तक ऐसा माना था ।। पर आज समझ में आया है, कि वीतरागता धर्म अहा। राग-भाव में धर्म मानना, जिन मत में मिथ्यात्व कहा ।। वीतरागता की पोषक ही, जिनवाणी कहलाती है। यह है मुक्ति का मार्ग निरंतर, हमको जो दिखलाती है ।। उस वाणी के अन्तर्तम को, जिन गुरुओं ने पहिचाना है। उन गुरुवर्यों के चरणों में, मस्तक बस हमें झुकाना है ।। दिन रात आत्मा का चिंतन,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्ध चक्र पूजा

(श्री द्यानतराय कृत)

परं ब्रह्म परमात्मा, परम जोति परवीन।
परम निरंजन परम पर, नमो सिद्ध जगदीश॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

पुष्पांजलि क्षिपेत।

मोहि तृषा दुख देय सो तुमने जीते प्रभु,
जलसो पूजो तोय मेरो रोग मिटाइये॥

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्मजरा मृत्युरोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

हम भव आतप माहि, तुम न्यारे संसारते।
कोजे शीतल छांहि, चंदन सो पूजा करो॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राय चंदनं॥२॥

हम ओगुन समुदाय, तुम अक्षित सब गुन भरे।
पूजौं अक्षित ल्याय, दोष नास गुन कीजिये॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राय अक्षतान्॥३॥

काम अगनि है मोह, निश्चय शील स्वभाव तुम।
फूल चढाऊं तोय, सेवक की पावक हरो॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राय पुष्पं॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम क्षुधा दुख भूर, ज्ञान खडग सों तुम हती ।
मेरी बाधा चूर, नेवज सो पूजो तुम्हें ॥
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राय नैवेद्यं ॥५॥

मोह तिमिर हम पास, तुम पर चेतन जोत है ।
पूजौ दीप प्रकास, मेरी तम निरवारियो ॥
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राय दीपं ॥६॥

रुल्यो करम वनजाल, मुकति माहि तुम सुख करो ।
खेऊं धूप रसान, मरन काल वन जालिये ॥
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राय धूपं ॥७॥

अंतराय दुःखकार, तुम अनंत थिरता लिये ।
पूजौ फलधर सार, विघनटार शिवफल करो ॥
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राय फलं ॥८॥

हम में आठों दोष, भजो अरघ सो सिद्धजी ।
दीजो वसुगुन मोहि, कर जोड़े 'द्यानत' कहो ॥
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राय अर्घं ॥९॥

ज्ञानवरणी नाशक सिद्ध आरती

। दोहा ।

मूरत ऊपर पट करो, रूप न जाने कोय,
ज्ञानावरनी करम तें, जीव अज्ञानी होय ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

। चौपाई ।

तिय से छत्तिस विध मतिवरनी, ताहर के मति ज्ञानावरनी । द्वादस विध श्रुत ज्ञान न होवे, श्रुत ज्ञानावरनी है सोवे ॥२॥ तिय विधि षट विधि अवधि खिपावै, अवधिज्ञान अवारन कहावै । दो बिध मनमर्यय नहिं हो है, मनपरयय आवरनी सो है ॥३॥ केवलज्ञान अनंतानंता, केवल ज्ञानावरनी हंता । उदै अनाउदै मूरख ठानै, कुमति कुश्रुति कुअवधि पिछानै ॥४॥ क्षय उपशम कर सम्यकधारी,चारों ज्ञान लहे अधिकारी । ज्ञानावरनी सर्व विनासै, केवल ज्ञान रूप परकासै ॥५॥

दोहा ।

ज्ञानावरनी पंचहत, प्रगटो केवल ज्ञान ।
द्यानत मन वच काय सो, नमों सिद्ध भगवान ॥अर्घं॥

दरसना वरनी नाशक सिद्ध आरती

दोहा ।

जैसे भूपतिदर्श कूं, होन न देय दरवान ।
तैसे दर्शनावरन को, देखन देह सुजान ॥१॥

चौपाई ।

जाके उदय आंख नहीं होई, चक्षु दर्शनावरनी होई ।
नहीं मुखनास फरस मुख करनं,उदय अचक्षु दर्शनावरण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवधि दर्स पर मान विलोके, अवधि दर्सनावरनी रोके।
केवल लोकालोक निहारे, केवल दर्श आवरण निवारे ।।
निद्रा उदय सुचेतन सोवे, थोड़ी नींद सुरति कछु होवे।
प्रचालबल सो आंख खुली है, अर्ध मुदीसी अर्ध खुली है ।।
निद्रा निद्रा उदय वखानी,पलक उधार सके नहिं प्रानी।
प्रचला प्रचला उदै कहावै, लार बहे मुख अंग चलावे ।।
उठै चलै बोले सुध नाहीं, जोर विशेष बड़े तनमाही।
काम प्रचंड तास ते होवे, स्त्यानगृद्धि निद्रा जु सोवै ।।

दोहा।

दर्शन आवरनी हती, केवल दर्शन रूप।
'द्यानत' सिद्ध नमों सदा, अमल अचल चिद्रूप ।।अर्घं।।

वेदनीय नाशक सिद्ध आरती

सोरठा।

शहत मिली असिधार, सुख दुख जीवन को करै।
कर्म वेदनी सार, साता असाता देत है ।।१।।

चौपाई।

पुन्नी कनक महल में सोवै, पापी राह पड़ो दुख रोवे।
पुन्नी वांछित भोजन पावै पापी मांगें टुक नहिं पावै ।।
पुन्नी जड़िय जवाहर सोवे, पापी फाटे टुकड़े ओढ़े।
पुन्नी कंचन थार कटोरा, पापी के कर प्याला कोरा ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुन्नी गज पर चल चाढंता, पापी नागे पग धावंता ।
पुन्नी के सिर क्षत्र फिरावै, पापी सीस बोझु ले धावै ।।
पुन्नी हुक्म जगत पर होई, पापी बात सुने नहिं कोई ।
पुन्नी भौन दरव नित आवै, पापी धन देखन नहिं पावै ।।
पुन्नी को सब देखन जावे, पापी जन को मुँह न लखावे ।
पुन्नी कबही रोग न आवै,पापी को नित व्याधि सतावै ।।
पुन्नी शील रूप जुत नारी, पापी न लहै कानी कारी ।
पुन्नी के सुत करैं कमाई, पापी तरसे होय दुखदाई ।।
पुन्नी वस्तु गई फिर आवै, पापी के कर सो गिर जावै ।
पुन्नी षटरितु के सुख विलसै,पापी राह परो दुख किलसे ।।

सोरठा ।

पुन्य पाप दोऊ डार, कर्म वेदनी वृक्ष के ।
सिद्ध जलावन हार, द्यानत निरबाधा करो ।।अर्घं।।

मोहनीय कर्म नाशक सिद्ध आरती

। दोहा ।

जैसे मदिरा पानते, सुध बुध सबै विलाय ।
तैसे मोह करम उदै, जीव गहल हो जाय ।।१।।

। चौपाई ।

दरसन मोह तीन परकारं, नास करे सम्यक गुनसारं ।
मिथ्या जुरी उदै जब आवै, धर्म मधुर रस मूलन आवै ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिश्र भाव सिखरन सम ख्यातं, एक समें सम्यक मिथ्यातं।
समय प्रकृति मिथ्यातसतावै, चलमल शिथिल दोषउपजावे।।
चारित मोह पचीस प्रकारं, जो मेटै चारित्र आचारं।
क्रोध मान माया अरु लोभं, चारों चार चार विधि शोभं।।
अनंतानुबधी चैकड़िया, जिनने निरमल समकित हरिया।
अप्रत्याख्यानी चारों भाखै, श्रावक व्रतविधि वसकर राखै।
प्रत्याख्यान चोकड़ी सोई जाके उदै न मुनि व्रत होई।
सो संज्वलन चतुष्क बखानी यथाख्यात पावै नहीं प्रानी।।
हास्य उदयतें हांसी ठानै, रतिके उदय जीवरत मानै।
अरति उदय तें कछु न सुहावै शोक उदै सेति बिललावै।।
भयतें डरै जु गुप्त गिलानं पुरुष भाव तिन पावक जानं।
गोसे की पावक समनारी संढ पजावा अगनि निहारी।।

। दोहा ।

अठाइस सौ मोहकी तुम नासक भगवान।
अटल सिद्ध अवगाहना नमौं सिद्ध गुनखान।९।अर्घं।।

आयु करम नाशक सिद्ध आरती

। सोरठा ।

जैसे नर को पांव दियो काठ में थिर रहै।।
तैसे आयु स्वभाव, जिय को चहुंगति थिर करे।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

। चौपाई ।

नरक आयुतें नरक लहै है, तेतीस सागर तहां रहें है ।
वाडा में आरे सो चीरे, कोल्हू मांहि डार के पेरे ।।
वैतरनी दुरगंध लहावे, पुतरी अगन्न माँहि गल ल्यावे ।
सूलि देही कडाही तावे, सालमलीतल मांहि सुलावे ।।
सीस तले कणी रस डारे, नीचैं वज्र मुष्टि सो मारे ।
भूख प्यास तप सीत सम्हारी, पंचप्रकार सहै दुख भारी ।।
पशुकी आयु करैं पशुकाया, बिना विवेक सदा बिलल्लाया ।
जनम वैर जीयत दुख पावै, बांध मारकी कौन चलावें ।।
मानुष आयु करे नरतेई, इष्ट वियोग लहै दुख जेई ।
धन सम्पत्ति को सदा भिखारी, प्रभुता मांहि पचे संसारी ।।
देव आयुतें देव कहाया, पर का विभव देख सुनसाया ।
मरन चिन्ह लखि अति दुखदानी, इन चारों गति भटके प्रानी

। दोहा ।

'द्यानत' चारों आयुके, तुम नासक भगवान ।
अटल सुध अवगाहना, नमों सिद्ध भगवान ।।अर्घं।।

नाम करम नाशक सिध्द आरती

दोहा ।

चित्रकार जैसे करै, नाना चित्र अनूप ।
नाम करम तैसे करै, चेतन के बहुरूप ।।१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौपाई।

गति के उदै चहुँगति जानी, जात पंच इंद्री सब प्रानी।
आनुपूर्वी गति ले जाई, दोय विहाय दोचाल बताई ।।
पंच शरीर पंच विधि काया, बंधन पंच-पंच दिढलाया।
बंधे सदन सो पंच संघतं, अंग उपंग तीन ही गातं ।।
वरन पंच तन रंग बखाने, पाँचों रस तिनके जाने।
गंध दोय तन मांहि कहे है, आठ फरस तन मांहि लहे है।।
षट संठान देह आकारं, हाड़ छै भेद संहनन धारं।
उदैगुड़े न अगुरु लघुकाया,स्वासउस्वास नाक सुरगाया ।।
निज दुख दे उपघात शरीरं, तनपर घात करै पर पीरं।
चंद्रबिब जिय देह उद्योतं, भानुविबि जिय आताप होतं ।।
थावर उदै सुथिर न चले है,त्रस के उदैते चलि है हलि है।
परजापति पूरा जब होई, खिरे बीच अपरजापति सोई ।।
थिरकै उदे सुथिर तनगाया, अथिर उदे ते कपे काया।
तन प्रत्येक जिय एक भनंतं, साधारण तन जीव अनतं ।।
मारे मरे रहे आधारं, दीसे अर लोकल में सारं।
बादर जिय बहु विध इसरंतं, सूक्षम जीवन ते विपरंतं ।।
शुभके उदय होय शुभकाया,अशुभ उदेतन अशुभ बताया।
सुभग उदे भाग का पूरा, दुर्भग उदे अभाग हजूरा ।।
सुस्वर उदे कोकिला वानी, दुस्वर गर्धभ धुनि समजानी।
आदरतैं बहु आदर पावै, उदे अनादर तेंन सुहावे ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जसके उदे सुजस जगमांहि, अजस उदे अपजस जगमाही ।
थान प्रमान दुविध निर्मानं,तीर्थंकर है पुन्य प्रधानं ।:१२।।

दोहा ।

ब्यालिस अर तेरानवे, तथा एक सौ तीन ।
'द्यानत' नाम प्रकृति हरी, सिद्ध अमूरत लीन ।।अर्घं।।

गोत्र करम नाशक सिद्ध आरती

दोहा ।

ज्यौं कुम्हार छोटो बड़ो, भांडो, घड़ा जनेय ।
गोत्र करम त्यों जीवको, ऊंच नीच कुल देय ।।१।।

चौपाई ।

नीच गोत्र पशु नेक निहारं, ऊंच गोत्र सब देव कुमारं ।
मानुख माहि दो गोत बखाने, नीच गोत्र सूद्र परमाने ।।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य मझार, मद्य मांस जो करे अहार ।
जो पंचन ते बाहिर होई, नीच गोत्र कहिये नरसोई ।।
परगुनको औगुनकर भाखे,निज औगुनको गुन अभिलाखे ।
परको निंदे आप बड़ाई, बांधे नीच गोत्र दुखदाई ।।
नीच गोत्र को मुनिव्रत नांही,क्योंकर जाय मुकति के मांही ।
नीच काज तज ऊंच समारें,दया धरमकर आतम तारे ।।

सोरठा ।

ऊंच नीच दो गोत, नास सब अगुरु लघु भये ।
'द्यानत' आतम जोति, सिद्ध शुद्ध बंदौ सदा ।।अर्घं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतराय करम नाशक सिद्ध आरती

॥ दोहा ॥

भूप दिलावे, दरबकों, भंडारी दे नहिं।
होन देह नहिं संपदा, अंतराय जगमाँहि ॥१॥

॥ चौपाई ॥

छती वस्तु दे सके न प्रानी, दान अन्तराय विधिजानी।
उद्यम करे न होय कमाई, लाभ अन्तराय दुखदाई॥
भोजन त्यार खान नहीं पावे, भोग अन्तराय जब आवे।
पटभूषण है पहिरे नाहीं उपभोग अन्तराय की छांई॥
तन बहु पोखे बल नहीं होई, वीरज अन्तराय है सोई।
यह अन्तराय कहा विवहारी, निहचे बात सुनो मतिहारी॥
मिथ्या भाव त्याग सो दानं, समता भाव लाभ परधानं।
आत्मीक सुख भोग सयोगं, अनुभौभ्यास सदा उपभोगं॥
ध्यान ठानके करम विनासे, सो विरज निज भाव प्रकाशे।
पाँचों भाग जहाँ नहीं लहिये, निहचे अन्तराय सो कहिये॥

॥ दोहा ॥

अन्तराय पाँचों हते, प्रगटयौ सुबल अनन्त।
द्यानत सिद्ध नमों सदा ज्यों पाउं भव अंत ॥७॥

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुच्चय आरती

ज्ञानावरणी कर्म विनाशा, लोका लोक ज्ञान परकाशा। दर्शन आवरणी क्षय कीना, छदरब गुण परजय खल लीना ॥ करमवेदनी नाश गया है, निरवाधा गुण प्रगट भया है। मोह करम नशा दुखकारी निर्मल समकिह क्षायिक धारी ॥ आयु करम थिति सर्व विनाशी, अवगाहना अटल परगासी। नाम कर्म जीता जगनामी, चेतन ज्योति अमूरति स्वामी ॥ गोत्र करम नाशा वर-वीरं, सिद्ध अगुरुलघु गुन गम्भीरं। अन्तराय दुःखदाय हरा है, सुबल अनन्त प्रकाश करा है ॥ जा पदमाही सर्व पद छाजै, ज्यों दर्पन प्रतिबिंब विराजे। राग न दोष न मोह न भागं, अमर अजर अविचल शुभ भावं ॥ जाके गुन सुरमन सब गावें, जाको जोगीश्वर नित ध्यावें। जाके भगती मुकति पद पावें, सो शोभा किह भांति बतावें ॥ एगुन आठ थूल हम भाखे, गुन अनंत निज मनमें राखे। सिद्धन की थुति को कवि जाने, या मिससो शुभ नाम बखाने ॥

॥ सोरठा ॥

बहुविध नाम बखान, परमेश्वर सबही भजें।
ज्यों का त्यों सरधान, 'द्यानत' सेवें ते बड़े ॥९॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्म रहिताय सिद्ध परमेष्ठिने पूर्णार्घं नि०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री बीस बिहरमाण पूजन

स्थापना ।

बंदौं श्री जिन बिहरमान, केवल युत राजे ।
देत धर्म उपदेश, सदा जीवन सुख काजे ।।
तिनकी पूजन हेत भयो चित हर्ष अपारा ।
धन्य घडी दिवस, आज धन भाग्य हमारा ।।
आव्हानन संस्थापना, सन्मुख कर उर ठान के ।
बाल बचन सम कहत हूँ, सन्मुख तिष्ठो आन के ।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान विंशति तीर्थङ्करा अत्रावतर अवतर संवौषट् आव्हानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।।

गंगादिक तीरथ जल लाय, जजौं जिनेश अमर पद पाय । नमूं कर जोड़, नित प्रति ध्याऊं भोरहि भोर ।।
पांचों मेरु विदेह सुथान, तीर्थंकर जिन बीस महान ।
नमूं कर जोड़, नित प्रति ध्याऊं भोरहि भोर ।।

भव अटवी भ्रमत, बहु जनम धरत, सहि मरण विपत, अति दुख पायो । तातैं जल धारा, तुम ढिग धारा, शान्ति सुधारस अब पायो ।। श्रीबीस जिनेश्वर, दया निधीश्वर, जजत महेश्वर मेरी विपत हरो । भव संकट खंडो, आनंद मन्डो, मोहि निराकुल सुखकरो ।।जलं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केसर संग कर्पूर मिलाय, चंदन ते अरचौं जिनराय । नमूं कर जोड़, नितप्रति ध्याऊं भोरहि भोर ।।पांचों।।

पर चाह अनल,मोहि दहत सहत,बहु विपति गहत, तुम ढिग आयो । तातें लै बावन तुम अति पावन, दाह बुझावन, घसिल्यायो । श्रीबीस. ।।चंदनम्।।

शालि अखंडित सुन्दर श्वेत, पूजौं पद अक्षय निधिहेत । नमूं कर जोड़, नित प्रति ध्याऊं भोरहि भोर ।। पांचों ।।

बहु जनम धरत, अरू मरण करत, भव भ्रमत भ्रमत अति थकित भयो । भव भयकर तर्जित, अक्षत मर्जित, ल्याय चढ़ाऊं सुखित भयो ।।श्रीबीस. ।।अक्षतं।।

पंच वर्ण के कुसुम अनूप पूजौं जिनवर तिहूं जग भूप । नमूं कर जोड़, नित प्रति ध्याऊं भोरहि भोर ।।पांचों।। मोहिं काम ने सतायो, चारों गति भरमायो, बहु विपति गहायो, नाना विधकी । तापें लै फूल तुम निरशूल मोहि विशूल करो अबकी ।।श्रीबीस. ।।पुष्पम्।।

घेवर मोदक आदि अनूप, पूजूं क्षुधा हरण तुम भूप नमूं कर जोड़, नितप्रति ध्याऊं भोरहि भोर ।।पांचों।। मोहि क्षुधाने सताया, तब याचन करायो तोहु पेट न भरायो तातें अबही । चरू भर कर थारी, तुम ढिग धारी देहु निराकुल सुख अबही ।। श्रीबीस. ।। नैवेद्यम् ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीप रतन मय ज्योति जगाय, मिथ्या तिमिर सकल नशजाय। नमूं कर जोड़, नितप्रति ध्याऊं भोरहि भोर ।।पांचों।। भयो मोह ते अचेत कियो जगहीसों हेत, भूल्यो आपा पर भेद, तुम शरण गही। दीपक उजियारा तिमिर बिदारा, स्वपर प्रकाशा नाथ सही ।।श्रीबीस.।।दीपम्।।

अगर तगर कृष्णागर चूर, खेबत ही कर्म चकचूर नमूं कर जोड़, नितप्रति ध्याऊं भोरहि भोर ।। पांचों ।। कर्म इंधन हैं भारी, मोहि कियाजी दुःखारी, नेक सुध हुन धारी, तुम शरण गही। तातें लै धूपं तुम शिव भूपं कर शिव रूपं, नाथ सही ।। श्रीबीस. ।। धूपम् ।।

बादाम सुपारी मेवा मिष्ट, पूजौं पद फल दायक इष्ट। नमूं कर जोड़ नितप्रति ध्याऊं भोरहि भोर ।। पांचों ।। अंतराय दुःखदाई,मेरी शक्ति छिपाई,मोसे दीनता कराई, बहू आजलों प्रभू। तातें फल लायो, तुम ढिग आयो, मोक्ष मोह फल देहु प्रभु ।। श्रीबीस. ।। फलम् ।।

जल फल आठों द्रव्य संभाल, रत्न जवाहर भर भर थाल। नमूं कर जोड़, नित प्रति ध्याऊं भोरहि भोर ।।पांचों।। आठों कर्मों ने सतायो, मोकूं दुःख उपजायो, तातें तुम ढिग आयो,अब बच जाऊंजी। बसु द्रव्य सम्हारी; कंचन थारी हो शिव कारी शिव पाऊंजी ।।श्रीबीस.।।अर्घं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल।

दोहा।

बिहरमान जिन देव के, सुनो अनुपम नाम—
इन्द्र चन्द्र सेवैं सदा, राजत हैं सुख धाम ॥१॥

पद्धरी छन्द।

पहलो यह जंबू द्वीप जान, ता मध्य सुदर्शन मेरू मान। श्रीमंदर जुग मंदर जिनेंद्र, लख बाहु सुबाहु विदेह चंद्र ॥ २ ॥ जुग खंड धात की पूर्व एह, सोहत विजया नग जुत विदेह। संजात स्वयं प्रभु महा धार, बंदौ ऋषभानन अनंतवीर्य ॥३॥ भाख्यो पश्चिम दिशवाहि द्वीप, शुभ लसे अचल पर्वत्त महीप। सूरिप्रभ कीर्ति विशाल इन्द्र, वज्जर धर चन्द्रानन मुनिन्द्र ॥४॥ पुष्कर आधे ही द्वीप मांही, पूरव में मंदर शैलभाहिं। चन्द्रबाहू भूजंगम जगत भूर, ईश्वर नेमि प्रभु कर्म चूर ॥५॥ शुभ ताहि द्वीप पश्चिम जु ओर, विद्युन्माली गिर शिर जु मोर। तहां वीरसेन महाभद्र ईश, लखदेव यशोधर जिनसु बीस ॥६॥ श्री बिहरमान करूणा निधान, तुमरे पद सेवत देव आन। हमको पहुँचन की शक्ति नाहिं, वंदत परोक्ष जिन चैत्य मांहि ॥७॥ भव भव में सुख दायक निहार, पूजा ठानी आनंद कार। अब नृत्य करनको हिये चाव, उमग्यो है मेरे भक्ति भाव ॥८॥ ता थई थई थई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थई थई सुचाल, फिरि फिरि फिरि फिरि फिरि पग सम्हाल । टम टम टम टम टंकोर तंट, छम छम छम छम छम छुद्र घंट ।।९।। द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मिरदंग गाज, झननन ननन नूपुर सुजात । तन नननननननतान तोर, घननननन घंटा करत घोर ।।१०।। ऐसी विधि से जस गाय गाय, झुक झुक झुक झुक सिर नाय नाय । बिनती कीनी कर जोड़ जोड़, शिशु भाषत सुनियो तात मोर ।।११।। संसार विषम दुःख मेटमेट, शिव बनिता से कर भेट भेट । तुम चरनन को सेवक जुहार, यह जाचत हूँ मैं बार बार ।।१२।।

घत्ता ।

जय तीरथ ईशा, बीस जिनेशा, नमत सुरेशा, धरणेशा ।
जय जजत खगेसा अरु चक्रेशा, तुमपद वेसा नरशेसा ।।१३।।

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घं ।

दोहा ।

बिहरमान जिनदेवको, पुनि पुनि करूं प्रणाम ।
स्वर्ग संपदा भोगके, पाऊं शिवपुर धाम ।।

अथ श्री आदिनाथ जिनपूजा

नाभिराय मरुदेविके नंदन, आदिनाथ स्वामी महाराज ।
कर्मभूमिके आदि पधारे, मध्यम लोक मांहि जिनराज ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्द्रदेव सब मिलकर आये, जन्म महोत्सव करने काज।
आह्वानन सब विधि मिलकरके, अपने कर पूजें प्रभु पांय।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अथ अष्टक।

क्षीरोदधि को उज्ज्वल जल ले, श्रीजिनवर पद पूजन जाय।
जन्म जरा दुख मेटन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुजीके पाय।
श्रीआदिनाथके चरणकमलपर, बलिबलिजाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातें मैं पूजों प्रभु पाय।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।

मलियागिरि चंदन दाह निकंदन, कंचन झारी मैं भर ल्याय।
श्रीजीके चरण चढ़ावो भविजन, भव आताप तुरत मिटि जाय।।श्री०।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

शुभशालि अखंडित सौरभमंडित, प्रासुक जलसों धोकर ल्याय। श्रीजीके चरण चढ़ावो भविजन, अक्षय पदकों तुरत उपाय।।श्री०।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपा०।

कमल केतुकी बेल चमेली, श्रीगुलाब के पुष्प मँगाय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, कामबाण तुरत नसि जाय ।।श्री०।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि० ।

नेवज लीना तुरत रस भीना, श्री जिनवर आगे धरवाय। थाल भराऊँ क्षुधा नसाऊं, जिन गुणगावत मन हरषाय।।श्री०।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

जगमग जगमग होत दशोदिस, ज्योति रही मंदिर में छाय । श्रीजीके सन्मुख करत आरती मोह तिमिर नासे दुखदाय ।।श्री०।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०

अगर कपूर सुगंध मनोहर, चंदन कूट सुगंध मिलाय । श्रीजीके सन्मुख खेय धुपायन, कर्म जरे चहुँगति मिटि-जाय ।।श्री०।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामी० ।

श्रीफल और बदाम सुपारी, केला आदि छुहारा ल्याय । महामोक्ष फल पावन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुजीके पाय ।।श्री०।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामी० ।

शुचि निरमल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हर-षाय । दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदंग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बजाय ॥ श्रीआदिनाथके चरण कमलपर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय । हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातें मैं पूजों प्रभु पाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामी० ।

पंचकल्याणक ।

दोहा ।

सर्वारथ सिद्धि तैं चये, मरुदेवी उर आय ।
दोज असित आषाढ़ की, जजूँ तिहारे पाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीआषाढ़कृष्णद्वितीयां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत बदी नोमी दिना, जन्म्यां श्री भगवान ।
सुरपति उत्सव अति करा, मैं पूजौं धरि ध्यान ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जनकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिजिनाय अर्घं ।

तृणवत् ऋधि सब छांडिके तप धारचो वन जाय ।
नौमी चैत असेत की, जजूँ तिहारे पाय ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिजिनाय अर्घं ।

फाल्गुन बदी एकादशी, उपज्यो केवलज्ञान ।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजों यह थान ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिजिनाय अर्घं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माघ चतुर्दशि कृष्णकी, मोक्ष गये भगवान ।
भवि जीवोंको बोधिके, पहुंचे शिवपुर थान ।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिजिनाय अर्घं ।

अथ जयमाला ।

आदीश्वर महाराज मैं विनती तुमसे करूं, चारों गति के मांहि मैं दुख पायो सो सुनो । अष्ट कर्म मैं हूँ इकलौ यह दुष्ट महादुख देत हो, कबहूं इतर निगोदमें मोकूं पटकत करत अचेत हो ।। म्हारी दंनतनी वीनती ।।१।। प्रभु कबहूँक पटक्यो नरक में, जठे जीव महादुख पाय हो । निष्ठुर निरदई नारकी, जठे करत परस्पर घात हो ।। म्हारी० ।।२।। प्रभु नरकतणा दुख अब कहूँ जठे करत परस्पर घात हो, कोइयक बांध्यो खंभस्यो पापी दे मुद्गरकी मार हो, कोइयक काटें करोंतसों, पापी अंगतणी दोय फाड़ हो ।।म्हारी०।।३।। प्रभु इहविधि दुख भुगत्या घणा, फिर गति पाई तिरियंच हो। हिरण बकरा बाछला पशु दीन गरीब अनाथ हों। पकड़ कसाई जाल में, पापी काट काट तन खाय हो ।। म्हारी० ।।४।। प्रभु मैं ऊँट बलद भैंसा भयो, जापै लादियो भार अपार हो । नहीं चालो जब गिर पर्‌यो, पापीं दे सोटनकी मार हो ।। म्हारी० ।।५।। प्रभु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोइयक पुण्य संयोग सूं मैं तो पायो स्वर्गनिवास हो। देवांगना संग रम रह्यौ जठे भोगनि को परकास हो ॥ म्हारी ॥६॥ प्रभु संग अप्सरा रम रह्यो तामे कर कर अति अनुराग हो। कबहुँक नंदन वनविषैं, प्रभु कबहुंक वनगृह माँहि हो ॥ म्हारी० ॥७॥ प्रभु इहि विधि काल गमाइके फिर माल गई मुरझाय हो। देह क्रान्ति सब घट गई, फिर उपज्यो सोच अपार हो। सोच करत तन खिर पड्यो, फिर उपज्यो गरभ में जाय हो ॥ म्हारी० ॥८॥ प्रभु गर्भनणा दुख अब्र कहूं, जठे सकड़ाई की ठौर हो। हलन चलन नँहि करसक्यो जठे सघन कीच घनघोर हो। माता खावे चरपरो फिर लागे संताप हो ॥ म्हारी ॥९॥ प्रभु जो जननी तातो भखे, फेर उपजै तन सन्ताप हो ॥ औंधे मुख झूलो रह्यो फेर निकसन कौन उपाय हो। कठिन कठिन कर नीसरयो, जैसे निसरै जंत्री में तार हो ॥ म्हारी० ॥१०॥ प्रभु निकसत ही धरत्या पड्यो फिर लागी भूख अपार हो। रोय-रोय बिलख्यो घनो, दुख वेदन को नँहि पार हो ॥ म्हारी० ॥११॥ प्रभु दुख मेटन समरथ धनी, यातैं लागूं तिहारे पांय हो। सेवक अरज करै सुनो, मोकूं भवोदधि पार उतार हो ॥ म्हारी दीनतनी सुन वीनती ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

। दोहा ।

श्रीजिन महिमा अगम है, कोइ न पावै पार ।
मैं मति अल्प अज्ञान हो, कौन करे विस्तार ।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विनती ऋषभ जिनेसकी, जो पढ़सी मन ल्याय ।
सुरगो में संशय नहीं, निश्चै शिवपुर जाय ।।

इत्याशीर्वादः ।

अर्घावलि ।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैं ।
धवल मंगलगान रवा कुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ संभवनाथ अभिनन्दननाथ सुमतिनाथ पद्मप्रभु सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वंपामीति स्वाहा ।

अथ श्रीचन्द्रप्रभ जिन पूजा

अडिल्ल ।

शुभ अतिशय चौंतीस प्रातिहारिज अधिका ही,
अनन्त चतुष्टयजुक्त दोष अष्टादस नाहीं ।
आह्वानन विधि करूं नाय सिंर सुधकरि मनही,
लोक मोह तम हरन दीप अद्भुत ससि जिनही ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर । संवौषट् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

गीता छन्द ।

हिमशैल निरगत तोय सीतल मधुर स्वर्गथकी परै ।
भरि भृङ्ग जिनवर चरण आगैं धारदे भवमृति हरै ॥
श्रीचन्द्रप्रभु दुतिचन्दके पद कमल नखशशि लगि रह्यो ।
आतंकदाह निवारि मेरी, अरज सुनि मैं दुख सह्यो ।१।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्ममृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भवताप दाह दहन्त मोकूं एक छिन न विसारही ।
घनसार मलय थकी जिनेश्वर पूजिहूं दुख टारही ।श्रीचंद्र०

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

संसार उदधि अपार तारन भक्ति प्रभु तुमरी सही ।
शुभ सालि पुंज जिनाग्र करि हूं लहूं वसुगुण वसुमही ।श्री०

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

अति सुभट मार प्रचंड सरतें हने सुर नर पशु सबै ।
शुभ कुसुमसों पद पूजिहूँ जिन हरो मनमथ दुख अबै ।श्री०

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिने कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह क्षुधा मोकूं दहै नितही, नैंक सुख नहिं पावहीं।
चरु मिष्टतें पद पूजिहूं जिन ! क्षुधारोग नसावहीं ॥श्री०

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति मोहतम मम ज्ञान ढाक्यो, स्वपर पद नहिं बेबही।
तुम चरण पूंजूं रतन दीपक, करो तमको छेवही ॥श्री०

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मलय अगर सुगंध सौरभ, थकी अलिबहु आवहीं।
जिन चरन आगें धूप खेये, कर्म बसु जरि जावहीं ॥श्री०

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभस्वामिनेऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मोक्ष मग अंतराय रोक्यो, मोहि निरबल जानिकैं।
जिन मोक्ष द्यौ तब चरण पूंजूं, फल मनोहर आनिकैं ।श्री०

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामिति स्वाहा

जल गन्ध तन्दुल पुष्प चरु ले, दीप धूप फलौघही।
कन थाल अर्घ बनाय शिव सुख, 'रामचंद' लहै सही ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति०।

अथ पंच कल्याण अर्घ

दोहा।

चैत असित पंचमि चये बैजयन्त तें इन्द्र
उदर सुलछना अवतरे, जजूं त्रिविधि गुणवृन्द ॥१॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपं मंगलमंडिताय श्री चन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असित पोह एकादसी, जनमें जुत त्रयज्ञान ।
वासव उत्सव करि जजे, जजूं जनम कल्यान ।।२।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणसहिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्द्रपुरी साम्राज्य तजि कृष्ण एकादशी पोह ।
धरचो उग्र तप बन विषै जजूं नाशहित द्रोह ।।३।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपः कल्याणसहिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

फाल्गुन सप्तमी कृष्णही घाति हने लहिं ज्ञान ।
भव्यातम बोधे घने जजहुं ज्ञान कल्यान ।।४।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां ज्ञानकल्याणसहिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुक्ल फाल्गुण सप्तमी, शेष कर्म हनि मोक्ष ।
गये समेदाचल थकी, जजूं गुणन के कोख ।।५।।

ॐ ह्रीं फाल्गुणशुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभस्वामिने अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला ।

दोहा ।

बसुजिन बसु विधि हानिके, बसे धरा बसु जाय ।
हरो हमारे कर्म बसु, नमूं अङ्ग बसु नाय ।।१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाल अहो जगत गुरु की।

अहो चन्द्र दुतिनाथ, ज्ञायक अन्तरजामी।
सकल लोक तिरकाल, लखे जुगपद गुणधामी ॥
जे चर अचर अबार, अनागततीत उपायो।
लोकालोक निहारि, लखे कछु नाहिं छिपायो ॥२॥
भाख्या ज्यौं कर मांहि, सिधारथ धारि निहारे।
अथवा अंगुरी रेख, लखे कर जुत इकवारे ॥
ऐसो ज्ञान अपार, और कहुं नाहिं सुन्यो है।
दरसन को परताप, तुहे जिन माहिं भन्यौ है ॥३॥
मैं दुख पाये घोर, चतुरगति माहिं घनेरे।
तुमतें छाने नाहिं, कहा भाषूं जिन मेरे ॥
पय शिशुकी सब बात, ख्यात पितु जननी जाने।
मांग्या बिन नहिं देहि, तोय पयधाल न खाने ॥४॥
देखो करम अपार, सुभट जड़ चेतन नाहीं।
चेतनकूं करि रंक, चोर जिम बांधत जाहीं ॥
सातों अवनिमझारि, नरक दारुण दुख देही।
कोऊ सरनो नाहिं, धरम बिन निश्चै येही ॥५॥
तिरयंचगति दुख घोर, सहे बिन संजम धारे।
भूख प्यास लदि भार, आर दे पीठ मझारे ॥
मारत बधकर धाय, जाल मधि उड़न पखेरू।
पकरि कसाई लेय, सरत्ति ताहिं जिहिवेरू ॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानुष गति कुल नीच, विकल इन्द्री चखि नाहीं।
भूपति आगें दौरि, तुबक कांधे धरि जाहीं ॥
अहि निशि चौकी देय, मेह सिय घाम सहे ही।
बिन दरसन दुख येह, घने चिरकाल लहे ही ॥७॥
कोऊ पुन्यवसाय, बाल तपतें सुर थायो।
हस्ती घोटक बैल, महिष असवारी धायो ॥
पूरन आयु जु थाय, तबै माला मुरझानी।
आरत्ति तैं तजि प्रान, कुसुम भव पाय अज्ञानी ॥८॥
ऐसे दुःख अपार, सहे थिरता नहिं पाई।
क्रोध मान छल लोभ, थकी दिन दिन अधिकाई ॥
तुम करुणानिधि लेखि सरनि आयो ततकारी।
दुख को कर निरवार, अहो जगपति जगतारी ॥९॥
जगनायक जगदीश, जगोत्तम दृष्टि निहारो।
मोकूं दास विचारि, करो वपुतें निरवारो ॥
या वपुसंगति पाय, सहे दुख और न हेती।
यह निश्चै करि जानि, लखे तुम वानी सेती ॥१०॥
करम विचारे कौन, भूलि मेरी अधिकाई।
अगनि सहै घनघात, लोहकी संगति पाई ॥
ऐसे या वपुसंग सहे, दुख और न सेती।
धनि बानी तुम देव, सुनी गुरु के मुख एती ॥११॥
तुम अनुकंप पसाय, तजूं दुर ध्यान विकारो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वरनादिकतें भिन्न लखूँ चिद्रूप हमारो ॥
जोतिस्वरूपी देव, बसै याही घट माहीं।
ढूढूँ कौन सुथान, लखूँ तुम ध्यान उपाहीं ॥१२॥
तेरे ध्यान प्रताप, करम जरि जाय अनन्ता।
'रामचन्द' करि ध्यान, लहे सुख नर गुणवन्ता ॥
इह भव सुक्ख अपार, और भव सुर पद पावैं।
अनुक्रमतें निरवान, जिसके सुरनर गुण गावैं ॥१३॥

दोहा।

बसु द्रव्यले सुध भावतें, जजूँ तिहारे पाय।
देहु देहु शिव मुझ अबै, अहो चन्द दुति राय ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिने महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीचन्द्रप्रभ पूजा समाप्त।

उदक चन्दन आदि बोलकर।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त शीतलनाथ श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति निर्मल नीरं गन्ध गहीरं, तन्दुल पुष्प सु चरु लावैं।
पुनि दीपं धूपं फल सु अनूपं, अर्घ राम कर गुण गावैं।
चम्पापुर थानं शुभ कल्यानं, वासुपूज्य जिनराज वरं।
वसु विध कर अरचै भवदुख विरचै, परचै सब सुखतास धरं॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चन्दन इत्यादि बोलकर।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ अनन्तनाथ धर्मनाथ जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री शीतलनाथ जिनपूजा

अडिल्ल

शीतल जुग क्रम नमूं धर्म दशधा इम भाख्यौ,
उतिम छिमा सु आदि अन्त ब्रह्मचर्य सु आख्यौ।
सुनि प्रतिबुध ह्वै भवि मोछि मारगकूं लागे,
आह्वानन विधि करूं चरण जुगकरि अनुरागे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट्
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

गीता छन्द।

ऋतु शरद इंदु समान अंगहु स्वच्छ शीतल अति घणो।
भरि हेम झारी धार देवे, नीर हिमवन गिरि तणो ॥
भवि पूजि शीतलनाथ जिनवर, नशें भवके ताप ही।
आतंक जाय पलाय शिव तिय, होय सनमुख आप ही ।१।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा । ॥१॥

कर्पूर नीर सुगन्ध केसरि, मिश्र चन्दन बावना।
जिनराज पूजे दाह नासे, होय सुख रलियावना ॥
भवि पूजि० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तम अखण्डित सालि उज्जल, दुरित खण्डनकार ही ।
करि पुञ्ज श्रीजिन चरण आगै, अखै पर करतार ही ।।
भवि पूजि० ।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

निरदोष अघ अनेक विधिके, कुसुम पावन ल्याय ही ।
जिन चरण चरचि उछाह सेती, समरबाण नसाय ही ।।
भवि पूजि० ।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

पकवान सुन्दर सुरहि घिव करि, षडरसके मिष्ट ही ।
धरि कनक भाजन पूजि जिनवर, छुधा नासै दुष्ट ही ।।
भवि पूजि० ।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणि दीप जोति उद्योत सुन्दर, कनक भाजन धारिये ।
जिन पूजि भवि जन मोह नासै, स्वपर तत्व निहारिये ।।
भवि पूजि० ।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री खंड अगर कपूर उत्तम, कनक धूपायन भरें ।
भवि खेय श्रीजिन चरन आगे, दुष्ट कर्म सबैं जरे ।।
भवि पूजि० ।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फल लेहि उत्तिम मिष्ट मोहन, लौंग श्रीफल आदि ही।
जिन चरण पूजै मुक्तिके फल, लहै अचल अनादि ही॥
भवि पूजि०॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं

नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरू अति दीप ही।
करि अर्घ धूप समैत फल ले, 'रामचंद्र' अनूप ही॥
भवि पूजि०॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेन्द्रायऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं

पंच कल्याणक अर्घं।

दोहा।

चैत्र कृष्ण अष्टमि चये, अच्युततैं भगवंत।
उदर सुनन्दा अवतरे, जजूं मोक्षके कन्त॥१॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीशीतलनाथज्जिनेद्राय अर्घं नि०।

कृष्ण द्वादसी माघकी, जनमें श्रीजिनराय।
उत्सव करि * वासव जजे, मैं जजि हूं जुग पाय॥२॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथज्जिनेन्द्राय अर्घं नि०।

असित माघ द्वादसि तजी, तृणवत भूति महान।
नगन दिगम्बर वन वसे; जजूं दसम भगवान॥३॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीशीतलनाथज्जिनेन्द्राय अर्घं नि०।

* इन्द्र।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पौष चतुरदसि स्याम ही, कल ध्यान असि धारि ।
हने कर्म चउ घातिया, जजूं देव मुझ तारि ॥४॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां केवलज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीशीतलनाथज्जिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

अष्टमि सित आसोजकी, गये मोक्ष भगवान ।
वसु विधि पद पंकज जजूं, मोहि देहु शिवथान ।५।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणकमंडिताय श्रीशीतलनाथज्जिनेन्द्राय अर्घं निर्वं० ।

जयमाला ।

दोहा ।

सीतल तुम पद कमलजुग, नमूं सीस धरि हाथ ।
भवदधि डूबत काढि मो, कर अवलम्ब दे हाथ ।१।

चाल मंगल की

सीतल पद जुग नमूं उभैकर जोरिही ।
भदलापुर अवतरे अच्युतपद छोरही ॥
दिढ़रथ तात विख्यात सुनन्दा मायजी ।
चैत कृष्ण वसु गर्भ लिये सुखदायजी ॥
सुखदाय गर्भकल्याण काजे आय सुरपति सब मिले ।
जननी सुसेवा राखि धनपति आप सुरलोकें चले ॥
षटमास ले नवमास दिनमें वार त्रिय मणि वर्षये ।
गर्भ कल्याण महंत महिमा देखि सब जन हर्षये ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्वाषाढ नछित्र माघ वदि द्वादसी ।
जनमे श्रीजिननाथ नभोगण सब हंसी ।।
चतुरनिकाय मझारि घंटादि बजे भले ।
नये मौलि फुनि पीठ सबै हरिके चले ।।
चले पीठ अवधितें जिन जन्म निश्चै हरि लखो ।
डगि सप्त चलि नुति ठानि बासव मेरु चलनेकूं अखो ।।
जिनलेय पांडुक वनविषैं अभिषेक करि पूजा करि ।
पित मात दे जन्मा कल्याणक ठानि थल चालो हरी ।३।

हेम वरण तन तुंग निवैं धनुको सही ।
लछिन श्रीवछ आयु पूर्व लखकी कही ।।
नीति निपुण करि राज तजौं तृणवत तवै ।
लौकांतिक सुर आय संबोधि चले सबै ।।
संबोधि आये माघ द्वादसि कृष्ण श्रीजिनवन गये ।
नमः सिद्धेभ्यः कहि लौंच कीनों उपधि तजि कर मुनिभये।
सुर असुर नृपगण ठानि पूजा धवल मंगल गायही ।
निःकर्म कल्याणक सुमहिमा सुनत सब सुख पायही ।४।

षष्टमि धरि निज ध्यानविषैं प्रभु थिर भये ।
पूरन करि अनिकाज सेयपुरमें गये ।।
क्षीरदान जुत भक्ति पुनर्वसुजो दिये ।
हरिष देन आश्चर्य पंच ततखिणकिये ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किये आश्चर्य रत्न वर्षे अर्घ द्वादस कोडि ही ।
धरि ध्यान सुकल उपाय केवल पाति चारो तोडि ही ।।
चर अचर लोक अलोक जुगपति देखि सबही वर्नियै ।
सुनि इंद्र ज्ञान कल्याण उत्सव पौषवदि चउदिसि किये

योजन साढा सात लसै समबादिही ।
लखि मुनिमै गण देव इकासी आदिही ।।
पूरव सहस पचीस हीन ब्रष तीन ही ।
विहरे केवल पाय आयु भई छीन ही ।।

भई छीन समेद गिरितैं आश्वनी सित अष्टमि सही ।
असि ध्यान सुकल थकी अघाते हनै मुक्तितिया लही ।
सब इंद्र आय कियो महोत्सव मोक्ष मंगलगायही ।।
हूं नमूं सीतलनाथके पद अमल गुणगण ध्यायही ।।६।।

बसु खित वसु क्रम हानि बसे वसु गुणमई ।
ज्ञानावरणजघाति विश्व जान्यो सही ।।
देखो लोक अलोक हने द्रशनावली ।
वेदनिको करि नाश अवाध भय वली ।।

फुनि बली सुद्ध चरित्रमें थिर मोह नाशथकी भये ।
अवगाह गुण छय आयुतें निरकाय नाम गये थये ।।
गुण अगुरलघु छय गोतके अंतराय छय बलनंत ही ।
सिध भये सीतलनाथजी तिरकाल बंदे संत ही ।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसु गुण ये विवहार नियत अनंत ही।
जाणै गणधरपै न बखानत अंतही ।।
ज्यों जलनिधि विस्तार कहें करते इतो।
बाल न मरम लहंत न जानत है कितो ।।

कितनौ न जानैं उदधि है, जिम तुहे गुण वरणन करूं।
मैं भक्तिवश वाचाल ह्वै कछु शंक मन नाहीं धरूं।
गुण देहु तेरी करूं विनती अहो सीतलनाथजी।
"चंद्रराम" सरनि तिहारी आयो जोरि करिके हाथजी

दोहा।

सीतलके पद कमल जुग, त्रिविध नमूं सुख पाय।
भव दुख ताप मिटाययो, अहो दसम जिनराय ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथज्जिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।
इति श्रीशीतलनाथ जिनपूजा समाप्तम ।।

श्रीअनन्तनाथ जिनपूजा

अडिल्ल।

बाह्य अभ्यंतर त्यागि परिग्रह जति भजे।
बहुजन हित शिवपंथ दिखायो हरि नये ।।
ऐसे अनंत जिनेश पाय नमि हूं सदा।
आह्वाननविधि करूं त्रिविध करिके मुदा ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

नाराच छन्द ।

क्षीर नीर हीर गौर सोम शीत धारया ।
मिश्र गंध रत्न भृंग पाप नाश कारया ॥
अनन्तनाथ पाय सेव मोक्ष सौख्य दाय है ।
अनन्तकाल श्रमज्वाल पूजतैं नसाय है ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं नि० ॥

कुंकुमादि चंदनादि गंध शीत कारया । संभवेन अंतकेन भूरि ताप हारया ॥ अनंतनाथ० ॥चन्दनं॥

स्वेत इंदु कुंद हार खंड ना अखित्तही । दुरित खंडकार पुंज धारिये पवित्रही ॥ अनन्तनाथ० ॥अक्षतान्॥

सरोपुनीत पुष्पसार पंच वर्ण ल्यावही । गंध लुब्ध भृंग-वृंद शब्द धारि आवही ॥ अनन्तनाथ० ॥पुष्पं॥

मोदकादि घेवरादि मिष्ट स्वादसार ही । हेमथाल धारि भव्य दुष्ट भूख टारही ॥ अनतनाथ० ॥नैवेद्यं॥

रत्न दीप तेज भान हेमपात्र धारिये । भवांधकार दुःख-भार मूलतैं निवारिये ॥ अनन्तनाथ० ॥दीपं॥

देवदारु कृष्ण सार चंदनादि ल्यावही । दशांग धूप धूम्रगंध भृंगवृंद धावही ॥ अनंतनाथ० ॥धूपं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीफलादि खारिकादि हेमथालमें भरे। सुष्ट मिष्ट गंध-सार चक्षु नासिका हरे ।। अनन्तनाथ० ।।फलं।।

छप्पय ।

सलिल शीत अति स्वच्छ मिष्ट चंदन मलियागर। तंदुल सोम समान पुष्प सुरतरुके लाकर ।। चरु उत्तम अति मिष्टपुष्ट रसना मन भावन। मणि दीपक तमहरन धूप कृष्नागर पावन ।। लहि फल उत्तम कणथाल भरि, अरघ 'रामचंद' इम करै। श्रीअनंतनाथके चरन जुग, बहुविधि अरचे शिव बरै ।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति ।

पंचकल्याणक ।

दोहा ।

पुष्पोत्तरतैं चय लियो, 'सूर्यादे' उर आय ।
कातिक पडिवा कृष्ण ही जजहूं तूर बजाय ।।१।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भमङ्गलमंडिताय श्रीअनंत० अर्घं

जेठ असित द्वादशिविषैं, जनम सुराधिप जान ।
सनपन करि सुरगिर जजे, जजहू जनमकल्यान ।।२।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमंडिताय श्रीअनंत० अर्घं ।।

जगतराज्य तृणवत् तज्यो, द्वादशि जेठ असेत ।
लौकांतिक सुरपति जजे, मैं जजहूं शिवहेत ।।३।।

ॐ ह्रीं ज्यैष्ठकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमंडिताय श्रीअनंत० अर्घं ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चैत्र अमावसि अरि हने, घातिकर्म दुखदाय ।
कह्यो धर्म केवलि भये, जजूं चरण सुखदाय ।।४।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीअनंत० अर्घं।।
चैत्र अमावसि शिव गये, हनि अघाति भगवान ।
सुरनरखगपति मिलि जजे, जजहुँ मोक्षकल्यान ।।५।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीअनंत० अर्घं।।

जयमाला ।

दोहा ।

काळ अनंताअनंत भव, जीव अनंताअनंत ।
जिन उतपति व्यय ध्रुव कही, नमूऽनंत भगवंत ।।

(चाल—त्रिभुवनगुरु स्वामीजीकी)

जय अनंत जिनेस्वरजी, पुष्पोत्तरतैं सुरजी, सिंघसेन नरश्वरके चय सुत भये जी ।। 'सूर्योदे' माताजी जग पुण्य विख्याताजी, तिनके जगत्राता गर्भविषैं थये जी ।।२।। कार्तिक अंधियारीजी, परिवा अविकारीजी, साकेत मझारि कल्याणक हरि कियोजी । षटमास अगारेजी, मणि स्वर्ण घनेरेजी, वरषे नृपकेरे मंदिर धन जयोजी ।।३।। द्वादशि अंधियारीजी जनमे हितकारीजी, प्रभु जेठमझारि सुरासुर आयकैंजी । सुरगिरि लै आयेजी, भवि मंगल गायेजी, अभिषेक रचाये पूजे ध्यायकैंजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥४॥ फिर पितुघर लायेजी, नचि तूर बजायेजी, लखि अंग नमाये माता पिता तबैजी। तन हेम महा छविजी, पंचास धनू रविजी, लक्षि तीस कहे कवि आयु भई सबैजी ॥५॥ नृपपदवी धारीजी, लखि पणदह सारीजी, सब अनिल विचारि तपोवनकूं गयेजी; बदि जेठ दुवादसिजी, तप देखि सुरा रिषिजी, पद पूजि नये नसि पाप सबै गयेजी ॥६॥ षष्ठम करि पूरोजी, भोजन हित सूरोजी, पुर धर्म सनूरो आवत देखिकैंजी। नव भक्तिथको पयजी, विसाख तहां दयजी, मणिविष्टि अक्षय करि सुरगण पेखिकैंजी ॥७॥ धरि ध्यान सुकल तबजी, चउ घाति हनै जबजी, सुर आय मिले सब ज्ञान कल्याण ही जी। वदि चैत अमावसिजी, जक्षि भुक्ति तुहे वसिजी, समवादि रच्यौ तसु उपमा भी नहींजी। समवादि जिते सुविजी, सुनि धर्म तिरे सबजी, प्रभु आयु रही जब मास तणी तबैजी। संमेद पधारेजी, सब जोग संघारेजी, समभाव विथारि वरी शिवतिय जबैजी ॥ वसु गुण जुत भूषितजी, भव छारि बसे तितजी, सुख मगन भये जित मावस चैतकीजी। सुर सब मिलि आयेजी, शिवमंगल गायेजी, बहु पुण्य उपाय चले तुम गुणत कीजी ॥१०॥ गुणवृन्द तुम्हारेजी, बुध कौन उचारेजी, गणदेव निहारेपै वचना कहै जी। "चंदराम" करै थुतिजी, वसु अंगथकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नुतिजी, गुण पूरन ह्यो मति मर्म तुहे लहैजी ॥११॥ प्रभु अरज हमारी जी, सुनिज्यो सुखकारीजी, भवमें दुखभारी निवारौ हो धणीजी । तुम सरन सहाईजी, जगके सुखदाईजी शिवदे पितुमाई कहो कबलौं धणीजी ॥१२॥

घत्ता ।

इति गुण गण सारं,अमल अपारं,जिय अनंतके हिय धरई । हनि जरमरणावलि, नासिभवावलि, शिवसुन्दरि ततछिन वरई ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

बखतावरसिंह कृत

अथ श्रीशान्तिनाथ जिनपूजा

रोडक छन्द

स्थापना

सर्वारथ सुविमान त्याग गजपुर में आये ।
विश्वसेन भूपाल तासु के नन्द कहाये ॥
पंचम चक्री भये मदन द्वादस में राजै ।
मैं सेवूं तुम चरण तिष्ठये ज्यों दुःख भाजै ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ अष्टक

कुसुमलता छन्द

पंचम उदधि तनो जल निरमल कंचन कलश भरे हरषाय।
धार देत ही श्रीजिन सन्मुख जन्म जरामृत दूर भगाय।।
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिन के चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद जाय।।
जलम्।

मलियागिरचंदन कदली नंदन कुंकुम जल के संग घसाय।
भव आताप विनाशन कारण चरचूं चरण सबै सुख दाय।।
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरणकमलके पूजे रोग शोक दुःख दारिद जाय।।
चन्दनम्।

पुण्य राशि सम उज्ज्वल अक्षत शशि मरीचि तसु देखलजाय।
पुंज किये तुम चरणन आगे अक्षत पद के हेतु बनाय।।
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमलके पूजे रोग शोक दुःख दारिद जाय।।
अक्षतान्।

सुर पुनीत अथवा अवनी के कुसुम मनोहर लिए मंगाय।
भेंट धरत तुम चरणन के ढिग ततक्षिन काम बाण नस जाय।।
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमण के पूजे रोग शोक दुःख दारिद जाय।।
पुष्पम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भांति-भांति के सद्य मनोहर कीने मैं पकवान संवार।
भर थारी तुम सन्मुख लायो क्षुधाबेदनी रोग निवार ॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद जाय ॥
नैवेद्यम्।

घृत सनेह करपूर लाय कर दीपक ताके धरे प्रजार।
जगमग जोत होत मन्दिर में मोह अन्ध को देत सुटार ॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद जाय ॥
दीपम्।

देवदारु कृष्णागरु चन्दन तगर कपूर सुगन्ध अपार।
खेऊँ अष्ट करम जारन को धूप धनंजय माँहि सुडार ॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद जाय ॥
धूपम्।

नारंगी बादाम सुकेला एला दाडिम फल सहकार।
कंचन थाल माँहि धर लायो अरचत ही पाऊं शिवनार ॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद जाय ॥
फलम्।

जल फलादि वसु द्रव्य संवारे अर्घ चढ़ाऊं मंगल गाय।
वखत रतन के तुम ही साहिब दीजे शिवपुर राज कराय ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद जाय ॥

अर्घम् ।

अथ पंचकल्याणक।

छन्द उपगीत।

भाद्रव सप्तमि श्यामा, सर्वारथत्याग नागपुर आये।
माता ऐरा नामा, मैं पूजूं अर्घ सुभलाये ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां गर्भ कल्याणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे तीरथ नाथं, वर जेठ असित चतुर्दशी सोहै।
हरिगण नावें माथं, मैं पूजूं शांतिचरण युग जोड़े ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदस जेठ अंधयारी, कानन में जाय योग प्रभू लीन्हा।
नवनिधिरत्न सुछांड़ी, मैं बन्दू आत्मसार जिन चीन्हा ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तप कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष दसें उजियारा, अरिघात ज्ञान भानुजिन पाया।
प्रातिहार्य वसुधारा. मैं सेऊं सुर नर जासु यश गाया ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय पौष शुक्ल दशम्यां ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मेदशैलभारी, हन कर अघाति मोक्ष जिन पाई ।
जेठ चतुर्दशिकारी, मैं पूजूं सिद्धथान सुखदाई ।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला ।

छप्पय छन्द ।

भये आप जिनदेव जगत में सुख विस्तारे ।
तारे भव्य अनेक तिनों के संकट टारे ।।
टारे आठों कर्म मोक्ष सुख तिनको भारी ।
भारी विरद निहार लही मैं शर्ण तिहारी ।।
तिहारे चरणन को नमूं दुःख दारिद संताप हर ।
हर सकल कर्म छिन एक में शांति जिनेश्वर शांतिकर ।।१।।

दोहा ।

सारंग लक्षण चरण में, उन्नत धनु चालीस ।
हाटक वर्ण शरीर द्युति, नमूं शांति जग ईश ।।२।।

छन्द भुजंगप्रयात ।

प्रभु आपने सर्व के फन्द तोड़े, गिनाऊं कछू मैं तिन्हें नाम थोड़े । पड़ो अंबुधे बीच श्रीपाल राई, जपो नाम तेरो भए थे सहाई ।।३।। धरो रायने सेठ को सूलिका पै, जपी आपके नाम की सार जापै । भये थे सहाई तवै देव आये, करी फूल वर्षा सु विष्टर बनाये ।।४।। जबै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाख के धाम वन्हि प्रजारी, भयो पाण्डवों पै महाकष्ट भारी। जबै नाम तेरे तनी टेर कीनी, करी थी विदुर ने वही राह दीनी ॥५॥ हरी द्रौपदी धातु की खंड मांही, तुम्हीं व्हां सहाई भला और नाहीं। लियो नाम तेरो भलो शील पालो, बचाई तहां ते सबै दुःख टालो ॥६॥ जबै जानकी राम ने जो निकारी, धरे गर्भ को भार उद्यान डारी। रटो नाम तेरो सबै सौख्यदाई, करी दूर पीड़ा सु क्षणना लगाई ॥७॥ व्यसन्न सात सेवे करें तस्कराई, सुअंजन से तारे घड़ी ना लगाई। सहे अंजना चंदना दुःख जेते, गये भाग सारे जरा नाम लेते ॥८॥ घड़े बीच में सास ने नाग डारो, भलो नाम तेरो जु सोमा संभारो। गई काढ़ने को भई फूलमाला, भई है विख्याता सबै दुःख टाला ॥९॥ इन्हें आदि देके कहां लों बखानें, सुनो विरद भारी तिहूँ लोक जानें। अजी नाथ मेरी जरा ओर हेरो, बड़ी नाव तेरी रती बोझ मेरो ॥१०॥ गहो हाथ स्वामी करो वेग पारा, कहूँ क्या अबै आपनी मैं पुकारा। सबै ज्ञान के बीच भासी तुम्हारे। करो देर नाहीं मेरे शांति प्यारे ॥११॥

घत्ता।

श्री शांति तुम्हारी कीरत भारी सुर नरनारी गुणमाला।
बख्तावर ध्यावे रतन सु गावे मम दुख दारिद सब टाला ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वं०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अजी एरा नन्दन छबि लखत ही आप अरणं ।
धरे लज्जा भारी करत सुख सो लाग चरणं ।।
करै सेवा सोई लहत सुख सो सार क्षण में ।
घणे दीना तारे हम चहत हैं बास तिन में ।।

इत्याशीर्वादः ।

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनपूजा

अडिल्ल ।

सकल परीसै जीति ध्यान असितैं हने,
घाति चतुक लहि ज्ञान भव्य बोधे घने ।
मुनिसुव्रत जिन पाय नमूं सिर नायकैं,
आह्वानन विधि करूं चरण लव ल्यावकैं ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

चाल जोगीरासा ।

इन्दु सरद रितुका अगतैं सित, मुनि चित सम अविकारी ।
सीत सुगंध तृट परसत नासै, तीर्थोदक भरि झारी ।।
मुनिसुव्रत जिनके पद पूजे, दोष दुगुणनव नासै ।
लोक सकल कर रेख ज्यौं देखै, ऐसौ ज्ञान प्रकासै ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घसि मलियागर कुंकुमके संग कृस्नागर घनसारं ।
दाहनिकंदन परिमलतैं अलि, धावत वृंद अपारं ।।
मुनिसुव्रत०।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं ।

चंद किरन सम उज्जल दीरघ मनरंजन अनियारे ।
तंदुल औघ अखंडित लेकरि, पुंज करौं द्रिग हारे ।।
मुनिसुव्रत०।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।

कुसुम मनोहर पंच वरण ही, सुरतरुके सुभ ल्यावैं ।
गंध सुगंधे घ्राणहि रंजन, गुंजत षटपद आवैं ।।
मुनिसुव्रत०।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं ।

मोदक गूजा घेवर फैंनी, सुरही घृत्त बनावैं ।
रसना रंजन रसतैं पूरे कंचन थाल भरावैं ।।
मुनिसुव्रत०।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।

दीप रतनमय जोति मनोहर, सुवरन भाजन धारैं ।
ध्वांत नसै जिम मेघ पवनतैं रवि आतम विसतारै ।।
मुनिसुव्रत०।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतभगवज्जिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।

कृस्नागर मलियागर चंदन धूप दसांग मगावैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वर्ण धुपायन संग हुतासन, जारत मधुकर आवैं ।।
मुनिसुव्रत०।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतभगवज्जिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।

फल उत्तम मनहर बहु नीके, श्रीफल दाख मगावैं ।
पूंगी खारिक आदि घनेरे घ्रानन चक्खि सुहावैं ।।
मुनिसुव्रत०।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतभगवज्जिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।

जल चंदन तंदुल चरु दीपग, धूप कुसुम फल ल्यावैं ।
अर्घं करें 'चंद' वसुविधि ऐसे, सो सिवके सुख पावैं ।।
मुनिसुव्रत जिनके पद पूजे, दोष दुगुणनव नासैं ।
लोक सकल कर रेखज्यौं देखैं, ऐसो ज्ञान प्रकासैं ।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच कल्याणक अर्घ ।

प्राणत स्वर्ग थकी चये, श्यामा उर अवतार ।
सावण दोयज कृष्नही, लयो जजूं पद सार ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

दसमी वदि वैशाख ही, जनमे जुत त्रय ज्ञान ।
सकल सुरासुर गिरि जजे, मैं जजहूं धरि ध्यान ।।२।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रृष्न दसमि वैशाख तप, धरयौ परिग्रह त्याग।
नगन दिगम्बर बन वसे जजूं चरण जुतराग ॥३॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रत-जिनेंद्राय अर्घं नि० ।

नौमी वदि वैशाख ही, हने घाति दुखदाय।
कह्यौ धर्म केवलि भये जजूं चरण गुनगान ॥४॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रत जिनेंद्राय अर्घं नि० स्वाहा।

फागुन द्वादसि कृष्नही, हनि अघाति निरवाण।
गये सुरासुर पद जजे जजहूं मोक्ष कल्यान ॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुणकृष्णद्वादश्यां मोक्षमंगलमडिताय श्रीमुनि-सुव्रतजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

जयमाला ।

श्रीमुनिसुव्रत जिनतने, नमूं जुगल पद सार।
भवदधि तारनतरन हो, पतित उधारनहार ॥१॥

चाल—सीमंधरजिनवन्दिस्यां जगसार हो ।

मुनिसुव्रत जिनबंदिस्यां जगसारहो, नगर कुसागरभूप।
पिता नमूं सुहमित्तजी जगसारहो, श्रीहरिवंस अनूप ॥
अनूप श्रावण बीजकारी सुरग प्राणततैं चये।
तव मात स्यामा गर्भ आये लोकत्रयमें सुख भये ॥
सुर असुरके नय मुकुट कंपे पीठ सब हरि आयही।
गर्भाकल्यान महन्त महिमा ठानि मंगल गायही ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षटनवमास त्रिकालही जगसारहो, वरषे रतन अपार ।
बदि दसमी वैशाखकी जगसार हो, जिनजनमें तिहबार ।।
तिहबार घंटा आदि बाजे, सबै सुर मिलि आयही ।
जिन लेय पांडुक वन नह्वाये, खीर जल सुभल्यायहि ।।
सिंगार करि पितु मात सोंपे, नृत्य तांडव हरि करयो ।
लखि हृदै हरषित भये दम्पति; नाम मुनसुव्रत धरयो ।।२।।

स्याम वरण तन तुंग है,जगसार हो, बीस धनुष परिमान ।
तीस सहस वृष आयु है जगसार हो, कछलांछिनसुभजान ।।
सुभराजपद दससहस कीनो त्यागि तृणवत बन गये ।
नमः सिद्धेभ्यः कहि लोंच कीनों, ध्यान में प्रभु थिरथये ।।
तबही भयो मदज्ञान सुरनर पूजि पद गुण गाइये ।
वैसाख दसमी कृष्ण चम्पकवृक्षतलि व्रत भाइये ।।३।।

करि षष्टम मिथुला गये जगसार हो,भोजन हित जिनराय
विश्वसेननृपजी दयो जगसार हो,पय लखि सुर हरषाय ।
हरषाय सुर आश्चर्य कीनों पंच फिरि वन जाय ही ।
तप करे ग्यारा वरष द्वादस भांति निरभय थाय ही ।।
वैसाख नवमी कृष्ण हरिये घाति चउ धरि ध्यान ही ।
लहि ज्ञान लोक अलोक पेख्यो, भयो बोध कल्यान ही ।४।

समोसरन धनपति रच्यो जगसार हो, मानसथम्भत्रिसाल ।।
चउ चउ गोपुर सोहने जगसार हो,खाई सजल मराल ।।
मराल वन वन कल्पतरु फुनि चैत चम्पक अम्बही ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धुज सैल सरित सतूप सुर तिय, नचैं हलत नितम्ब ही ।।
मधि सभा द्वादस सभामण्डप कमल आसन जिन ठये ।
चतु वक्त्र अंगुल च्यारि अन्तव भई धुनि सुनि हरषये ।।५।।
तरु असोक त्रिय छत्र हैं जगसार हो चवसठि चँवर ढुरंत ।
जोजन वानी मागधी जगसार हो दुंदुभि मधुर घुरन्त ।।
घुरन्त दुंदुभि सुमन वरषै तुङ्ग आसन त्रिय लसै ।
तमपटल भामण्डव विध्वंसै कोटिरविकी छवि नसै ।।
वसु प्रातिहारिज सहित आरिज देसके भवि बोधि ही ।
सम्मेदगिरि समभाल प्रणये भूरि जोग निरोधिही ।।६।।
फागुन द्वादसि कृस्नही जगसारहो ध्यान सुकल असिधार ।
हनि अघाति सिवपुर लयो जगसारहो सुख अनन्त भंडार ।।
भण्डार सुख अविकार अवपु सु हीनवृद्ध नहीं कदा ।
त्रैलोककी तिरकाल परणति ज्ञान गर्भित है सदा ।।
तित जनम मरन जरा न व्यापै नांहि सेवक भूपही ।
चिद्रूप वसुगुणमयी राजे सदा एक सरूप ही ।।७।।
तुम गुण सुरगुरु वरनवैं जगसारहो, जिह्वा सहस बनाय ।
तौऊ पार लहै नहीं जगसार हो, तो हम पै किम थाय ।।
किम थाय हमपै तुहे बरनन देवगुरु से थकि रहे ।
हो कृपानाथ अनाथके पति इहै भव दुख मैं सहे ।।
तुम तरन तारण दुखनिवारण तारि भवतें नाथजी ।
'चन्दराम' सरनि निहारि आयो जोरिकें जुग हाथजी ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा ।

श्रीमुनिसुव्रत देवकी, विनती परम रसाल ।
जो पढसी सुनिसी सदा पासी मोक्ष विसाल ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री नेमिनाथ जिनपूजा

छन्द लक्ष्मी तथा अर्घ लक्ष्मीधरा

जैति जै जैति जै जैति जै नेमिकी,
धर्म अवतार दातार श्यौचैन की ।
श्री शिवानंद भौफंद निकंदनं,
ध्यावैं जिन्हैं इन्द्र नागेन्द्र ओ मैनकी ।
पर्मकल्याण के देनहारे तुम्हीं,
देव हो एव तातैं करौं ऐनकी ।
थापि हौं बार त्रै शुद्ध उच्चार कैं,
शुद्धता धार भवपार कूं लेनकी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र ! अत्रमम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अष्टक

दाता मोक्षके श्रीनेमिनाथ जिनराय ॥ दाता० ॥टेक॥
निगम नदी कुश प्राशुक लीनों, कंचन भृंग भराय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनवचलनतैं धार देत ही, सकल कलंक नशाय ॥
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय ॥ दाता० ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वं० ।

हरिचन्दन जुत कदली नन्दन, कुंकुम संग घसाय ।
विघनताप नाशन के कारन, जजौं तिहारे पाय ॥दाता०॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वं० ।

पुण्य राशि तुम जस सम उज्वल, तन्दुल शुद्ध मँगाय ।
अखय सौख्य भोगनके कारण, पुंज धरों गुनगाय ॥दाता०॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वं० ।

पुंडरीक तृण द्रुम को आदिक, सुमन सुगंधित लाय ।
दर्प्पक मनमथभंजनकारन जजहुं चरन लवलाय ॥दाता०॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वं० ।

घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरत मँगाय ।
क्षुधावेदनी नाश करनको, जजहुं चरन उमगाय ॥दाता०॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वं० ।

कनकदीप नवनीत पूरकर, उज्वल जोति जगाय ।
तिमिरमोहनाशकतुमकोलखि, जजहुँचरनहुलसाय॥दाता०
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वं०

दशविधि गंध मंगाय मनोहर गुंजत अलिगन आय ।
दशोंबंध जारनके कारन, खेवोंतुम ढिगलाय॥दाता०॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वं०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरसवरन रसना मन भावन, पावन फल सु मंगाय।
मोक्षमहाफलकारन पूजों हे जिनवर तुम पाय॥दाता०॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति०

जल फल आदि साज शुचि लीने, आठौं दरब मिलाय।
अष्टमक्षितिके राज मरनकों, जजों अंग वसुनाय॥दाता०॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वं०।

पंचकल्याणक।

सित कातिक छट्ठ अमंदा। गरभागम आनन्द कन्दा।
शचि सेय शिवापद आई। हम पूजत मनवचकाई॥१॥
ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथ जिने०

सित सावन छट्ठ अमंदा जनमे त्रिभुवन के चन्दा।
पितु समुद महा सुख पायो। हम पूजत विघन नशायो।२।
ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लषष्ठ्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथ जिने०

तजि राजमती ब्रत लीनों। सित सावन छट्ठ प्रवीनो।
शिवनारि तबै हरिषाई। हम पूजैं पद शिरनाई॥३॥
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथ जि०

सित आसिन एकम चूरे। चारों घाती अति कूरे।
लहि केवल महिमा सारा। हम पूजैं अष्टप्रकार॥४॥
ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदा केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनेमिनाथ जि०

सितषाढ़ अष्टमी चूरे। चारों अघातिया कूरे।
शिव उर्ज्जयंततैं पाई। हम पूजैं ध्यान लगाई॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथ जि०

अथ जयमाला ।

दोहा ।

श्याम छबी तन चाप दश, उन्नत गुण निधिधाम ।
शंख चिन्हपद मैं निरखी, पुनि पुनि करों प्रणाम ।।१।।

पद्धरी छन्द (१६ मात्रा लघ्वन्त. ।

जै जै जै नेमि जिनिंद चंद, पितु समुद देन आनंदकंद ।
शिवमात कुसुदमनमोददाय, भविवृन्द चकोर सुखी कराय ।।
जय देव अपूरव मारतंड, तुम कीन ब्रह्मसुत सहस खंड ।
शिवतियमुख जलजविकाशनेश, नहिं रही सृष्टि में तमअशेश ।।
भवि भीत कोक कीनों अशोक, शिवमग दरशायोशर्मथोक ।
जै जै जै जै तुम गुनगंभीर, तुम आगम निपुन पुनीत धीर ।।
तुम केवल जोति विराजमान, जै जै जै जै करुनानिधान ।
तुम समवसरनमें तत्वभेद, दरशायो जातें नशत खेद ।।
तित तुमको हरि आनंदधार, पूजत भगतीजुत बहु प्रकार ।
पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय, जै बल अनंत गुनवंतराय ।।
जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश, जय बुद्धि विधाता विष्णुवेष ।
जय कुमतिवितंगनकोमृगेंद्र, जयमदनध्वांतकोरविजिनेन्द्र ।।
जय कृपासिंधु अविरुद्ध बुद्ध, जय ऋद्धसिद्ध दाता प्रबुद्ध ।
जय जगजनमनरंजन महान, जय भवसागर महं सुष्ट थान ।।
तुव भगति करै ते धन्य जीव, ते पावैं दिव शिवपद सदीव ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुमरो गुन देव विविध प्रकार, गावत नित किन्नरकी जुनार ।।
वर भगतमांहि लवलीन होय, नाचैं ताथेइ थेइ थेइ बहोय ।
तुम करुणासागर सृष्टिपाल, अब मोकों बेगि करो निहाल ।।
मैं दुख अनंत वसुकरमजोग, भोगे सदीव नहिं और रोग ।
तुमको जगमें जान्यों दयाल, हो वीतराग गुनरतनमाल ।।
तातैं शरना अब गही आय, प्रभु करो वेगि मेरी सहाय ।
यह विघन करम मम खंडखंड, मनवांछितकारज मंड मंड ।।
संसारकष्ट चकचूर चूर, सहजानँद मम उर पूर पूर ।
निज पर प्रकाशबुधि देह देह, तजिके विलंब सुधि लेह लेह ।।
हम जांचत हैं यह बार बार, भवसागरतें मों तार तार ।
नहिं सह्योजात यह जगत दुःख, तातैं विनवों हे सुगुनमुक्ख ।।

घत्तानन्द ।

श्रीनेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं, सुखकारं ।
भवभयहरतारं, शिवकरतारं, दातारं धर्माधारं ।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

मालिनी ।

सुख, धन, जस, सिद्धि पुत्रपौत्रादि वृद्धि ।
सकल मनसि सिद्धि होतु है ताहि ऋद्धि ।।
जजत हरषधारी नेमिको जो अगारी ।
अनुक्रम अरिजारी सो वरै मुक्ति नारी ।।१६।।

इत्याशीर्वादः ।

——

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीपार्श्वनाथ जिनपूजा

गीता

वर सुरग आनतको विहाय सुमात वामा सुत भये।
अश्वसेन के पारस जिनेश्वर चरन तिनके सुर नये॥
नव हाथ उन्नत तन विराजे उरग लच्छन अतिलसैं।
थापूँ तुम्हें जिन आय तिष्ठहु करम मेरे सब नसैं॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

छन्द।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये। हेमपात्र धारके सु आपको चढ़ाइये॥ पार्श्वनाथदेव सेव आपकी करूँ सदा। दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चन्दनादि केशरादि स्वच्छ गंध लीजिये।
आप चर्न चर्च मोहतापको हनीजिये॥पार्श्वनाथ०॥चंदनं॥

फेन चंदके समान अक्षतें मँगाइकैं।
पादके समीप सार पुंजकौं रचाइकैं॥पार्श्वनाथ०॥अक्षतान्॥

केबड़ा गुलाब और केतुकी चुनाइये।
धार चर्न के समीप कामको नसाइये॥पार्श्वनाथ०॥पुष्पं॥

घेवरादि बावरादि मिष्ट सर्पि में सने।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप चर्नचर्चंतेक्षुधादि रोगको हने।।पार्श्वनाथ०।।नैवेद्यम्।।
लाय रत्न दीपको सनेह पूरकैं भरूँ।
वातिका कपूरवारि मोहध्वांतको हरूँ।।पार्श्वनाथ०।।दीपं।।
धूप गंध लेयके सु अग्नि संग जारिये।
तासु धूप के सुसंग अष्टकर्म बारिये।।पार्श्वनाथ०।।धूपं।।
खारिकादि चिर्भटादि रत्नथाल में धरूँ।
हर्षधारकेजजूं सुमोक्षसुक्खकूं वरूँ।।पार्श्वनाथ०।।फलं।।
नीर गंध अक्षतं सुपुष्प चरु लीजिये :
दीप धूप श्रीफलादि अर्घतैं जजीजिये।।पार्श्वनाथ०।।अर्घं।।

पंचकल्याणक।

छन्द जाल।

शुभ आनत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये।
वैसाख तनी दुति कारी, हम पूजैं विघ्न निवारी।।१।।
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ० अर्घं
जनमे त्रिभुवन सुखदाता, एकादशि पौष विख्याता।
श्यामातन अद्भुत राजै, रविकोटिक तेजसु लाजै।।२।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथ० अर्घं
कलि पौष इकादशि आई, तब बारह भावन भाई।
अपने कर लोंच सुकीना, हम पूजैं चर्न जजीना।।३।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपःकल्याणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथ०अर्घं
कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवलज्ञान उपाई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तब वृष-उपदेश जु कीना, भवि जीवनकौं सुख दीना ।।
ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थीदिने केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ० अर्घं
सित श्रावन सातें आई, शिवनारि वरी जिनराई ।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजें मोक्ष कल्याना ।।
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तमीदिने मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वं०अर्घं

जयमाला ।

कवित्त ।

पारसनाथ जिनेन्द्रतने बच पौन भखी जरते सुन पाये ।
कियो सरधान लियो पद आन भये पद्मावती शेष कहाये ।।
नामप्रताप टरै संताप सुभव्यनको शिव शर्म दिखाये ।
हो अश्वसेनके नन्द भले गुन गावतु हैं तुमरे हरषाये ।।

दोहा ।

केकीकंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ ।
लच्छन उरग निहार पग बन्दूं पारसनाथ ।।

छन्द मोतिदाम ।

रची नगरी षट मास अगार । बने चहुँ गोपुर शोभ अपार ।। सुकोट तनी रचना छवि देत । कंगूरनपै लहकै बहुकेत ।।३।। बनारसकी रचना छविसार । करी बहुभांति धनेश तयार । तहां अश्वसेन नरेन्द्र उदार । करै सुख वाम सुदे पटनार ।।४।। तज्यो तुम आनत नाम विमान । भये तिनके वर नन्दन आन ।। तबै पुर इन्द्र नियोग जु आय । गिरिंद्र करी विधि न्हौन सु जाय ।।५।। पिता घर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सौंपि गये निज धाम। कुवेर करै वसु जाम सुकाम ॥
बढ़ैं जिन दोज मयंक समान। रमैं बहु बालक निर्जर आन।
भये जब अष्टमवर्ष कुमार। धरे अणुव्रत्त महासुखकार ॥
पिता जब आन करी अरदास। करो तुम व्याह वरो मम
आस ॥७॥ करूँ तब नाहिं कहे जगचंद। किये तुम काय
कषाय जु मंद ॥ चढ़े गजराज कुमारन संग। सुदेखत गंग-
तनी सु तरंग ॥८॥ लख्यो इक रंग करै तप घोर चहूँ दिशि
अग्नि बलै अति जोर ॥ कही जिननाथ अरे सुन भ्रात। करैं
बहु जीवतनी मत घात ॥ भयो तब कोपि कहै कित जीव।
जले तब नाग दिखाय सजीव ॥ लख्यो इह कारन भावन
भाय। नये दिव ब्रह्मऋषीश्वर आय ॥१०॥ तबै सुर चार
प्रकार नियोगि। धरी शिविका निज कंध मनोगि ॥ कियो
वनमांहि निवास जिनंद। धरे व्रत चारित्रआनंदकन्द ॥११॥
गहे तहँ अष्टमके उपवास। गये धनदत्त तने जु अवास ॥
दियो पयदान महासुख सार। भई पणवृष्टि तहां तिहँ बार
॥१२॥ गये तब कानन मांहि दयाल। धरयो तुम योग सबै
अघ टाल ॥ तबै वह धूमसुकेत अजान। भयो कमठाचरको
सुर आन ॥१३॥ करै नभगौन लखे तुम धीर सुपूरव वैर
विचार गहीर ॥ कियो उपसर्ग भयानक घोर। चली बहु
तीक्षण पौन झकोर ॥१४॥ रह्यो दशहू दिशिमें तम छाय।
लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय ॥ सुरुंडन के बिन मुंड

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिखाय। परै जल मूसलधार अथाह।।१५।। तबै पदमावतिकंथ धर्निद। गहे जुग आय तहां जिनचंद।। भग्यो तब रंक सुदेखत हाल। लह्यो तब केवलज्ञान विशाल।।१६।। दियो उपदेश महा हितकार। सुभव्यनि बोधि समेद पधार सुवर्णहभद्र सुकूट प्रसिद्ध। वरी शिवनारि लही वसु रिद्ध ।।१७।। जजूं तुम चर्न दुहू कर जोर। प्रभु लखिये अब ही मम ओर।। कहै 'बखतावर' 'रत्न' बनाय। जिनेश हमें भव पार लगाय।।१८।।

घत्ता।

जय पारसदेवं, सुरकृतसेवं, बंदत चर्न सुनागपती।
करुनाके धारी, परउपगारी, शिवसुखकारी कर्म हती।।१९।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

छंद मदावलिप्त कपोल।

जो पूजै मन लाय भव्य पारसप्रभु नित ही। ताके दुख सब जांय भीति व्यापै नहिं कितही।। सुख संपति अधिकाय पुत्रमित्रादिक सारे। अनुक्रमतैं शिव लहै 'रत्न' इमि कहैं पुकारे।।२०।।

(इत्याशीर्वादः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीवर्द्धमान जिनपूजा

छन्द मत्तगयन्द ।

श्रीमतवीर हरैं, भवपीर भरैं सुखसीर अनाकुलताई ।
केहरिअंक अरीकरदंक, नये हरिपंक्तिमौलि सुआई ।।
मैं तुमको इत थापत हौं प्रभु, भक्ति समेत हिये हरषाई ।
हे करुणाधन धारक देव, इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ।१।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

छन्द अष्टपदी ।

क्षीरोदधिसम शुचिनीर, कंचनभृंग भरों ।
प्रभु ! वेगि हरो भवपीर, यातैं धार करों ।।
श्रीवीरमहा अतिवीर, सन्मतिनायक हो ।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

मलयागिरि चन्दन सार, केसर संग घसा ।
प्रभु भव-आताप निवारि, पूजत हिय हुलसा ।।श्रीवीर०।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय संसारतापविनाशनाय चन्दनम् नि०

तंदुलसित शशिसम शुद्ध, लीनों थार भरी ।
तसु पुंज धरों अविरुद्ध, पावों शिवनगरी ।।श्रीवीर०।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे ।
सो मनमथ भंजन हेत, पूजों पद थारे ।।श्रीवीर०।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् नि० ।

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी ।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ।।श्रीवीर०।।
ॐ ह्रीं महावीरजिनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् नि० ।

तमखंडित मंडितनेह, दीपक जोवत हों ।
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों ।।श्रीवीर०।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् नि० ।

हरिचंदन अगर कपूर, चूर सुगंध करा ।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा ।।श्रीवीर०।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपम् नि० ।

ऋतुफल कलवर्जित लाय, कंचन थार भरा ।
शिवफलहित हे जिनराय, तुम ढिग भेंट धरा ।।श्रीवीर०।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय मोक्षफलप्राप्ताय फलम् नि० ।

जलफल वसु सजि हिमथार, तन मन मोद धरों ।
गुण गाऊं भवदधितार, पूजत पाप हरों ।।श्रीवीर०।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं नि० ।

पंचकल्याणक ।

राग टप्पा चाल में

मोहि राखो हो सरना, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी मोहिराखो०
गरभ साढ़सित छट्ठ लियो तिथि, त्रिशला उर अघ हरना ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुर सुरपति तित सेव करें नित, मैं पूजों भवतरना मो०।।
ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीमहावीर जि०।

जनम चैतसित तेरसके दिन, कुंडलपुर कनवरना।
सुरगिर सुरगुरु पूज रचायौ, मैं पूजों भवहरना।मोहि०।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीर जि०।

मगसिर असित मनोहर दसमी, ता दिन तप आचरना।
नृप कुमारघर तारन कीनो, मैं पूजों तुम चरना।मोहि०।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष कृष्णदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजि०

शुकलदशैं बैसाखदिवस अरि, घात चतुक छय करना।
केवललहि भवि भवसर तारे, जजौं चरन सुख भरना।मो०
ॐ ह्रीं बैसाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणप्राप्ताय श्रीमहावीर जि०

कातिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतैं परना।
गनफनिवृंद जजे तित बहुविधि, मैं पूजों भयहरना।मो०।
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावश्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीमहा०

जयमाला।

छंद हरिगिता २८ मात्रा।

गनधर अशनिधर चक्रधर, हरधर गदाधर वरवदा।
अरु चापधर विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा।।
दुखहरन आनंद भरत तारन तरन चरण रसाल है।
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत भालकी जयमाल है।।१।।

छन्द घत्तानन्द।

जय त्रिशला नंदन हरिकृत बंदन, जगदा नंदन चंदवरं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवतापनिकंदन, तनकनमंदन, रहित सपंदन नयनधरं ॥

छन्द त्रोटक ।

जय केवल भानुकलासदनं, भविकोक विकाशन कंदवनं ।
जगजीत महारिपु मोहहरं । रजज्ञान दृगांवर चूरकरं ॥
गर्भादिकमंगलमण्डित हो, दुख दारिद्रको नित खंडित हो ।
जगमांहि तुम्हींसतपंडित हो, तुम ही भवभावविहंडित हो ॥
हरिवंशसरोजनकौं रवि हो, बलवंत महंत तुम्हीं कवि हो ।
लहिकेवलधर्मप्रकाशकियौ, अबलौं सोइ मारग राजतियौ ॥
पुनि आप तने गुन मांहि सहीं, सुर मग्न रहैं जितने सबही ।
तिनकी वनिता गुन गावत हैं, लय माननिसौं मनभावत हैं ॥
पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुम भक्तिविषैं पग येम धरी ।
झननं झननं झननं झननं, सुरलेत तहां तननं तननं ॥
घननं घननं घनघंट बजे, दृमदृं दृमदृं मिरदंग सजे ।
गगनांगन गर्भगतासुगता, ततता ततता अतता वितता ॥
धृगतां धृगतां गत बाजत हैं,सुरताल रसाल जु छाजत हैं ।
सननं सननं सननं नभमें, इकरूप अनेक जु धारि भमें ॥
कई नारि सुबीन बजावति हैं,तुमरो जस उज्वल गावति हैं ।
करताल विषैं करताल धरैं,सुरताल विशाल जु नाद करैं ॥
इन आदि अनेक उछाह भरी,सुरभक्ति करैं प्रभुजी तुमरी ।
तुमही जगजीवन के पितु हो,तुमही बिनकारनतैं हितु हो ॥
तुमही सब विघ्न विनाशनहो,तुमही निजआनंदभासनहो ।
तुमही चितचिंततदायकहो,जगमांहि तुम्हीं सब लायकहो ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुमरे पनमंगलमांहि सही, जिय उत्तम पुन्य लियो सबही ।
हमको तुमरी शरनागत है, तुमरे गुनमें मन पागत है ।।
प्रभु मोहिय आप सदा बसिये, तबलौं वसुकर्म नहीं नसिये ।
तबलों तुम ध्यान हिये बरतौ, तबलों श्रुतचिंतन चित्त रतौ ।।
तबलों व्रत चारित चाहतु हों, तबलों शुभ भाव सुगाहतु हों ।
तबलों सतसंगति नित्त रहौ, तबलों मम संजम चित्त गहौ ।।
जबलों नहिं नाश करों अरिको, शिवनारि वरों समता धरिको।
यह द्यो तबलों हमको जिनजी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ।।

घत्तानन्द ।

श्रीवीरजिनेशा, नमित सुरेशा, नागनरेशा, भक्ति भरा ।
'वृन्दावन' ध्यावै, विघन नशावै, वांछित पावै शर्म वरा ।।१५।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

दोहा ।

श्रीसनमति के जुगलपद, जो पूजै धरि प्रीत ।
'वृन्दावन' सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत ।।१६।।

इत्याशीर्वादः ।

अनन्त व्रत पूजा ।

अडिल्ल छन्द ।

श्री जिनराज चतुर्दश जग जयकार जी ।
कर्म नाश भवतार सुशिव सुखकार जी ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संवौषट् ठः ठः सुवषट् यह उच्चरूँ ।
आह्वानन स्थापन मम सन्निधि करूँ ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिअनन्तनाथ पर्यन्त चतुर्दश जिनेन्द्र ! अत्र अवतर, अवतर, संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

गीता छन्द

गंगादि तीरथ को सुजल भर कनकमय भृंगार में ।
चउदश जिनेश्वर चरण युग परि धार डारौंसार मैं ।।
श्री वृषभ आदि अनन्तजिन पर्यंत पूजों ध्याय के ।
करि अनन्त व्रत तप कर्म हनि के लहों शिव सुख जायके ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि अनन्तनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो जलं०।

चंदन अगर घन सार आदि, सुगंध द्रव्य घसाय के ।
सहजहिं सुगंध जिनेन्द्र के पद चर्च हों सुखदाय के ।।
श्री वृषभ० ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि अनन्तनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो चन्दनं

तन्दुल अखंडित अति सुगंध सुमिष्ट लेके कर धरों ।
जिनराज तुम चरनन निकट भविपाय पूजों शुभ धरों ।।
श्री वृषभ० ।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि अनन्तनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं०

चंपा चमेली केतकी पुनि मोगरो शुभ लायके ।
केवड़ा कमल गुलाब गेंदा जुही सुमाल बनाय के ।।
श्री वृषभ० ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि अनन्तनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाडू कलाकन्द सेव घेवर और मोतीचूर ले।
गूजा सुपेड़ा क्षीर व्यंजन थाल में भर पूर ले ।।श्रीवृषभ।।५।।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि अनन्तनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं०

ले रत्न जड़ित सुआरती ता मांहि दीप संजोय के।
जिन राज तुम पद आरती कर मिथ्या तिमिर सुखोय के।।
श्री वृषभ० ।।६।।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि अनन्तनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो दीपं०

चंदन अगरतर सिलारस कपूर की करि धूप को।
ता गंध तें मधु चकित सो खेऊँ निकट जिन भूप को।।
श्री वृषभ ।।७।।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि अनन्तनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो धूपं०।

नारंग केला दाख दाड़िम बीज पूर मंगाय के।
पुनि आम्र और बदाम खारक कनक थार भरायके।।श्री।।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि अनन्तनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो फलं।

जल सु चन्दन अक्षत पुष्प सुगन्ध बहुविध लाय के।
नैवेद्य दीप सुधूप फल इनको जु अर्घ बनाय के।। श्री।।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि अनन्तनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

जयमाला।

पद्धरी छन्द।

जय वृषभनाथ वृष को प्रकाश, भविजन को तारे पाप नाश।
जय अजितनाथ जीते सुकर्म, ले क्षमा खड्ग भेदो जुभर्म।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय संभव जग सुख के निधान, जग सुख करता तुम दियो ज्ञान।
जय अभिनंदन पद धरो ध्यान, तासों प्रगटे सुभज्ञानभान ।।
जय सुमति सुमति के देनहार, जासों उतरे भव उदधिपार ।
जय पद्मपद्म पद कमल तोहि भविजन अतिवैंमगनहोहिं ।।
जय जय सुपार्श्व तुम नमत पाय, क्षय होत पाप बहुपुण्यथाय ।
जय चन्द्रप्रभ शशिकोटि भान, जगका मिथ्यातम हरोजान ।।
जय पुष्पदंत जगमांहि सार, पुष्पकको मारचौ अतिसुमार।
करि धर्मभाव जग में प्रकास, हरिपापतिमिरदियोमुक्तिवास ।।
जय शीतल जिन हरभवप्रवीन, हरि पापताप जगसुखीकीन।
श्रेयांस कियो जगको कल्यान, देधर्म दुखित तारे सुजान ।।
जय वासुपूज्य जिन नमोंतोहि, सुरनर मुनिपूजत गर्व खोहि ।
जय विमलविमलगुणलीन मेय, भविकरे आपसम सुगुणदेय ।।
जय अनंतनाथ करि अनंतवीर, हरिघाति कर्मधरि अनंतधीर ।
उपजायो केवल ज्ञानभान, प्रभु लखे चराचर सब सुजान ।।

दोहा ।

यह चतुर्दश जिन जगत में, भंगल करन प्रवीन ।
पाप हरन बहु सुखकरन, सेवक सुखमय कीन ।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिअनन्तनाथ पर्यन्त चतुदर्श जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरस्वती पूजा ।

दोहा ।

जनम जरा मृतु छय करै, हरै कुनय जड़रीति ।
भवसागरसों ले तिरै, पूजै जिनवचप्रीति ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् । ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

छीरोदधिगंगा, विमल तरंगा, सलिल अभंगा, सुखसंगा ।
भरि कंचन झारी, धार निकारी,तृषा निवारी, हित चंगा॥॥
तीर्थंकरकी ध्वनि,गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई ।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी,पूज्य भई ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जलं निर्वपामीति स्वा० ।

करपूर मँगाया चन्दन आया, केशर लाया, रंग भरी ।
शारदपद वन्दों, मन अभिनंदों, पाप निकंदों, दाह हरी ॥
तीर्थं० ॥ चंदनं ॥२॥

सुखदासकमोदं, धारकमोदं, अति अनुमोदं चंदसमं ।
बहु भक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई, मात ममं ॥
तीर्थं० ॥ अक्षतान् ॥३॥

बहुफूल सुवासं, विमलप्रकाशं, आनँदरासं, लाय धरे ।
मम काम मिटायो, शील बढ़ायो, सुख उपजायौ दोष हरे ॥
तीर्थं० पुष्पं ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पकवान बनाया, बहुघृत लाया सब विध भाया, मिष्ट महा। पूजूँ थुति गाऊँ, प्रीति बढाऊँ, क्षुधा नशाऊँ, हर्ष लहा ।। तीर्थं० ।। नैवेद्यं ।।५।।

करि दीपक-जोतं, तमक्षय होतं, ज्योति उदोतं, तुमहिं चढ़ै। तुम हो परकाशक, भरमविनाशक हम घट भासक, ज्ञान बढ़ै ।। तीर्थंकर० ।। दीपं० ।।६।।

शुभगंध दशोंकर, पावकमें धर, धूप मनोहर खेवत हैं। सब पाप जलावैं, पुण्य कमावैं, दास कहावैं, सेवत हैं ।। तीर्थंकरकी० ।। धूपं ।।७।।

बादाम छुहारी,लोंग सुपारी, श्रीफल भारी,ल्यावत हैं। मनवांछित दाता, मेट असाता, तुम गुन माता, ध्यावत हों ।।तीर्थंकरकी०।।फलं०।।८।।

नयननसुखकारी, मृदुगुनधारी, उज्ज्वलभारी, मोल धरैं। शुभगंधसम्हारा, वसननिहारा, तुमतन धारा ज्ञान करैं ।। तीर्थंकरकी०।।वस्त्रम्।।९।।

जलचंदन अक्षत, फूल चरू चत, दीप धूप अति फल लावैं। पूजाको ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत, सुख पावैं ।। तीर्थंकरकी०।।अर्घम्।।१०।।

अथ जयमाला।

सोरठा।

ओंकार ध्वनिसार, द्वादशांगवाणी विमल।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करै जड़ता हरै ।।

पहलो आचारांग बखानो । पद अष्टादश सहस प्रमानो । दूजो सूत्रकृतं अभिलाषं। पद छत्तीस सहस गुरु भाषं। तीजो ठाना अंग सुजानं । सहस बियालिस पदसरधानं ।। चौथो समवायांग निहारं। चौसठ सहस लाख इकधारं ।।२।।

पंचम व्याख्याप्रज्ञपति दरसं। दोय लाख अट्ठाइस सहसं ।। छट्ठो ज्ञातृकथा विसतारं । पांचलाख छप्पन हज्जारं ।।३।।

सप्तम उपासकाध्ययनंगं। सत्तर सहस ग्यारलख भंगं । अष्टम अंतकृतं दस ईसं । सहस अठाइस लाख तेईस ।।४।। नवम अनुत्तरदश सुविशालं । लाख बानवै सहस चवालं । दशम प्रश्नव्याकरण विचारं । लाख तिरानव सोल हजारं ।।५।। ग्यारम सूत्रविपाक सु भाखं, एक कोड़ चौरासी लाखं ।। चार कोड़ि अरु पन्द्रह लाखं । दो हजार सब पद गुरुशाखं ।।६।। द्वादश दृष्टिवाद पनभेदं । इकसौ

आठ कोड़ि पन वेदं ।। अड़सट लाख सहस छप्पन हैं। सहित पंचपद मिथ्या हन हैं ।।७।। इक सौ बारह कोड़ि बखानो । लाख तिरासी ऊपर जानो ।। ठावन सहस पंच अधिकाने । द्वादश अंग सर्व पद माने ।।८।। कोड़ि इकावन आठ हि लाखं । सहस चुरासी छहसौ भाखं।। साढ़े- इकीस श्लोक बताये । एक एक पदके ये गाये ।।१०।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता ।

जा बानी के ज्ञान मैं, सूझे लोक अलोक ।
'द्यानत' जग जयवंत हों, सदा देत हों धोक ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतोदेव्यै महार्घं निर्वपामीति० ।

श्री बाहूबलीस्वामी की पूजा ।

युग की आदि विषैं गये, बाहूबली महाराज ।
सो अब तिष्ठहु आयके, हरो हमारे पाप ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री बाहूबली जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं अत्र तिष्ट तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अथ अष्टक ।

दाता मोक्षके श्री बाहूबली महाराज, दाता मोक्षकेकंचन झारी करमें लीनी, गंगाजल उसमें भरलीनी । मेरा जनम मरण मिटाय दाता मोक्षके ॥ श्री० ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहूबलिस्वामिने जलं ॥

उत्तम चन्दन घिसि मैं लायो, तुम चरणनकी पूज करायो ।
मेरो भवआताप निवार, दाता मोक्षके ॥ श्री० चंदनं ॥
उत्तम अक्षत धोय मैं लायो, तुम चरणन में पुंज करायो ।
दीजो अक्षयपद महाराज, दाता मोक्षके ॥ श्री० अक्षतं ॥
कमलकेतकी बेल चमेली, चुनचुन कर मैं करमें लीनी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरो कामबाण नशजाय, दाता मोक्षके ।।श्री० पुष्पं।।

परमोत्तम नैवेद्य बनाया, तुम चरणन में खूब चढ़ाया ।
मेरी क्षुधावेदना टार, दाता मोक्ष के ।।श्री० नैवेद्यं।।

कनक दीप निज करमें लीनो, जगमग जगमग ज्योति प्रवीनौ ।
मेरो मोहअंध निरवार, दाता मोक्षके ।। श्री० दीपं ।।

दशविधि कर मैं धूप बनाई, अगनिसंग में ताहि जराई ।
मेरे अष्टकरम निरवार, दाता मोक्ष के ।।श्री० धूपं।।

एला केला दाख छुहारा, पिस्ता श्रीफल लायो भारा ।
देवो मोक्ष सु फल महाराज, दाता मोक्षके ।।श्री० फलं।।

आठ दरब करमें मैं लायो, अरघ बनाय तुमहिं चढ़ायो ।
मेरो आवागमन मिटाय, दाता मोक्षके ।।श्री० अर्घं ।।

जयमाला ।

तुमको नित प्रतिवंदिके, रचूँ सो यह जयमाल ।
भव भव के पातिक हरो, करो सकल कल्यान ।।१।।

पद्धरि छन्द ।

जय जयश्रीबाहुबलि जिनेश, तुम चरण कमल नित करूं सेव
तुम दया धुरंधर जगत ईश, जग तारणको तुमही मुनीश ।।
यह काल अनंतानंत बार, जिसमें अवसर्पिणी है सुसार ।
इक दोय तीनमें भोगभूमि, चौथेमें प्रगटी कर्मभूमि ।।३।।
पंचम षष्ठम है दुःख रूप, तामें जीव न लहे शिव स्वरूप ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब तीजे कालके अंतमाय, प्रगटे चौदह कुलकर सुकाय ।।
अंतिम कुलकर श्री नाभिराय, जिनकी रानी मरुदेवि माय।
तिनके सुत भये श्री ऋषभदेव, तिन चरणनकी नित करूँ सेव।।
जिनके सुत प्रथमहिं भरतराज, दूजे सुत बाहूबली समाज।
जब ऋषभदेव धारयो वैराग, तृणवत् सब परिग्रह दियो त्याग।।
तब राज विभाग कियो जिनाय, अयोध्या दीनी है भरतराय
पोदनापुर बाहूबली सुराय, और पुत्र धरयो तप जोग पाय।।
जब चक्र उदय भयो भरत भूप, षटषंड साधने चल्यो अनूप।
षटखंड साध आयो सुराय, नहीं चक्र प्रवेश भयो नग्रमाहि ।।
तब निमती सों पूछो सुराय, तब निमति भेद सब दियो बताय।
तुमरी आज्ञा माने सुनाहि, बाहुबली लघु भ्राता सुराय ।।
तातें नहिं चक्र कियो प्रवेश, यह बात सुनी तबही चक्रेश।
इक दूत पठायो भ्रात पास, फिर जाय दूत इम वचन भाष ।।
चक्रेश हुकुम कियो सुनो नाथ, हम नमन करें करजोड़ माथ।
नातर रणको होवो तयार, यह तत्व वचन लीजो विचार।।
कोप्यो जब बाहुबली कुमार, हम हूं सुत हैं श्री ऋषभसार।
हूं नमन करूं नहीं यहजो बार, हम युद्ध करन को हैं तैयार ।।
लड़नेको चलो जब भ्रातद्वार, तब मंत्रिन मिली कीनो विचार।
दोनों ही चरमशरीरि वीर, नाहक सैन्या बहु होय क्षीण ।।
तातें सु युद्ध दोऊ भ्रातसाज, यह न्याय नीति है कुशलराज।
जल्ल मल्ल नेत्र ये तीन युद्ध, थापे मंत्रिन मिलि अति प्रबुद्ध ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब तीनों युद्धमें विजयपाय, तब चक्री कोप्यो अति रिसाय ।
ले चक्र चलायो भ्रातपास, देतीन प्रदक्षिणा आयो हाथ ।।
इम मानभंग भयो भरतराज, यह अति अयुक्त ही भयो काज ।
तबही संसार असार जान, उपज्यो वैराग्य ताही प्रमान ।।
तबही पोदनपुरके बन सुजाय दिक्षा लीनी कचलौंच थाय ।
इक वर्ष प्रतिज्ञा धरि जिनाय, चढ़ी वेल सर्प तनपै सु आय ।।
नहिं रंच मात्र प्रभु मन डिगाय, इक शल्य रही मनमें सुमाय ।
केवल ज्ञानी जाने सुभाय, छदमस्थ ज्ञानमें नहिं लखाय ।।
तब ही चक्री आयो सुराय, कर नमस्कार तुम चरण माय ।
तब ही उपजो केवल सुज्ञान, सब देव करैं जय जय महान ।।
इस युगकी आदि विषै जिनाय, पोदनपुर ले लियो मोक्ष थान ।
सो 'श्रवणवेलगोल' के मझार, अभिषेक भयो नाना प्रकार ।।
तिन प्रतिमा युत अतिशय अपार हैं 'श्रवणवेलगोला' मझार ।
प्रतिमा छप्पन फुट हैं सुजान, तिनकी महिमा अद्भुत महान ।।
गोमटस्वामी तिहिं कहत सोय नहीं छाया ताकी पड़त कोय ।
इत्यादि और अतिशय अपार, निरधार खड़ी परवत मझार ।।
यात्री आवैं वन्दन अपार, दरशन कर पातिक करें क्षार ।
सो चैत वदी पांचम सुजान, संवत् उन्नीस बसु एक आन ।।
मैसूर राय कलशाभिषेक प्रथमहिं कीनो भक्ति समेत ।
दूजे दिन सब नरनारी सुजान, अभिषेक कियो हिये हर्षमान ।।
जय जय ध्वनि हो परवत मझार, मानो क्षीरसागर आयो महान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस अवसर पर मुनि चार आय, श्रीशांतिसागर आचार्य जान।।
ऐलक क्षुल्लक ब्रह्मचारी बखान नरनारी दरस कर पुन्य ठान।
मैं नमन करूँ सिर नाय नाय, दर्शनते पातिक सब नशाय।।

घत्ता।

जय जय सुख सागर त्रिभुवन आगर सुजस उजागर बाहुबली।
तुमको नित ध्यावें, मंगल गावें, सो पावें शिव शर्म थली।।
ॐ ह्रीं श्री श्रवणवेलगोलास्थित बाहुबलिस्वामिने पूर्णार्घं।

दोहा।

नाथ तुमारे चरण जुग, जो पूजे भवि प्राण।
नरसुर पदको भोगिके लहे मोक्ष नरनार।।२८।।
लहे "पोस्ती" अनन्तबल, जपै तुम्हारो नाम।
दास विनय यह नाशि भव, देहु मोय शिवधाम।।२९।।

अनादि सिद्ध यन्त्र पूजा

स्नात्वा शुभांवरधर कृतयत्न योगा।
द्यंत्रंनिवेश्य शुचिपीठ वरेऽभिषिंचेत्।।
ॐ भूर्भुवः स्वरिह मंगलयन्त्रमेत—
द्विघ्नौघवारकमहं परिषिंचयामि।।

।। इति यन्त्राभिषेकम्।। अथ स्थापना—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमेष्ठिन् जगत्त्राण करणे मङ्गलोत्तम ।
शरण इह तिष्ठतुमेसन्निहितोऽस्तुपावनः ॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तमशरणभूताः अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तमशरणभूता अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरणभूता अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

॥ अथाष्टक ॥

पंकेरुहा यातपराग पुञ्जैः, सौगन्ध्यमद्भि सलिलैःपवित्रैः ।
अर्हत्पदा भाषित मंगलादीन्, प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

काश्मीरकर्पूरकृतद्रवेण, संसारतापापहृतौयुतेन ।
अर्हत्पदा भाषित मंगलादीन्, प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंच० चंदनं ।

शाल्यक्षतै रक्षतमूर्तिमद्भि,रब्जादिबासेन सुगंधिमद्भिः ।
अर्हत्पदाभाषित मंगलादीन्, प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंच० अक्षतं ।

कदम्बजात्यादिभवैः सुरद्रुमैर्जातैर्मनोजातविपाशदक्षैः ।
अर्हत्पदाभाषित मंगलादीन्, प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंच० पुष्पं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पीयूष पिण्डैश्च शशांक कांति–स्पर्शद्भिरिष्टैर्नयनप्रियैश्च ।
अर्हत्पदा भाषित मंगलादीन्, प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ।।
ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंच० नैवेद्यम् ।
ध्वस्तांधकारप्रसरैःसुदीपैर्घृतोद्भवैरत्न विनिर्मितैर्वा––
अर्हत्पदा भाषित मंगलादीन्, प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ।।
ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंच० दीपं ।।
स्वकीयधूमेन नभोवकाश, व्यापद्भिरुद्यैश्च सुगन्धधूपैः ।
अर्हत्पदा भाषित मंगलादीन्, प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ।।
ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंच० धूपं ।
नारंगपूगादिफलैरनर्घ्यैं, हृन्मानसादिप्रियतर्पकैश्च ।
अर्हत्पदा भाषित मंगलादीन्, प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ।।
ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंच० फलं ।

अंभश्चंदन नंदनाक्षत तरूद्भूतैर्निवेद्यैर्वरैः ।
दीपैर्धूपफलोत्तमैः समुदितै, रेभिः स्वर्णस्थितैः ।।
अर्हत्सिद्ध सुसूरि पाठकमुनीन्, लोकोत्तमान्मंगलान् ।
प्रत्यूहौघनिवृत्तये शुभकृतः सेव्वे शरण्यानहम् ।।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंच परमेष्ठिभ्यः अर्घं० निर्वपामीति स्वाहा ।।

अथ प्रत्येक पूजनम् ।

कल्याण पञ्चककृतोदयमाप्तमीश–
महंतमच्युतचतुष्टयभासुरांगम् ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्याद्वादवागमृतसिन्धुशशांककोटि ।
मर्चे जलादिभिरनंत्तगुणालयंतम् ॥

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टयसमवरणादिलक्ष्मींविभ्रते अर्हंत्परमेष्ठिने अर्घं निर्वंपामीति स्वाहा ।

कर्माष्टकेध्मचयमुत्पथमाशु हुत्वा ।
सध्यानवन्हि विसरे स्वयसात्मवन्तम् ॥
निश्रेयसामृतसरस्यथ संनिनाय ।
तंसिद्धमुच्चपददं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्मगणकाष्ठभस्मीकृते सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्वंपामीति स्वाहा ।

स्वाचारपंचकमपिस्वयमाचरंति ।
ह्याचारयंति भविकान् निजशुद्धि भाजः ॥
तानर्चयामिविविधैःसलिलादिभिश्च ।
प्रत्यूहनाशनविधौ निपुणान्पवित्रैः ॥

ह्रीं पंचाचारपरायणाय आचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घं निर्वंपामीति० ।

अंगांगबाह्यपरिपाठन लालसाना–
मष्टांग ज्ञानपरिशीलन भावितानाम् ॥
पादारविंदयुगलं खलुपाठकानां
शुद्धैर्जलादिवसुभिः परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं द्वादशांग पठनपाठनोद्यताय उपाध्यायपरमेष्ठिने अर्घं निर्वं०

आराधनासुखविलास महेश्वराणां ।
सद्धर्मलक्षणमयात्मविकस्वराणां ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्तोतुं गुणान् गिरिवनादि निवासिनां वै ।
एषोऽर्घतश्चरणपीठभुवं यजामि ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकार चारित्राराधक साधुपरमेष्ठिने अर्घं निर्वं० ।

अर्हन्मंगलमर्चामि जगन्मंगलदायकम् ।
प्रारब्ध कर्मविघ्नौघप्रलय पदमब्मुखैः ॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलाय अर्घं ॥

चिदानन्द लसद्वीचिमालिनं गुणशालिनम् ।
सिद्धमंगलमर्चेहं सलिलादिभिरुज्वलैः ॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

बुद्धिक्रिया रस तपो विक्रियौषधिमुख्यकाः ।
ऋद्धयोऽयं नमोहन्ति साधुमंगलमर्चये ॥

ॐ ह्रीं साधुमंगलायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

लोकालोक स्वरूपं च प्रज्ञप्त धर्मं मंगलम् ।
अर्चेवादित्र निर्घोषगीत नृत्यैः स्तवनादिभिः ॥

ॐ ह्रीं केवलि प्रज्ञप्त धर्मं मंगलायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

लोकोत्तमाऽर्हन् जगतां भववाधा विनाशकः ।
अर्च्यतेऽर्घेण स मया कुकर्मगणहानये ॥

ॐ ह्रीं अर्हंलोकोत्तमाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

विश्वाग्रशिखरस्थायां सिद्धोलोकोत्तमो मया ।
मह्यते महसामन्दचिदानन्द थुमेदुरः ॥

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमायार्घं निर्वं० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रागद्वेषपरित्यागी साम्य भावाव बोधकः ।
साधुलोकोत्तमोऽर्घेण पूज्यते सलिलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

उत्तम क्षमया भास्वान् सद्धर्मो विष्टपोत्तमः ।
अनंत सुख संस्थानं यज्यतेऽम्भोऽक्षतादिभिः ॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्त धर्मलोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सदार्हन् शरणंमन्ये नान्यथा शरणंमम ।
इति भाव विशुद्धयर्थमर्हयामि जलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं अर्हच्छरणाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

व्रजामि सिद्धशरणं परावर्तनपंचकं ।
भित्वा स्वसुखसंदोहसंपन्नमिति पूजये ॥

ॐ ह्रीं सिद्धशरणाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

आश्रये साधुशरणं सिद्धांत प्रतिपादनैः ।
व्यवक्रताज्ञानतिमिरमिति शुद्धयायजामि तं ॥

ॐ ह्रीं साधुशरणाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धर्म एव सदाबन्धुः स एव शरणं मम ।
इह वान्यत्र संसारे इति तं पूजयेऽधुना ॥

ॐ ह्रीं धर्मशरणाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

संसार दुःखहनने निपुणं जनानां ।
नाद्यन्त चक्रमिति सप्तदशप्रमाणम् ॥
संपूजये विविधभक्तिभराननम्रः ।
शांतिप्रदं भुवनमुख्यपदार्थं सार्थैः ॥

ॐ ह्रीं अर्हदादि सप्तदशमंत्रेभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनादि निधनं मंत्रं स्मरेदष्टोत्तरंशतं ।
सुवर्ण कुसुमैर्जातिपुष्पैर्वापि लवंगकैः ।।

पुष्प चढ़ाकर १०८ बार णमोकार मन्त्र लवंग से पढ़ना चाहिये ।

अथ जयमाला ।

विघ्नप्रणाशनविधौ सुरमर्त्यनाथा ।
अग्रेसरं जिन वदंति भवंतमिष्टम् ।।
अनाद्यनन्तयुगवर्तिनमत्रकार्ये ।
गार्हस्थ्यधर्मविहितेऽहमपि स्मरामि ।।१।।
विनायकः सकलधर्म जनेषु धर्मं ।
द्वेधानयत्य विरत्तं दृढसप्तभंग्या ।।
यत्ध्यानतो नयनभाव समुज्झनेन ।
बुद्धः स्वयं सकलनायक इत्यवाप्तेः ।।२।।
गणानां मुनीनामधीशत्वतस्ते ।
गणेशाख्यया ये भवंतं स्तुवंति ।।
सदा विघ्न संदोह शांतिर्जनानां ।
करे संलुठत्यायत श्रेयसानाम् ।।३।।
कलेः प्रभावात्कलुषाशयस्य ।
जनेषु मिथ्यामदवासितेषु ।।
प्रवर्तिततोन्यो गणराजनाम्ना ।
लंबोदरो दंति मुखो गणेशः ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रुद्रेन कामज्ज्वलितेन गौर्या ।
विनोदभारान्मलमुत्क्षिपित्वा ॥
कृतंपुराणेष्विति वाचयित्वा ।
सन्मंगलं तं कथमुद्गिरन्ति ॥
यतस्त्वमेवासि विनायको मे ।
दृष्टेष्टयोगानवरुद्धभावः ॥
तन्नाममात्रेण पराभवंति ।
विघ्नार यस्तर्हि किमत्रचित्रम् ॥
जय जय जिनराज त्वद् गुणान्कोव्यनक्ति ।
यदिसुरगुरुरिन्द्रः कोटिवर्ष प्रमाणं ॥
वदितुमभिलषेद्वा पारमाप्नोति नो चेत् ।
कतिय यह मनुष्यः स्वल्पबुद्धया समेतः ॥
ॐ ह्रीं अर्हंदादि सप्तदश मंत्रेभ्योऽर्घं निर्वंपामीति स्वाहा ।
श्रियं बुद्धिमनाकुल्यं धर्मप्रीतिविवर्धनं,
गृहि धर्मे स्थितिर्भूत्वा श्रेयसं मेदिशत्वरम् ॥
इत्याशीर्वादः ।

पुण्याह वाचनम् ।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं । लोकोद्योतनकरा अतीतकाल संजाता निर्वाणसागर महासाधु विमलप्रभ शुद्धाभ श्रीधर सुदत्तामल प्रभोद्धराग्नि सन्मति शिव कुसुमांजलि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिव गणोत्साह ज्ञानेश्वर परमेश्वर विमलेश्वर यशोधर कृष्ण ज्ञानमति शुद्धमति श्रीभद्र शान्ताश्चेति चतुर्विंशतिभूतपरम देवभक्तिप्रसादात् वः शांतिर्भवतु २।

ॐ संप्रति कालश्रेयस्कर स्वर्गावतरण जन्माभिषेक परिनिष्क्रमण केवलज्ञान निर्वाण कल्याण विभूति विभूषित महाभ्युदयाः। श्री वृषभाजित संभवाभिनंदन सुमति पद्मप्रभु पुष्पदंत शीतल श्रेयो वासुपूज्य विमलानंत धर्म शांति कुंथ्वरमल्लि मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व वर्द्धमानाश्चेति चतुर्विंशतिवर्त्तमानपरमदेव पूजनभक्तिप्रसादात् वः शांतिर्भवतु शांतिर्भवतु।

ॐ भविष्यत कालाभ्युदय प्रभवाः महापद्म देव सुप्रभ स्वयंप्रभ सर्वायुध जयदेवो दयदेव प्रभादेवो दंकदेव प्रश्नकीर्ति जयकीर्ति पूर्णबुद्ध निष्कषाय विमलप्रभ वहल निर्मल चित्रगुप्त समाधिगुप्त स्वयंभू कंदर्प जयनाथ विमलनाथ दिव्यवागनंतवीर्याश्चेति चतुर्विंशतिभविष्यतपरमदेव भक्तिप्रसादात् वः शांतिर्भवतु शांतिर्भवतु।

ॐ त्रिकालवर्त्ति परम धर्माभ्युदयाः सीमंधर युग्मंधर बाहु सुबाहु संजातक स्वयंप्रभू ऋषभेश्वरानंतवीर्य विशाल प्रभु वज्रधर चंद्रानन चंद्रबाहु भुजंगेश्वर नेमिप्रभु वीरसेन महाभद्र जयदेवाजितवीर्याश्चेति पंच विदेह क्षेत्र बिहर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माणा विंशतिपरमदेव भक्तिप्रसादात् वः शांतिर्भवतु शांतिर्भवतु।

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेव भक्तिप्रसादात् शांतिर्भवतु शांतिर्भवतु।

ॐ कोष्ठ वीजपादानुसारिबुद्धिसंभिन्नश्रोत्र प्रज्ञा श्रवण भक्तिप्रसादात् सर्व शांतिर्भवतु शांतिर्भवतु।

ॐ आमर्ष क्ष्वेडजल्लविड्डुत्सर्गसर्वौषधि पूजन भक्ति-प्रसादात् वः शांतिर्भवतु शांतिर्भवतु।

ॐ जलफलगंधातंतुपुष्पश्रेणिपत्राग्निशिखाकाशचारण पूजनभक्तिप्रसादात् वः शांतिर्भवतु शांतिर्भवतु।

ॐ आहाररसवदक्षीणमहानसालय भक्तिप्रसादात् सर्व शांतिर्भवतु शांतिर्भवतु।

ॐ उग्रदीप्ततप्तमहाघोरानुपमतप पूजनभक्तिप्रसादात् चः शांतिर्भवतु शांतिर्भवतु।

ॐ मनोवाक्कायबलि भक्तिप्रसादात् वः शांतिर्भवतु शांतिर्भवतु।

ॐ क्रियाविक्रियाधारि भक्तिप्रसादात् वः शांतिर्भवतु शांतिर्भवतु।

ॐ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानि पूजनभक्ति-प्रसादात् वः शांतिर्भवतु शांतिर्भवतु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ अंगांगं बाह्य ज्ञानदिवाकराः कुन्दकुंदाद्यनेक-दिगम्बरदेवाश्च त्वद्भक्तिप्रसादात् वः सर्वं शांतिर्भवतु सर्वं शांतिर्भवतु ।

इह वान्यनगरग्रामदेवता मनुजाः सर्वे गुरुभक्ताः जिनधर्मपरायणा भवन्तु ।

दान तपो वीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु ।

मातृपितृभ्रातृपुत्रपौत्रकलत्रसुहृत्स्वजनसम्बन्धिबन्धु-सहितस्य अमुकस्य ते धनधान्यैश्वर्यबलद्युतियशा प्रमोदोत्सवाः प्रबर्द्धंतां ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कूटों के दर्शन करनेका फल बोधक कोष्ठ ।

नम्बर	१कूटों के नाम	तीर्थंकरों के नाम	मुनियों के मोक्ष भये की संख्या	कूटों के दर्शन करने का फल
१	सिद्धवर	अजितनाथ	एक अरब अस्सी कोटि चोवन लाख	बत्तीस कोटी प्रोषधव्रत२ करने से जो फल प्राप्त होता है सो एक ही बार इस कूटके दर्शन करने से होत है ।
२	धवलदत्त	संभवनाथ	नौ कोड़ाकोड़ी३ बहत्तर लाख ब्यालिस हजार पांच सौ	ब्यालीस लाख प्रो व्र. करने से जो फल प्राप्त होता है सो एक ही बार इस कूटके दर्शन करने से होता हैं
३	आनंद	अभिनंदन नाथ	बहत्तर कोड़ाकोडी सत्तर कोटि छत्तीस लाख, ब्यालीस हजार सात सौ	एक लाख प्रो. व्र. करने स जो फल प्राप्त होता है सो एकही बार इस कूटके दर्शन करने से होता है ।
४	अविचल	सुमतिनाथ	एक कोड़ा कोड़ी चोरासी कोटि बहत्तर लाख इक्यासी हजार सात सौ	एक कोटि प्रो. व्र. करने से जो फल प्राप्त होता है सो एकही बार इस कूट के दर्शन करने से होता है ।

१ पर्वत की चोटी को कूट कहते हैं ।

२ सोलह प्रहर चार प्रकार आहार के त्याग करने को एक प्रोषध व्रत कहते है ।

३ कोटि को कोटि से गुणा करने से जो फल प्राप्त होता है उसी संख्या को कोड़ा कोडी कहते है कोड़ि तथा कोटि,करोड़ संख्या वाचक शब्द हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कूटों के दर्शन करनेका फल बोधक कोष्ठ।

नम्बर	कूटों के नाम	तीर्थंकरों के नाम	मुनियों के मोक्ष भये की संख्या	कूटोंके दर्शन करने का फल
५	मोहन	पद्मप्रभु	निन्यानबे कोटि सत्तासी लाख तितालीस हजार, सात सौ सत्तर, बीस	एक कोटि प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एक ही बार इस कूटके दर्शन करने से होता है।
६	प्रभास	सुपार्श्वनाथ	उनचास कोड़ा कोड़ी, चौरासी कोटि, बहत्तर लाख, सात हजार सात सौ ब्यालीस	बतीस कोटि प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एकही बार इस कूट के दर्शन करने से होता है।
७	ललित	चन्द्रप्रभु	नौ सौ चौरासी अरब बहत्तर कोटि अस्सी लाख चौरासी हजार पांच सौ पचपन	सोलह लाख प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एकही बार इस कूटके दर्शन करने से होता हैं।
८	सुप्रभ	पुष्पदन्त	एक कोड़ा कोड़ी निन्नानबे लाख सात हजार चार सौ अस्सी	एक कोटि प्रो०व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एक ही बार इस कूट के दर्शन करने से होता हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९	विद्युत	शीतलनाथ	अठारह कोड़ा कोड़ी ब्यालीस कोटि बत्तीस लाख ब्यालिस हजार नौ सौ पांच	एक कोटि प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एक ही बार इस कूट के दर्शन करने से होता है।
१०	संकुल	श्रेयांसनाथ	छ्यानवे कोड़ी कोड़ी छ्यानवे कोटि छ्यानवे लाख, नौ हजार पांच सौ ब्यालीस	एक कोटि प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एकही बार इस कूट के दर्शन करने से होता हैं।
११	सुवीर कुल	विमलनाथ	सत्तर कोटि सात लाख छै हजार सात सौ ब्यालीस	एक कोटि प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एक ही बार इस कूटके दर्शन करने से होता है।
१२	स्वयंभू	अनंतनाथ	छ्यानवे कोड़ा कोड़ी सत्तर कोटि, सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ	एक कोटि प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एक ही बार इस कूटके दर्शन करने से होता है।
१३	सुदत्तवर	धर्मनाथ	उन्नीस कोड़ा कोड़ी उन्नीस कोटि, नौ लाख नौ हजार सात सौ पंचानवे	एक कोटि प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एक ही बार इस कूटके दर्शन करने से होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कूटोंके दर्शन करनेका फल बोधक कोष्ठ ।

नम्बर	कूटो के नाम	तीर्थंकरों के नाम	मुनियों के मोक्ष भये की संख्या	कूटोंके दर्शन करने का फल
१४	शांतिप्रभ	शांतिनाथ	नौ कोड़ा कोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे	एक कोटि प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एकही बार इस कूट के दर्शन करने से होता है ।
१५	ज्ञानधर	कुन्थुनाथ	छ्यानवे कोड़ा कोड़ी छ्यानवे कोटि बत्तीस लाख छ्यानबे हजार सात सौ ब्यालीस	एक कोटि प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एकही बार इस कूटके दर्शन करने से होता है ।
१६	नाटक	अरनाथ	निन्यानवे कोटि निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार	छ्यानवे कोटि प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एकही बार इस कूटके दर्शन करने से होता है ।
१७	सम्बल	मल्लिनाथ	छ्यानवे कोटि	एक कोटि प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एकही बार इस कूटके दर्शन करने से होता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८	निर्जर	मुनिसुव्रत नाथ	निन्यानवे कोड़ा कोड़ी सत्तानवे कोटि नौ सो निन्यानवे	एक कोटि प्रो० व्र० करनें से जो फल प्राप्त होता है सो एकही बार इस कूटके दर्शन करने से होता है।
१९	मित्रधर	नमिनाथ	नौ सौ कोड़ाकोड़ी एक अरब पंतालिस लाख सात हजार नौ सौ ब्यालीस	एक कोटि प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एकही बार इस कूटके दर्शन करने से होता है।
२०	सुवर्णभद्र	पार्श्वनाथ	ब्यासी कोटि चोरासी लाख पंतालीस हजार सात सौ ब्यालीस	सोलह कोटि प्रो० व्र० करने से जो फल प्राप्त होता है सो एकही बार इस कूटके दर्शन करने से होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ श्रीसम्मेदशिखरमाहात्म्यविधान

दोहा ।

सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उतकृष्ट सुथान ।
शिखरसमेद सदा नमो, होय पापकी हान ।।१।।
अगणित मुनि जहतैं गए, लोकशिखरके तीर ।
तिनके पदपंकज नमों, नाशै भवकी पीर ।।२।।

अडिल्ल

है उज्वल वह क्षेत्र सु अति निरमल सही ।
परम पुनीत सुठौर महा गुणकी मही ।।
सकल सिद्धि दातार महा रमणीक है ।
बन्दों निज सुखहेत अचल पद देत है ।।३।।

सोरठा

शिखरसमेद महान, जगमें तीर्थ प्रधान है ।
महिमा अदभुत जान, अल्प मतीमेंकिमि कहों ।।४।।

सुन्दरी छन्द ।

सरस उन्नत क्षेत्र प्रधान है ।
अति सु उज्वल तीर्थ महान है ।।
करहिं भक्ति सु जे गुण गायकें ।
बरहिं सुर शिवके सुख जायकें ।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अडिल्ल

सुर हरि नर इन आदि और बंदन करें।
भव सागरतैं तिरें, नहीं भवमें परें ॥
सफल होय तिन जन्म शिखर दर्शन करें।
जन्मजन्मके पाप सकल छिनमें टरें ॥६॥

पद्धरी छन्द।

श्रीतीर्थंकर जिनवर जु वीश,
अरु मुनि असंख्य सब गुणन ईश,
पहुँचे जहँतैं कैवल्य धाम,
तिनको अब मेरी है प्रणाम ॥७॥

गीतिका छन्द।

सम्मेदगढ़ है तीर्थ भारी सबहिको उज्वल करै।
चिरकालके जे कर्म्म लागे दर्श तैं छिनमें टरै ॥
है परमपावन पुण्यदायक अतुलमहिमा जानिये।
है अनूप सुरूप गिरिवर तासु पूजन ठानिये ॥८॥

दोहा।

श्रीसम्मेदशिखर सदा, पूजों मन वच काय।
हरत चतुर्गतिदुःखको, मनवांछित फल दाय ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र! अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट्
इस प्रकार तीन बार ठोने में पुष्पों से आह्वानादि करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ अष्टक

अडिल्ल ।

क्षीरोदधि सम नीर सु निरमल लीजिये ।
कनककलशमें भरके धारा दीजिये ॥
पूजों शिखरसमेद सु मनवचकाय जी ।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकराद्यसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

पयसों घसि मलयागिरि चन्दन लाइये ।
केसरी आदि कपूर सुगंध मिलाइये ॥
पूजों शिखरसमेद सु मनवचकाय जी ।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकराद्यसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो संसारातापविनाशाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

तन्दुल धवल सुवासित उज्वल धोयकें ।
हेमरतनके थार भरों शुचि होयकें ॥
पूजों शिखरसमेद सु मनवचकाय जी ।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकराद्यसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरतरुके सम पुष्प अनूपम लीजिये ।
कामदाहदुखहरण चरण प्रभु दीजिये ।।
पूजों शिखरसमेद सु मनवचकाय जी ।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकराद्यसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

कनकथार नैवेद्य सु षटरसतैं भरे ।
देखत क्षुधा पलाय सु जिनआगें धरे ।।
पूजों शिखरसमेद सु मनवचकाय जी ।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकाराद्यसंख्यातमुनिसिद्धिपदप्राप्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

लेकर मणिमय दीप सुज्योति प्रकाश है ।
पूजत होत सुज्ञान मोहतम नाश है ।।
पूजों शिखरसमेद सु मनवचकाय जी ।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकाराद्यसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

दशविध धूप अनूप अगनि में खेवहूँ ।
अष्टकर्मको नाश होत सुख लेवहूं ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजों शिखरसमेद सु मनवचकाय जी।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकराद्यसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

एला लौंग सुपारी श्रीफल लाइये।
फल चढ़ाय मनबांछित शिवफल पाइये ॥
पूजों शिखरसमेद सु मनवचकाय जी।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकराद्यसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

जल गन्धाक्षत पुष्प सु नेवज लीजिये।
दीप धूप फल लेकर अर्घ सु दीजिये ॥
पूजों शिखरसमेद सु मनवचकाय जी।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकराद्यसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

पद्धरी छन्द।

श्रीविंशति तीर्थंकर जिनेंद्र।
अरु असंख्यात जहँतें मुनेंद्र ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिनको करजोरि करौं प्रणाम।
जिनकोंपूजौंतजि सकलकाम ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकराद्य-संख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

अडिल्ल।

जे नर परम सुभावनतैं पूजा करैं।
हरि हलि चक्री होंय राज छह खंड करैं॥
फेरि होंय धरणेंद्र इंद्रपदवी धरैं।
नानाविध सुखभोगि बहुरि शिवतिय वरैं ॥११॥

इत्यासीर्वादः (पुष्पांजलिंक्षिपेत्)

जोगीरासा।

श्रीसम्मेदशिखरगिरि उन्नत, शोभा अधिक प्रमानो।
विंशति तिहँपर कूट मनोहर, अदभुत रचना जानो॥
श्रीतीर्थंकर बीस तहाँतैं शिवपुर पहुँचे जाई।
तिनके पदपंकज जुग पूजौं अर्घ प्रत्येक चढ़ाई ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रे विंशतितीर्थंकरसिद्धपदप्राप्तेभ्यो अर्घं निर्व० ॥१॥

नं० २४ अजितनाथ सिद्धवर कूट।

प्रथम सिद्धवर कूट सु जानो आनँद मंगलदाई।
अजितनाथ शिव जहँतैं पहुँचे पूजों मनवचकाई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोड़ि जु अस्सी एक अरब मुनि, चौवन लाख जु गाई।
कर्म्मकाटि निर्वाण पधारे, तिनको अर्घ चढ़ाई ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेसिद्धवरकूटतैं अजितनाथ जिनेन्द्रादिमुनिएकअरव अस्सीकोटि चौवनलाखसिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वं० स्वाहा ॥२॥

नं० १४ सम्भवनाथ धवल कूट।

धवलदत्त है कूट दूसरो, सब जियकों सुखकारी।
श्रीसम्भव प्रभु मुक्ति पधारे पापतिमिरकों टारी ॥
धवलदत्त दे आदि मुनी, नव कोड़ाकोड़ी जानो।
लाख बहत्तरि सहस बियालिस पंचशतक ऋषि मानो ॥
कर्म्मनाश करि शिवपुर पहुँचे वंदों शीश नवाई।
तिनके पदजुग जजहुं भावसों हरषि हरषि चितलाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रधवलकूटतैं सम्भवनाथ-जिनेन्द्रादिमुनिनौकोड़ाकोड़ीबहत्तरलाख ब्यालीसहजार पाँचसौ-सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वं० स्वाहा ॥३॥

नं० १६ अभिनंदननाथ आनंदकूट।

चौपाई।

आनँदकूट महासुखदाय, अभिनंदन प्रभु शिवपुर जाय।
कोड़ाकोड़ि बहत्तर जान, सत्तरकोड़ि लखछत्तिस मान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहसबियालिसशतकजुसात, कहे जिनागममें इहभाँत ।
ए ऋषि कर्मकाटि शिवगए, तिनके पदजुग पूजत भए ।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रआनंदकूटतें श्रीअभिनन्दन जिनेन्द्रादिमुनिबहत्तरकोड़ाकोड़ीसत्तरकोड़ि छत्तिसलाखब्यालीस हजारसातसौसिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

नं० १९ सुमतिनाथ अविचल कूट ।

अडिल्ल ।

अविचल चौथो कूट महासुखधाम जी ।
जहँ ते सुमति जिनेश गये निर्वान जी ।।
कोड़ाकोड़ी एक मुनीश्वर जानिये ।
कोटि चौरासी लाख बहत्तर मानिये ।।
सहस इक्यासी और सातसौ गाइये ।
कर्मकाटि शिवगए नमो शिर नाइये ।।
सो थानक मैं पूजों मनवचकाय जी ।
पाप दूर हुई जाँय अचलपदपाय जी ।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रअविचलकूटतें सुमतिनाथ-जिनेन्द्रादिमुनिएककोड़ाकोड़ी चौरासीकोड़ीबहत्तरलाखइक्यासी हजारसातसौसिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

नं० ८ पद्मप्रभु मोहन कूट ।

मोहन कूट महान परम सुंदर कह्यो ।
पद्मप्रभु जिनराजजहाँ शिवपुर लह्यो ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोटिनिन्यानव लाख शतासी जानिये ।
सहश तितालिस और मुनीश्वर मानिये ।।
सप्त सैकरा सत्तर ऊपर वीसजू ।
मोक्षगए मुनि तिनहिं नमूं नितशीशजू ।।
कहें "जवाहरलाल" दोयकरजोरिकें ।
अविनाशीपद दे प्रभु कर्मनतोरिके ।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रमोहनकूटतें पद्मप्रभुजिनेन्द्रादि मुनिनिन्यानवेकोड़िसतासीलाखतितालीसहजारसातसौसत्तरबीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

नं० २२ सुपार्श्वनाथ प्रभासकूट ।

सोरठा

कूट प्रभास महान, सुंदर जनमन मोहनो ।
श्रीसुपार्श्व भगवान, मुक्तिगए अघनाशके ।।
कोड़ाकोड़ि उनचास, कोड़ि चौरासी जानिये ।
लाख बहत्तर मान, सात सहस हैं सात सौ ।।
और कहे ब्यालिस जहँतें मुनि मुक्तै गए ।
तिनहिं नमै नित ेश, दास जवाहर जोरकर ।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रप्रभासकूटतें श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादिमुनिउनचास कोड़ाकोड़ीचौरासीकोड़िबहत्तरलाखसात सौबियालीससिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० १० चन्द्रप्रभु ललितकूट ।

दोहा ।

पावन परम उतंग है, ललितकूट है नाम ।
चंद्रप्रभु शिवपुर गए, बन्दों आठों जाम ॥
नौसं अरबऽरु जानिये, चौरासी ऋषिमान ।
कोड़ि बहत्तर इम कहे, अस्सी लाख प्रमान ॥
सहस चौरासी पंचशत, पचपन कहे मुनिंद ।
वसुकरमनको नाशकर, पायो सुखको कंद ॥
ललितकूटतैं शिव गए, वंदौं शीश नमाय ।
जिनपद पूजौं भावसों निजहित अर्घचढ़ाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रललितकूटतैं चन्द्रप्रभुजिनेन्द्रादि मुनिनौसैचौरासीअरब बहत्तरकोड़िअस्सीलाखचौरासीहजारपाच सौपचपनसिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वं० स्वाहा ॥८॥

नं० ७ पुष्पदंत सुप्रभकूट ।

पद्धरी छन्द ।

श्रीसुप्रभकूट सु नाम जान, जहँ पुष्पदंन को मुक्त थान ।
मुनि कोड़ाकोड़ि कहे जु भाष, नवऊपर नवधर कहे लाख ॥
शतचारि कहे अरु सहससात, ऋषि अस्सी और कहे विख्यात ।
मुनि मोक्षगये वसुकर्म्मजाल, बंदौंकरजोरि नमायभाल ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसुप्रभकूटतैं पुष्पदंतजिनेंद्रादि मुनिएककोड़ाकोड़िनिन्यानवेलाखसातहजारचारसौअस्सी सिद्ध-पदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वं० स्वाहा ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० १२ शीतलनाथ विद्युतकूट।

सुन्दरी छन्द।

सुभग विद्युतकूट सु जानिये,परम अद्भुत तापर मानिये।
गए शिवपुर शीतलनाथजी,नमहुँ तिन पद करधर माथ जी ॥
मुनि जु कोड़ाकोड़ि अठारहू, मुनि जु कोड़िवियालिसजानहू।
कहे और जु लाखबतीस जू, सहसब्यालिस कहे यतीश जू ॥
अवर नौसौ पाँच सु जानिये,गए मुनि शिवपुरको मानिये।
करहिं जे पूजा मनलायकें,धरहिं जन्म न भवमें आयकें ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रविद्युतकूटतें श्रीशीतलनाथ जिनेंद्रादिमुनिअठारहकोड़ाकोड़ीब्यालीसकोड़िवत्तीसलाखब्यालीस हजारनौसौपांच सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

नं० ६ श्रेयांशनाथ संकुलकूट।

जोगीरासा।

कूट जु संकुल परम मनोहर, श्रीश्रेयान् जिनराई।
कर्म्मनाशकर शिवपुर पहुँचे, बंदौं मनवचकाई ॥
छ्यानव कोड़ाकोड़ी जानो छ्यानवकोड़ि प्रमानो।
लाख छ्यानवे सहस मुनीश्वर,साढ़ेनव अब जानो ॥
ता ऊपर ब्यालीस कहे हैं श्रीमुनिके गुण गावैं।
त्रिविधयोग करि जो कोई पूजें,सहजानँदपद पावैं ॥
सिद्धनमो सुखदायक जगमें, आनँद मंगलदाई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जजौं भावसों चरण जिनेश्वर,हाथजोड़ि शिरनाई ।।
परम मनोहर थान सु पावन, देखत विघन पलाई ।
तीन काल नित नमत जवाहर भेटो भवभटकाई ।।
जहँते जे मुनि सिद्ध भए हैं, तिनको शरण गहाई ।
जा पदको प्रभु प्राप्त भए हौ, सो पद देहु मिलाई ।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसंकुलकूटतैं श्रेयांसनाथ-जिनेंद्रादिमुनिछ्यानबेकोड़ाकोड़ीछ्यानबेकोड़ि छ्यानबे लाख नौ हजारपाँचसौब्यालीससिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वं० स्वाहा ॥११॥

नं० २३ विमलनाथ सुवीरकुलकूट ।

कुसुमलता छन्द ।

श्रीसुवीरकुल कूट परम सुंदर सुखदाई,
विमलनाथ भगवान जहाँ पंचमगति पाई ।।
कोड़ि जु सत्तर सात लाख षटसहस जु गाई;
सातशतक मुनि और बियालिस जानो भाई ।।
अष्टकर्म्मको नष्टकर, मुनि अष्टमक्षिति पाय ।
तिनप्रति अर्घ चढ़ावहूँ,जनम मरण दुख जाय ।।
विमलदेव निरमल करण, सब जीवन सुखदाय ।
मोतीसुत वंदत चरण, हाथजोर शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसुवीरकुलकूटतैं विमलनाथ-जिनेंन्द्रादिमुनिसत्तरकोड़ि सातलाखछैहजारसातसौब्यालीससिद्ध-पदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं नि० ॥१२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० १३ अनन्तनाथ स्वयंभूकूट।

अड़िल्ल ।

कूट स्वयंभू नाम परम सुन्दर कह्यो ।
प्रभु अनंतजिननाथ जहाँ शिवपद लह्यो ।।
मुनि जु कोड़िछ्यानवे जानिये ।
सत्तर कोड़ि जु सत्तारलाख प्रमानिये ।।
सत्तार सहस जु और सातसै गाइये ।
मुक्ति गए मुनि तिनको सीस नवाइये ।।
कहें जवाहरलाल सुनो मन लायके ।
गिरिवरकों नित पूजौ अति सुखपायके ।।

सोरठा ।

पूजत बिघन पलाय, ऋद्धिसिद्धि आनंद करै ।
सुर शिवको सुख दाय, जो मनवच पूजा करै ।।१३।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रस्वयंभूकूटतें अनन्तनाथजिनेंद्रादिमुनिछ्यानवेकोड़ाकोड़ी सत्तरकोड़िसत्तरलाखसत्तरहजार-सातसौसिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।१३।।

नं. १८ धर्मनाथ सुदत्तकूट।

चौपाई ।

कूट सुदत्त महाशुभ जान, श्रीजिन धर्म्मनाथको थान ।
मुनि कोड़ा कोड़ी उनईस, और कहे ऋषि कोड़ि उनीश ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाख जु नव नौसहस सुजान, सात शतक पंचानव मान ।।
मोक्षगए वे कर्म्मन चूर, दिवसरु रयनि नमो भरपूर ।।
महिमा जाकी अतुल अनूप, ध्यावत वर इंद्रादिक भूप ।।
शोभत महा अचलपद पाय, पूजों आनंदमंगल गाय ।।

दोहा ।

परम पुनीत पवित्र अति, पूजत शत सुरराय ।
तिह थानककों देख कर, मोतीसुत गुणगाय ।।
पावन परम सुहावनों, सब जीवन सुखदाय ।
सेवत सुर हरि नर सकल, मनवांछितफलपाय ।।१४।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसुदत्तकूटतैं धर्मनाथजिनेंद्रादि-मुनिउन्नीसकोड़ाकोड़ीउन्नीसकोड़िनौलाखनौहजारसातसौपचानवे-सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।१४।।

नं० २ शान्तिनाथ शान्तिप्रभकूट ।

सुगीतिका—छन्द ।

श्रीशांतिप्रभ है कूट सुन्दर अति पवित्र सु जानिये ।
श्रीशांतिनाथ जिनेंद्र जहँते पर धाम प्रमानिये ।।
नव जु कोड़ाकोड़ि मुनिवर लाख नव अब जानिये ।
नौ सहस नवसै मुनि निन्नानव हृदयमें धर मानिये ।।

दोहा ।

कर्म्मनाश शिवको गए, तिन प्रति अर्घ चढ़ाय ।
त्रिविधयोग करि पूज हैं, मनवांछित फलपाय ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रशांतिप्रभकूटतैं शांतिनाथजिनेंद्रादिमुनिनौकोड़ाकोड़ी नौलाखनौहजारनौसौनिन्नयानवेसिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्व० ॥१५॥

नं. २ कुन्थुनाथ ज्ञानधरकूट ।

गीतिका छंद ।

ज्ञानधर शुभकूट सुन्दर परम मन मोहन सही ।
जहतैं श्रीप्रभु कुन्थुस्वामी गए शिवपुरकी मही ॥
कोड़ा सु कोड़ीछ्यानवै मुनि कोड़िछ्यानव जानिये ।
अरु लाखबत्तिस सहसछ्यानव शतकसात प्रमानिये ॥

दोहा ।

और कहे व्यालीस मुनि, सुमिरों हियेमँझार ।
तिनपद पूजों भावसो, कर भवदधिसे पार॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रज्ञानधरकूटतैंश्रीकुंथुनाथजिनेंद्रादिमुनिछ्यानवेकोड़ाकोड़ी छ्यानवैकोड़िबत्तीसलाख छ्यानवेहजार सातसौव्यालीससिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१६॥

नं. ४ अरनाथ नाटककूट ।

दोहा ।

कूट जु नाटक परमशुभ, शोभा अपरम्पार ।
जहतैं अरजिनराज जी, पहुचें मुक्तिमँझार ॥
कोड़िनिन्नयानवजानिमुनि लाखनिन्न्यानव और ।
कहे सहस निन्न्यानबै, बन्दौ कर जुग जोर ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अष्टकर्म्मको नष्ट करि, मुनि अष्टमक्षिति पाय ।
ते गुरु मम हृदयें बसों, भवधिपार लगाय ॥

सोरठा ।

तारण तरण जिहाज, भवसमुद्रके बीचमें ।
पकरो मेरी बांह डूबतसे राखो मुझे ॥
अष्टकरम दुख दाय, ते तुमने चूरे सबै ।
केवलज्ञान उपाय अविनाशीपद पाइयो ॥
मोतीसुत गुणगाय चरणन शीशनवायकें ।
मेटो भवभटकाय, मांगत अब वरदानयो ॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रनाटककूटतैं अरनाथजिनेंन्द्रादिमुनिनित्यानवेकोड़ि निन्यानवेलाखनिन्यानवेहजार सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्व० ॥

नं. ५ मल्लिनाथ सम्बलकूट ।

सुन्दरी छन्द ।

कूट सम्बल परमपवित्र जू, गए शिवपुर मल्लिजिनेश जू ।
मुनि जु छ्यानवकोड़ि प्रमानिये, पदजजत हृदयें सुखआनिये

मोतीदाम छन्द ।

भजो प्रभुनाम सदा सुखरूप, जजौ मनमें धरभाव अनूप ।
टरें अघपातिक जाहिं सु दूर, सदा जनको सुख आनंदपूर ॥
डरें ज्यों नाग गरुड़कों देखि, भजें गजजुथ्थ जु सिंहयपेखि ।
तुमनाम प्रभु दुखहर्ण सदा, सुखपूर अनूपम होय मुदा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुमदेव सदा अशरणशरणं, भट मोहवली प्रभु जी हरणं।
तुमशरणगही हम आय अबै, मुझ कर्म्मबली दिढ़ चूर सबै॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसम्वलकूटतैं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्रादिमुनिछ्यानवेकोड़िसिद्धपदप्राप्तेभ्यःसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घंनिर्वं० स्वाहा ॥१८॥

नं. ९ मुनिसुव्रतनाथ निर्जरकूट।

मदअवलिप्तकपोल छन्द।

मुनिसुव्रत जिननाथ सदा आनँदके दाई।
सुंदर निर्जरकूट जहांतैं शिवपुर जाई॥
निन्यानवकोड़ाकोड़िकहे मुनि कोडिसत्याना।
नौ लख जोड़ि मुनिन्द कहे नौसैनिन्न्याना॥

सोरठा।

कर्म्मनाश ऋषिराज, पंचमगति के सुख लहे।
तारणतरण जिहाज, मो दुखदूर करौ सकल॥

भुजंगप्रयात।

बली मोहकी भौज प्रभुजी भगाई,
जग्यो ज्ञानपंचम महासुक्खदाई।
समोशरण धरणेंद्रने तब बनायो,
तबैं देव सुरपति सबै शीशनायो॥
जय जय जिनेंद्रं सुशब्दं उचारी,
भए आज दर्शन सबै सुक्खकारी।
गए सर्व पातिक प्रभू मूरहीतैं, जबै दर्श कीने प्रभू दूरहीतैं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुनी नाथ श्रवनन जु तेरी बढ़ाई,
गहो शरण हमने तुम्हारो सु आई ।।
बली कर्म्मनाशे जबै मुक्ति पाई,
तिन्हैं हाथजोरें सदा शीशनाई ।।१९।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र निर्जरकूटतैंमुनिसुव्रत नाथजिनेंद्रादिमुनिन्न्यानबेकोड़ाकोड़ी सत्तानवे कोड़ि नौ लाख नौसौनिन्यानवेसिध्दपदप्राप्तेभ्यः सिध्दक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।१९।।

नं. ३ नमिनाथ मित्रधरकूट ।

जोगीरासा ।

कूट मित्रधर परममनोहर, सुन्दर अति छबिदाई ।
श्रीनमिनाथ जिनेश्वर जहँतैं, अविनाशीपदपाई ।।
नौसै कोड़ाकोड़ी मुनिवर, एक अरब ऋषि जानो ।
लाखपैंतालिस सातसहस, अरु नौसैब्यालिस मानों ।।

दोहा ।

वसु करमनको नाश कर, अविनाशीपद पाय ।
पूजो चरणसरोजको, मनवांछितफलदाय ।।२०।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिध्दक्षेत्रमित्रधरकूटतैं नमीनाथ जिनेंद्रादिमुनि नौसौकोड़ाकोड़ीएकअरब पैतालीसलाखसातहजार नौसौब्यालीससिध्दपदप्राप्तेभ्यः सिध्दक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामी ति स्वाहा ।।२०।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० २६ पार्श्वनाथ सुवर्णभद्रकूट।

दोहा ।

सुवरणभद्र जु कूट पै, श्रीप्रभुपारशनाथ ।
जहँतैं शिवपुरको गए, नमो जोरिजुगहाथ ॥

त्रिभंगी छन्द ।

मुनि कोड़िबियासी लाखचौरासी शिवपुर सुखदाई ।
सहसपैंतालिस सातसौ ब्यालिस तजिकैं आलस गुणगाई॥
भवदधितैं तारण पतितउधारण सबदुखहारण सुखकीजै।
यहअरजहमारी सुनित्रिपुरारी शिवपदभारी मुहिदीजै ॥

पध्दरी छन्द ।

यह दर्शनकूट अनंत लह्यो, फल षोड़शकोटि उपास कह्यो।
जगमें यह तीर्थ कह्यो भारी, दर्शन तैं पाप कटैं सारी ॥

मोतीदाम छन्द ।

टरैं गति बंदत नर्क तिर्यंच, कबहुँ दुखको नाहि पावैं रंच ॥
यही शिवको जगमें है द्वार, अरे नर बन्दो कहत 'जवार'

दोहा ।

पारशप्रभुके नामतैं, बिघन दूर टरिजाय ।
ऋद्धिसिद्धिनिधि आनिकैं, मिलिहैं निशिदिनआय ।२१।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसुवर्णभद्रकूटतैं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्रादिमुनिब्यासीकरोड़ चौरासीलाखपैंतालीसहजारसातसौ-ब्यालीससिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अडिल्ल ।

जेनर परमसुभावनतैं पूजाकरैं,
हरिहलि चक्री होंय राज्यषटखंड करैं ।।
फेरिहोंय धरणेंद्र इंद्रपदवी धरैं,
नानाविधसुख भोगि बहुरि शिवतियवरैं ।।

आशीर्वादः (पुष्पांजलिक्षिपेत्)

अथ समुच्चयपूजा

दोहा ।

याविध बीस जिनेशके, बीशो शिखर महान ।
और असंख्य मुनीश जहँ, पहुँके शिवपदथान ।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिध्दक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अथ अष्टक ।

गीतिका छन्द ।

पदमद्रहको नीर निरमल, हेमझारीमें भरों ।
तृषारोग निवारनेको, चरणतर धाराकरों ।।
सम्मेदगढ़तैं मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये ।
सो थान परमपवित्र पूजौं, तासु फल पुनिसंचये ।।१।।

ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिध्दपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखर सिध्दक्षेत्रेभ्यो जलं निर्व० ।।१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चंदन कपूर मिलाय केसर, नीरसों घसि लाइये ।
जिनराज पापविनाश हमरे, भवाताप मिटाइये ।।
सम्मेदगढ़तैं मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये ।
सो थान परमपवित्र पूजौं, तासु फल पुनिसंचये ।।२।।

ॐ ह्रीं असंख्यातमुनिसिध्दपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरसिध्द-क्षेत्रेभ्यः चन्दनं नि० ।।२।।

चंद्रके सम ल्याय तंदुल, कनकथारन में भरों ।
अक्षय सु पदके कारणे जिनराजपद पूजा करों ।।
सम्मेदगढ़तैं मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये ।
सो थान परमपवित्र पूजौं,तासु फल पुनिसंचये ।।३।।

ॐ ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरसिद्ध-क्षेत्रेभ्यो अक्षत्तान् नि० ।।३।।

कुंद कमलादिक चमेली गंध कर मधुकर फिरैं ।
मदनबाण विनाशवेको प्रभुचरण आगे धरैं ।।
सम्मेदगढ़तैं मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये ।
सो थान परमपवित्र पूजों,तासु फल पुनिसंचये ।।४।।

ॐ ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरसिद्ध-क्षेत्रेभ्यः पुष्पं नि० ।।४।।

नेवज मनोहर थालमें भर, हरषकर ले आवनें ।
करहु पूजा भावसों, नर क्षुधा रोग मिटावने ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मेदगढ़तैं मुनि असंख्ये, कर्मंहर शिवपुर गये ।
सो थान परमपवित्र पूजों,तासु फल पुनिसंचये ।।५।।

ॐ ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरसिद्ध-क्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं नि० ।।५।।

दीप ज्योति प्रकाश करके, प्रभुके गुण गावनें ।
मोह तिमिर विनाश करके, ज्ञानभानु प्रकाशनें ।।
संम्मेदगढ़तैं मुनि असंख्ये, कर्मंहर शिवपुर गये ।
सो थान परमपवित्र पूजों,तासु फल पुनिसंचये ।।६।।

ॐ ह्रीं असंख्यात मुनिसिध्दपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखर-सिध्दक्षेत्रेभ्यो दीपं नि० ।।६।।

वर धूप सुन्दर ले दशांगी,ज्वलनमांहि सु खेइये।
वसु कर्म नाशनके सु कारण,पूज प्रभुकी कीजिये ।।
सम्मेदगढ़तैं मुनि असंख्ये, कर्मंहर शिवपुर गये ।
सो थान परमपवित्र पूजों,तासु फल पुनिसंचये ।।७।।

ॐ ह्रीं असंख्यातमुनिसिध्दपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरसिध्द क्षेत्रेभ्यो धूपं नि० ।।७।।

उत्कृष्ट फल जगमांहि जेते, ढूंढ़ करकें लाइयैं,
जो नेत्र रसना लगैं सुन्दर, फल अनूप चढ़ाइयैं ।
सम्मेदगढ़तैं मुनि असंख्ये, कर्मंहर शिवपुर गये,
सो थान परमपवित्र पूजों, तासु फल पुनिसंचये ।।८।।

ॐ ह्रीं असंख्यातमुनिसिध्दपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरसिध्द क्षेत्रेभ्यो फलं नि० ।।८।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसुद्रव्ययुत शुभ अर्घ लेकर, मनप्रफुल्लित कीजिये ।
तुव दास यह वरदान मागें, मोक्षलक्ष्मी दीजिये ॥
सम्मेदगढ़तें मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये ।
सो थान परमपवित्र पूजों, तासु फल पुनिसंचये ॥

ॐ ह्रीं असंख्यातमुनिसिध्दपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरसिध्द-क्षेत्रेभ्यो अर्घं नि० ॥९॥

नितकरैं जे नरनारि पूजा, भक्ति भाव सु लायके ।
जिनको सुजस कह कहें, 'जवाहर' हरष मनमें धारके॥
ते ह्वैं सुरेश नरेश खगपति, समझ पूजाफल यही ।
सम्मेदगिरिकी करहुपूजा, पाय हो शिवपुरमही ॥

ॐ ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्योः अर्घं नि० ॥१०॥

कवित्त ।

परम शिखरसम्मेद सबहिको है सुख करता ।
बन्दें जे नरनारि तिन्होंके अघ सब हरता ॥
नरकपशु गति टरें सुक्ख जगके बहु पावें ।
नरपति सुरपति होंय फेरि शिवपुरको जावें ॥१॥

दोहा ।

जे तीरथ बन्दै नहीं, सुनें धर्म्म नहिं सार ।
ते भव बनमें भ्रमहिंगे, कबहुँ न पावैं पार ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नरभव उत्तम पायकें, श्रावककुल अवतार ।
पूजा जिनवरकी करें, ते उतरें भवपार ॥३॥
सबविधिजोग जु पायजे, शिखर न बंदें सार ।
रतन पदारथ पाय ते, देत समुदमें डार ॥४॥

नं० ११ आदिनाथसर्वसिद्धवरकूट ।

ढाल कार्तिक ।

प्राणी हो आदीश्वर महराज जी, अष्टापद शिवथान हो ।
पूजत सुरु हरि नर सकल, सो पावे पदनिर्वाण हो ॥
प्राणी हम पूजत इनहीं सदा, यह नाशै भवभव भीति हो ।
प्राणी पूजौ मनबचाय कर अष्टापदसे निर्वान हो ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथजिनेन्द्रादिदशहजारमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीकैलाशगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

नं० १५ वासुपूज्यमंदारगिरि ।

सोरठा ।

वासुपूज्य जिनराज, चम्पापुरतें शिवगये ।
मनबचजोग लगाय, पूजों पदजुग अर्घले ॥२॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनेन्द्रादिएकहजारमुनिसिध्दपदप्राप्तेभ्यः श्रीचंपापुरसिध्दक्षेत्रेभ्येय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० २५ नेमिनाथउर्जयंतकूट ।

दोहा ।

नेमीश्वर तजि राजमति, लीनो दीक्षा जाय ।
सिद्ध भये गिरिनारतैं, पूजों अर्घ बनाय ।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्रादिसंबुप्रद्युम्नअनिरुध्दइत्यादिवहत्तरकोड़िसातसौमुनिसिध्दपदप्राप्तेभ्यः श्रीगिरिनारसिध्दक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।३।।

नं० २१ महावीर

सुन्दरी छन्द ।

बर्द्धमान जिनेश्वर पूजिये, सकलपातक दूर सु कीजिये ।
गये पावापुरतैं मुक्तकों, तिनही पूजत अर्घसंयुक्त सों ।।४।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनेन्द्रादिषर्डत्रिशतमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः पावापुरस्थ-पद्मसरोवरेसिध्दक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

नं० १ चौबीसगणधरप्रथमटोंक ।

दोहा ।

तीर्थंकर चौबीसके, गणनायक हैं जेह ।
तिनको पूजों अर्घले, मनवच धारि सनेह ।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनगणधरचरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धक्षेत्र जे और हैं, भरत क्षेत्रके ठाँहि ।
और जु अतिशयक्षेत्र हैं, कहे जिनागममांहि ॥
तिनके नाम सु लेतही पापदूर हुइ जाय ।
ते सब पूजों अर्घले भवभवमें सुखदाय ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीभरतक्षेत्रसम्बन्धीसिद्धक्षेत्रोऽतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

सोरठा ।

दीप अढ़ाईमांहि सिद्धक्षेत्र जे और हैं ।
पूजों अर्घंचढ़ाय भवभवके अघनाश हैं ॥७॥

ॐ ह्रीं ढाईद्वीपकेविषैंविद्यमानसिध्दक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

अडिल्ल ।

पूजों तीस चौबीस परमसुखदाय जू,
भूत भविष्यत वर्त्तमान गुणगाय जू ।
कहे विदेहके बीस नमो शिरनाय जू,
अर्चों अर्घ बनाय सुबिघन पलाय जू ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीभूतभविष्यवर्त्तमानकालसम्बन्धीत्रिंशच्चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो विदेहक्षेत्रेशास्वतविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यश्च अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

दोहा ।

कृत्याकृत्रिम जे कहे तीनलोकके मांय ।
ते सब पूजों अर्घले हाथजोर शिरनाय ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीतीनलोकसम्बन्धीकृत्याकृत्रिमजिनालयजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्व० ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ जयमाल ।

लोलतरंग छन्द ।

मनमोहन तीरथ शुभ जानो पावनपरम सु क्षेत्र प्रमानो ।
उन्नतशिखर अनूपम सोहै देखत ताहि सुरासुर मोहै ।।

दोहा ।

तीरथ परम सुहावनो शिखरसमेद विशाल ।
कहत अल्पबुधि उक्तिसों सुखदायक जयमाल ।।२।।

चौपाई ।

सिद्धक्षेत्र तीरथ सुखदाई, बंदत पाप दूरि हुई जाई ।
शिखर शीश पर कूट मनोज्ञ, कहे बीस अति शोभा योग्य ।।
प्रथम सिद्धवर कूट सुजान, अजितनाथको मुक्ति सुथान ।
कूटतनो दरशन फल एह, कोटि बतीस उपास गिनेह ।।
दूजो धवलकूट है नाम, संभवप्रभु जहँतें शिवधाम ।
दरश कोटि प्रोषध फल जान, लाख वियालिस कहो बखान ।।
आनँदकूट महा सुखदाय, जहँतें अभिनंदन शिवजाय ।
कूटतनो दरशन इम जान, लाख उपासतनो फलमान ।।
अविचल कूट महासुख वेश, मुक्तिगये जहँ सुमतिजिनेश ।
कूट भाव धरि पूजै कोय, एक कोटि प्रोषधफल होय ।।
मोहनकूट मनोहर जान, पद्मप्रभु जहँतें निर्बान ।
कूटपूज फल लेहुसुजान, कोटि उपास कहो भगवान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनमोहन है कूट प्रभास, मुक्ति गए जहँ नाथसुपास ।
पूजें कूट महाफल होय, कोटि बतीस उपास जु सोय ।।
चंद्रप्रभुको मुक्त सुधाम, परमविशाल ललित घट नाम ।
कूटतनों दरशन फल जान, प्रोषध सोलह लाख बखान ।।
सुप्रभ कूट महासुखदाय, जहँतें पुष्पदंत शिवपाय ।
पूजें कूट महाफल लेव, कोड़ि उपास कहो जिनदेव ।।
श्रीविद्युतवर कूट महान, मोक्षगये शीतल धरि ध्यान ।
पूजै त्रिविधिजोग कर कोय,कोड़ि उपासतनो फल होय ।।
संकुलकूट महा शुभ जान, श्रीश्रेयांश गये शिवथान ।
कूटतनो दरशन फल सुनो, कोड़ि उपास जिनेश्वरभनो ।।
कूट सुवीर परमसुखदाय, विमलजिनेश जहाँ शिवपाय ।
मनबच दरश करें जो कोय, कोटि उपासतनों फल होय ।।
कूट स्वयंभू सुभग सु नाम, गये अनन्त अमरपुर धाम ।
यही कूटको दरशन करें, कोड़ि उपासतनो फल धरैं ।।
है सुदत्तवर कूट महान, जहँतें धर्मनाथ निरवान ।
परमविशाल कूट है सोय, कोटि उपास दरशफल होय ।।
कूट शाँतिप्रभ सुन्दर कह्यो, शाँतिनाथ जहँतें शिव लह्यो ।
कूट तनो दरशन है सोय, एक कोड़ि प्रोषधफल होय ।।
परम ज्ञानधर है शुभकूट, शिवपुर कुन्थु गये अघछूट ।
जाकों पूजै जो करजोड़ि, फलउपवास कह्यो इक कोड़ि ।।
नाटककूट महाशुभ जान, जहँतें शिवपुर अर भगवान ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दरशन करै कूटको जोय, छयानव कोड़ि वासफल होय ।।
संबलकूट मल्लि जिनराज, जहँतें मोक्ष भये शुभकाज ।
कोड़िदरशफल कहो जिनेश, कोड़ि एक प्रोषध शुभ वेश ।।
निर्जरकूट कहो सुखदाय, मुनिसुव्रत जहँतें शिवजाय ।
कूटतनो अब दरशन सोय, एक कोड़ि प्रोषधफल होय ।।
कूट मित्रधरतैं नमि मुक्त, पुजत पाँय सुरासुर युक्त ।
कूटतनो फल है सुखकन्द, कोटि उपास कहो जिनचन्द ।।
श्रीप्रभु पार्श्वनाथ जिनराज, चहुँगतिसे छूटे महराज ।
सुवरणभद्र कूटको नाम, तासो मोक्ष गये सुखधाम ।।
तीनलोक हितकरन अनूप, बंदत ताहि सुरासुर भूप ।
चिंतामणि सुरवृक्ष समान, ऋद्धि सिद्धि मंगल सुखदान ।।
नवनिधि चित्रा वेलि समान, जातैं सुक्ख अनुपम जान ।
पारश और कामसुरधेन, नानाविधि आनँदको देन ।।
व्याधिविकार जाँहि सब भाज, मनचीते पूरे ह्वैं काज ।
भवदधिरोग विनाशक सोय, औषधि जगमें और न कोय ।।
निरमल परम थान उत्कृष्ट, बंदत पाप भजैं अरु दुष्ट ।
जो नर ध्यावत पुण्य कमाय, जशगावत सबकर्म नशाय ।।
करे अनादिकालके पाप, भजैं सकल छिनमें संताप ।
नरपति इंद्र फणेंद्र जु सबैं, और खगेंद्र मृगेंद्र जु नवैं ।।
नित सुरसुरी करैं उच्चार, नाचत गावत विविधप्रकार ।
बहुबिध भक्ति करैं मनलाय, विविधप्रकार बादित्रबजाँय ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रम द्रम द्रमता बजै मृदंग, घन घन घंट बजै मुहचंग।
झुनझुन झुनझुन झुनिया झुनै, सर सर सर सारंगी धुनै।।
मुरली बीन बजै धुनि मिष्ट, पटहा तूर सुरान्वित पुष्ट।
सब सुरगण थुति गावत सार, सुरगण नाचत बहुत प्रकार।।
झन नन नन ना नू पुर वान, तन नन नन ना तोरत तान।
ता थिइ थिइ थिइ थेई चाल, सुर नाचन नावत निजभाल।।
गावत नाचत नाना रंग, लेत जहाँ सुर आनँद संग।
नित प्रति सुर जहँ बंदत जाय, नानाबिधके मंगल गाय।।
अनहदधुनिको मोद जु होय, प्रापति वृषकी अति ही होय।
तातैं हमको सुख दे सोय, गिरिवर बन्दो करधरि दोय।।
मारुत मंद सुगंध चलेय, गन्धोदक जहँ नित वरषेय।
जियकी जाति विरोध न होय, गिरिवर बंदो करधरि दोय।।
ज्ञान चरन तप साधन सोय, निज अनुभव को ध्यान जु होय।
शिवमन्दिरको द्वारो सोय, गिरिवर बन्दों करधरि दोय।।
जो भवि बन्दे एक हि वार, नरक निगोद पशु गति टार।
सुरशिवपदकों पावे सोय, गिरिवर बंदो करधरि दोय।।
जाकी महिमा अगम अपार, गणधर कहत न पावें पार।
तुच्छ बुद्धि मैं मति कर हीन, कही भक्तिवश केवल लीन।।

घत्ता छन्द।

श्रीसिधखेतं अति सुखदेतं, शीघ्रहिं भवदधि पार करं।
अरिकर्मविनाशन शिवसुख कारन, जय गिरिबर जगतार वरं

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घं निर्वं० स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा ।

शिखर सु पूजै जो सदा, मनवचतन चितलाय ।
दास 'जवाहर' यों कही, सो शिवपुरको जाय ॥१॥

आशीर्वादः ।

श्रीसम्मेदशिखरमाहात्म्य पूजनविधान समाप्त ।

कवि प्रशस्ति अर्थात् करताका परिचय ।

अडिल्ल ।

पिता सु मोतीलाल "जवाहर" के कहे,
काका हीरालाल गुणन पूरे लहे ।
भारू सूरी गोत जु भारिल जानिये,
शरण जिनेश्वर धर्म यही उर आनिये ॥

दोहा ।

यशके लहने ना कही, कही धर्मके काज
श्री जिनवरकी भक्तिसे, मिलिहै सुक्ख समाज ॥२॥

अडिल्ल ।

रहे छतरपुर शहर जवाहरलाल जी,
मुक्तागिरिको चले हरष उर धार जी ।
बन्दन करि फिर आये पुरु अमरावती,
भामनके घर रहे भई जहँ सुभमती ॥
देखोशिखरविलास सुमति हृदयें धरी,
ताके अब अनुसार शिखर पूजाकरी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुनिये बुधिजन बिनती बालक मैं सही,
शुद्ध अशुद्ध जु होय समझ लीजै यही ।।
लीज्यो चतुर सुधार सु बुधिजन भव्यजू,
मोहि दोष मत दीज्यो कीज्योशुद्धजू ।
मोमैं नाँहि विवेक सुमति करि हीन हों,
पंडित चतुर सुजान तुमहिं परवीन हो ।।

दोहा ।

अमरावति नगरी विषैं, पूजा पूर्ण सु कीन ।
क्षमा जु सब जन तुम करो, मोहि दोष मति दीन ।।
करि जिन पूजा अष्ट विध, भाव भगति मन लाय ।
मोती सुत अस्तुति करें, हाथ जोरि शिर नाय ।।७।।

स्तुति लावनी ।

प्रभू नहिं समरथ है कोई,
जगसमुद्रयश थारा स्वामी क्यों बरणन होई ।
थके मुनि गणधरसे ज्ञानी,
हमसे मन्द कहा कह सकते बुधिकरि अज्ञानी ।।
यही उर जानत हैं दीना,
अगमअपार कहो जिनमहिमा वरणे को हीना ।
प्रभू तुम त्रिभुवनके नाथा,
जगचंद्रोपमचूड़ामणिसम परमधरम दाता ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करम तुम चूरण कर डारे,
जय शिवकामिनिकन्त जिनेश्वर सबहीके प्यारे।
प्रभू तुम अगणित बलधारी,
अतुलअनन्तचतुष्टयधारक सबको सुखकारी ॥
प्रभू तुम तपलक्ष्मीधरता,
धरमधुरधुंर धीर जिनेश्वर स्वर्गमुक्ति करता।
प्रभू तुम रत्नत्रयधारी,
तारणतरण जिनेश्वरस्वामी सबको हितकारी ॥
प्रभू तुम संशयमदहारी,
निर्विकार निर्दोष जिनेश्वर गुणअनन्तधारी।
प्रभू तुम कामसुभटविजई,
धर संयम व्रतपाल जिनेश्वर चरितदलसजई ॥
प्रभू तुम मोहमल्ल मारो,
क्रोधमानमायाकों त्यागो शिवपदको धारो।
प्रभू गुणसागर है भारी,
ज्ञानजहाज बैठके गणधर पहुँचे नहिं पारी ॥
प्रभू गुणकीरतिबेलि बढ़ी,
यतन विन जगमंडपऊपर आपुहितें जु चढ़ी।
कुदेव यश अब जो नित चाहैं,
पै अपने घरहीके भीतर यशको नहिं लाहैं ॥
प्रभू तुम सबको सुखदाई,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जन्मजन्मके पाप कटतहैं तुमरे गुणगाई ।
जगतमें बहु पदार्थं जानो,
सुरतरुचिंतामणि पारसहै नवनिधिको मानो ।।
अरे इक भव जानो भाई,
जे नियोग ये जियको होई किंचित सुखदाई ।
करें जो प्रभुचरणन सेवा,
जनम जनम सुखदायकप्रभुजी तुमहीहोदेवा ।।
तुमहिं हो कृपानाथ स्वामी,
तुमबांधव जगतात दयानिधि अन्तरकेजामी ।
प्रभू तुम सब शुभके दाता,
जगजीवनको पार लगावत देते सुखदाता ।।१०।।
प्रभु तुम गुणरत्ननखाना,
तुम पुनीत समदर्शी प्रभुजी तुमही सब जाना ।
प्रभु बिन तीनकालमाहीं,
नहिं नहिं शरण जीवको कोई या जगके माहीं ।।
प्रभु तुम करुणानिधि नाथा,
तुमसनमुख हम ठाढ़े निशिदिन जोरे जुगहाथा ।
होय नहिं जबलौं निरबाना,
जगनिवास छूटै अब नाहीं दुखको जोदाना ।।
प्रभु तुम चरणाम्बुजवासा,
भवभव मिलै, करत या अरजीहै 'जवार' दासा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और नहिं मांगत प्रभु तुमसो,
हैं दयाल दीजै वरदाना खुशी होयहमसों ॥१३॥

दोहा ।

त्रिभुवनपति अरजी सुनो, कृपानाथ गुणखान ।
भवसागरतें काढ़िये, शिवपददे भगवान ॥१॥

अथ बैसाख वदी नवमी शुभ जानिये ।
शुक्रवारके दिना समापत मानिये ॥
कवसु नवको अङ्क एक अब फिर लिखो ।
सम्वत यही प्रमाण सरस मनमें लखो ॥

दोहा ।

जे नर नारी भावसों, पूजैं श्रीजिनदेव ।
नाना बिध सुख भोगके, पावे शिव स्वयमेव ॥२॥
तिहँको इक दृष्टान्तहै, सुनो भव्य जन लोय ।
श्रद्धातैं पूजा करै रत्न समान जु होय ॥३॥
बिन श्रद्धा पूजा करैं, कांच समानसु जान ।
रतन बड़ो है मोल्ल को, थुरमोलो कांच समान ॥४॥
बहुत करी तो क्या भई, भाव न मनमें लाय ।
श्रद्धा से थोरी करौ, पावे पद सुख दाय ॥५॥
श्रद्धा सैं थोरी करौ, लेहु बहुत कर मान ।
प्रापति हौवै पुण्यकी, पावे पद निरबान ॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुच्छ बुद्धि मेरी सही पंडित करो विचार।
भूल चूक अब होय जो, लीज्यो चतुर सुधार॥

सवैया ३१ मात्रा।

शुद्ध करनको ज्ञान न मोमैं, तातैं शोधि पढ़ौ धीमान।
क्षमाभाव मो ऊपर कीजौ, सतपुरुषनकी यही सुबान॥
रक्षा तैलऽरुजलतैं कीजै, पावकहूतैं दूरि सुजान।
मूरख हस्त न दीजौ कबहूं, हाथजोरि बिनती मो मान॥१॥

वैशाख वदी ९ शुक्रवार संवत् १८९१ को पूर्ण करी।

श्री रक्षाबन्धन (सलूना) पूजा

प्रथम श्री अकंपनाचार्यादि सप्तशत मुनि पूजा प्रारभ्यते

अडिल्ल छन्द।

श्री अंकपन आदि सबे मुनि सातसं। करबिहार हथनापुर आये सातसै॥ तहाँ भयो उपसर्ग बड़ो दुखकारजू। शांतभाव से सहन कियो मुनिराज जू॥१॥ मितिजु पन्द्रस श्रावन शुक्ल प्रमानिये। ध्यानारूढ सुतिष्ट सर्वमुनि मानिये॥ हुए उपसर्ग जुदूर धन्य घड़ी आजजी। नित प्रति शीश नमाय पूज मुनिराजजी॥२॥ तिनकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजा रचूं भाव अरु भक्ति से। दिवस सलूना भयो यही इस युक्ति से ।। आह्वानन संस्थापन सन्निधि कर्णजी। तिष्ठ गुरु इत आय करूँ पद अर्चजी ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्यादि सप्तशतमुनीश्वराः समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् ।।

चाल जोगीरासा।

शीतल प्राशुक उज्ज्वल जल ले, कंचन झारी लाऊँ जन्म जरा मृतु नाश करन को, तुमरे चरण चढ़ाऊँ ।। श्री अकंपन गुरु आदि दे, मुनिसप्तसै जानों। तिनकी पूज रचूं सुखकारी, भवभव के अघहानों ।।

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्यादिसप्तशत मुनिभ्यो जलं ।।

चंदनकेसर मिश्रित करके, नीको चन्दन लाऊँ। भव आताप जु दूर करन को, गुरु के चरण चढ़ाऊँ ।। श्री अकंपन गुरु० ।। चन्दनं ।। चन्द्रकिरणसम उज्वल अक्षत, भावभक्ति से लीने। पुंज मनोहर श्रीगुरु सन्मुख, श्रद्धा करजु धरीजे ।। श्री अकंपन गुरु० ।। अक्षतान् ।। बेल चमेली श्री गुलाब के ताजे पुष्प सु लाऊँ। काम बाण के नाश करन को श्री गुरु चरन चढ़ाऊँ ।। श्री अकंपन गुरु० ।। पुष्पं ।। गुंजा फेनी मोदक लाडू, ताजे तुरत बनाऊँ। श्री गुरुवर के चरन चढ़ाकर, हर्ष हर्ष गुण गाऊँ ।। श्री अकंपन गुरु० ।। नैवेद्यं ।। घृत कपूर की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तम जोतिसु, स्वर्ण कटोरी धारूँ। श्री मुनिवर की पूज करूँ मैं मोह कर्म को जारूँ ।। श्री अकंपन गुरु० ।। दीपं ।। धूप सुगन्ध सुवासित लेकर, धूपायन में खेऊँ। अष्ट कर्म के नाश करन को, आनन्द मंगल लेऊँ ।। श्री अकंपन गुरु० ।। धूपं ।। लोंग लायची श्रीफल पिश्ता, अरु बादाम मंगाऊँ। सेव संतरा खट्टा मीठा, श्रीगुरु चरन चढ़ाऊँ ।। अकंपन गुरु० ।। फलं ।। जल फल आठों द्रव्य मिलाकर, भावभक्ति से लाया। हे गुरु हमको भवसे तारो, ताते चरन चढ़ाया ।। श्री अकंपन गुरु० ।। अर्घं ।।

अथ जयमाला ।

दोहा ।

अकंपन मुनि आदि सब, सप्त सैकड़ा जान ।
तिनकी यह जयमाल सुनि भाषा करूँ बखान ।।

चौपाई ।

जीव दया पाले गुरु स्वामी, दे धर्मोपदेश बहुनामी ।
छहों काय की रक्षा पाले, तपकर आठ कर्म को टाले ।।
झूंठ न रंच मात्र मुख बोले, जो मन होय बचन सो खोले ।
महा सत्य व्रत के मुनि धारी, तिनके पाँयन धोक हमारी ।।
तृण जल भी अदत्त नहिं लेवे, धन कंचन सब तृण सम जोवे ।
महा अचौर्य व्रत के गुरु धारी, तिनके पाँयन धोक हमारी ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अठारह सहस शीलके भेदा, निर्भय धारन हो सु अखेदा।
शील महाव्रत के मुनि धारी, तिनके पाँयन धोक हमारी।।
चौबिस भेद परिग्रह गाये, सर्व त्याग बनवास कराये।
परिग्रह त्याग महाव्रत धारी, तिनके पाँयन धोक हमारी।।

पद्धड़ी छन्द।

सुभावत भावन बारह नित्त, विचारत धर्म सदा सुपवित्त।
जय ग्यारह अंगसु पढ़त पाठ, संसार भोग को त्याग ठाठ।।
पञ्चेन्द्रिय दमन करे महान, मन वचन कायकर शुद्ध ध्यान।
जय मुनिवर वन्दो शान्त चित्त, संसार देह भोगन विरत्त।।
जय मौन धारि मुनि तपकरंत, तब कर्म काठ सबही जरंत।
जय आनँद कन्द विधान रूप, जय ध्यावत गुरु आतम सरूप।।
संसार कष्ट काटो मुनीन्द्र, तुम चरन नमें सब देव इन्द्र।
जय मुनिवर वन्दों कर्मकाट, शिवनारि वरनका करत ठाट।।
मैं अल्पमती अज्ञान बुद्ध, प्रभु क्षमा करो जो हो अशुद्ध।
रघुवर सुत वंदत शीशनाय, श्री गुरुके गुण गाये बनाय।।

घत्ता।

मुनि सब गुण धारं, जग उपकारं कर भव पारं सुखकारं।
कर कर्म जु नाशा आतम शासा, सुख परकाशा दातारं।।

ॐ ह्रीं अकंपनादि सप्तशत मुनिभ्यो महार्घं।।

दोहा।

भक्ति भाव मन लायकर, पूजे बांचे जोय।
बाबूलाल सु स्वर्ग पद, निश्चय ताको होय।।

इत्याशीर्वाद।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री विष्णुकुमार मुनि की पूजा

अडिल्ल छन्द ।

विष्णुकुमार मुनीश्वर को ऋद्धि भई, नाम विक्रिया तास सकल आनन्द ठई । सो मुनि आये हथनापुर के बीच में, मुनी बचाये रक्षा कर बन बीच में ।।१।। तहाँ भयो आनन्द सर्व जीवन घनो, जिम चिन्ता मणिरत्न रंक पायो मनो । सब पुर जै जै कार शब्द उचरत भये, मुनि को देय अहार आप करते भये ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनि अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टकं ।

चाल सोलह कारन पूजा की ।

गंगा जल सम उज्वल नीर, पूजों विष्णुकुमार सुधीर । दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ।। सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान । दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनयेनमः जलं ।।

मलयागर चन्दन शुभ सार, पूजों श्री गुरुवर निर्धार दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ।। सप्त सैंकड़ा मुनि० ।। चंदनं ।। श्वेत अखंडित अक्षत लाय, पूजों श्री मुनिवर के पाय दयानिधि हो, जय जगबन्धु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दयानिधि हो ।। सप्त सैंकड़ा मुनिवर० ।। अक्षतान् ।। कमल केतकी पुष्प चढ़ाय, मेटो काम बाण दुखदाय, दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ।। सप्त सैंकड़ा मुनिवर० ।। पुष्पं ।। लाडू फेनी घेवर लाय, सब मोदक मुनि चरन चढ़ाय, दयानिधि हो, जय जगबन्धु दया-निधि हो ।। सप्त सैंकडा मुनिवर० ।। नैवेद्यं ।। घृत कपूर का दीपक जोय, मोह तिमिर सब जावे खोय, दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ।। सप्त सैंकड़ा मुनिवर० ।। दीपं ।। अगर कपूर सु धूप बनाय, जारें अष्ट करम दुखदाय, दयानिधि हो जय जग बन्धु दयानिधि हो ।। सप्त सैंकड़ा मुनिवर० ।। धूपं ।। लोंग लायची श्री फल सार, पूजों श्री मुनि सुख दातार, दयानिधि हो जय जगबन्धु दयानिधि हो ।। सप्त सैंकड़ा मुनिवर० ।। फलं ।। जल फल आठों दरब संजोय श्री मुनिवर पद पूजों दोय, दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ।। सप्त सैंकड़ा ।। अर्घं ।।

दोहा ।

श्रावण सुदी सु पूर्णिमा मुनि रक्षा दिन जान ।
रक्षक विष्णुकुमार मुनि, तिन जयमाल बखान ।१।

चाल छन्द–भुजंग प्रयान

श्री विष्णु देवा, करूं चर्णसेवा । हरो जग की बाधा सुनो टेर देवा ।। सुगजपुर पधारे महा सुखकारी,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धरो रूप बासन सु मन में विचारी ॥ २ ॥ गये पास बलि के हुवा वो प्रसन्ना, जो मांगो सो पावो दिया ये बचन्ना ॥ मुनी तीन डग मांगि धरनी सु तापै, दई ताने तत्क्षण सु नहिं ढील थापै ॥ ३ ॥ करी विक्रिया मुने सु काया बढ़ाई, जगह सारी लेली सु डग दो के माहीं ॥ धरी तीसरी डग सु बलि पीठ माही, सु मांगों क्षमा तब ब्रली ने बनाई ॥ ४ ॥ जल की सु वृष्टि करी सुखकारी, सरब अग्नि क्षण में भई भस्म सारी ॥ टरे सर्व उपसर्ग श्री विष्णुजी से भई जै जै कारा सरव नग्र ही से ॥५॥

चौपाई ।

फिर राजा के हुक्म प्रमान । रक्षा बंधन बन्धी सुजान ॥ मुनिवर घर घर कियो बिहार । श्रावक जन तिन दियो अहार ॥६॥ जा घर मुनि महीं आये कोय । निज दरवाजे चित्र सुलोय ॥ स्थापन कर तिन पूज रचाय । फिर सब भोजन कियो बनाय ॥७॥ तब से नाम सलूना सार, जैन धर्म का है त्योहार ॥ शुद्ध क्रिया कर मानों जीव । जासो धर्म सु बढ़े अतीव ॥८॥ धर्म पदारथ जग में सार, धर्म बिना झूंठो संसार ॥ सावनसुद पूनम जब होय, यह दो पूजन कीजे लोय ॥९॥ सब भाइन को दो समझाय, रक्षा बंधन कथा सुनाय । पर्व प्रवर्तक विष्णुकुमार, तिनकी भक्ती हृदय में धार ॥१०॥ सब के रक्षा बन्धन बांध, जैन मुनिन की रक्षा साध ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस विधि से मानों त्यौहार, नाम सलूना जग में सार ॥११॥ या पूजन कवि नहिं रची कोय। जो रची देख पाई न सोय ॥ तातें या पूजन रची सार। पढ़ियो सुभव्य भूले सम्हार ॥१२॥ श्री विष्णु गुरु के चरण दोय, तनुज नमें नित मन संजोय ॥ "नगले सरूप" वासी जु दास, मुनि चरन सेव की करत आस ॥१३॥

घत्ता

मुनि दीन दयाला, सब दुख टाला, आनन्द माला सुखकारी ॥ रघु सुत नित बन्दे, आनन्द कन्दे, सुख करंदे हितकारी ॥१४॥ महार्घं।

दोहा।

विष्णु कुमार मुनीचरन, जो पूजे धर प्रीति।
रघु सुत पावे स्वर्गपद, लहे पुण्य नवनीत ॥

इत्याशीर्वादः

अथ पंचपरमेष्ठी जयमाला (प्राकृत)

मणुय-णाइंद-सूरधरियछत्तत्तया, पंचकल्लाणसुक्खावली पत्तया। दंसणं णाण झाणंअणंतं बलं, ते जिणादिंतु अम्हं बरं मंगलं ॥ जेहि झाणग्गिवाणेहिं अइथद्धयं, जम्मजरमरण णयरत्तयं दद्धयं। जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं, ते महा दिंतु सिद्धा वरं णाणयं ॥ पंचहाचारपंचग्गिसंसाहया, बारसंगाइ सुयजलहिं अवगाहया। मोक्खलच्छी महंती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महंते सया, सूरिणो दिंतु मोक्खं गया संगया । घोर संसारभीमाडवीकाणणं, तिक्खवियरालणहपावपंचाणणे ।। णट्ठमग्गाण जीवाण पहदेसया, बंदिमो ते उवज्झाय अम्हे सया । उग्गतवयरणकरणेहिं झीणं गया, धम्मवर झाणसुक्केक्कझाणं गया । णिब्भरं तवसिरीए समालिं गया, साहओ ते महामोक्खपहमग्गया । एण थोतेण जो पंचगुरु बंदए, गुरुयसंसारघणवेल्लि सो छिंदए । लइइ सो सिद्धसुक्खाइ वरमाणणं, कुणइकम्मिंधणं पुंजपज्जालणं ।

आर्य्या ।

अरिहा सिध्दाइरिया, उवज्झाया साहु पंचपरमेष्ठी ।
एयाण णमुक्कारो, भवे भवे मम सुहं दिंतु ।।

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुपंचपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।

इच्छामि भंते पंचगुरुभत्ति काओसग्गो कओ, तस्सालोचेओ अट्ठमहापाडिहेरसंजुत्ताणं अरहंताणं । अट्ठगुणसंपण्णाणं उडढलोयम्मि पइट्ठियाणं सिद्धाणं । अट्ठपवयणमाउसंजुत्ताणं आइरियाणं । आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं । उवज्झायाणं । तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अच्चेमि पूज्जेमि बंदामि णमस्सामि, दुःक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

यहां पंच महा गुरु भक्ति कार्योत्सर्ग करे ।

(इत्याशीर्वाद. । पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ शान्तिपाठः प्रारभ्यते ।

(शान्तिपाठ बोलते समय दोनों हाथों से पुष्पवृष्टि करते रहना चाहिये)

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयम पात्रम् ।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमिजिनोत्तम मम्बुजनेत्रम् ।१।
पंचमभीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिन्द्र नरेन्द्र गणैश्च ।
शान्तिकरंगणशान्तिमभीप्सुः,षोडषतीर्थंकरं प्रणमामि ।२।
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टि दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ ।
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभातिच मण्डलतेजः ।३।
तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं, शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि ।
सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं, मह्यमरं पठते परमांच ।४।

बसन्त तिलका छन्द ।

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुण्डलहाररत्नैः ।
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः ।।
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपास् ।
तीर्थंकराः सततशान्तिकरा भवन्तु ।।५।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्यतपो धनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवत जिनेन्द्र ।।

(जलधारा ३ बार छोड़नी चाहिये)

स्रग्धरावृत्तम् ।

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान धार्मिको भूमिपालः
काले काले च सम्यग्वर्षंतु मघवाव्याधयो यान्तु नाशम् ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्म भूज्जीवलोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्व सौख्यप्रदायि ॥७॥

अनुष्टुप ।

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञान भास्कराः ।
कुर्वन्तु जगतः शान्तिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥८॥

(चन्दन की धारा ३ बार छोड़नी चाहिये)

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ।

अवेष्ठ प्रार्थना ।

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः ।
सद्‌वृत्तानां गुणगणकथा, दोषवादे च मौनम् ॥
सर्वस्यापि प्रियहितवचो, भावना चात्मतत्त्वे ।
सम्पद्यं तां मम भवभवे, यावदेतेऽपवर्गः ॥९॥

आर्यावृत्तम ।

तव पादौ मम हृदये, मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावद्यावन्निर्वाण सम्प्राप्तिः ॥१०॥
अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं ।
तं खमउ णाणदेव य मज्झवि दुःक्खक्खयं दिंतु ॥११॥
दुक्खखओ कम्मखओ समाहिमरणं चं बोहिलाहो य ।
मम होउ जगत-बान्धव तव जिणवर चरणसरणेण ॥१२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्तिपाठ भाषा ।

चौपाई ।

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुण व्रत संजम धारी । लखन एकसौ आठ विराजें, निरखत नयन कमलदल लाजै ।।१।। पंचमचक्रवर्तिपदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी । इन्द्रनरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमौं शांतिहित शांतिविधायक ।।२।। दिव्य विटपि पहुपनकी वरसा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा । छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रतिहार्य मनहारी ।।३।। शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगतपूज्य पूजों सिरनाई । परम-शांति दीजे हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघको ।।४।।

वसन्ततिलका ।

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके ।
इन्द्रादिदेव अरु पूज्य पदाब्ज जाके ।।
सो शांतिनाथ वरवंशजगत्प्रदीप ।
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ।।५।।

इन्द्रवज्रा ।

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनको औ यतिनायकों को । राजा प्रजा राष्ट्र सुदेशको ले, कीजे सुखी हे जिन शांतिको दे ।।६।।

(जलधारा ३ बार छोड़नी चाहिये)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रग्धरा ।

होवे सारी प्रजाको सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा ।
होवे वर्षा समैपै तिलभर न रहे व्याधियोंका अंदेशा ।।
होवे चोरी न जारी सुसमय वरतै हो न दुष्काल मारी ।
सारेही देश धारें जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी ।।

दोहा ।

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज ।
शांति करें सो जगतमें, वृषभादिक जिनराज ।।८।।

(चन्दन की धारा ३ वार छोड़ना चाहिये)

मन्दाक्रान्ता ।

शास्त्रोंका हो पठन सुखदा लाभ सत्संगतीका ।
सद्‌वृत्तोंके सुगुन कहके, दोष ढांकूं सभीका ।।
बोलूं प्यारे वचन हितके, आपको रूप ध्याऊं ।
तौलौं सेऊं चरन जिनके मोक्ष जौलौं न पाऊं ।।९।।

आर्या ।

तुवपद मेरे हियमें ममहिय तेरे पुनीत चरणोंमें ।
तबलों लीन रहें प्रभु, जबलों पाया न मुक्तिपद मैंने ।।१०।।
अक्षरपद मात्रा से, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे ।
क्षमा करो प्रभु सो अब, करुणा करि पुनि छुडाहु भवदुखसे ।।
हे जगबंधु जिनेश्वर पाऊं तवचरण शरण बलिहारी ।
मरणसमाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी ।।

परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाषा स्तुति पाठ ।

तुम तरनतारन भवनिवारन, भविकमनआनंदनो ।
श्रीनाभिनंदन जगतवंदन, आदिनाथ निरंजनो ॥१॥
श्री आदिनाथ अनादि सेऊं, सेय पदपूजा करूं ।
कैलासगिरिपररिषभजिनवर, पदकमल हिरदे धरूं ॥२॥
तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महाबली ।
यह विरद सुनकर सरन आयो, कृपा कीजे नाथजी ॥३॥
तुम चंद्रवदन सु चन्द्रलच्छन, चंद्रपुरिपरमेश्वरो ।
महासेननंदन जगतवंदन, चंद्रनाथ जिनेश्वरो ॥४॥
तुम शांति पांच कल्याण पूजूं, शुद्धमनवचकायजू ।
दुर्भिक्ष चोरीपापनाशैं, विघन जाय पलायजू ॥५॥
तुम बालब्रह्म विवेकसागर, भव्यकमलविकाशनो ।
श्रीनेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर बिनाशनो ॥६॥
जिन तजी राजुल राजकन्या, कामसैन्या वश करी ।
चारित्र रथ चढ़ि भये दूलह, जाय शिवरमणी वरी ॥७॥
कंदर्प दर्प सुसर्पलच्छन, कमठ शठनिर्मद कियो ।
अश्वसेननन्दन जगतवंदन, सकलसंघ मंगल कियो ॥८॥
जिन धरी बालक पणे दीक्षा, कमठमानविदारकैं ।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रके पद, मैं नमों सिरधारकैं ॥९॥
तुम कर्मघाता मोक्षदाता, दीन जानि दया करो ।
सिद्धार्थनंदन, जगतवंदन महावीर जिनेश्वरो ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रय छत्र सोहे सुर नर मोहै वीनती अब धारिये ।
कर जोड़ि सेवक वीनवै प्रभु, आवागमन निवारिये॥११॥
अब होउ भव भव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहूं
कर जोड़ यो बरदान मांगूं, मोक्षफल जावत लहूँ ॥१२॥
जो एकमाहीं एक राजै, एकमाँहि अनेकनो ।
इक अनेककी नहीं संख्या, नमो सिद्धनिरंजनो ॥१३॥

अथ विसर्जनम् ।

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया ।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वराः ॥१॥
आव्हाननं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं ।
त्वद् भक्त्यं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥३॥
सर्व मंगल मांगल्यं सर्व कल्याण कारकम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणाम् जैनं जयतु शासनम् ॥४॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

चौपाई ।

मैं तुम चरणकमलगुणगाय,बहुविधि भक्ति करूं मनलाय ।
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि ॥
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय ।
बार बार मैं विनती करूं, तुम सेयें भवसागर तरूं ॥१५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम लेत सब दुख मिट जाय, तुमदर्शन देख्या प्रभुआय ।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूं चरण तव सेव ।।
मैं आयो पूजन के काज, मेरो जनम सफल भयो आज ।
जो मुझ सेवक की अरदास, सो सब रही ज्ञान में भास ।।
याते नहिं कुछ कहनी परे। तुमही ते सब कारज सरे ।।
तुमरागुणांको स्वामी अंत न पार तुम बिन कौन लगावे पार।।
तार तार बिल मत कर देव एही विरद सुन तारनएव ।।
पूजा करके नवाऊं शीस। मुझ अपराधक्षमहुँ जगदीश ।।

दोहा ।

दर्शन करते देवका, आदि मध्य अवसान ।
स्वर्गन के सुख भोगकर, पावे मोक्ष निदान ।।
जैसी महिमा तुमविषैं और धरे नहिं कोय ।
जो सूरज में ज्योति है तारन में नहिं सोय ।।
नाथ तिहारे नाम तैं अघ छिनमांहि पलाय ।
ज्यों दिनकर परकाशतैं, अंधकार विनशाय ।।
बिनु मतलब बहुते अधम, तार दिये स्वमेव ।
ज्यों मेरा कारज सफल कर देवन के देव ।।
बहुत प्रशंसा क्या करूं, मैं प्रभु बहुत अजान ।
पूजाविधि जानू नहीं, सरन राखि भगवान ।।

आगम अभ्यास चाहूँ सेवा सर्वज्ञ तेरी संगति सदैव मिलो साधर्म्मी जननकी। संतनि के गुणन को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बखान यह बान परो मेटो टेब देव पर औगुन के कथन की ॥ सबही सों ऐन सुख दैन मुख बैन भाषूं–भावना त्रिकाल राखूं आत्मिक धन की । जौलों कर्म काक खोलूं मोक्ष के कपाट तोलों एही बात हूजो प्रभू पूजो आस मन की ॥

इति भाषास्तुतिपाठ समाप्त ।

शिक्षाप्रद भजन, कीर्तन और प्रभात फेरियां

(१)

जगत में शील से बढ़कर, न कोई भी सहारा है ।
मिली जिसको शरण इसकी; बना वोही सितारा है ॥
सती सीता ने जब इसको, वचन मन काय से पाई ।
जमीं थर्रा उठी थर थर; अनल जलरूप धारा है ॥
सती सोमा की क्या पूछो; जगत में नाम है रोशन ।
सर्प से माल होजाना; शील व्रत का नजारा है ॥
युधिष्ठर, भीम, अर्जुन से, बली भू पर हुए सारे ।
सभी ने शीलव्रत से ही, महाव्रततप सम्हारा है ॥
दिखा दी द्रोपदी ने भी, जगत को शील की महिमा ।
थका वह दुष्ट दुःशाशन, न पाया चीर पारा है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अगर तुम चाहते "मुन्ना" जगत में वीर सम बनना।
तो अब भी शीलव्रत धारो, यही भव सिंधु तारा है ॥

(२)

उठो वीरो! पड़े क्या हो, तुम्हें अब काम करना है।
तुम्हें निज जाति के खातिर, खुशी से आज मरना है।
अगर पीछे हटे कुछ भी, तो तुम कायर कहाओगे।
दिखादो आज दुनियां को, न आता हमको डरना है ॥
हैं हम उस वीर की संतान, कि जो दुनियां के रहवर थे।
उन्हीं के मार्ग के कांटे, हमें अब दूर करना है ॥
हा! अपनी जाति के दुःखियों के दुःख को जो नहीं हरते।
हमें ऐसे अकर्मण्यों में, पौरुष आज भरना है ॥
पड़े क्या चद्दरा ताने, जरा ऊपर को तो देखो।
निकल सूरज गया तुम्हारा, न उठने का ठिकाना है ॥
जगत की जातियां हिलमिल के, अपने काम में जुटरहीं।
उठो "मुन्ना" कमर कस के, भवोदधि पार करना है ॥

(३)

हमें जैन झण्डा उठाना पड़ेगा।
घर घर में इसको घुमाना पड़ेगा ॥१॥
बहुत सो चुके ख्वा व गफलत से मित्रो।
सोते हुओं को जगाना पड़ेगा ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न समझें इसे धर्म अपना हक़ीकी ।
अजैनों को जैनी बनाना पड़ेगा ॥३॥
इसी जैन झंडे की छाया में इक दिन ।
हजारों को अब तो बुलाना पड़ेगा ॥४॥
बतावें उन्हें जैन कहते हैं किसको ।
शास्त्रों को उनको दिखाना पड़ेगा ॥५॥
यही "प्रेम" की आखरी आरज़ू है ।
छिपा राज इसका बताना पड़ेगा ॥६॥

(४)

हमें जैन झंडा उठाना पड़ेगा,
हाँ, सोते हुओं को जगाना पड़ेगा ।
समझ जो रहे स्वार्थी आज हमको,
उन्हें मार्ग अपना बताना पड़ेगा ॥
बनायेंगे फिर धर्मको विश्वव्यापी,
अजैनों को जैनी बनाना पड़ेगा ।
जो स्वारथमें दीपक बुझा जा रहा है,
उसे आज फिरसे जलाना पड़ेगा ।
नहीं भय 'हरी' कुछ भी आवे मुसीबत,
यही पाठ सबको पढ़ाना पड़ेगा ॥

(५)

वीरो ये जैन झंडा नीचे नहीं झुकाना ।
भूले हुओंको अपना मारग सुगम बताना ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गर वीर पुत्र हो तुम तो वीर पाठ सीखो ।
पढ़कर उदार शिक्षा फिर विश्वको पढ़ाना ।।
अन्यायियों की चोटें सहनी पड़ें अनेकों ।
हटना कदम न पीछे निज खूनको बजाना ।।
परवाह क्या अगर है गर प्राण चले जाँयें ।
पर खुद जयी पताका संसार में उड़ाना ।।
त्रषितों को सहारा हो झण्डेकी लहर अपने ।
'हरि' अपनी प्रतिज्ञा को इस रूपकी बनाना ।।

(६)

श्री जिनेन्द्र कीर्तन—

जिनवर जय जिनवर जय जिनवर जय जिनवर जय ।
तीन लोक हितकारी हो । जन मन रंजन हारी हो ।
तुम हो शान्ति प्रदाता हरदो भय हरदो भय ।।
जिनवर जय जिनवर जय ।।१।।
सीता के उपकारी तुम हो । अंजन के अघहारी तुम हो
कीजे शीघ्र हमारे अघ का क्षय अघ का क्षय ।
जिनवर जय जिनवर जय ।।२।।
अजा नकुल गज नाग उबारे । भक्त जनों के संकट टारे ।
प्रभु भक्ति में करदो सबको लय सबको लय ।
जिनवर जय जिनवर जय ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पार करो भक्तों की नैया। तुम समान नहिं और खिवैया।
"सिद्धि" मिलकर बोलो। जिनवर जय जिनवर जय।
जिनवर जय जिनवर जय ॥४॥

(७)

वीरा तूं वीरा तूं वीरा तूं वीरा तूं।
वीरा कर्मों को जीत महावीर भया वीरा तूं वीरा तूं।
वीरा तूं वीरा तूं।
अपने भक्तों के दिल में मेरे वीर प्रभु भाया तूं भाया तूं
भाया तूं भाया तूं।
जब कि होती थी दुनियाँ में हिंसा बुरी, मूक पशुओं की
गर्दन पै चलती छुरी।
उस वक्त के संकट में आया है तूं आया तूं आया तूं
आया तूं आया तूं।
वीरा कर्मों को जीत महावीर भया महावीर भया
वीरा तूं वीरा तूं वीरा तूं वीरा तूं।
आके दुनियां को सत उपदेश दिया, मिटा जीवों का
सारा क्लेश दिया।
"सिद्धि" मुक्ति का मारग लाया तूं लाया तूं।
लाया तूं लाया तूं।
वीरा तूं वीरा तूं वीरा तूं वीरा तूं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(८)

जय वीर कहो महावीर कहो त्रिशलानंदन अतिवीर कहो ।
हर साँस यही झनकार उठे । पृथिवी नभ सब गुंजार उठे ।
प्राणी का प्राण पुकार उठे । जयवीर कहो महावीर०॥१॥
ये दुनियां एक कहानी है । दरिया का बहता पानी है ।
बस दो दिन की जिंदगानी है । जयवीर कहो महावीर०॥२॥
है तीन भुवनका सार यही । जीवों को सुखदातार यही ।
बस लगातार तूं तार यही । जयवीर कहो महावीर०॥३॥
ये संकटमोचन हारा है । भक्तों को तन से प्यारा है ।
"सिद्धि" जिनराज सहारा है । जयवीर कहो महावीर०॥४॥

स्तुति संग्रह

१—दौलतरामकृत स्तुति ।

दोहा ।

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानन्दरसलीन ।
सो जिनेन्द्र जयवंत नित, अरिरज रहसविहीन ॥

जय वीतराग विज्ञानपूर । जय मोहतिमिर को हरनसूर ॥ जय ज्ञान अनन्तानन्तधार । दृग सुख वीरज-मण्डित अपार ॥१॥ जय परमशांति मुद्रा समेत । भवि-जनको निज अनुभूति हेत ॥ भविभागनबचजोगेवशाय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुमधुनि ह्वै सुनि विभ्रम नसाय ।।३।। तुम गुण चिंतत निजपरविवेक, प्रगटैं विघटैं आपद अनेक । तुम जग-भूषण दूषण वियुक्त । सब महिमायुक्त विकल्पमुक्त ।।४।। अविरुद्ध शुद्ध चेतनस्वरूप । परमात्म परम पावन अनूप ।। शुभअशुभविभाव अभाव कोन । स्वाभाविकपरि-णतिमय अछीन ।।५।। अष्टादशदोषविमुक्त धीर । स्व-चतुष्टयमय राजत गम्भीर।। मुनिगणधरादि सेवत महंत । नवकेवललब्धिरमा धरंत ।।६।। तुम शासन सेय अमेय जीव । शिव गए जाहिं जैहैं सदीव । भवसागर में दुख छार वारि । तारनको अवर न आप टारि ।।७।। यह लखि निज दुखगदहरणकाज । तुमही निमित्तकारण इलाज जाने तातैं मैं शरण आय । उचरों निज दुख जो चिर लहाय ।।८।। मैं भ्रम्यो अपनपो विसरि आप, अप-नाये विधिफल पुण्य पाप । निजको परको करता पिछान । पर में अनिष्टता इष्टि ठान ।।९।। आकुलित भयो अज्ञान धारि। ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि वारि ।। तनपरिणति में आपो चितार । कबहुं न अनुभयो स्वपदसार ।।१०।। तुमको बिन जाने जो कलेश । पाये सो तुम जानत जिनेश । पशु-नारकनर सुरगतिमझार । भव धर धर मरयो अनंतबार ।।११।। अब काललब्धिबलतैं दयाल । तुम दर्शन पायभयो खुश्याल ।। मन शांत भयो मिटि सकल द्वंद । चाख्यो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वातमरस दुखनिकंद ।।१२।। तातैं अब ऐसी करहु नाथ। बिछुरैं न कभी तुअ चरण साथ। तुम गुण गणको नहिं छेव देव। जग तारन को तुअ विरद एव ।।१३।। आतम के अहित विषय कषाय। इनमें मेरी परिणति न जाय ।। मैं रहूँ आपमें आप लीन। सो करो होउ ज्यों निजाधीन ।।१४।। मेरे न चाह कछु और ईश। रत्नत्रयनिधि दीजे मुनीश। मुझ कारज के कारन सु आप। शिव करहु, हरहु मम मोहताप।।१५।। शशि शांतकरन तपहरन हेत। स्वयमेव तथा तुम कुशल देत। पीवत पीयूष ज्यों रोग जाय, त्यों तुम अनुभवतें भव नशाय ।।१६।। त्रिभुवन तिहुँकाल मंझार कोय। नहिं तुम बिन निज सुखदाय होय। मो उर यह निश्चय भयो आज। दुखजलधि उतारन तुम जिहाज ।।१६।।

दोहा

तुम गुणगणमणि गणपती, गणत न पावहिं पार ।
'दौल' स्वल्पमति किम कहैं, नमूं त्रियोग संभार ।।

२–बुधजनकृत स्तुति।

प्रभु पतितपावन मैं अपावन, चरण आयो शरणजी।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरन जी ।।
तुम ना पिछान्या आनमान्या, देव विविध प्रकारजी। या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुद्धि सेती निज न जाण्या, भ्रम गिण्यो हितकारजी ॥१॥ भवविकट वनमें करम बैरी, ज्ञानधन मेरो हरयो। तव इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्टगति, धरतो फिरचो ॥ धन घड़ी यो धन दिवस योही, धन जनम मेरो भयो। अब भाग मेरो उदय आयो, दरश प्रभुजी को लखि लयो ॥२॥ छवि वीत-रागी नगनमुद्रा दृष्टि नासापैं धरैं। बसु प्रातिहार्य अनन्त गुणयुत, कोटि रवि छविको हरैं॥ मिट गयो तिमिर मिथ्यात मेरो, उदयरवि आतम भयो। मो उर हरष ऐसो भयो, मनु रङ्क चिन्तामणि लयो ॥३॥ मैं हाथ जोड़ नवाय मस्तक, बीनऊं तव चरनजी सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनो तारन तरनजी ॥ जांचूं नहीं सुरवास पुनि नरराज परिजन साथजी। "बुध" जाचहूं तुव भक्ति भव भव दीजिये शिवनाथजी ॥४॥

दुःखहरण विनती।

(शैंरकी रीतिमें तथा और रागनियों में भी बनती है)

श्रीपति जिनवर करुणायतनं,दुखहरन तुमारा बाना है। मत मेरी बार अबार करो,मोहि देहु विमल कल्याना है ॥ टेक ॥ त्रैकालिक वस्तु प्रत्यक्ष लखो, तुमसौं कछु बात न छाना है। मेरे उर आरत जो बरतै,निहचै सब सो तुम जाना है ॥ अवलोक विथा मत मौन गहो, नहिं मेरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहीं ठिकाना है। हो राजिवलोचन सोचविमोचन, मैं तुमसौं हित ठाना है ।। श्री० ।।१।। सब ग्रन्थनिमें निरग्रंथनिमें, निरधार यही गणधार कही । जिननायक ही सब लायक हैं, सुखदायक सायक ज्ञानमही ।। यह बात हमारे कान परी, तब आन तुमारी सरन गही । क्यों मेरी बार विलंब करो, जिननाथ कहो वह बात सही ।। श्री० ।।२।। काहूको भोग मनोग करो,काहूको स्वर्गविमाना है। काहूको नागनरेशपती, काहूको ऋद्धि निधाना है ।। अब मोपर क्यों न कृपा करते, यह क्या अंधेर जमाना है। इत्तसाफ करो मत देर करो, सुखवृन्द भरो भगवाना है ।। श्री० ।।३।। खल कर्म मुझे हैरान किया, तब तुमसों आन पुकारा है । तुम ही समरत्थ न न्याव करो,तब बंदेका क्या चारा है ।। खल घालक पालक बालकका नृपनीति यही जगसारा है । तुम नीतिनीपुन त्रैलोकपति, तुमही लगि दौर हमारा है ।।श्री ।।४।। जबसे तुमसे पहिचान भई, तबसे तुमहीको माना है । तुमरे ही शासनका स्वामी, हमको शरना सरधाना है।। जिनको तुमरी शरनागत है, तिनसौं जमराज डराना है । यह सुजश तुम्हारे सांचेका, सब गावत वेद पुराना है ।।श्री० ।।५।। जिसने तुमसे दिलदर्द कहा, तिसका तुमने दुख हाना है। अघ छोटा मोटा नाशि तुरत, सुख दिया तिन्हें मनमाना है ।। पावकसों शीतल नीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किया, और चीर बढ़ा असमाना है। भोजन था जिसके पास नहीं, सो किया कुवेर समाना है ।। श्री० ।। ६ ।। चिंतामन पारस कल्पतरू,सुखदायक ये परधाना है। तब दासनके सब दास यही, हमरे मनमें ठहराना है ।। तुम भक्तनको सुरइंद्रपदी,फिर चक्रपतीपद पाना है । क्या बात कहों बिस्तार बडी,वे पावैं मुक्ति ठिकाना है ।।श्री०।।७।। गति चार चुरासी लाखविषैं, चिन्मूरत मेरा भटका है। हो दीनबन्धु करुणानिधान, अबलौं न मिटा वह खटका है ।। जब जोग मिला शिवसाधनका, तब विघन कर्मने अटका है। तुम विघन हमारे दूर करो सुख देहु निराकुल घटका हैं ।: श्री० ।। ८ ।। गजग्राहग्रसित उद्धार लिया, ज्यों अंजन तस्कर तारा है। ज्यों सागर गोपदरूप किया, मैनाका संकट टारा है ।। ज्यों सूलीतें सिंहासन औ, बेडीको काट बिडारा है। त्यौं मेरा संकट दूर करो, प्रभु मोकू आस सुम्हारा है ।। श्री० ।।९।। ज्यों फाटक टेकत पांय खुला, औ सांप सुमन कर डारा है। ज्यों खड्ग कुसुमका माल किया, बालकका जहर उतारा है ।। ज्यों सेठ विपत चकचूरि पूर,घर लक्ष्मीसुख विस्तारा है। त्यों मेरा संकट दूर करो प्रभु, मोकूं आस तुमारा है ।। श्री० ।।१०।। यद्यपि तुमको रागादि नहीं, यह सत्य सर्वथा जाना है। चिनमूरति आप अनन्तगुनी, नित शुद्धदशा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवथाना है ॥ तद्दपि भक्तन की भय भीति हरो, सुख देत तिन्हें जु सुहारा हैं । यह शक्ति अचिंत तुम्हारीका, क्या पावै पार सयाना है ॥ श्री० ॥११॥ दुखखंडन्न श्रीसुखभंडन्नका, तुमरा प्रन परम प्रमाना है । बरदान दया जस कीरतका, तिहुँलोकधुजा फहराना है, कमलाधरजी ! कमलाकरजी ! करिये कमला अमलाना है । अब मेरि विथा अवलोकि रमापति, रंच न बार लगाना है ॥ श्री० ॥१२॥ हो दीनानाथ अनाथहितू, जन दीन अनाथ पुकारी है । उदयागत कर्मविपाक हलाहल, मोह विथा विस्तारी है ॥ ज्यों आप और भवि जीवनकी, ततकाल विथा निरवारी है । त्यों वृन्दावन' यह अर्ज करै प्रभु आज हमारी बारी है ॥१३॥

दोहा ।

प्रभु तुम दीनानाथ हो, मैं अनादि दुख द्वन्द ।
सुनि सेवक की वीनती, हरो जगत दुख द्वन्द ॥

जिनेंद्र स्तुति ।

(चौपाई १६ मात्रा)

जै जगपूज परमगुरु नामी । पतितउधारन अंतर-जामी ॥ दासदुखी तुम अति उपगारी । सुनिये प्रभु ! अरदास हमारी ॥१॥ यह भव-घोर-समुद्र महा है । भुधर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भ्रम-जल-पूर रहा है। अंतर दुख दुःसह बहुतेरे। ते बड-वानल साहिब मेरे ॥२॥ जनमजरागदमरन जहाँ है। ये ही प्रबल तरंग तहाँ है। आवत विपति नदीगन जामें। मोह महान मगर इक तामें ॥३॥ तिहमुख जीव परयो दुख पावै। हे जिन ! तुम बिन कौन छुडावै। अशरन-शरन अनुग्रह कीजै। यह दुख मेटि मुकति मुहि दीजै ॥४॥ दीरघकाल गया विललावै। अब ये सूल सहे नहिं जावै॥ सुनियत यों जिनशासनमाहीं। पंचमकाल परमपद नाहीं ॥५॥ कारन पांच मिलै जब सारे। तब शिव सेवक जाँहि तिहारे॥ तातै यह विनती अब मेरी। स्वामी ! शरण लई हम तेरी ॥६॥ प्रभु आगे चित चाह प्रकासौं॥ भव भव श्रावककुल अभिलासौं॥ भव भव जिन आगम अवगाहौं। भव भव भक्ति चरणकी चाहौं ॥७॥ भव भवमें सत संगति पाऊँ। भव भव साधनके गुन गाऊँ॥ परनिंदा मुख भूलि ज भाखूँ। मैत्रीभाव सबनसौं राखूँ॥ ॥८॥ भव भव अनुभव आतमकेरा। होहु समाधिमरण नित मेरां॥ जबलों जनम जगतमें लाधौं। काल लब्धि-बल लहि शिवसाधौं ॥९॥ तबलों ये प्रापति मुझ हूजो, भक्ति प्रताप मनोरथ पूजौं॥ प्रभु सब समरथ हम यह लोरैं। 'भूधर' अरज करत कर जोरैं ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूधरकृत स्तुति।

ढाल परमादी

अहो जगतगुरु एक,सुनिये अरज हमारी। तुम प्रभु! दीनदयाल, मैं दुखिया संसारी ॥ इस भववनके माँहि, काल अनादि गमायौ। भ्रमत चहूं गतिमाँहि, सुख नहिं दुख बहु पायो ॥ कर्म महारिपु जोर,एक न कान करैंजी। मनमानों दुख देंहि, काहूसों न डरैं जी ॥ कबहुं इतर निगोद, कबहूँ नरक दिखावैं। सुर नर पशुगतिमांहि, बहुविधि नाच नचावैं॥ प्रभु! इनके परसंग,भव भवमांहि बुरे जी। जो दुख देखे देव! तुम सौं नांहि दुरेजी॥ एक जनमकी बात, कहि न सकौं सुनि स्वामी। तुम अनंत परजाय, जानत अन्तरजामी ॥ मैं तो एक अनाथ, ये मिलि दुष्ट घनेरे। कियो बहुत बेहाल सुनियौं साहिब मेरे। ज्ञान महानिधि लूटि, रंक निबल करिडारचो। इन्हीं तुम मुझमांहि, हे जिन! अंतर पारचो॥ पाप पुण्यकी दोय, पाँयनि बेडी डारीं। तनकाराग्रहमाहि, मोहि दियो दुख भारी॥ इनको नेक बिगार, मैं कछु नांहि कियो जी। बिन कारन जगबंद्य,बहुविधि वैर लियौजी॥ अब आयौ तुम पास,सुन जिन सुजस तिहारौ। नीति-निपुन महाराज, कीजै न्याव हमारौ॥ दुष्टनि देहु निकास साधुनिको रखि लीजै। बिनवै 'भूधरदास' हे प्रभु ढील न कीजै॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूधरकृत पार्श्वनाथ स्तुति ।

दोहा

कर जिनपूजा अष्टविधि, भावभक्ति जिन भाय ।
अब सुरेश परमेश थुति, करौं शीश निज नाय ।।

प्रभु इस जग समरथ ना कोय । जासों तुम यश वर्णन होय ।। चार ज्ञानधारी मुनि थकैं । हमसे मंद कहा कहि सकैं ।। १ ।। यह उर जानत निश्चय कीन । जिनमहिमा वर्णन हम हीन । पर तुम भक्तिथकी वाचाल । तिस वश हो गाऊँ गुणमाल ।। २ ।। जय तीर्थंकर त्रिभुवनधनी । जय चंद्रोपम चूड़ामनी ।। जय जय परम धरमदातार । कर्मकुलाचल-चूरनहार ।।३।। जय शिवकामिनिकंत महंत । अतुल अनंत चतुष्टयवंत ।। जय जय आश-भरन बडभाग । तपलछमीके सुभग सुहाग ।।४।। जय जय धर्मध्वजाधर धीर। स्वर्ग-मोक्षदाता वर वीर । जय रत्नत्रय रतनकरंड । जय जिन तारन-तरन तरंड ।।५।। जय जय समवसरन-श्रङ्गार। जय संशयवन-दहन तुषार।। जय जय निर्विकार निर्दोष । जय अनंतगुणमाणिककोष ।। ६ ।। जय जय ब्रह्मचर्यदलसाज । कामसुभटविजयी भटराज ।। जय जय मोहमहातरु करी। जय जय मद कुंजर केहरी।। क्रोधमहानल मेघ प्रचंड । मानमहीधर दामिनिदंड ।। माया वेली धनंजय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दाह । लोभसलिलशोषण-दिननाह ॥८ ॥ तुम गुणसागर अगम अपार । ज्ञान-जहाज न पहुँचे पार ॥ तट हो तट-पर डोलैं सोय । कारज सिद्ध तहाँ नहिं होय, तुम्हरी कीर्ति बेल बहु बढ़ी । यत्न बिना जगमंडप चढ़ी ॥ और कुदेव सुयश निज चहैं । प्रभु अपने थल ही यश लहैं ॥१०॥ जगत जीव घूमैं विन ज्ञान । कीनौं मोहमहा-विषपान ॥ तुम सेवा विषनाशक जरी । यह मुनिजन मिलि निश्चय करी ॥११॥ जन्मलता मिथ्यामत मूल । जनम मरण लागैं तहँ फूल ॥ सो कबहूँ बिन भक्ति कुठार । कटै नहीं दुखफलदातार ॥१२॥ कल्पतरुवर चित्रावेलि । कामपोरषा नवनिधि मेलि ॥ चिंतामणि पारस पाषान । पुण्य पदारथ और महान ॥१३॥ ये सब एक जन्म संजोग । किंचित सुख दातार नियोग ॥ त्रिभुवननाथ तुम्हारी सेव । जन्म जन्म सुख-दायक देव ॥ तुम जगबांधव तुम जगतात । अशरण शरण विरद विख्यात ॥ तुम सव जीवनके रखवाल । तुम दाता तुम परम दयाल ॥ तुम पुनीत तुम पुरुष प्रमाण । तुम समदर्शी तुम सब-जान ॥ जय जिन यज्ञ पुरुश परमेश तुम व्रम्हा तुम विष्णु महेश ॥ तुम जग-भर्ता तुम जगजान । स्वामि स्वयम्भू तुम अमलान ॥ तुम बिन तीन काल तिहुँ लोय । नाहीं शरण जीवको कोय यातैं अब करुणानिधि नाथ । तुम सम्मुख हम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जोड़ें हाथ ।। जबलौं निकट होय निर्वान। जगनिवास छूटै दुखदान ।।

तवलौं तुम चरणांबुज बास। हम उर होउ यही अरदास ।।
और न कुछ बाँछा भगवान। हो दयाल दीजै बरदान।।१९।।

दोहा

इहिविधि इन्द्रादिक अमर, कर बहु भक्ति विधान।
निज कोठे बैठे सकल, प्रभु सम्मुख सुख मान ।।२०।।
जीत कर्मरिपु जे भये, केवल लब्धि निवास।
सो श्रीपार्श्वप्रभू सदा करो, विघ्नघन नास ।।२१।।

जिनवाणी माताकी स्तुति।

शास्त्रजी बाँचनेके बाद बोलनेकी। शिखरिणी छंद।

अकेला ही हूं मैं, करम सब आये सिमटिकें। लिया है मैं तेरा, शरण अब माता सटकिकें।। भ्रमावत है मोकों, करम दुख देता जनमका। करों भक्ति तेरी, हरो दुख माता भ्रमनका ।।१।। दुखी हुआ भारी, भ्रमत फिरता हूं जगत में। सहा जाता नाहीं, अकल घबरानी भ्रमनमें ।। करों क्या मा मोरी, चलत वश नाहीं मिटनका। करों भक्ति तेरी, हरो दुख माता भ्रमनका ।।४।। सुनो माता मोरी, अरज करता हूं दरदमें। दुखी जानों मोकों, डरप कर आयो शरनमें। कृपा ऐसी कीजे, दरद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिट जावै मरनका। करो भक्ती तेरी, हरो दुख माता भ्रमनका ॥३॥ पिलावै जो मोकों, सुबुधिकर प्याला अमृतका। मिटावै जो मेरा, सरब दुख सारा फिरनका। परों पावां तेरे, हरो दुख सारा फिकरका। करों भक्ती तेरी, हरो दुख माता भ्रमनका ॥४॥

सवैया

मिथ्यातम नाशिवेको ज्ञानके प्रकाशवेको, आपा-परभासवेको भानुसी बखानी है। छहों द्रव्य जानवेको बंधविधि भानवेको स्वपर पिछानवेको परम प्रमानी है ॥५॥ अनुभौ बतायवेको जीवके जतायवेको, काहू न सतायवेको भव्य उर आनी है। जहां तहां तारवेको पारके उतारवेको, सुख विसतारवेको येही जिन-वानी है ॥६॥

दोहा

यह जिनवानीकी थुती, अल्पबुद्धि परमान।
पन्नालाल बिनती करें, दे माता मोहि ज्ञान ॥७॥

हे जिनवानी भारती, तोहि जपौं दिन रैन।
तो तेरा शरना गहै, सो पावै सुख चैन ॥८॥
जा वानी के ज्ञानतैं, सूझै लोकालोक।
सो वानी मस्तक चढ़ो, सदा देत हों धोक ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शारदा स्तवन ।

प्रभाती

केवलिकन्ये वाङ्मय गंगे, जगदंबे अघ नाश हमारे। सत्य स्वरूपे मंगलरूपे, मनमन्दिरमें तिष्ठ हमारे ।।टेक।। जंबू-स्वामी गौतम गणधर, हुये सुधर्मा पुत्र तुम्हारे। जगतैं स्वयं पार ह्वै करके, दे उपदेश बहुत जन तारे ।।१।। कुंद-कुंद अकलंक देव अरु, विद्यानंदि आदि मुनि सारे। तब कुलकुमुद चंद्रमा ये शुभ, शिक्षामृत दे स्वर्ग सिधारे ।।२।। तूने उत्तम तत्व प्रकाशे, जगके भ्रम सब क्षय कर डारे। तेरी ज्योती निरख लज्जावश, रवि शशि छिपते नित्य विचारे। भवभय पीड़ित व्यथित चित्त जन, जब जो आए सरन तिहारे। छिन भरमें उनके तब तुमने, करुणाकरि संकट सब टारे ।।४।। जब तक विषय कषाय नशैं नहिं, कर्मशत्रु नहिं जाय निवारे। तब तक "ज्ञानामंद" रहैं नित, सब जीवनतैं समता धारे ।।५।।

जिनवाणी स्तुति ।

वीर हिमाचलतैं निकरी, गुरु गौतमके मुखकुंड ढरी है। मोहमहाचल भेद चली, जगकी जड़तातप दूर करी है ।। ज्ञान पयोनिधिमाँहि रली, बहु भंगतरंगनिसों उछरी है। ता शुचि शारद गंगनदी प्रति, मैं अंजुलिकर शीश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धरी है ॥१॥ या जगमंदिरमें अनिवार अज्ञान अंधेर छयो अति भारी। श्रीजिनकी धुनि दीपशिखासम, जो नहीं होत प्रकाशन हारी ॥ तो किसभाँति पदारथ पाँति, कहाँ लहते रहते अविचारी। या विधि संत कहैं धनि है, धनि हैं, जिनबैन बड़े उपकारी ॥२॥

द्यानतरायजी कृत

पार्श्वनाथ स्तोत्र

[भुजंगप्रिया छन्द]

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेंद्रं अधीसं। शतेन्द्रं सु पूजें भजें नाय शीसं ॥ मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमै जोड़ि हाथं। नमोदेव देवं सदा पार्श्वनाथं ॥१॥ गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यो तू छुड़ावे। महा आग ते नाग ते तू बचावे ॥ महावीर ते युद्ध में तू जितावे। महा रोग ते बन्ध ते तू छुड़ावे ॥२॥ दुखी दुःखहर्त्ता सुखी सुख कर्ता। सदा सेवकों को महानन्द भर्त्ता ॥ हरे यक्ष राक्षस्य भूतं पिशाचं। विषं डाकनी विघ्न के भय अवाचं ॥३॥ दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने। अपुत्रीन को ते भले पुत्र कीने ॥ महा संकटों से निकाले विधाता। सबे सम्पदा सर्व को देहि दाता ॥४॥ महा चोर को वज्र को भय निवारे। महा पौन के पुंज ते तू उवारे ॥ महा क्रोध की अग्नि को मेघ धारा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महा लोभ शैलेश को वज्र भारा ॥५॥ महा मोह अंधेर को ज्ञान भानुं । महा कर्म कान्तार को दो प्रधानं ॥ किये नाग नागिन अधोलोक स्वामी । हरो मान तू दैत्य का हो अकामी ॥६॥ तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनुं । तुही दिव्य चिन्तामणी नाग एनं ॥ पशू नर्क के दुःख से तू छुड़ावे । महा स्वर्ग में मुक्ति में तू बसावे ॥७॥ करैं लोह को हेम पाषाण नामी । रटे नाम से क्यों न हो मोक्षगामी ॥ करे सेव ताकी करे देव सेवा ॥ सुने बैनसो ही लहे ज्ञान मेवा ॥८॥ जपे जाप ताको नहीं पाप लागे धरे ध्यान ता के सबै दोष भागे ॥ बिना तोहि । जाने धरे भव घनेरे । तुम्हारी कृपा तैं सरैं काज मेरे ॥९॥

दोहा

गणधर इन्द्र न कर सके, तुम विनती भगवान ।
द्यानत प्रीति निहार के, कीजे आप समान ॥१०॥इति

मेरी भावना

(पं० जुगलकिशोरजी मुख्तार कृत)

जिसने रागद्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया ।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ॥
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो[1] ।
भक्ति-भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो ॥१॥

१ 'महावीर, अतिवीर, सन्मति, वर्धमान या वीर कहो ।' ऐसा भी पाठ है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं।
निज, परके हित साधन में जो, निशि दिन तत्पर रहते हैं॥
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुख समूह को हरते हैं॥२॥
रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन ही जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे॥
नहीं सताऊं किसी जीव को, झूठ कभी नहिं कहा करूं।
परधन वनिता[1] पर न लुभाऊं, संतोषामृत पिया करूं॥३॥
अहंकार का भाव न रक्खूं, नहीं किसी पर क्रोध करूं।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्षा-भाव धरूं॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य-व्यवहार करूं।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूं॥४॥
मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन-दुखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा-स्रोत बहे॥
दुर्जन क्रूर-कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्य-भाव रक्खूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे॥५॥
गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे॥
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे॥६॥
कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे॥७॥
होकर सुखमें मग्न न फूले, दुख में कभी न घबरावे।
पर्वत नदी-श्मशान-भयानक, अटवी से नहिं भय खावे॥

१ महिलाएं 'वनिता' के स्थान पर 'पर नर' पढ़ें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहे अडोल-अकम्प निरंतर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट वियोग-अनिष्ट योग में, सहनशीलता दिखलावे ॥८॥
सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
बैर पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे ॥
घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृति दुष्कर हो जावे।
ज्ञान-चरित्र उन्नत कर अपना, मनुज-जन्म फल सब पावे ॥९॥
ईति-भीति व्यापै नहिं जगमें, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्म-निष्ट होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे ॥
रोग-मरी-दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा-धर्म जगत में, फैल सर्व हित किया करे ॥१०॥
फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय कटुक-कठोर शब्द नहिं, कोई मुख से कहा करे ॥
बनकर सब 'युग-वीर' हृदय से, देशोन्नति-रत रहा करे।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख-संकट सहा करें ॥११॥

पाठ संग्रह

(१)

छहढाला।

सोरठा

तीन भुवनमें सार, वीतराग विज्ञानता।
शिवस्वरूप शिवकार नमौं त्रियोग सम्हारिकैं ॥1॥

पहिली ढाल। चौपाई (१५ मात्रा)

जे त्रिभुवनमें जीव अनंत। सुख चाहैं दुखतैं भयवंत ॥
तातैं दुखहारी सुखकारि। कहैं सीख गुरु करुणा धारि ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताहि सुनो भवि मन थिर आन। जो चाहो अपनो कल्यान।। मोह महामद पियो अनादि। भूलि आपको भरमत वादि ।।३।। तास भ्रमनकी है बहु कथा। पै कछु कहूँ कही मुनि जथा।। काल अनंत निगोद मझार। बीत्यो एकेंद्रिय-तन धार।।४।। एक स्वासमें अठदश बार। जन्म्यो मर्यो भर्यो दुख भार।। निकसि भूमि जल पावक भयो। पवन प्रतेक वनस्पति थयो।।५।। दुर्लभ लहि ज्यों चिंतामणी। त्यों परजाय लही त्रसतणी।। लटपिपीलि अलि आदि शरीर। धरधर मर्यो सही बहु पीर।।६।।कबहूं पंचेंद्रिय पशु भयो। मन बिन निपट अज्ञानी थयो।। सिंहादिक सैंनी ह्वै क्रूर। निर्बल पशु हति खाये भूर।।७।। कबहूं आप भयो बल-हीन। सबलनिकरि खायो अतिदीन।। छेदन भेदन भूख पियास। भारबहन हिम आतप त्रास।।८।। बध बंधन आदिकदुख घने। कोटि जीभतैं जात न भने।। अति संक्लेश भावतैं मर्यो। घोर शुभ्रसागरमें पर्यो।।९।। तहां भूमि परसत दुख इस्यो। बीछू सहस्र डसैं तन तिस्यो।। तहां राधशोणितबाहिनी। कृमिकुलकलित देह-दाहिनी।।१०।। सेमरतरुजुत दल असिपत्र। असि ज्यों देह विदारैं तत्र।। मेरुसमान लोह गलिजाय। ऐसी शीत उष्णता थाय।।११।। तिलतिल करहिं देहके खंड। असुर भिडावैं दुष्टप्रचंड।। सिंधुनीरतैं प्यास न जाय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तौ पण एक न बूंद लहाय ॥१२॥ तीन लोक को नाज जु खाय। मिटै न भूख कणा न लहाय। ये दुख बहु सागरलौं सहै। कर्मजोगतैं नरतन लहै ॥१३॥ जननी उदर बस्यो नवमास। अंग सकुचतैं पाइ त्रास ॥ निकसत जे दुख पाये घोर। तिनको कहत न आवै ओर ॥१४॥ बालपनेमें ज्ञान न लह्यो। तरुणसमय तरुणीरत रह्यो ॥ अर्धमृतकसम बूढ़ापनों। कैसे रूप लखै आपनो ॥१५॥ कभी अकामनिर्जरा करै भवनत्रिकमें सुरतन धरै ॥ विषय चाह दावानल दह्यो। मरत विलाप करत दुख सह्यो ॥१६॥ जो विमानवासी हू थाय। सम्यकदर्शन बिन दुख पाय ॥ तहँतैं चय थावरतन धरै। यों परिवर्तन पूरे करै ॥१७॥

दूसरी ढाल। पद्धरि छंद।

ऐसे मिथ्या दृगज्ञानचरन। वश भ्रमत भरत दुख जन्म मरण ॥ तातैं इनको तजिये सुजान। सुन तिन संछेप कहूँ बखान ॥१॥ जीवादि प्रयोजनभूत तत्व। सरधै तिन माँहि विपर्ययत्व ॥ चेतनको है उपयोगरूप। बिन मूरति चिनमूरति अनूप ॥२॥ पुदगल नभ धर्म अधर्मकाल। इनतैं न्यारी है जीवचाल ॥ ताकों न जान विपरीत मान। करि, करै देहमें निज पिछान ॥३॥ मैं सुखी दुखी मैं रंक राव। मेरो धन गृह गोधन प्रभाव ॥ मेरे सुत तिय मैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सबल दीन । वे रूप सुभग मूरख प्रवीन ॥४॥ तन उपजत अपनी उपज जानि । तन नशत आपको नाश मान ॥ रागादि प्रगट जे दुःखदैन । तिनहीको सेवत गिनहि चैन ।५॥ शुभ-अशुभ बंधके फल मझार । रति अरति करै निजपद विसार ॥ आतमहितहेतु विराग ज्ञान । ते लखै आपको कष्टदान ॥६॥ रोकी न चाह निजशक्ति खोय । शिवरूप निराकुलता न जोय । याही प्रतीतजुत कछुक ज्ञान । सो दुखदायक अज्ञान जान ॥७॥ इनजुत विषयनिमें जो प्रवृत्त ताको जानो मिथ्याचरित्त ॥ या मिथ्यात्वादि निसर्ग जेह । अब जे गृहीत सुनिये सु तेह ॥ जो कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव । पोषैं चिरदर्शन मोह एव ॥ अंतररागादिक धरैं जेह । बाहर धन अंवरतैं सनेह ॥९॥ धारैं कुलिंग लहि महतभाव । ते कुगुरु जनमजल उपलनाव ॥ जे रागरोषमलकरि मलीन । बनितागदादिजुत चिन्हचीन ॥१०॥ ते हैं कुदेव तिनकी जु सेव । शठ करत न तिन भवभ्रमनछेव ॥ रागादिभाव हिंसा समेत । दर्वित त्रसथावर मरनखेत ॥११॥ जे क्रिया तिन्हैं जानहु कुधर्म । तिन सरधै जीव लहे अशर्म ॥ याकौं गृहीतमिथ्यात जान । अब सुन गृहीत जो है कुज्ञान ॥१२॥ एकांतवाद दूषित समस्त । विषयादिकपोषक अप्रशस्त ॥ कपिलादिरचित श्रुतको अभ्यास । सो है कुबोध बहु देन त्रास ॥१३॥ जो ख्यातिलाभ पूजादि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाह । धरि करत विविधविध देहदाह । आतम अनातम के ज्ञानहीन । जे जे करनी तनकरछीन ।।१४।। ते सब मिथ्याचारित्र त्यागि । अब आतमके हितपंथ लागि ।। जगजालभ्रमनको देय त्यागि । अब दौलत, निज आतम सुपागि ।।१५।।

तीसरी ढाल । नरेंद्र छंद (जोगीरासा)

आतमको हित है सुख सो सुख आकुलता बिन कहिये । आकुलता शिवमाँहि न तातैं, शिवमग लाग्यो चहिये । सम्यकदर्शन ज्ञान चरन शिव-मग सो दुविध विचारो । जो सत्यारथ रूप सु निश्चय, कारन सो व्यवहारो ।।१।। परद्रव्यनितैं भिन्न आपमें रुचि,सम्यक्त भला है । आप रूपको जानपनो, सो सम्यकज्ञानकला है ।। आपरूप में लीन रहै थिर सम्यकचारित सोई । अब व्यवहार मोक्षमग सुनिये, हेतु नियतको होई ।।२।। जीव अजीव तत्व अरु आस्रव, बंधरु संवर जानो । निर्जर मोक्ष कहे जिन तिनको,ज्योंको त्यों सरधानो ।। है सोई समकित व्यवहारी,अब इन रूप बखानो । तिनको सुनि सामान्यविशेषैं,दृढ़ प्रतीत उर आनो ।।३।। बहिरातम अंतरआतम परमातम जीव त्रिधा है। देह जीवको एक गिनै,बहिरातमतत्व मुधा है ।। उत्तम मध्यम जघन त्रिविधिके अंतरआतमज्ञानी । द्विविध संगबिन शुध-उपयोगी, मुनि उत्तम निजध्यानी ।४।। मध्यम अन्तरआतम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं जे,देशवती आगारी । जघन कहे अविरतसमदृष्टी तीनों शिवमगचारी ।। सकल निकल परमातम द्वैविध तिनमें घाति निवारी । श्री अरहंत सकल परमातम लोकालोकनिहारी ।५।। ज्ञानशरीरी त्रिविध कर्ममल-वर्जित सिद्ध महंता । ते हैं निकल अमल परमातम, भोगैं शर्म अनंता ।। बहिरातमता हेय जानि तजि,अंतरआतम हूजै । परमातमको ध्याय निरंतर, जो नित आनँद पूजै ।।६।। चेतनता विन सो अजीव हैं, पंच भेद ताके हैं । पुदगल पंच वरन--रस, गंध दु, फरस बसु जाके हैं ।। जीव पुद्गलको चलन सहाई, धर्मद्रव्य अनुरूपी । तिष्ठत होय अधर्म सहाई, जिन विनमूर्ति निरूपी ।।७।। सकल द्रव्यको वास जासमें, सो आकाश पिछानौं । नियत वरतना निशिदिन सो व्यवहारकाल परिमानों । यों अजीव अब आस्रव सुनिये, मनवचकाय त्रियोगा। मिथ्या अविरत अरु कषाय परमादसहित उपयोगा ।८।। ये ही आतमके दुखकारन, तातैं इनको तजिये। जीवप्रदेश बँधे विधिसों सो बंधन कबहुँ न सजिये ।। शमदमसों जो कर्म न आवैं, सो संवर आदरिये । तपबलतैं विधिझरन निरजरा, ताहि सदा आचरिये ।।९।। सकल करमतैं रहित अवस्था, सो शिव थिरसुखकारी । इहिविधि जो सरधा तत्त्वनकी, सो समकित व्योहारी ।। देव जिनेन्द्र गुरू परिग्रह बिन, धर्म दयाजुत सारी । यहू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मान समकितको कारन, अष्टअंगजुत धारी ॥१०॥ वसु-मद टारि निवारि त्रिशठता, षट अनायतन त्यागो। शंका-दिक वसुदोष विना, संवेगादिक चित पागो। अष्ट अंग-अरु दोष पचीसों, अब संक्षेपहु कहिये बिन जानेतैं दोष गुननको, कैसे तजिये गहिये ॥११॥ जिनवचमैं शंका न धारि वृष, भवसुखवांछा भानैं। मुनितन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व कुतत्त्व पिछानैं॥ निजगुन अर पर अवगुन ढाकै, वा जिनधर्म बढावै। कामादिककर वृषतैं चिगते, निज परको सु दिढावै॥१२॥ धर्मीसों गउबचछप्रीतिसम, कर जिनधर्म दिपावै। इन गुनतैं वितरीत दोष वसु, तिनको सतत खिपावै॥ पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय तो न मद ठानै। मद न रूपको मद न ज्ञान को धन बलको मद भानै॥१३॥ तपको मद न मद जु प्रभुताको करै न सो निज जानै। मद धारै तौ येहि दोष वसु, समकितको मल ठानै॥ कुगुरुकुदेवकुवृषसेवककी नहिं प्रशंस उचरै है। जिनमुनि जिनश्रुत विन कुगुरादिक तिन्हैं न नमन करै है ॥१४॥ दोषरहित गुनसहित सुधी जे, सम्यकदरश सजे हैं। चरितमोहवश लेश न संजम पै सुरनाथ जजे हैं॥ गेहीपै गृहमें न रचै ज्यों, जलमें भिन्न कमल है नगरनारिको प्यार यथा, कादे में हेम अमल है ॥१५॥ प्रथम नरक बिन षटभू ज्योतिष, वान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवन षंड नारी। थावर विकलत्रय पशु में नहिं उपजत समकितधारी ॥ तीनलोक तिहुँ कालमाँहि नहिं, दर्शनसम सुखकारी। सकल धरमको मूल यही, इस विनकरनी दुखकारी। ॥१६॥ मोक्षमहलकी परथम सीढी, या विन ज्ञान चरित्रा। सम्यकता न लहै सो दर्शन, धारो भव्य पवित्रा। 'दौल' समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवै। यह नरभव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक नहिं होवै ॥१७॥

5265

चौथी ढाल

दोहा।

सम्यक श्रद्धा धारि पुनि, सेवहु सम्यकज्ञान।
स्वपर अर्थ बहु धर्मजुत, जो प्रकटावन भान ॥१॥

रोला छन्द

सम्यकसाथै ज्ञान होय, पै भिन्न अराधो। लक्षण श्रद्धा जान, दुहूमें भेद अबाधो ॥ सम्यककारण जान, ज्ञान कारज है सोई। युगपद होतैं हू, प्रकाश दीपकतैं होई ॥१॥ तास भेद दो हैं परोक्ष, परतछ तिनमाहीं। मति श्रुत दोय परोक्ष, अक्ष मनतैं उपजाहीं ॥ अवधिज्ञानमनपर्जय, दो हैं देशप्रतच्छा। द्रव्यक्षेत्रपरिमान लिये जानैं जिय स्वच्छा ।२॥ सकल द्रव्यके गुन अनंत, परजाय अनंता। जानैं एकै काल, प्रगट केवलिभगवंता ॥ ज्ञान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समान न आन, जगतमें सुखको कारन । इह परमामृत जन्म जरामृत रोग निवारन ॥३॥ कोटि जनम तप तपैं, ज्ञान बिन कर्म झरैं जे । ज्ञानीके छिनमांहि त्रिगुप्तितैं सहज टरैं ते । मुनिव्रत धार अनंत बार, ग्रीवक उपजायो । पै निजआतमज्ञान बिना सुख लेश न पायो ॥४॥ तातै जिनवरकथित, तत्त्व अभ्यास करीजै । संशय विभ्रम मोह, त्याग आपो लखि लीजै ॥ यह मानुष पर्याय, सुकुल सुनिवो जिनवानी । इहविधि गये न मिलै, सुमणि ज्यों उदधिसमानी ॥५॥ धन समाज गज बाज राज, तो काज न आवै । ज्ञान आपको रूप भये फिर अचल रहावै । तास ज्ञान को कारन,स्वपरविवेक बखान्यो । कोटि उपाय बनाय, भव्य ताको उर आन्यो ॥६॥ जे पूरब शिवगये, जांय अब आगैं जै हैं । सो सब महिमा ज्ञानतनी, मुनिनाथ कहै हैं ॥ विषयचाह-दव-दाह, जगतजन अरनि दझावै । तासु उपाय न आन ज्ञानघनघान बुझावै ॥७॥ पुण्यपाप-फल माँहिं, हरख विलखौ मत भाई । यह पुद्गल परजाय, उपजि विनसैं थिर थाई ॥ लाख बातकी बात,यहै निश्चय उर लावो ॥ तोरि सकल जगदंदफंद,नित आतम ध्यावो ॥८॥ सम्यक-ज्ञानी होइ, बहुरि दृढ चारित लीजै । एकदेश अरु सकल-देश, तस भेद कहीजै ॥ त्रसहिंसाको त्याग वृथा, थावर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न संधारै। परवधकार कठोर निंद्य नहिं बयन उचारै ॥९॥ जल मृतिका बिन और नाहिं कछु गहै अदत्ता। निज बनिताविन, सकल नारिसौं रहै विरत्ता॥ अपनी शक्ति विचार परिग्रह थोरो राखे। दश दिशि गमन-प्रमान, ठान तसु सीम न नाखै ॥१०॥ ताहूमें फिर ग्राम गली गृह बाग बजारा। गमनागमन प्रमान ठान अन सकल निवारा॥ काहू की धनहानि, किसी जय-हार न चिंतैं। देय न सो उपदेश, होय अघ बनज कृषीतैं ॥११ कर प्रमाद जल भूमि, वृक्ष पावक न विराधै॥ असि धनु हल हिंसोपकरन, नहिं दे जस लाधै॥ रागद्वेष-करतारकथा, कबहूं न सुनीजै। औरहु अनरथदंड हेतु अघ तिन्हैं न कीजै ॥१२॥ धर उर समताभाव सदा, सामयिक करिये। पर्वचतुष्टयमाहिं पाप तजि प्रोषध धरिये॥ भोग और उपभोग नियमकरि ममतु निवारै। मुनि को भोजन देय फेर, निज करहि अहारै ॥१३॥ बारहव्रतके अती-चार, पन पन न लगावै। मरणसमै सन्यास धारि, तसु दोष नशावै॥ यों श्रावक व्रत पाल स्वर्ग, सोलम उप-जावै। तहतैं चय नरजन्म पाय मुनि ह्वै शिव जावै ॥१४॥

पांचवी ढाल। सखीछंद (मात्रा २४)

मुनिसकलवृती बडभागी, भवभोगनतैं वैरागी। वैराग्य उपावन माई, चिंतो अनुप्रेक्षा भाई ॥१॥ इन चिंतत समरस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जागै, जिमि ज्वलन पवनके लागै । जवही जिय आतम जानै, तबही जिय शिवसुख ठानै ॥२॥ जोबन गृह गोधन नारी । हय गय जन आज्ञाकारी । इन्द्रिय भोग छिन थाई, सुरधनु चपला चपलाई ॥३॥ सुर असुर खगाधिप जेते । मृग ज्यों हरि काल दले ते । मणि मंत्र तंत्र बहु होई, मरते न बचावै कोई ॥४॥ चहुँगति दुख जीव भरे हैं, परिवर्तन पंच करै हैं, सबविधि संसार असारा, यामें सुख नाहिं लगारा ॥५॥ शुभ अशुभ करमफल जेते, भोगैं जिय एकहि तेते । सुत दारा होय न सीरी, सब स्वारथके हैं भीरी ॥६॥ जलपय ज्यों जियतन मेला, पै भिन्न-भिन्न नहिं भेला । तो प्रगट जुदे धन धामा, क्यों ह्वै इक मिलि सुत रामा ॥७॥ पल-रुधिर राध-मल-थैली । कीकस वसादितें मैली । नवद्वार बहैं घिनकारी, अस देह करै किम यारी ॥८॥ जो जोगनकी चपलाई, तातें है आस्रव भाई। आस्रव दुखकार घनेरे, बुधिवंत तिन्हें निरवेरे ।९॥ जिन पुण्यपाप नहिं कीना, आतम अनुभव चित दीना ॥ तिन ही विधि आवत रोके, संवरलहि सुख अवलोके।१०॥ निज काल पाय विधि झरना, तासों निजकाज न सरना । तप करि जो कर्म खपावै, सोई शिवसुख दरसावै ।११॥ किनहू न करयो न धरै को, षटद्रव्यमयी न हरै को ॥ सो लोकमाहिं विन समता, दुख सहैं जीव नित भ्रमता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।।१२।। अंतिम ग्रीवकलौंकी हद, पायो अनंतविरियां पद ।।
पर सम्यकज्ञान न लाध्यो, दुर्लभ जिनमें मुनि साध्यो
।।१३।। जे भाव मोहते न्यारे, दृग ज्ञान व्रतादिक सारे ।।
सो धर्म जबै जिय धारै, तबही सुख सकल निहारै ।।१४।।
सो धर्म मुनिनकरि धरिये, तिनकी करतूति उचरिये ।।
ताको सुनिकै भवि प्रानी, अपनी अनुभूति पिछानी ।।१५।।

छठी ढाल (हरिगीता छन्द)

षटकाय जीव न हननतैं सबविधि दरवहिंसाटरी, रागादि भाव निवारतैं हिंसा न भावित अवतरी। जिनके न लेश मृषा न जल तृण हू बिना दीयो गहैं, अठदशसहस विधि शीलधर चिदब्रह्ममें नित रम रहैं ।।१।। अंतर चतुर्दश भेद बाहिर संग दशधातैं टलैं, परमाद तजि चउकर मही लखि समिति ईर्यातैं चलैं। जग सुहितकर सब अहितहर श्रुति-सुखद सब संशय हरैं, भ्रमरोग-हर जिनके वचन मुखचंद्रतैं अमृत झरैं ।।२।। छ्यालीस दोष बिना सुकुल श्रावकतणे घर अशनको, लें तप बढ़ावन हेत नहिं तन पोषते तजि रसन को। शुचि ज्ञान संजम उपकरन लखिकें गहें लखिकें धरैं, निर्जंतु थान विलोकि तन-मलमूत्र-श्लेषम परिहरैं ।।३।। सम्यक् प्रकार निरोधि मन-वच-काय आतम ध्यावते, तिन सुथिर मुद्रा देखि मृगगण उपल खाज खुजावते। रसरूप-गंध तथा फरस अरु शब्द शुभ असुहावने, तिनमें न राग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विरोध पचेंद्रियजयन पद पावने ।।४।। समता सम्हारैं थुति उचारैं बंदना जिनदेवको, नित करैं श्रुतिरति धरैं प्रतिक्रम तजैं तन अहमेवको । जिनके न न्हौन न दंतधोवन लेश अंबर आवरन, भूमाहि पिछली रयनिमें कछु शयन एकाशन करन ।।५।। इक बार दिन में लें अहार खड़े अलप निज पानमें, कचलोंच करत न डरत परिषहसों लगे निज ध्यानमें । अरिमित्र महल मसान कंचन काच निंदन थुति करन, अर्घावतारन असिप्रहारनमें सदा समताधरन ।।६।। तप तपैं द्वादस धरैं वृष दश रतनत्रय सेवें सदा, मुनि साथ में वा एक विचरैं चहैं नहिं भवसुख कदा । यों है सकल संजम चरित सुनिये स्वरूपाचरन अब, जिस होत प्रगटै आपनी निधि मिटै परकी प्रवृत्ति सब ।।७।। जिन परम पैनी सुबुधि छैनी डारि अंतर भेदिया, वरनादि अरुरागादितैं निज भाव को न्यारा किया । निज माँहि निज के हेतु निजकर आपको आपै गह्यो गुनगुनी ज्ञाता ज्ञेय मझार कछु भेद न रह्यो ।।८।। जहँ ध्यान ध्याता ध्येय को न विकल्प वच भेद न जहाँ, चिद्भाव कर्म चिदेश करता चेतना किरिया तहाँ । तीनों अभिन्न अखिन्न शुध उपयोगकी निश्चल दशा, प्रकटी जहाँ दृगज्ञान व्रत ये तीनधा एकै लशा ।।९।। परमान नय निक्षेपको न उदोत अनुभव में दिखै, दृग-ज्ञान-सुख-बलमय सदा नहिं आन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाव जु मो विखैं। मैं साध्य साधक मैं अबाधक कर्म अरु तसु फलनितैं, चित पिंड चंड, अखण्ड, सुगुन, करंड च्युत पुनि कलनितैं ॥१०॥ यों चित्य निजमें थिर भये तिन अकथ जो आनन्द लह्यो, सो इन्द्र नाग नरेन्द्र व अहमिंद्र नाहीं कह्यो, तब ही शुकलध्यानाग्निकरि चउघाति विधि-कानन दह्यो। सब लख्यो केवलज्ञानकरि भविलोकको शिवमग कह्यो११पुनि घाति शेष अघाति विधि छिनमाँहि अष्टमभू बसैं, वसुकर्म विनसैं सुगुन वसु सम्यक्त्व आदिक सब लसैं। संसार खार अपार पारावार तिर तीरहिं गये। अविकार अकल अरूप शुध चिद्रूप अविनाशीभये ॥१२॥ निजमांहि लोक अलोक गुन परजाय प्रतिबिंबित थये। रहि हैं अनंतानंतकाल यथा तथा शिव परनये। धनि धन्य है जे जीव नरभव पाय यह कारज किया। तिनही अनादि भ्रमन पंचप्रकार तजि वह सुख लिया ॥१३॥ मुख्योपचार दुभेद यों बड़भागि रत्नत्रय धरैं। अरु धरेंगे ते शिव लहैं तिन सुजस जल जगमल हरैं॥ इमि जानि आलस हानि साहस ठानि यह सिख आदरो। जबलों न रोग जरा गहै तबलों झटिति निज हितकरो ॥१४॥ यह राग आग दहै सदा तातैं समामृत सेइये। चिर भजे विषय कषाय अब तौ त्याग निजपद बेइये॥ कहा रच्यो परपदमें न तेरो पद यहै क्यों दुख सहै। अब दौल, होउ सुखी स्वपद रचि दाव मत चूको यहै ॥१५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा

इक[१] नव[९] वसु[८] इक[१] वर्षकी, तीज शुक्ल वैशाख ।
करयो तत्व उपदेश यह लखि बुधजनकी भाख ॥१६॥
लघुधी तथा प्रमादतैं, शब्द अर्थकी भूल ।
सुधी सुधार पढो सदा, जो पावो भवकूल ॥१७॥

इति श्री पं० दौलतरामजीकृत छहढाला समाप्त ।

समाधिमरण भाषा छोटा

(३)

गौतम स्वामी बन्दों नामी मरण समाधि भला है । मैं कब पाऊं निसदिन ध्याऊं गाऊं वचन कला है ॥ देव धरम गुरु प्रीति महा दृढ़ सात व्यसन नहिं जाने । त्यागि बाइस अभक्ष संयमी बारह व्रत नित ठाने ॥१॥ चक्की उखरी चूलि बुहारी पानी त्रस न विरोधे । बनिज करे पर द्रव्य हरे नहिं छहो करम इमि साधे ॥ पूजा शास्त्र गुरुनकी सेवा संयम तप चहुँदानी । परउपकारी अल्प अहारी सामायिक विधि ज्ञानी ॥ जाप जपे तिहूँ योग धरे दृग तन की ममता टारै । अन्त समय वैराग्य सम्हारे ध्यान समाधि बिचारै ॥ आग लगे अरु नाव डूबे जब धर्म विघन जब आवे । चार प्रकार अहार त्यागिके मन्त्र सुमन में ध्यावे ॥३॥ रोग असाध्य जहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहु देखे कारण और निहारे। बात बड़ी है जो बनि आवे भार भवनको डारे ।। जो न बने तो घरमें रह करि सबसों होय निराला। मात पिता सुत त्रियको सौंपे निज परिग्रह इहि काला ।।४।। कछु चैत्यालय कछु श्रावक जन कछु दुखिया धन देई। क्षमा क्षमा सबहीसों कहिके मनकी शल्य हरेई ।। शत्रुन सों मिलि निज कर जोरे मैं बहु करी है बुराई। तुमसे प्रीतमको दुख दीने ते सब बकसो भाई ।।५।। धन धरती जो मुखसो मांगे सो सब दे संतोषे। छहों कायके प्राणी ऊपर करुणा भाव विशेषे।। ऊंच नीच घर बैठ जगह इक कछु भोजन कछु पेंले। दूधा धारी क्रम क्रम तजिके छाछ अहार पहेले ।।६।। छाछ त्यागिके पानी राखे पानी तजि संथारा। भूमि मांहि फिर आसन माड़े साधर्मी ढिग प्यारा।। जब तुम जानो यह न जपै है तब जिनवाणी पढ़िये। यों कहि मौन लियो सन्यासी पंच परम पद गहिये ।।७।। चौ आराधन मनमें ध्यावे। बारह भावन भावे। दशलक्षण मन धर्म विचारे रत्नत्रय मन लावे।। पैंतिस सोलह षट पन चारों दुई इक ब रन विचारे। काया तेरी दुखकी ढेरी ज्ञानमई तू सारे ।।८।। अजर अमर निज गुण सो पूरे परमानंद सुझावै। आनन्दकन्द चिदानन्द साहब तीन जगतपति ध्यावे ।। क्षुधा तृषादिक होई परिषह सहै भाव सम राखै। अती-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चार पांचों सब त्यागे ज्ञान सुधारस चाखै ॥९॥ हाड़ मांस सब सूखी जाय जब धर्मलीन तन त्यागे। अद्भुत पुण्य उपाय सुरगमें सेज उठे ज्यों जागे। तहंतैं आवै शिवपद पावे विलसे सुख अनन्तो। द्यानत यह गति होय हमारी जैनधरम जयवन्तो ॥१०॥

समाधिमरण भाषा बड़ा।

पं० सूरजचन्दजी रचित। नरेन्द्रछन्द।

बंदों श्री अरहंत परमगुरु, जो सबको सुखदाई। इस जगमें दुख जो मैं भुगते, सो तुम जानो राई॥ अब मैं अरज करूं प्रभु तुमसे, कर समाधि उरमाहीं। अंत समय में यह वर मागूं, सो दीजै जगराई ॥१॥ भवभवमें तनधार नये मैं, भव भव शुभ संग पायो। भवभवमें नृपरिद्धि लई मैं, मात पिता सुत थायो॥ भवभवमें मैं तन पुरुषतनों धर, नारी हू तन लीनों। भवभव मैं भयो नपुंसक, आतमगुण नहिं चीनो॥ भवभव में सुरपदवीपाई, ताके सुख अति भोगे। भवभव में गति नरकतनी धर, दुख पाये विधि योगे॥ भवभव में तिर्यंच योनिधर, पायो दुख अति भारी। भवभवमें साधर्मीजन को, संगमिल्यो हितकारी ॥३॥ भवभवमें जिनपूजन कीनी, दान सुपात्रहिं दीनो। भवभवमें मैं समवशरणमें, देख्यो जिनगुण भीनो। एती वस्तु मिली भवभव में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यकगुण नहिं पायो। ना समाधियुत मरण कियो मैं, तातैं जग भरमायो ॥४॥ काल अनादि भयो जग भ्रमतें-सदा कुमरणहिं कीनो। एकबार हूँ सम्यकयुत मैं, निज आतम नहिं चीनो ॥ जो निजपरको ज्ञान होय तो, मरण समय दुख कांइं। देह विनासी मैं निजभासी, जोतिस्वरूप सदाई ॥५॥ विषयकषायनके वश होकर, देह आपनो जान्यो। कर मिथ्यासरधान हिये विच, आतम नाहिं पिछान्यो ॥ यों क्लेश हियधार मरणकर, चारों गति भरमायो। सम्यकदर्शन-ज्ञान-चरन ये, हिरदेमें नहिं लायो ॥६॥ अब या अरज करूं प्रभु सुनिये, मरण समय यह मांगों। रोगजनित पीड़ा मत होवो, अरु कषाय मत जागो। ये मुझ मरणसमय दुखदाता, इन हरसाता कीजं। जो समाधियुत मरण होय मुझ, अरु मिथ्यागद छीजै ॥७॥ यह तन सात कुधातमई है, देखत ही घिन आवै। चर्म-लपेटी ऊपर सोहै, भीतर विष्टा पावै ॥ अतिदुर्गंध अपा-वनसों यह मूरख प्रीति बढ़ावै। देह निवासी जिय अवि-नासी नित्यस्वरूप कहावै ॥८॥ यह तन जीर्ण कुटीसम आतम, यातैं प्रीति न कीजै। नूतन महल मिलै जब भाई तब यामें क्या छीजै, मृत्युहोने से हानि कौन है, याको भय मत लावो। समतासे जो देह तजोगे, तो शुभतन तुम पावो ॥९॥ मृत्यु मित्र उपकारी तेरो, इस अवसरके माहीं। जीरन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तनसे देय नयो यह, या सम साहू नाहीं ।। या सेती इस मृत्युसमयपर, उत्सव अति ही कीजै । क्लेशभावको त्याग सयाने समताभाव धरीजै ।।१०।। जो तुम पूरव पुण्य किये हैं,तिनको फल सुखदाई । मृत्युमित्र बिन कौन दिखावै, स्वर्गसंपदा भाई ।। रागरोषको छोड़ सयाने, सात व्यसन दुखदाई । अंतसमयमैं समता धारो, परभवपंथ सहाई ।।११।। कर्म महादुठ बैरी मेरो, तासेती दुख पावै । तन पिंजरमें बंध कियो मोहि, यासों कौन छुडावै ।। भूख तृषा दुख आदि अनेकन, इस ही तनमें गाढै । मृत्युराज अब आय दयाकर, तनपिंजरसोंकाढै ।।१२।। नाना वस्त्राभूषण मैंने, इस तनको पहराये । गंधसुगंधित अतर लगाये, षटरस असन कराये ।। रात दिना मैं दास होयकर, सेव करी तन केरी । सो तन मेरे काम न आयो, भूल रह्यो निधि मेरी ।।१३।। मृत्युरायको शरन पाय तन, नूतन ऐसो पाऊँ । जामें सम्यकरतन तीन लहि आठों कर्म खपाऊँ ।। देखो तन सम और कृतघ्नी, नाहिं सु या जगमाहीं । मृत्युसमयमें ये ही परिजन सब ही हैं दुखदाई ।।१४।। यह सब मोह बढ़ावन हारे, जियको दुर्गति दाता । इनसे ममत निवारो जियरा, जो चाहो सुख साता ।। मृत्यु-कल्प-द्रुम पाय सयाने, माँगों इच्छा जेती । समता धरकर मृत्यु करो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो पावो संपति तेती ॥१५॥ चौआराधन सहित प्राण तज, तौ ये पदवी पावो । हरि प्रतिहरि चक्री तीर्थेश्वर स्वर्गमुकतिमें जावो ॥ मृत्युकल्पद्रुम सम नहिं दाता, तीनों लोक मझारे । ताको पाय कलेश करो मत, जन्म जवाहर हारे ॥१६॥ इस तनमें क्या राचे जियरा, दिन दिन जीरन हो है ॥ तेजकांति बल नित्य घटत है, या सम अथिर सु को है । पाँचों इन्द्री शिथिल भई अब, स्वास शुद्ध नहिं आवै । तापर भी ममता नहिं छोड़े, समता उर नहिं लावे ॥१७॥ मृत्यु राज उपकारी जियको, तनसों तोहि छुड़ावै । नातर या तन बंदीग्रह में, परचो परचो बिललावै ॥ पुदगलके परमाणु मिलकैं, पिंडरूप तन भासी । या ही मूरतमें अमूरती, ज्ञानजोति गुणखासी ॥१८॥ रोगशोक आदिक जो वेदन, ते सब पुदगललारैं । मैं तो चेतन व्याधि बिना नित, हैं सो भाव हमारे ॥ या तनसों इस क्षेत्र संबंधी, कारण आन बन्यो है । खानपान दे याको पोष्यो, अब सम भाव ठन्यो है ।१९। मिथ्यादर्शन आत्मज्ञान बिन, यह तन अपनों जान्यो । इन्द्रीभोग गिने सुख मैंने, आपों नाहिं पिछान्यो ॥ तन विनशनतैं नाश जानि निज, यह अयान दुखदाई । कुटुम आदिको अपनो जान्यो, भूल अनादी छाई ॥२०॥ अब निजभेद जथारथ समझयो, मैं हूं ज्योतिस्वरूपी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपजै विनसै सो यह पुद्गल, जान्यौ याको रूपी ॥ इष्टऽनिष्ट जेते सुख दुख हैं, सो सब पुद्गल सागै । मैं जब अपनो रूप विचारों, तब वे सब दुख भागैं ॥२१॥ बिन समता तनऽनंत धरे में, तिनमैं ये दुख पायो । शस्त्रघाततैंऽनन्त बार मर, नाना योनि भ्रमायो ॥ बार अंनत हि अग्नि माँहि जर, मूवो सुमति न लायो । सिंह व्याघ्र अहिनन्त बार मुझ, नाना दुःख दिखायो ॥२२॥ विन समाधि ये दुःख लहे मैं, अब उर समता आई । मृत्युराजको भय नहिं मानो, देवै तन सुखदाई ॥ यातैं जब लग मृत्यु न आवै, तबलग जपतप कीजै । जपतप-बिन इस जग के माहीं, कोई भी ना सीजै ॥ स्वर्गसंपदा तपसों पावें, तपसों कर्म खिपावै । तपहीसों शिवकामिनि-पति ह्वै, यासों तप चित लावै ॥ अब मैं जानी समता बिन मुझ कोऊ नाहिं सहाई । मात पिता सुत बांधव तिरिया ये सब हैं दुःखदाई ॥२४॥ मृत्यु समयमें मोह करैं ये, तातैं आरत हो है । आरततैं गति नीची पावै, यों लख मोह तज्यो है ॥ और परिग्रह जेते जग में तिनसों प्रीत न कीजे । परभवमें ये संग न चालैं, नाहक आरत कीजे ॥२५॥ जे जे वस्तु लखत हैं ते पर, तिनसों नेह निवारो । परगतिमें ये, साथ न चालै, ऐसो भाव विचारो ॥ जो परभवमें संग चलै तुझ, तिनसों प्रीत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सु कीजै । पंच पाप तज समता धारो, दान चार विध दीजै ॥२६॥ दशलक्षणमयधर्म धरो उर अनुकंपा उर लावो । षोडशकारण नित्य विचारो, द्वादश भावन भावो ॥ चारौं परवी प्रोषध कीजै, अशन रातको त्यागो । समता धर दुरभाव निवारो, संयमसों अनुरागो ॥२७॥ अंतसमयमें यह शुभ भावहि, होवैं आनि सहाई । स्वर्ग-मोक्षफल तोहि दिखावैं, ऋद्धि देंहि अधिकाई । खोटेभाव सकल जिय त्यागो, उरमें समता लाकैं । जासेती गतिचार दूरकर, वसहु मोक्षपुर जाकैं ॥२८॥ मनथिरता करकै तुम चितो, चौ आराधन भाई । येही तोकों सुखकी दाता, और हितू कोउ नाहीं ॥ आगैं बहु मुनिराज भये हैं तिन गहि थिरता भारी । बहु उपसर्ग सहे शुभपावन, आराधन उरधारी ॥२९॥ तिनमें कछुइक नाम कहूं मैं, सो सुन जिय चित लाकै । भावसहित अनुमोदे तासों, दुर्गति होय न ताकै ॥ अरु समता निज उरमें आवै, भाव अधीरज जावै । यों निशदिन जो उन मुनिवरको, ध्यान हिये बिच लावै ॥ धन्य धन्य सुकुमाल महामुनि, कैसे धीरज धारी । एक श्यालनी जुगबच्चाजुत, पांव भक्ष्यो दुखकारी ॥ यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी । तौ तुमरे जिय कौन दुःख हैं ? मृत्यु महोत्सव भारी ॥३१॥ धन्य धन्य जु सुकोशल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वामी, व्याघ्रीने तन खायो। तौ भी श्रीमुनि नेक डिगे नहिं, आतम सों हित लायो ॥ यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी। तौ तुमरे० ॥३२॥ देखो गजमुनिके शिर ऊपर, विप्र अगिनि बहु बारी। शीश जलैं जिम लकड़ी तिनको, तो भी नाहिं चिगारी ॥ यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी। तौं तुमरे० ॥३३॥ सनतकुमार मुनीके तनमें, कुष्ट वेदना व्यापी। छिन्न भिन्न तन तासों हूवो, तब चिंत्यो गुण आपी। यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित-धारी। तौ तुमरे० ॥३४॥ श्रेणिक सुत गंगामें डूबयो, तब जिननाम चितारयो। धर सलेखना परिग्रह छोडयो, शुद्ध भाव उर धारयो ॥ यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी। तौ तुमरे० ॥३५॥ समंतभद्रमु-निवरके तनमें, क्षुधावेदना आई। तौ दुखमें मुनिनेंक न डिगियो, चिंत्यो निजगुण भाई ॥ यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी। तौ तुमरे० ॥३६॥ ललितघटादिक तीस दोय मुनि, कौशांबीतट जानो। नद्दी में मुनि बहकर मूवे, सो दुख उन नहीं मानो ॥ यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी। तौ तुमरै० ॥३७॥ धर्मघोष मुनि चंपानगरी, बाह्य ध्यान धर ठाड़ो। एक मासकी कर मर्यादा, तृषा दुःख सह

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गाढ़ो ।। यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित-धारी ।। तौ तुमरे० ।।३८।। श्रीदत्तमुनि को पूर्वजन्मको, बैरी देव सु आके । विक्रय कर दुख शीततनोसो, सह्यो साध मन लाके ।। यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आरा-धन चितधारी । तौ तुमरे० ।।३९।। वृषभसेन मुनि उष्ण शिलापर, ध्यान धरयो मनलाई । सूर्य घाम अरु उषण पवनकी, वेदन सहि अधिकाई ।। यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी । तौ तुमरे० ।।४०।। अभयघोषमुनि काकंदीपुर, महावेदना पाई । बैरी चंडने सब तन छेद्यो, दुख दीनो अधिकाई ।। यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी । तौ तुमरे० ।।४१।। विद्युतचरने बहु दुख पायो, तौ भी धीर न त्यागी । शुभ भावनसों प्राण तजे निज, धन्य और बड़भागी ।। यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी । तौ तुमरे० ।।४२।। पुत्र चिलाती नामा मुनिको, बैरीने त[illegible] घाता । मोटे मोटे कीट पड़े तन, तापर निज गुण राता ।। यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चितधारी । तौ तुमरे० ।। ४३।। दंडकनामा मुनिको देही, बाणन कर अरि भेदी । तापर नेक डिगे नहिं वे मुनि कर्म महारिपु छेदी ।। यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन, चितधारी । तौ तुमरे० ।।४४।। अभिनंदन मुनि आदि पांचसौ, घानी पेलि जु मारे । तौ भी श्रीमुनि समता धारी, पूरवकर्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विचारे ।। यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित-धारी । तौ तुमरे० ।।४५।। चाणक मुनि गौघरके माहीं, मूंद अगिन परजाल्यो । श्री गुर उर समभाव धारके अपनो रूप सम्हाल्यो । यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आरा-धन चितधारी । तौ तुमरे० ।।४६।। सातशतक मुनिवर दुख पायो, हथनापुर में जानो । बलिब्राह्मणकृत घोर उप-द्रव सो मुनिवर नहिं मानो ।। यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चितधारी । तौ तुमरे० ।।४७।। लोहमयी आभूषण गढ़के, ताते कर पहराये । पांचों पांडव मुनिके तनमें, तौ भी नाहि चिगाये ।। यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी । तौ तुमरे० ।।४८।। और अनेक भये इस जग में, समता-रस के स्वादी । वे ही हमको हो सुखदाता, हर हैं टेव प्रमादी ।। सम्यकदर्शन ज्ञान चरन तप, ये आराधन चारों । येही मोकों सुखकी दाता इन्हें सदा उर धारों ।।४९।। यो समाधि उरमाहीं लावो, अपनो हित जो चाहो । तज ममता अरु आठों मद को जोतिस्वरूपी ध्यावो ।। जो कोई नित करत पयानो, ग्रामान्तर के काजै सो भी शकुन विचारै नीके, शुभके कारण साजै ।।५०।। मातापितादिक सर्व कुटुम सब, नीके शकुन बनावै । हल्दी धनिया पुंगी अक्षत, दूध दही फल लावै । एक ग्राम जाने के कारण, करैं शुभाशुभ सारे । जब परगति को करत पयानो, तब नहिं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोचो प्यारे। ।।५१।। सर्वकुटुम जब रोवन लागै तोहिं रुलावे सारे। ये अपशकुन करैं सुन तोकों, तू यों क्यों न विचारै ।। अब परगतिको चालत बिरियां, धर्मध्यान उर आनो, चारों आराधन मन में आराधो, मोहतनो दुख हानो ।।५२।। होय निःशल्य तजो सब दुविधा, आतमराम सुध्यावो। जब परगतिको करहु पयानो, परम तत्व उर लावो ।। मोह जालको काट पियारे, अपनो रूप विचारो। मृत्युमित्र उपकारी तेरो, यों उर निश्चय धारो ।।५३।।

दोहा

मृत्युमहोत्सव पाठको, पढ़ौ सुनों बुधिवान।
सरधा धर नित सुख लहो, सूरचंद शिवथान ।।५४।।
पंच उभय नव एक नभ, संवत सो सुखदाय।
आश्विन श्यामा सप्तमी, कह्यो पाठ मन लाय ।।५५।।

इति श्रीसमाधिमरण पाठ भाषा समाप्त ।।

संक्षिप्त सूतकविधि।

सूतकमें देव शास्त्र गुरुकी पूजन प्रक्षालादिक करना, तथा मंदिरजीकी जाजम वस्त्रादिको स्पर्श नहीं करना चाहिये। सूतकका समय पूर्ण हुये बाद पूजनादि करके पात्रदानादि करना चाहिये।

१—जन्मका सूतक दश दिन तक माना जाता है।

२—यदि स्त्रीका गर्भपात (पांचवे छठे महिने में) हो तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जितने महीनेका गर्भपात हो उतने दिनका सूतक माना जाता है।

३—प्रसूता स्त्रीको ४५ दिनका सूतक होता है कहीं-कहीं चालीस दिनका भी माना जाता है। प्रसूतिस्थान एक मास तक अशुद्ध है।

४—रजस्वला स्त्री चौथे दिन पतिके, भोजनादिकके लिये शुद्ध होती है परन्तु देवपूजन, पात्रदान के लिये पाँचवें दिन शुद्ध होती है। व्याभिचारिणी स्त्रीके सदा ही सूतक रहता है।

५—मृत्युका सूतक तीन पीढ़ीतक १२ दिनका माना जाता हैं। चौथी पीढ़ीमें छह दिनका, पांचवीं छट्ठी पीढ़ी तक चार दिनका, सातवीं पीढ़ींमें तीन, आठवीं, पीढ़ीमें एक दिन रात, नवमी पीढ़ीमें स्नानमात्रसे शुद्धता हो जाती है।

६—जन्म तथा मृत्युका सूतक गोत्रके मनुष्यको पांच दिनका होता है। तीन दिनके बालककी मृत्युका एक दिनका, आठ वर्षके बालककी मृत्युका तीन दिन तक का माना जाता है। इसके आगे १२ दिनका।

७—अपने कुलके किसी गृहत्यागी का सन्यास, मरण, वा किसी कुटुम्बीका संग्राममें मरण हो जाय तो एकदिनका सूतक माना जाता है।

८—यदि अपने कुलका कोई देशांतरमें मरण करे और १२ दिन पहले खबर सुनेतो शेष दिनों का ही सूतक मानना चाहिये, यदि १२ दिन पूर्ण हो गये हों तो स्नानमात्र सूतक जानो।

९—गौ, भैंस, घोड़ी आदि पशु अपने घरमें जनै तो एक दिनका सूतक और घर के बाहर जनै तो सूतक नहीं होता है। दासी दास तथा पुत्रीके घर में प्रसूति होय तो एक दिन, मरण हो तो तीन दिनका सूतक होता है। यदि घर से बाहर हो तो सूतक नहीं। जो कोई अपने को अग्नि आदिक में जलाकर वा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विष शस्त्रादिसे आत्महत्या करे तो छह महिने तकका सूतक होता है। इसी प्रकार और भी विचार हैं सो आदिपुराणसे जानना।

१०—बच्चा हुये बाद भैंसका दूध १५ दिन तक, गाय का दूध १० दिन तक, बकरी का ८ दिन तक अभक्ष्य (अशुद्ध) होता है। देशभेदसे सूतक विधान में कुछ न्यूनाधिक भी होता है परन्तु शास्त्र की पद्धति मिलाकर ही सूतक मानना चाहिये।

बारहभावना भूधरदासकृत

अनित्य भावना। (दोहा)

राजा राणा छत्रपति, हथियन के असवार।
मरणा सबको एक दिन, अपनी अपनीवार ॥१॥

अशरण भावना।

दल बल देवी देवता, मात पिता परिवार।
मरती बिरियाँ जीव को, कोई न राखनहार ॥२॥

संसार भावना।

दाम बिना निर्धन दुःखी, तृष्णा वश धनवान।
कहीं न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ॥३॥

एकत्व भावना।

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यों कबहूँ इस जीव का, साथी सगा न कोय ॥४॥

अन्यत्व भावना।

जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपना कोय।
घर संपति पर प्रगटये, पर हैं परिजन लोय ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अशुचि भावना ।

दिपे चाम चादर मढ़ी, हाड पींजरा देह ।
भीतर या सम जगत् में, और नहीं घिन गेह ॥६॥

आश्रव भावना । (सोरठा)

मोह नींद के जोर जगवासी घूमें सदा ।
कर्म चोर चहुँ ओर, सरवस लूटें सुध नहीं ॥७॥

संवर भावना ।

सत्गुरु देय जगाय, मोह नींद जब उपशमैं ।
तब कुछ बने उपाय, कर्म चोर आवत रुकें ॥८॥

निर्जरा भावना । (दोहा)

ज्ञान दीप तप तेल भर, घर सौधैं भ्रम छोर ।
या विधि बिन निकसे नहीं, बैठे पूरब चोर ॥९॥
पंचमहाव्रत संचरण, समिति पंच परकार ।
प्रबल पंच इन्द्री विजय, धार निर्जरा सार ॥१०॥

लोक भावना ।

चौदह राजू उतंग नभ, लोक पुरुष संठान ।
तामें जीव अनादि ते, भरमत हैं बिन ज्ञान ॥११॥

धर्म भावना ।

जांचे सुर तरु देह सुख, चिन्तत चिन्ता रैन ।
बिन जांचे बिन चिन्तयें, धर्म सकल सुख दैन ॥१२॥

बोधिदुर्लभ भावना ।

धन कन कंचन राज सुख, सबैं सुलभ कर जान ।
दुर्लभ है संसार में, एक यथारथ ज्ञान ॥१३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाईस परीषह ।

(भूधरदासजी कृत)

छप्पय ।

क्षुधा तृषा हिम उष्ण दंशमशक दुःख भारी । निरावरण तन अरति खेद उपजावत नारी ।। चर्या आसन शयन दुष्टवाधक वधबंधन । यांचें नहीं अलाभ रोग तृण स्पर्श निबन्धन । मलजनितमानसन्मान वशप्रज्ञा और अज्ञानकर । दर्शन मलिन बाईस सब साधु परीषह जान नर ।।

दोहा ।

सूत्रपाठ अनुसार ये. कहे परीषह नाम ।
इनके दुख जे मुनि सहैं, तिन प्रति सदा प्रणाम ।।

१ क्षुधा परीषह (सवैया)

अनशन ऊनोदर तप पोषत पक्ष मास दिन बीत गये हैं । जो नहीं बने योग्य भिक्षा विधि सूख अंग सब शिथिल भये हैं ।। तब तहां दुस्सह भूख की वेदन सहित साधु नहीं नेक नये हैं । तिनके चरण कमल प्रति २ दिन हाथ जोड़ हम सीस नये हैं ।

२ तृषा परीषह ।

पराधीन मुनिवर की भिक्षा पर घर लेंय कहें कुछ नाहीं । प्रकृति विरुद्ध पारणा भुंजत बढ़त प्यास की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रास तहां ही ।। ग्रीषमकाल पित्त अति कोपे लोचन दोय फिरें जब जाहीं । नीर न चहैं तिससे मुनि जयवन्तों वरतो जग माहीं ।।

३ शीत परीषह ।

शीतकाल सब ही जन कम्पैं खड़े जहां वन वृक्ष दहे हैं । झंझा वायु बहे वर्षा ऋतु बर्षत बादल झूम रहे ।। तहां धीर तटिनी तट चौपट ताल पाल पर कर्म दहे हैं ।। सहैं सम्हाल शीत की बाधा ते मुनि तारण तरण कहे हैं ।।

४ उष्ण परीषह

भूख प्यास पीड़े उर अन्तर प्रज्वले आंत देह सब दागे । अग्नि स्वरूप धूप ग्रीषम की ताती बाल झालसी लागे ।। तपै पहाड़ ताप तन उपजै कोप पित्त दाहज्वर जागे । इत्यादिक गर्मी की बाधा सहैं साधु धैर्य्य नहीं त्यागे ।।

५ दंशमशक परीषह ।

दंशमशक माखी तनु काटें पीड़ें बन पक्षी बहुतेरे ।
डसें व्याल विषहारे बिच्छू लगें खजूरे आन घनेरे ।।
सिंघ स्याल शुण्डाल सतावें रीछ रोज दुःख दें घनेरे ।
ऐसे कष्ट सहैं समभावन ते मुनिराज हरो अघ मेरे ।।

६ नग्न परीषह ।

अन्तर विषय वासना वर्त्ते बाहिर लोक लाज भय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारी। तातैं परम दिगम्बर मुद्रा धर नहीं सकें दीन संसारी। ऐसी दुर्द्धर नग्न परीषह जीतें साधु शील व्रतधारी। निर्विकार बालकवत् निर्भय तिनके पाँयन धोक हमारी ॥

७ अरति परिषह।

देश काल को कारण कहिके होत अचैन अनेक प्रकारैं। तब तहाँ खिन्न होयें जगवासी कलमलाय थिरता पन छारैं। ऐसी अरति परीषह उपजत तहाँ धीर धैर्य्य उर धारैं। ऐसे साधुन के उर अन्तर बसो निरन्तर नाम हमारे ॥

८ स्त्री परीषह।

जे प्रधान केहरि को पकड़ें पन्नग पकड़ पान से चम्पत। जिनकी तनक देख भौ बांकी कोटिन सूर दीनता जम्पत ॥ ऐसे पुरुष पहाड़ उठावन प्रलय पवन त्रिय वेद पयम्पत। धन्य धन्य ते साधु साहसी मन सुमेरु जिनको नहिं कम्पत ॥

९ चर्य्या परिषह।

चार हाथ परिमाण निरख पथ चलत दृष्टि इत उत नहीं तानें। कोमल पांय कठिन धरती पर धरत धीर बाधा नहीं माने ॥ नाग तुरङ्ग पालकी चढ़ते ते स्वाद उर याद न आनें। यों मुनिराज सहें चर्य्या दुःख तब दृढ़ कर्म्म कुलाचल भानै ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१० आसन परीषह ।

गुफा मसान शैल तरु कोटर निवसें जहां शुद्ध भू हेरें। परिमित काल रहें निश्चल तन बारबार आसन नहिं फेरें ।। मानुषदेव अचेतन पशु कृत बैठे विपत आन जब घेरें। ठौर न तजें भजें स्थिरतापद ते गुरु सदा बसो उर मेरे ।।

११ शयन परीषह ।

जे महान् सोने के महलों सुन्दर सेज सोय सुख जीवें। ते अब अचल अङ्ग एकासन कोमल कठिन भूमि पर सोवें ।। पाहन खण्ड कठोर कांकरी गड़तकोर कायर नहीं होवे। ऐसी शयन परीषह जीतत ते मुनि कर्म कालिमा धोवें ।।

१२ आक्रोश परिषह ।

जगत् जीव यावन्त चराचर सबके हित सबको सुख-दानी। तिन्हें देख दुर्वचन कहैं शठ पाखण्डी ठग यह अभिमानी ।। मारो याहि पकड़ पापी को तपसी भेष चोर कुछानी ऐसे कुवचन बाण की बिरियाँ क्षमा ढाल ओढ़ैं मुनि ज्ञानी ।।

१३ बध बन्धन परिषह ।

निरपराध निर्वेद महामुनि तिनको दुष्ट लोग मिल मारैं। कोई खैंच खम्मसे बाँधै कोई पावकमें परजारैं ।। तहाँ कोप नहीं करैं कदाचित पूर्व कर्म विपाक विचारैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समरथ होय सहैं वध बन्धन ते गुरु सदा सहाय हमारैं ॥

१४ याचना परीषह ।

घोर वीर तप करत तपोधन भये क्षीण सूखी गलबाँही । अस्थिचाम अवशेष रहे तनु नसा जाल झलके जिस माँही ॥ औषधि अशन पान इत्यादिक प्राण जाँय पर याचत नाँहीं । दुर्द्धर अयाचिक व्रत धारैं करहि न मलिन धर्म परछाहीं ॥

१५ अलाभ परीषह ।

एकबार भोजन की विरियां मौन साध बस्ती में आवें । जो नहिं बने योग भिक्षा विधि तो महन्त मन खेद न लावें ॥ ऐसे भ्रमत बहुत दिन बीतें तब तप वृद्ध भावना भावैं । यौं अलाभ की पूर्ण परीषह सहें साधु सोही शिव पावैं ॥

१६ रोग परीषह ।

वात पित्त कफ श्रोणित चारों ये जब घटें बढ़े तनु माहीं । रोग संयोग शोक तब उपजत जगत् जीव कायर हो जाहीं ॥ ऐसी व्याधि वेदना दारुण सहैं शूर उपचार न चाहीं । आत्मलीन विरक्त देह से जन यती निज नेम निवाहीं ॥

१७ तृण स्पर्श परीषह ।

सूखे तृण और तीक्ष्ण कांटे कठिन कांकरी पांय विदारैं । रज उड़ आन पड़े लोचन में तीर फांस तनु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पीर विथारैं।। तापर पर सहाय नहीं वांछत अपने करसों काढ़ न डारें। यों तृणस्पर्श परीषह विजयी ते गुरु भव भव शरण हमारे ।।

१८ मल परीषह।

यावज्जीवन जल न्हौन तजो जिन नग्न रूप वन थान खड़े हैं। चलै पसेव धूप की विरियाँ उड़त धूल सब अङ्ग भरे हैं ।। मलिन देह को देखो महा मुनि मलिन भाव उर नाहि करें हैं। यों मल जनित परीषह जीतैं तिन्हैं पाय हम सीस धरे हैं ।।

१९ सत्कार तिरस्कार परीषह।

जे महान् विद्यानिधिविजयी चिर तपसी गुण अतुल भरे हैं। तिनकी विनय वचन सों अथवा उठ प्रणाम जन नांहि करे हैं।। तौ मुनि तहां खेद नहि मानें उर मलीनता भाव हरे हैं। ऐसे परम साधु के अहनिशि हाथ जोड़ हम पांय परे हैं।

२० प्रज्ञा परिषह।

तर्क छन्द व्याकरण कलानिधि आगम अलङ्कार पढ़ जानैं। जाकी सुमति देख परवादी विलखे होंय लाज उर आनैं ।। जैसे सुनत नाद केहरिको वन गयन्द भाजत भय मानैं। ऐसी महाबुद्धि के भाजन पै मुनीश मद रञ्च न ठाने ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१ अज्ञान परीषह ।

सावधान वर्तें निशि वासर संयम शूर परम वैरागी पालत गुप्ति गये दीर्घ दिन सकल सङ्ग ममता पर त्यागी। अवधिज्ञान अथवा मनपर्य्यय केवल ऋद्धि न आजहुँ जागी। यों विकल्प नहिं करें तपोधन सो अज्ञान विजयी बड़भागी ॥

२२ अदर्शन परीषह ।

मैं चिरकाल घोर तप कीने अजहूं ऋद्धि अतिशय नहिं जागे। तप बल सिद्धि होय सब सुनियें सो कुछ बात झूंठसी लागे ॥ यों कदापि चितमें नहीं चिन्तित समकित शुद्ध शान्ति रस पागे। सोई साधु अदर्शन विजयी ताके दर्शन से अघ भागे।

किस कर्म के उदय से कौन परीषह ।

(कवित्त)

ज्ञानावरणी से दोय प्रज्ञा और अज्ञान होय एक महा मोह तें अदर्शन बखानिये। अन्तराय कर्म सेती उपजे अलाभ दुःख सप्त चारित्र मोहनी केवल जानिये। नग्न निषध्यानारी मान सन्मान गारि याचना अरति सब ग्यारह ठीक ठानिये। एकादश बाकी रही वेदनी उदय से कही बाईस परीषह उदय ऐसे उर आनिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अडिल्ल छन्द ।

एकबार इन माहिं एक मुनि के कही । सर्व उन्नीस उत्कृष्ट उदय आवें सही ।। आसन शयन विहार दोइ इन माहिं की । शीत उष्ण में एक तीन ये नाहिं की ।।

।। इति सम्पूर्णम् ।।

कविवर भैया भगवतीदासजी रचित

निर्वाणकांड भाषा

दोहा

वीतराग वंदौं सदा, भाव सहित शिरनाय ।
कहूँ कांड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय ।।१।।

चौपाई १५ मात्रा

अष्टापद आदीश्वर स्वामि । वासु पूज्य चंपापुरि नामि ।।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार । वन्दौं भाव भक्ति उरधार ।।१।।
चरम तीर्थंकर चरम शरीर । पावापुरि स्वामी महावीर ।।
शिखर समेद जिनेश्वर बीस । भाव सहित वन्दौं जगदीस ।।२।।
वरदत रायरु इन्द्र मुनिंद । सायरदत्त आदि गुणवृंद ।।
नगरतारवर मुनि उठकोड़ि[1] । बंदौं भावसहित करजोड़ि ।।३।।
श्री गिरनार शिखर विख्यात । कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात ।।
शंबु प्रदुम्न कुमर द्वैभाय । अनिरुध आदि नमूं तसु पाय ।।४।।

१—साढ़े तीन करोड़ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रामचन्द्र के सुत द्वै वीर। लाडनरिंद आदि गुणधीर॥
पांच कोड़ि मुनि मुक्तिमझार। पावागिरि वंदौं निरधार॥५॥
पांडव तीन द्रविड राजान। आठकोड़िमुनि मुकति पयान॥
श्रीशत्रुञ्जय गिरि के सीस। भावसहित वन्दौं जगदीस॥६॥
जे बलभद्र मुकति में गये। आठकोड़ि मुनि औरहि भये॥
श्रीगजपंथ शिखर सुविशाल। तिनके चरणनमूं तिहुंकाल॥७॥
राम हनू सुग्रीव सुडील। गवगवाक्ष नील महानील॥
कोड़ि निन्याणवै मुक्ति पयान तुङ्गीगिरि वन्दौं धरि ध्यान॥८॥
नंग अनंग कुमार सुजान। पंचकोड़ि अरु अर्धप्रमाण॥
मुक्ति गये सोनागिरशीश। ते वंदौं त्रिभुवनपति ईस॥९॥
रावण के सुत आदि कुमार। मुक्ति गये रेवातट सार॥
कोड़िपंच अरु लाख पचास। ते वंदौं धरिपरम हुलाश॥१०॥
रेवानदी सिद्धवर कूट। पश्चिमदिशा देह जहं छूट॥
द्वै चक्री दश कामकुमार। आठकोड़िवंदौं भवपार॥११॥
बडवानी बडनयर सुचंग। दक्षिण दिश गिरि चूल उतंग॥
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण। ते वंदौं भवसायरतर्ण॥१२॥
सुवरणभद्र आदि मुनि चार। पावा गिरिवर शिखरमझार॥
चेलना नदी तीरके पास। मुक्ति गये वंदौं नित तास॥१३॥
फलहोड़ी बड़ गांव अनूप। पश्चिमदिशा द्रोणगिरिरूप॥
गुरुदत्तादि मुनीश्वर जहां। मुक्ति गये वंदौं नित तहां॥१४॥
बालि महाबालि मुनि दोय। नागकुमार मिलें त्रय होय॥
श्री अष्टापद मुक्ति मझार। ते वंदौं नित सुरत संभार॥१५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अचलापुरकी दिशा ईशान । तहां मेढगिरि नाम प्रधान ।।
साढ़ेतीन कोड़ि मुनिराय, तिनकेचरण नमूं चितलाय।।१६।।
वंशस्थल वन के ढिग होय । पश्चिम दिशा कुंथुगिरि सोय।।
कुलभूषण देशभूषण नाम,तिनके चरणनि करूं प्रणाम।।१७।।
दशरथ राजा के सुत कहे । देश कलिंग पांचसो लहे ।।
कोटि शिला मुनि कोटि प्रमान,वंदन करूं जोर जुगपान।१८।
समवसरण श्रीपार्श्व जिनंद । रेसंदीगिरि नयनानन्द ।।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज,ते वंदौं नित धरम जिहाज ।।१९।।
मथुरापुर पवित्र उद्यान, जम्बू स्वामीजी निर्वाण ।
चरम केवलि पंचमकाल, ते बन्दौं नित दीन दयाल।।२०।।
तीन लोक के तीरथ जहां । नित प्रति वंदन कीजे तहां ।।
मनवचकाय सहित सिरनाय वंदन करहिं भविकगुणगाय।२१
संवत सतरहसौ इकताल । आश्विनसुदी दशमी सुविशाल ।।
'भैया' वंदन करहि त्रिकाल,जय निर्वाणकांड गुणमाल ।।२२।

इति निर्वाणकांड भाषा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्तोत्र संग्रह

॥ शास्त्र-स्वाध्यायका प्रारंभिक मंगलाचरण ॥

ओंकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमोनमः ॥१॥

अविरलशब्द घनौघ, प्रक्षालितसकलभूतलमलकलङ्का ।
मुनिभिरुपासिततीर्था, सरस्वतीहरतु, नो, दुरितान् ॥२॥

अज्ञानतिमिरान्धानां, ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥३॥

॥ श्रीपरमगुरवे नमः परंपराचार्यगुरवे नमः ॥

सकलकलुषविध्वंसकं, श्रेयसां परिवर्धकं धर्मसम्बन्धकं भव्यजीवमनः प्रतिबोधकारकं, पुण्यप्रकाशकं पापप्रणाशकमिदं शास्त्रं श्री········नामधेयं, अस्य मूलग्रन्थकर्तारः श्री सर्वज्ञदेवास्तदुत्तरग्रन्थकर्तारः श्री गणधरदेवाः प्रतिगणधरदेवास्तेषां वचनानुसारमासाद्य आचार्य श्री कुन्दकुन्दाद्याम्नायी श्री········विरचितं, सर्वे श्रोतारः सावधानतया शृण्वन्तु ।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी,
मंगलं कुन्दकुदाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ॥१॥
सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदिनाथस्तोत्रम् ।

वसन्ततिलका वृत्तम् ।

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्द्योतकं दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥१॥

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्वबोधा-
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रियचित्तहरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥

बुद्धया विनापि विबुधार्चितपादपीठ
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

वक्तुं गुणान्गुणसमुद्र ! शशांककान्तान्
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्धया ।
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्रं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥
अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम !
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतुः ॥६॥
त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥७॥
मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥८॥
आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभांजि ॥९॥
नात्यद्भुतं भुवन भूषण भूतनाथ
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभीष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किंवा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ॥११॥

यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाश कल्पम् ॥१३॥

सम्पूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥१४॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र ! लोके ॥१७॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिम्बम् ॥१८॥

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमःसु नाथ ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥१९॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा
 दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
 कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
 नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मि
 प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
 मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
 नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनिन्द्र पन्थाः ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं
 ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं
 ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्
 त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ।
धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात् ।
 व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामल भूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वरायं
तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥२८॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं-
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

गम्भीरताररवपूरतदिग्विभाग-
स्त्रैलोक्यलोकशुभसंयगभूतिदक्षः ।
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥३२॥

मन्दारसुन्दरनमेरुसुपारिजात-
सन्तानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ।
गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रयाता
दिव्या दिवः पतित ते वयसां ततिर्वा ॥३३॥

शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरि संख्या-
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ॥३४॥

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः
सद्धर्मतत्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व-
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः ॥३५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्निद्रहेमनवपंकजपुञ्जकान्तो-
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३६॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
याद्दक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा
ताद्दक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥३७॥

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं
द्दष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥

भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त-
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचल संश्रितं ते ॥३९॥

कल्पान्तकालपवनोद्धतवन्हिकल्पं
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तत् ।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्तशंक-
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥

वल्गत्तुरङ्गगजगर्जितभीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥

कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह-
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा
स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रा
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजंति ॥४४॥

उद्‌भूतभीषण जलोदरभारभुग्नाः
शौच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पादपंकजरजोऽमृतदिग्धदेहाः
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपादकण्ठमुरुशृंखलवेष्टितांगः
गाढं वृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ।
त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवंति ॥४६॥

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि-
संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४७॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्रगुणैर्निबद्धां
भक्त्या मया विविधवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीं ॥४८॥

इति श्रीमानतुङ्गाचार्यविरचितमादिनाथस्तोत्रं समाप्तम् ।

श्री दशाध्याय सूत्र पूजा ।

मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म भूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्व तत्वानां, वंदे तद्गुण लब्धये ॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः ।

ॐ ह्रीं मोक्षशास्त्रे तत्वार्थ सूत्रे दशाध्यायेभ्यः पुष्पांजलिं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदधि क्षीरसुनीर सुनिर्मलैः,
कलशकांचन पूरित शीतलैः ।
परम पावन श्रीश्रुत पूजनै-
जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे तत्वार्थ सूत्रे दशाध्यायेभ्यो जलं नि०

मलय चंदनगंध सुकुंकुमैं,
विमल श्रीघनसार विमिश्रितैः ।
सुपथ मोक्ष प्रकाशनमर्चित,
जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥२॥ चंदनं ।

धवल अक्षत जोति रखंडितै-
श्चतुरपुंज अनुपम मंडितैं ।
विविधवीज मुपार्जित पुण्यजै,
जिनगृहे जिनसूत्र महंयजे ॥३॥ अक्षतं ।

कमलकुन्द गुलाब सुचंपकै,
ललितवेलि चमेलि सुगंधजैः ।
प्रचुर पुष्पित पुष्प मनोहरैं,
जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥४॥ पुष्पं ।

मधुर आमिलत्यक्त सुव्यंजनै,
वृंकटघेवर खज्जक मोदकैः ।
कनक भाजन पूरित निर्म्मितै,
जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥५॥ नैवेद्यं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विमल जोति प्रकाशन दीपकै—
घृंतवरैर्घनसार महोज्वलैः ।
रवमुदार सुवादित नृत्यकैं,
जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥६॥ दीपं ।

अगर चन्दन धूप सुगंधजै,
दहन कर्म दवानल खंडितैः ।
अलित गुंजनवास महोत्तमै,
जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥७॥ धूपं ।

फलसुदाड़िम आम्र सुश्रीफलैः,
कदलिनारंगनिबुज द्राक्षकै—
हरितमिष्ट फलादिक संयुतै—
जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥८॥ फलं ।

उदक चन्दन तंदुल पुष्पकै—
श्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः ।
धवल मंगल गान रवाकुले,
जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥९॥

ॐ ह्रीं मोक्षशास्त्रे तत्वार्थसूत्रे दशाध्यायेभ्यो अर्घं ॥९॥

ज्ञानदर्शन योस्तत्वं नयानां चैवलक्षणम् ।
ज्ञानस्यच प्रमाणत्वमध्यायेऽस्मिन्निरूपितम् ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मालिनी छंद ।

अमल कमल पांशुमिश्रतोयैस्सुगंधै,
मलयभवसुगंधैस्तुन्दुलैः पुष्पवृन्दैः ।
चरुक वर सुदीपैर्धूपकैस्सत्फलोंघैः,
शिवसुखफल सिद्धचै संयजेऽध्यायमाद्यम् । १।।

ॐ ह्रीं तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्याये दर्शन ज्ञान प्रमाण नयप्ररूपणाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

गीतिका छंद ।

जीव स्वभाव लक्षण, गति जन्मयोनिदेहलिंगा—
नपवर्तिता पुष्कभेदाः, द्वितीयोऽध्याये निरूपितं मुनिभिः।२।

वंसततिलका छंद ।

स्वच्छैर्जलैर्जल जरेण युतैस्सुपुष्पै—
नैवेद्यदीपवर धूपफलैः समर्घैः ।
संपूजये परमतत्व सुभावसूत्र,
मध्यायकं शिवकरं द्वितीयं यजामि ।।२।।

ॐ ह्रीं तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्याये जीवस्वभाव-लक्षण गतिजन्म योनिदेह लिंगानपवर्तिता पुष्कभेद प्ररूपकाय-अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।

गीतिका छंद ।

भूविल लेश्याद्यायु—
द्वींपोदधि वास्यगिरिसरः सरिताम् ।
मानंनृणांचभेदाः,
स्थितिस्तिरश्चामपितृतीयोऽध्याये ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चामर छंद

जीवनैरिष्टगन्धान्वितश्चन्दनै,
रक्षतैस्सल्लतन्तै वंरेभंक्षकैः ।
दीपधूपैः फलैः पक्व पूर्णार्घ्यकै ।
रर्चयामि तृतीयं वराध्यायकम् ॥३॥

ॐ ह्रीं तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्याये भूबिल लेश्यायुद्वीपोदधिगिरसरः सरितप्रमाण मनुष्य तिर्यंश्चायु भेदप्ररूपकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

श्लोक

चतुर्णिकाय देवानां स्थानं भेद्दा सुखादिकं ॥
परापर स्थिति लेंश्या तुर्याध्याये निरूपितम् ॥४॥

चामर छंद.

वारिगंध तंदुलैश्च पुष्पभक्ष दीपकै—
धुम्रयुक्त धूपकैः फलैर्वराघ्र्यंसंयुतैः,
स्वर्णपात्रसंयुतैस्सुदुन्दुभि रवाकुलैः ।
सशंकरं चतुर्थकं यजे विशिष्टकं परम् ॥४॥

ॐ ह्रीं तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्याये चतुर्णिकाय देवस्थान भेदलेश्यापरापर स्थिति प्ररूपकाय अर्घं निर्व० ॥४॥

श्लोक

षड्द्रव्यतु नामानि—द्रव्याणामवगाहनम् ।
परमाण्वो मिथः बंधः पंचाध्याये निरूपितम् ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्रग्धराछन्द.

सामोदैस्सक्ति लालैर्वनजमधुयुतैश्चन्दनैश्चन्द्रमिश्रै,
र्माधुर्यैरक्षतौघैर्विकसितकुसुमैर्हृत्प्रियैस्सच्चरुकैः ।
दीपैर्धूपैः सुधूमैर्मधुकरसुखदैस्सत्प्रियैस्सत्फलाघ्यैं,
रेभिर्द्रव्यैर्यजेऽहं गणधरगदितं पंचमाध्यायकं वै ॥५॥

ॐ ह्रीं तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पंचमोऽध्याये द्रव्य लक्षणावगाह परमाणुबंध प्ररूपकाय अर्घं निर्वपामिति ॥५॥

योगास्रव कषायाणां भावनानां च वर्णनम् ।
क्रियाधार सुभेदाश्च षष्टाध्याये निरूपितम् ॥६॥

मंदक्रान्ता छन्द.

गंगानीरैः कनकघटजैर्मौक्तिकामाभिरामै ।
र्हैमान्वितैर्मलयनगजैश्चन्दनैश्चारुगंधैः ।
तंदुलौघैः कुसुमचरुभिर्दीप धूपैफलार्घै ।
र्भक्त्याभ्यर्चेजगतविदितं षष्टकाध्यायमर्हंम् ॥६॥

ॐ ह्रीं तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्टकाध्याये योगाश्रव कषाय भावनाक्रियाधार भेद प्ररूपकाय अर्घं निर्व० ॥६॥

अणुव्रतातिचाराणां, भावनानां तथैव च ।
पापानां कथनं चास्मिन्, सप्तमाध्यायके स्फुटम् ॥७॥

सारंगी छंद.

नीरैर्गंधैस्सोमान्वितै स्सतण्डुलैर्माधुर्यैः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फलैर्भक्षैर्दीपैः धूम्रान्वितैः धूपाद्यैः दाडिमाद्यैः सगंधाढ्यैः ।
पङ्कै वृन्दैरर्घाद्यैरेभिर्द्रव्यैः श्रीजिनोक्तं भक्त्यार्चेऽहं संसूत्रम्

ॐ ह्रीं तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोध्याये व्रतभावनातिचारसप्त शीलव्रत प्ररूपकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

बंधहेतुः तथालक्ष्ममूलकोत्तरप्रकृतिः
वृजिन पुण्यकरीचैवाष्टाध्याये निरूपितम् ॥८॥

भुजंगप्रयात छंद.

शुचिक्षीर गंधाक्षतै र्भूरिपुष्पै,
मुनिध्यान तुल्यैस्सुभक्षैः प्रदीपैः ।
वरैर्धूपवृंदैः फलैरर्घ्य युक्तै—
र्यजेऽहं त्रिशुद्ध्याष्टाध्यायकं वै ॥८॥

ॐ ह्रीं तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोऽध्याये बंधहेतु लक्षण भेद मूलोत्तर प्रकृतिस्थिति पुण्यपाप प्ररूपकाय अर्घं निर्वं० ॥८॥

समित्ति गुप्तिचरित्र तपस्तथा,
विनयधर्मसुसंवरनिर्जरा ।
मुनिगणै श्चतथा सुनिरूपिताः
नवमकेननु सर्वसुखप्रदे ॥९॥

शार्दूल विक्रीडित्त छन्द.

पूतैर्वैः पद्मराग मिश्रित जलैस्सचंदनश्शालिजै,
र्मन्दारादि समुद्भवैस्सुमन स्सस्सद्भक्षकैर्हृत्प्रियैः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पीताभान्वित दीपकैरगुरुजैर्धूपैः फलैः सार्घ्यकै
रर्च्चामिजिनपश्यनिर्गतिगिरंसन्मुक्तिदंध्ययाकम् ॥९॥

ॐ ह्रीं तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमाऽध्याये संवर समिति गुप्तिचारित्र तपधर्म भावना निर्जरा मुनिगण भेद प्ररूपकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

केवल्यहेतुचत्वारः परिणाम स्तदध्वज,
सिद्धानुयोगरुर्ध्वंगः जीवाध्याये दशेषु च ।

उपेन्द्रवज्रछन्द.

जलैस्सुगंधैः मुनिचिततुल्यैः ।
सदक्षतै र्निर्मल खड मुक्तैः
पुष्पैश्चरुदीपयुतैस्सुधूपैः ।
फलैर्यजेऽध्यायमहं दशाह्वम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमाध्याये केवलज्ञान हेतुमोक्षोर्ध्वंगमन सिद्ध भेद प्ररूपकाय अर्घं निर्वपामीति ॥१०॥

त्र्यर्यस्त्रिशत्रिपंचाशत् नवत्रिंशदनुक्रमात् ।
चत्वारिंशत् सद्धकेनद्वाभ्यां से कोति संयुताः ।
सप्त विंशन्नवत्रिंशितषष्ट्विंशतिकामता,
चत्वारिंशतसप्तानि नवसूत्र पदास्मृता ।

जयमाला ।

मालिनी छन्द.

विमल विमलवाणी देवदेवेन्द्रवाणी,
हरषिहरषिगानी भव्यजीवेनप्रानी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुरु कुरु निज पाठे तत्व तत्वार्थ सूत्रे,
भज भज निज रूपं तत्व तत्वार्थं दीपं ॥१॥

त्रोटक छन्द.

घन मोह महातम विश्वभरं, तसु नासन भानु प्रकासकरं ।
निरलोक उद्योतक दीपलहं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं ।२।
करुणाजल पूरितमानसरं, दसधर्म विभूषित हंसवरं ।
कल्पद्रुमवृक्ष समानरुहं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं ॥३॥
सुरत्नत्रय पुष्पित पद्मदलं, शुभदर्शनज्ञानचरित्रनलं ।
गुण तत्व पदारथ पत्रवहं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं ॥४॥
रिपुक्रोध कषाय विनाशकर, समता पिमतासव जीवपरं ।
भवसागर तारकपोतवहं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं ॥५॥
विधि षोडसकारण भावधरं, षटकाय सुरक्षण ज्ञानवरं ।
मदअष्ट विमर्दन मानसहं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं॥६॥
मुनिरूपित वस्तु विकासपदं, निजध्यानपरायण योगगदं ।
जड़चेतन भावविभिन्नलहं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं ॥७॥
जिनभाषित सौख्य समधिकरं, शिवमार्गप्रकाशन धर्मजवं ।
दुरितापहरं परमोदजनं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं ॥८॥
तब देवसु जन्मदिनं परमं, वरनिर्मित्त मंगलकामकमं ।
कनकादिसु पांडुक शुद्धवनं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं।९।
कृतभूषण भूरिविशेषतनुं, करकंकण कज्जलनेत्रमनुं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुकुटाब्ज विराजितरोलघनं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं १०
ललिताख्यरराजित चारुमुखं, मरुदेव्युदरोद्भव जातसुखं।
सुरनाथसुतांडव नृत्यघनं प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं।।११।।
वरवस्त्रसुराज्य गजाश्वपदं, रथभृत्यदलं चतुरंगगदं।
शुभकामिनिभोगसुयोगघनं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं।१२।
गतरागसुरोषविरागकृतं, सुतपोवलसाधित मुक्तिगतं।
सुखसागरमध्यसुरागमनं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं।१३।
सुशमोशरणं गतरोगरणं, प्रभुवारसमासृत वारगणं।
कृतकेवलणाण विकाशकरं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं।१४।
उपदेशसुतत्व विकाशकरं, कमलाकर लक्षण पूर्णभरं।
सुविनाशितकर्म्मं कलंकलुनं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं।१५।
जिनदेहिसुमोक्षपदं सुखदं, घनघातिघनाघनक्षायुपदं।
परमोत्सवकारितजन्मवनं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं।१६।
जनजाड्यहरं परमार्थबलं, परिपूर्ण भवोदधिपारजलं।
तवरूपस्वरूप सुमूर्त्तिधरं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं।१७।

घत्ता.

इति जिनमत सूत्रे तत्व तत्वार्थसारैः।
विविधवरण पुष्पैर्गृ द्धिपिक्षोपलक्षं।।
प्रकटितदसाध्यायं श्री उमास्वामिसूरिं।
विरचितं जयमाला लालचंद्रेविनोदी।।१८।।
ॐ ह्रीं तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशाध्यायेभ्यो जयमालार्घं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुपम सुखदाता भव्यजीवेन साता,
कुगतिकुमतिभानी जैनवाणी विख्याता ।
सुरनरमुनिजेता, ध्यानध्यायंतितेता ।
सजयति जिनसूत्रं मोक्षमार्गस्यभानु ।।

इति श्रीसूत्र पूजनं समाप्तम्

आचार्यश्रीमदुमास्वामिविरचितं

मोक्षशास्त्रम्

(तत्त्वार्थसूत्रम्)

त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीवषट्कायलेश्याः,
पंचान्ये चास्तिकाया व्रतसमितिगतिर्ज्ञानचारित्रभेदाः ।
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः,
प्रत्येति श्रद्दधाति स्पृशति च मतिमान् यः सवै शुद्धदृष्टिः ।१।
सिद्धे जयप्पसिद्धे, चउविहाराहणाफलं पत्ते ।
बंदित्ता अरहंते, वोच्छं आराहणा कमसो ।।२।।
उज्झोवणमुज्झवणं, णिव्वाहणं साहणं च णिच्छरणं ।
दंसणणाणचरित्तं, तवाणमाराहणा भणिया ।।३।।

मोक्षमार्गस्य नेत्तारं, भेत्तारं, कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, बंदे तद्गुणलब्धये ।।१।।

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ।।१।। तत्त्वार्थ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥ जीवाजीवास्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्वम् ॥४॥ नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥५॥ प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥ निर्देशस्वामित्वसाधनाऽधिकरणस्थितिविधानतः ॥ ७ ॥ सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च॥८॥ मति-श्रुता-वधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥९॥ तत्प्रमाणे ॥१०॥आद्ये परोक्षम्॥११॥ प्रत्यक्षमन्यत् ॥१२॥ मतिः स्मृतिः संज्ञा चिंताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ॥१३॥ तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥१४॥ अवग्रहेहाऽवायधारणाः ॥१५॥ बहुबहुविधक्षिप्राऽनिःसृताःनुक्तध्रुवाणां सेतराणाम् ॥१६॥ अर्थस्य ॥१७॥ व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥१८॥ न चक्षु-रनिन्द्रियाभ्याम् ॥१९॥ श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥२०॥ भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम्॥२१॥ क्षयोपशम-मनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ॥२२॥ ऋजुविपुलमती मनःपर्य्ययः ॥२३॥ विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥ २४ ॥ विशुद्धक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्य्यययोः ॥२५॥ मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२६॥ रूपिष्ववधेः ॥२७॥ तदनन्तभागे मनःपर्ययस्य ॥२८॥ सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥२९॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥३०॥ मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥३१॥ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्म-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्तवत् ॥३२॥ नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढै-वंभूता नयाः ॥३३॥

ज्ञान दर्शनयोस्तत्वं नयानां चैव लक्षणं।
ज्ञानस्य च प्रमाणत्वमध्यायेऽस्मिन्निरूपितम् ॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिकपारिणामिकौ च ॥१॥ द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रि-भेदाःयथाक्रमम् ॥२॥ सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥ ज्ञानदर्शन-दानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥४॥ ज्ञानाज्ञानदर्शन-लब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाः-श्च॥५॥गतिकषायलिङ्गमिथ्यादर्शनाऽज्ञानाऽसंयताऽसिद्ध-लेश्याश्चतुश्च तुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ॥६॥ जीवभव्याऽ-भव्यत्वानि च ॥७॥ उपयोगो लक्षणम् ॥८॥ स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥९॥ संसारिणो मुक्ताश्च ॥१०॥ समनस्कामनस्काः ॥११॥ संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥१२॥ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥ द्वीन्द्रिया-दयस्त्रसाः ॥१४॥ पञ्चेन्द्रियाणि ॥१५॥ द्विविधानि ॥१६॥ निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥१७॥ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ॥१८॥ स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि ॥१९॥ स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तदर्थाः ॥२०॥ श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥२१॥ वनस्पत्यन्तानामेकम् ॥२२॥ कृमिपिपीलिकाभ्र-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ।।२३।। संज्ञिनः समनस्काः ।।२४।। विग्रहगतौ कर्मयोगः ।।२५।। अनुश्रेणि गतिः ।।२६।। अविग्रहा जीवस्य ।।२७।। विग्रहवती च संसारिणः प्राक्चतुर्भ्यः ।।२८।। एकसमयाऽविग्रहा ।।२९।। एकं द्वौ त्रीन्वाऽनाहारकः ।।३०।। सम्मूर्च्छनगर्भोपपादा जन्म ।।३१।। सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ।।३२।। जरायुजांडजपोतानां गर्भः ।।३३।। देवनारकाणा-मुपपादः ।।३४।। शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ।।३५।। औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि ।।३६।। परं परं सूक्ष्मम् ।।३७।। प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक्तैजसात् ।।३८।। अनन्तगुणे परे ।।३९।। अप्रतीघाते ।।४०।। अनादिसम्बन्धे च ।।४१।। सर्वस्य ।।४२।। तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ताचतुर्भ्यः ।।४३।। निरुपभोगमन्त्यम् ।।४४।। गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यम् ।।४५।। औपपादिकं वैक्रियिकम् ।।४६।। लब्धिप्रत्ययं च ।।४७।। तैजसमपि ।।४८।। शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ।।४९।। नारकसम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि ।।५०।। न देवाः ।।५१।। शेषास्त्रिवेदाः ।।५२।। औपपादिकचरमोत्तमदेहा-ऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ।।५३।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ।।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्नशर्कराबालुकापंकधूमतमोमहातमःप्रभा भूमयो घनाम्बु वाताकाशप्रतिष्ठाःसप्ताऽधोऽधः ॥१॥ तासु त्रिंशत्पंचविंशतिपंचदशदशत्रिपंचोनैकनरकशतसहस्राणि पंच चैव यथाक्रमम् ॥२॥ नारकाः नित्याऽशुभतरलेश्या-परिणामदेहवेदनाविक्रियाः ॥३॥ परस्परोदीरितदुःखाः ॥४॥ संक्लिष्टाऽसुरोदीरितदुःखाश्च प्राक्चतुर्थ्याः ॥५॥ तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ॥६॥ जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥७॥ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरि-क्षेपिणो वलयाकृतयः ॥८॥ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥९॥ भरतहैमवत-हरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥१०॥ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनील-रुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ॥११॥ हेमार्जुनतपनीय-वैडूर्यराजतहेममयाः ॥१२॥ मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ताराः ॥१३॥ पद्ममहापद्मतिगिंछकेसरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ॥१४॥ प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कम्भो ह्रदः ॥१५॥ दशयोजनावगाहः ॥१६॥ तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥१७॥ तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ॥१८॥ तन्निवा-सिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ससामानिकपरिषत्काः ॥१९॥ गंगासिन्धुरोहिद्रोहिता-स्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्य-कूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ॥२०॥ द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ॥२१॥ शेषास्त्वपरगाः ॥२२॥ चतुर्दशनदी-सहस्रपरिवृता गंगा सिन्ध्वादयो नद्यः ॥२३॥ भरतः षड्-विंशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः षट्चैकोनविंशतिभागा योजनस्य ॥२४॥ तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः ॥२५॥ उत्तरा दक्षिणतुल्याः ॥२६॥ भरतै-रावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणी-भ्याम् ॥२७॥ ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ॥२८॥ एकद्वित्रिपल्योपमस्थितय हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवकाः ॥२९॥ तथोत्तराः ॥३०॥ विदेहेषु संख्येयकालाः ॥३१॥ भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागः ॥३२॥ द्विर्धातकीखण्डे ॥३३॥ पुष्करार्द्धे च ॥३४॥ प्राङ्मानु-षोत्तरान्मनुष्याः ॥३५॥ आर्या म्लेच्छाश्च ॥३६॥ भर-तैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरुत्तरकुरुभ्यः ॥३७॥ नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ॥३८॥ तिर्यग्योनिजानां च ॥३९॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

देवाश्चतुर्णिकायः ॥१॥ आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्याः ॥२॥ दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशत्पारिषदात्मरक्षलोकपालानीक-
प्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः ॥४॥ त्रायस्त्रिंश-
लोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः॥५॥पूर्वयोर्द्वीन्द्राः॥६॥
कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ॥७॥ शेषाः स्पर्शरूपशब्द-
मनः प्रवीचाराः॥८॥ परेऽप्रवीचाराः॥९॥ भवनवासिनो-
ऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः
॥१०॥ व्यन्तराः किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षरा-
क्षसभूतपिशाचाः ॥११॥ ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ
ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ॥१२॥ मेरुप्रदक्षिणा नित्य-
गतयो नृलोके ॥१३॥ तत्कृतः कालविभागः ॥१४॥
बहिरवस्थिताः॥१५॥ वैमानिकाः ॥१६॥ कल्पोपपन्नाः
कल्पातीताश्च॥१७॥उपर्युपरि॥१८॥सौधर्मैशानसान-
त्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्ठशुक्रमहाशुक्रश-
तारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु
विजयवैजयन्तजयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥१९॥
स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधि-
काः ॥२०॥ गतिशरीरपरिग्रहाऽभिमानतो हीनाः॥२१॥
पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ॥२२॥ प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः
कल्पाः ॥ २३ ॥ ब्रह्मलोकालयाः लौकान्तिकाः ॥२४॥
सारस्वतादित्यवन्ह्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च
॥२५॥ विजयादिषु द्विचरमाः ॥२६॥ औपपादिकमनु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भ्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ।।२७।। स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः ।।२८।। सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके ।।२९।। सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ।।३०।। त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपंचदशभिरधिकानि तु ।।३१।। आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ।। ३२ ।। अपरा पल्योपममधिकम् ।।३३।। परतः परतः पूर्वापूर्वानन्तराः ।।३४।। नारकाणां च द्वितीयादिषु ।३५।। दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ।।३६।। भवनेषु च ।।३७।। व्यन्तराणां च ।।३८।। परा पल्योपममधिकम् ।।३९।। ज्योतिष्काणां च ।। ४० ।। तदष्टभागोऽपरा ।।४१।। लोकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ।। ४२ ।।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ।।१।। द्रव्याणि ।।२।। जीवाश्च ।।३।। नित्यावस्थितान्यरूपाणि ।।४।। रूपिणः पुद्गलाः ।।५।। आ आकाशादेकद्रव्याणि ।।६।। निष्क्रियाणि च ।।७।। असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम् ।।८।। आकाशस्यानन्ताः ।।९।। संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ।।१०।। नाणोः ।।११।। लोकाकाशेऽवगाहः ।।१२।। धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ।।१३।। एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ।।१४।। असंख्येयभागादिषु जीवा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम् ॥१५॥ प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ॥१६॥ गतिस्थित्युपग्रहौ धर्म्माधर्म्मयोरुपकारः ॥१७॥ आकाश-स्यावगाहः ॥१८॥ शरीरवाङ्मनः प्राणापानाः पुद्गला-नाम् ॥१९॥ सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ॥२०॥ परस्परोपग्रहो जीवानाम् ॥२१॥ वर्त्तनापरिणामक्रियाः परत्वापरत्वे च कालस्य ॥२२॥ स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ॥२३॥ शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्-छायातपोद्योतवन्तश्च ॥२४॥ अणवः स्कन्धाश्च ॥२५॥ भेदसंघातेभ्य उत्पद्यन्ते ॥२६॥ भेदादणुः ॥२७॥ भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषः ॥२८॥ सद्द्रव्यलक्षणम् ॥२९॥ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥३०॥ तद्भावाव्ययं नित्यम् ॥३१॥ अर्पितानर्पितसिद्धेः ॥३२॥ स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धः ॥३३॥ न जघन्यगुणानाम् ॥३४॥ गुणसाम्ये सदृशानाम् ॥३५॥ द्व्यधिकादिगुणानां तु ॥३६॥ बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ॥३७॥ गुणपर्ययवद्द्रव्यम् ॥३८॥ कालश्च ॥३९॥ सोऽनन्तसमयः ॥४०॥ द्रव्याश्रया निर्गुणाः गुणाः ॥४१॥ तद्भावः परिणामः ॥४२॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

कायवाङ्मनःकर्म्म योगः ॥१॥ स आस्रवः ॥२॥ शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ॥३॥ सकषायाकषाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः ॥४॥ इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पंच-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुःपंचपंचविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ॥५॥ तीव्रमन्द-ज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥६॥ अधिकरणं जीवाजीवाः ॥७॥ आद्यं समरम्भसमारम्भा-रम्भयोगकृतकारितानुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चै-कशः ॥८॥ निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् ॥९॥ तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावर्णयोः ॥१०॥ दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदे-वनान्यात्मपरोभयस्थानान्यसद्वेद्यस्य ॥११॥ भूतव्रत्यनु-कम्पादानसरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ॥१२॥ केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥१३॥ कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥१४॥ बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ॥१५॥ माया तैर्यग्यो-नस्य ॥१६॥ अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ॥१७॥ स्वभावमार्दवं च ॥१८॥ निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ॥१९॥ सरागसंयमसंयमासंयमाऽकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य ॥२०॥ सम्यक्त्वं च ॥२१॥ योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ॥२२॥ तद्विपरीतं शुभस्य ॥२३॥ दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधिर्वैया-वृत्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहा-णिर्मार्गप्रभावनाप्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थंकरत्वस्य ।२४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ।।२५।। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।।२६।। विघ्नकरणमन्तरायस्य ।।२७।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ।।१।। देशसर्वतोऽणुमहती ।।२।। तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पंच पंच ।।३।। वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपानभोजनानि पंच ।।४।। क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषणं च पञ्च ।।५।। शून्यागारविमोचितावासपरोपरोधाकरणभैक्ष्यशुद्धिसद्धर्म्माऽविसंवादाः पञ्च ।।६।। स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्गनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाः पञ्च ।।७।। मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि पञ्च ।।८।। हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम् ।।९।। दुःखमेव वा ।।१०।। मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनियेषु ।।११।। जगत्कायस्वभावौ व संवेगवैराग्यार्थम् ।।१२।। प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ।।१३।। असदभिधानमनृतम् ।।१४।। अदत्तादानं स्तेयम् ।।१५।। मैथुनमब्रह्म ।।१६।। मूर्च्छा परिग्रहः ।।१७।। निःशल्यो व्रती ।।१८।। अगार्यनगारश्च ।।१९।। अणुव्रतोऽगारी ।।२०।। दिग्देशानर्थदण्डविरतिसामायिकप्रोषधोपवासोप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भोगपरिभोगपरिमाणातिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ।२१।। मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ।।२२।। शंकाकांक्षाविचिकित्साऽन्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ।।२३।। व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ।।२४।। बन्धवधच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः ।।२५।। मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमन्त्रभेदाः ।।२६।। स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः ।।२७।। परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीताऽपरिगृहीतागमनानङ्गक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशाः ।।२८।। क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ।।२९।। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि ।।३०।। आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ।।३१।। कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ।।३२।। योगदुष्प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ।।३३।। अप्रत्यवेक्षिताऽप्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ।।३४।। सचित्तसम्बन्धसम्मिश्राभिषवदुष्पक्वाहाराः ।।३५।। सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ।।३६।। जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि ।।३७।। अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ।।३८।। विधिद्रव्यदातृपात्र-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेषात्तद्विशेषः ॥३९॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बंधहेतवः ॥१॥ सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बन्धः ॥२॥ प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ॥३॥ आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः॥४॥ पंचनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपंचभेदा यथाक्रमम् ॥५॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्य्ययकेवलानाम् ॥६॥ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥७॥ सदसद्वेद्ये ॥८॥ दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबंध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः ॥९॥नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि॥१०॥गतिजातिशरीरांगोपांगनिर्माणबन्धनसंघातसंस्थानसंहननस्पर्शरसगन्धवर्णानुपूर्व्यागुरुलघुपघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्तिसेतराणि तीर्थंकरत्वं च ॥११॥ उच्चैर्नीचैश्च ॥१२॥ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम् ॥१३॥ आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटिकोट्यः परा स्थितिः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥१४॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१५॥ विंशतिर्नामगोत्रयोः ॥१६॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः ॥१७॥ अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ॥१८॥ नामगोत्रयोरष्टौ ॥१९॥ शेषाणामन्तर्मुहूर्ताः ॥२०॥ विपाकोऽनुभवः ॥२१॥ स यथानाम ॥२२॥ ततश्च निर्जरा ॥२३॥ नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः ॥ २४ ॥ सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥२५॥ अतोऽन्यत्पापम् ॥२६॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रेऽष्टमोऽध्यायः ॥८॥

आस्रवनिरोधः संवरः ॥१॥ स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा-परीषहजयचारित्रैः ॥२॥ तपसा निर्जरा च ॥३॥ सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ॥४॥ ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥५॥ उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाऽकिञ्चन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥६॥ अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिंतनमनुप्रेक्षाः ॥७॥ मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ॥८॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाञ्चालाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाऽज्ञानादर्शनानि ॥९॥ सूक्ष्मसाम्परायछद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥१०॥ एकादश जिने ॥११॥ बादरसाम्पराये सर्वे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥१२॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥ दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ॥१४॥ चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाञ्चासत्कारपुरस्काराः ॥१५॥ वेदनीये शेषाः ॥१६॥ एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नेकोनविंशतिः ॥१७॥ सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसाम्पराययथाख्यातमिति चारित्रम् ॥१७॥ अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ॥१९॥ प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्तस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ॥२०॥ नवचतुर्दशपंचद्विभेदाः यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥२१॥ आलोचनाप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः ॥२२॥ ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥२३॥ आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानाम् ॥२४॥ वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशः ॥२५॥ बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ॥२६॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात् ॥२७॥ आर्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि ॥२८॥ परे मोक्षहेतू ॥२९॥ आर्तममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ॥३०॥ विपरीतं मनोज्ञस्य ॥३१॥ वेदनायाश्च ॥३२॥ निदानं च ॥३३॥ तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् ॥३४॥ हिंसानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः ॥३५॥ आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥३६॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥३७॥ परे केवलिनः ॥३८॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्तीनि॥३९॥ त्र्येकयोगकाययोगायोगानाम्॥४०॥एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ॥४१॥ अवीचारं द्वितीयम् ॥४२॥ वितर्कः श्रुतम् ॥४३॥ वीचारोऽर्थव्यंजनयोगसंक्रांतिः॥४४॥ सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः ॥ ४५ ॥ पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ॥४६॥ संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिंगलेश्योपपादस्थानविकल्पतः साध्याः ॥४७॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः ॥९॥

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् ॥१॥ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः ॥२॥ औपशमिकादिभव्यत्वानां च ॥३॥ अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्यः ॥४॥ तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ॥५॥ पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च ॥६॥ आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपालाम्बुवदेरण्डबीजवदग्निशिखावच्च ॥७॥ धर्मास्तिकायाऽभावात् ॥८॥ क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनान्तरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥९॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वंदे तद्गुणलब्धये ।।

कोटिशतं द्वादशचैवकोट्यो लक्ष्याण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्यामेतद् श्रुतं पंचपदं नमामि ।।१।।

अरहंतभासियत्थं, गणहरदेवेहिं गंथियं सव्वं ।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाणमहोवयं सिरसा ।।२।।

अक्षरमात्रपदस्वरहीनं, व्यंजनसंधिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरत्रमम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ।।३।।

दशाध्याये परिच्छन्ने, तत्वार्थे पठिते सति ।
फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुङ्गवैः ।।४।।

तत्वार्थसूत्रकर्त्तारं गृद्ध्रपिच्छोपलक्षितम् ।
वंदे गणीन्द्रसंजातमुमास्वामिमुनीश्वरम् ।।५।।

जं सक्कइ तं कीरइ, जं पण सक्कइ तहेव सद्दहणं ।
सद्दहमाणो जीवो, पावइ अजरामरं ठाणं ।।६।।

तवयरणं वयधरणं, संजमशरणं च जीवदयाकरणम् ।
अंते समाहिमरणं, चउविहदुक्खं णिवारेई ।।७।।

इति तत्त्वार्थसूत्रापरनाम तत्त्वार्थाधिगममोक्षशास्त्रं समाप्तम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमात्म पूजन

[रचयिता :- रमेशचन्द्र वाझल्य]

स्थापना

सौभाग्य मुझे कब मिल पाये, सन्निकट आपके आजाऊँ। प्रभु शान्ति प्रदायक परमातम, शीतल मन में प्रभु पधराऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमातम जिनेन्द्राय अत्र अवतर अवतर संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

मैं जन्म जरा का रोगी प्रभु, अब तक नहिं रोग मिटा पाया। प्रभु रोग निवारण तुम्हें जान, मैं औषधि लेने हूँ आया ॥

उज्जवल निर्मल जल अर्पितकर, मैं जन्म जरा का नाश करूँ। मैं शरण आपकी आया हूँ, भवसागर को अब पार करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमातमजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०।

इस चाह दाह में जल-जल कर अगणित दुःख मैंने पाये हैं। पर चाह दाह नहिं मिटपाई, पर के गीतों को गाये हैं ॥

यह शीतल चन्दन अर्पितकर संसार ताप का नाश करूँ। मैं शरण आपकी आया हूँ, भव सागर को अब पार करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमातमजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संसार दुःखों का दरिया है, यह नरभव नाव अटकती है, संकल्प विकल्पक लहरों में, भम आतम शक्ति भटकती है ॥

यह उज्जवल अक्षत अर्पितकर, संसार ताप का नाश करूँ। मैं शरण आपकी आया हूँ, भव सागर को अब पार करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्म जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं नि० ।

नित काम भाव में ग्रसित रहा, क्षण भर भी निज सुख नहिं पाया । हत काम वासना से बचने, घबराकर चरणों में आया ॥

यह कुसुम सुकौमल अर्पितकर, निष्काम अवस्था मैं प्राप्त करूँ। मैं शरण आपकी आया हूँ, भव सागर को अब पार करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्म जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि० ।

मैं क्षुधा रोग से पीड़ित हूँ, चारों गतियों में भ्रम आया । जग के व्यंजन नाना खाये, संतृप्त क्षुधा नहिं कर पाया ॥

नैवेद्य सुव्यंजन अर्पितकर, मैं क्षुधा रोग का नाश करूँ। मैं शरण आपकी आया हूँ, भव सागर को अब पार करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोहान्ध नशे में चूर हुआ, आपापर को नहिं पहचाना। मिथ्यात्व महातममें पड़कर, मुक्ति का मार्ग नहीं जाना।
यह दीप समर्पण करके प्रभु, अन्तर में ज्ञान प्रकाश करूँ। मैं शरण आपकी आया हूँ भव सागर को अब पार करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०।

कर्मों की ज्वाला में पड़कर, अन्तर बल मेरा झुलस गया। ज्वालायें धधकी उमड़ घुमड़, वाहिज वैभव सब विनश गया ॥
यह धूप अनिल में क्षेपणकर, कर्मों से आत्म स्वतंत्र करूँ। मैं शरण आपकी आया हूँ, भव सागर को अब पार करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि०।

कर्मानुसार सब लौकिक फल, मैंने अनादि से भोगे हैं। विषयों में तन्मय रह रहकर रागादिक भाव संजोये हैं ॥
फल छह ऋतु के सब अर्पण कर, निर्वाण महाफल प्राप्त करूँ। मैं शरण आपकी आया हूँ, भव सागर को अब पार करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं नि०।

जल फल वसु द्रव्य मिला करके, यह अर्घ बनाया है प्रभुवर ! बन सकूं अतुल सम तुम जैसा, यह करूँ भावना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे जिनवर। यह अर्घ समर्पण कर प्रभुवर, अक्षय अनर्घ पद प्राप्त करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मजिनेन्द्राय अक्षय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

तीन भुवन के जीव को वीतराग है सार।
परमातम पद ध्याइये होवे मंगलाचार ॥

तुम तीन लोक के हो स्वामी, ज्ञाता दृष्टा अन्तर्यामी। भव की बाधायें छूट गई, तुम हुवे निराश्रय शिवगामी। संयोग भोग के अगणित थे, सब हेय समझ वैराग्य लिया। अक्षय अखण्ड सुख प्राप्त हेतु, पर से ममता का त्याग किया। आपा-पर का कर भेदरूप, नित निजानन्द रस पान किया। संकल्प विकल्प जला करके, अक्षय सुख का व्यपदेश लिया। आतम का नित चिन्तन करके, भव के बन्धन का नाश किया। हो गये सर्वज्ञ वीतरागी परमात्म पद को प्राप्त किया। तुमको लखकर है अभिलाशा, मैं भी स्वरूप का ध्यान धरूँ। परमात्म पद के प्राप्त हेतु तत्वों का यथा श्रद्धान करूँ।

दोहा

पूजन के नित करन से विषया शक्ति हो मन्द।
आपा-पर का भेद हो नाशे चतुर्गति फ़न्द।

ॐ ह्रीं श्री परमात्म जिनेन्द्राय पूर्ण अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महावीराष्टकस्तोत्र ।

शिखरिणी

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः । समं भांति ध्रौव्यव्ययजनिलसंतोऽन्तरहिताः ।। जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटनपरो भानुरिव यो । महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ।।१।। अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पंद-रहितं । जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यंतरमपि ।। स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वाति विमला । महावीर० ।।२।। नमन्नाकेंद्राली मुकुटमणिभाजालजटिलं । लसत्पादांभोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृतां ।। भवज्ज्वालाशान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि । महावीर० ।।३।। यदर्च्चाभावेन प्रमु-दितमना दर्दुर इह । क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगणसमृद्धः सुखनिधिः ।। लभंते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमु तदा ।।महावीर०।।४।। कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर्ज्ञाननिवहो विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः ।। अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोदभुतगतिर ।महावीर०।।५।। यदीया वाग्गंगा विविधनयकल्लोलविमला । वृहज्ज्ञानांभोभिर्ज-गति जनतां या स्नपयति ।। इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता महावीर० ।।६।। अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी कामसुभट । कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः ।। स्फुरन्नित्यानंदप्रशमपदराज्याय स जिनः । महावीर० ।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महामोहातङ्कप्रशमनपराकस्मिकभिषग् । निरापेक्षो बंधुर्विदितमहिमामंगलकरः ।। शरण्यः साधूनां भवभयभृतामुत्तमगुणो ।। महावीर० ।।८।।

महावीराष्टकं स्त्रोत्रं भक्त्या भागेंदुना कृतं ।
यः पठेच्छ्रुणुयाच्चापि स याति परमां गति ।।९।।

इति महावीराष्टकं स्तोत्रं समाप्तम् ।।

एकीभावस्तोत्र भाषा

दोहा

वादिराज मुनिराज के, चरणकमल चित लाय ।
भाषा एकीभावकी, करूं स्वपर सुखदाय ।।१।।

रोला छन्द अथवा "अहो जगत गुरुदेव०" वीनती की चाल में ।

जो अति एकीभाव भयो मानो अनिवारी सो मुझ कर्मप्रबंध करत भवभव दुख भारी ।। ताहि तिहारी भक्ति जगतरवि जो निरबारै । तो अब और कलेश कौन सों नाहिं विदारै ।।१।। तुम जिन जोतिस्वरूप दुरित अंधियारि निवारी । सो गणेश गुरु कहैं तत्त्वविद्याधनधारी ।। मेरे चितघरमांहि बसौ तेजोमय यावत । पापतिमिर अवकाश तहां सो क्योंकरि पावत ।।२।। आनंदओंसूवदन धोय तुमसों चित सानै । गदगद सुरसौं सुयशमंत्र पढ़ि पूजा ठानै ।। ताके बहुविधि व्याधि व्याल चिरकालनि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वासी। भाजैं थानक छोड़ देहवांबइ के वासी ॥३॥ दिवितैं आवनहार भये भविभागउदयबल। पहले ही सुर आय कनकमय कीय महीतल॥ मनगृहध्यानदुवार आय निवसो जगनामी। जो सुवरन तन करो कौन यह अचरज स्वामी ॥४॥ प्रभु सब जग के विनाहेतुबांधव उपकारी॥ निरावरन सर्वज्ञ शक्ति जिनराज तिहारी॥ भक्ति रचित ममचित्त सेज नित बास करोगे। मेरे दुख संताप देख किम धीर धरोगे ॥५॥ भववन में चिरकाल भ्रम्यो कछु कहिय न जाई। तुम थुतिकथापियूषवापिका भागन पाई॥ शशि तुषार घनसार हार शीतल नहिं जा सम। करत न्हौन तामांहि क्यों न भवताप बुझै मम ॥६॥ श्रीविहार परिवाह होत शुचिरूप सकल जग। कमलकनक आभाव सुरभि श्रीवास धरत पग॥ मेरो मन सर्वंग परस प्रभु को सुख पावै। अब सो कौन कल्यान जो न दिन दिन ढिग आवै ॥७॥ भवतज सुखपद बसे काममदसुभट संहारे॥ जो तुमको निरखत सदा प्रियदास तिहारे॥ तुम वचनामृतपान भक्ति अंजुलिसों पीवै। तिन्हैं भयानक क्रूररोगरिपु कैसे छीवै ॥८॥ मानथंभ पाषान आन पाषान पटंतर। ऐसे और अनेक रतन दीखैं जगअन्तर॥ देखत दृष्टिप्रमान मानमद तुरत मिटावै। जो तुम निकट न होय शक्ति यह क्यों कर पावै ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभुतन पर्वतपरस पवन उरमें निबहै है। तासों ततछिन सकल रोगरज बाहिर ह्वै है। जाके ध्यानाहूत बसो उर अंबुज माहीं। कौन जगत उपकारकरन समरथ सो नाहीं ॥१०॥ जनम जनमके दुःख सहे सब ते तुम जानो। याद किये मुझ हिये लगैं आयुधसे मानों। तुम दयाल जग-पालि स्वामि मैं शरन गहि है। जो कुछ करनी होय करो परमान वही है ॥११॥ मरन समय तुम नाम मंत्र जीवकतैं पायो। पापाचारी श्वान प्रान तज अमर कहायो॥ जो मणिमाला लेय जपै तुम नाम निरंतर। इन्द्रसम्पदा लहै कौन संशय इस अन्तर ॥१२॥ जो नर निर्मल ज्ञान मान शुचि चारित साधै। अनवधि सुखकी सारभक्ति कूंची नहि लाधै॥ सो शिवबांछक पुरुष मोक्षपट केम उघारै। मोह मुहर दिढ करी मोक्ष मंदिर के द्वारै ॥१३॥ शिवपुर केरो पंथ पापतमसों अतिछायो। दुखसरूप बहु कूपखाडसों बिकट बतायो॥ स्वामी सुखसों तहाँ कौन जन मारग लागैं। प्रभुप्रवचनमणिदीप जोति के आगैं आगैं ॥१४॥ कर्मपटलभूमाहिं दबी आतमनिधि भारी। देखत अतिसुख होय विमुखजन नाहिं उघारी॥ तुम सेवक ततकाल ताहि निहचै कर धारै। थुति कुदालसों खोद बंद भू कठिन बिदारै ॥१५॥ स्यादवादगिरि उपजै मोक्ष सागर लों धाई। तुम चरणांबुज परस भक्तिगंगा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुखदाई । मो चित निर्मल थयो न्होन रुचिपूरव तामैं । सब वह हो न मलीन कौन जिन संशय यामैं ।।१६।। तुम शिवसुखमय प्रगट करत प्रभु चिंतन तेरो । मैं भगवान समान भाव यों वरतै मेरो ।। यदपि झूठ है तदपि तृप्ति निश्चल उपजावै । तुव प्रसाद सकलंक जीव वांछित फल पावै ।।१७।। वचन जलधि तुम देव सकल त्रिभुवन में व्यापै । भंगतरंगिनि विकथवादमल मलिन उथापै ।। मनसुमेरुसों मथै ताहि जेसम्यग्ज्ञानी । परमामृत सों तृषत होंहि ते चिरलों प्रानी ।।१८।। जो कुदेव छबिहीन वसन भूषन अभिलाखे ।। बैरी सों भयभीत होय सो आयुध राखै ।। तुम सुंदर सर्वंग शत्रु समरथ नहिं कोई । भूषन वसन गदादि ग्रहन काहे को होई ।।१९।। सुरपति सेवा करै कहा प्रभु प्रभुता तेरी । सो सलाघना लहै मिटै जगसों जगफेरी । तुम भवजलधि जिहाज तोहि शिवकंत उचरिये । तुही जगत जनपाल नाथथुतिकी थुति करिये ।।२०।। वचनजाल जड़रूप आप चिन्मूरति झांई । तातैं थुति आलाप नाहिं पहुंचे तुम तांई तो भी निर्फल नाहिं भक्तिरसभीने वायक । संतन को सुरतरु समान वांछित वरदायक ।।२१।। कोप कभी नहिं करो प्रीति कबहूँ नहिं धारो । अति उदास बेचाह चित्त जिनराज तिहारो ।। तदपि आन जग बहै बैर तुम निकट न लहिये । यह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभुता जगतिलक कहां तुम बिन सरदहिये ॥२२॥ सुरतिय गावैं सुजश सर्वंगति ज्ञानस्वरूपी ॥ जो तुमको थिर होंहि नमैं भविआनंदरूपी ॥ ताहि छेमपुर चलनवाट बाकी नाह हो है। श्रुतके सुमरनमांहि सो न कबहूं नर मोहै ॥२३॥ अतुल चतुष्टयरूप तुमें जो चितमें धारै। आदरसों तिहुँकालमांहि जगथुति विस्तारै सो सुकृत शिवपंथ भक्तिरचना कर पूरै पंचकल्यानक ऋद्धि पाय निहचै दुख चूरै ॥२४॥ अहो जगत्पति पूज्य अवधिज्ञानी मुनि हारे। तुम गुनकीर्तनमांहि कौन हम मंद विचारे ॥ थुति छलसों तुमविषै देव आदर विस्तारे। शिवसुखपूरनहार कलपतरु यही हमारे ॥२५॥ वादिराज मुनिराज शब्द विद्या के स्वामी। वादिराज मुनिराज तर्क विद्या पतिनामी। वादिराज मुनिराज काव्य करता अधिकारी। वादिराज मुनिराज बड़े भवजन उपकारी ॥२९॥ वादिराज मुनि हैं काव्यनके ज्ञाना। वादिराज मुनि हैं भविजन के त्राता ॥

दोहा

मूल अर्थं बहुविधिकुसुम, भाषा सूत्र मंझार।
भक्तिमाल 'भूधर' करी, करो कंठ सुखकार ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगलाष्टकस्तोत्र भाषा

कवित्त

संघसहित श्रीकुंदकुंदगुरु, वदनहेत गये गिरनार। वाद परचो तहँ संशयमतिसों, साक्षी वदी अंबिकाकार॥ 'सत्य' पंथ निरग्रंथ दिगंबर, कही सुरी तहँ प्रगट पुकार। सो गुरुदेव बसौ उर मेरे, विघनहरण मंगल करतार॥१॥ स्वामि समंतभद्र मुनिवरसों, शिवकोटी हठ कियो अपार। वंदन करो शंभुपिंडीको, तब गुरु रच्यो स्वयंभू भार॥ वंदन करत पिंडिका फाटी, प्रगट भये जिन चंद्र उदार॥ सो० ॥२॥ श्रीअकलंकदेव मुनिवरसों, वाद रच्यौ जहँ बौद्ध विचार। तारादेवी घटमें थापी, पटके ओट करत उच्चार। जीत्यो स्याद-वादबल मुनिवर, बौद्धबोध तारामद टार। सो० ॥३॥ श्रीमत विद्यानंदि जबै, श्रीदेवागमथुति सुनी सुधार। अर्थहेत पहुँच्यो जिनमंदिर, मिल्यो अर्थ तहँ सुखदातार, तब व्रत परम दिगंबर को धर, परमत को कीनों परिहार। सो० ॥४॥ श्रीमत मानतुंग मुनिवर पर भूप कोप जब कियौ गँवार। बंद कियो तालों में तबही, भक्तामर गुरु रच्यौ उदार॥ चक्रेश्वरी प्रगट तब ह्वैके, बंधन काट कियो जयकार॥सो० ॥५॥ श्रीमत वादिराज मुनिवरसौं, कह्यो कुष्टि भूपति जिहँ बार॥ श्रावक सेठ कह्यो तिहँ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवसर, मेरे गुरु कंचन तनधार ।। तब ही एकीभाव रच्यो गुरु, तन सुवरणदुति भयौ अपार । सो० ।।६।। श्रीमत कुमुदचन्द्र मुनिवरसों, वाद परचो जहँ सभा मँझार । तब ही श्रीकल्यानधामथुति, श्रीगुरु रचना रची अपार ।। तब प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथकी, प्रगट भई त्रिभुवन जयकार । सो० ।।७।। श्रीमत अभयचन्द्र गुरुसों जब, दिल्लीपति इमि कही पुकार । कै तुम मोहि दिखावहु अतिशय, कै पकरौ मेरो मत सार ।। तब गुरु प्रगट अलौकिक अतिशय, तुरत हरचो ताको मदभार ।।सो० ८।।

दोहा

विघन हरण मंगल करण, वांछित फलदातार ।
'वृन्दावन' अष्टक रच्यो, करौ कंठ सुखकार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चैत्य वंदन

सद्द्वे देवलोके रविशशि भुवने व्यंतराणान्निकाये ।
नक्षत्राणां निवासे ग्रहगण पटले तारकाणां विमाने ।।
पाताले पन्नगेंदे स्फुटमणि किरणे ध्वस्त मिथ्यांधकारे ।
श्री मत्तीर्थङ्कराणां प्रति दिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ।।१।।

वैताड्ये मेरुश्रृंगे रुचिक नगवरे कुण्डले हस्तिदन्ते ।
वक्षारे कूटनाद्रौ सुर कनकगिरौ नैषधे नीलवन्ते ।।
चित्रे शैले विचित्रे यमक गिरिवरे चक्र वाले हिमाद्रौ ।
श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रति दिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ।।२।।

श्री शैले विंद्य श्रृंगे विपुल गिरवरे अर्बुदे मानवाद्रौ ।
सम्मेदे तारके वा कुलगिरि शिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ।
रित्काद्रौ चोर्जयंते विमल गिरवरे अञ्जने रोहिण्याटौ ।
श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रति दिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ।।३।।

सद्दीपे पञ्चमेरौ क्षिति तट मुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे ।
लाडे नाडे च घाटे विटपघनतटे देवकूटे विराटे ।।
कर्णाटे हेमकूटे विकट तरकुटे चक्रकूटे भुटंटे ।
श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रति दिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ।।४।।

अंगे बंगे कलिंगे धवल जिनगृहे सूरसेने तिलिंगे ।
गौडे चौडे मरूद्दे वरतर द्रविडे कंकणे चापपुण्डे ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्याघ्रे कौड्रे कलिंगे विजयजनपदे कर्ण-कूटे सुराष्ट्रे ।
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रति दिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ।।५।।

मेवाडे मालवे वा चतुर पुरवरे पुष्कले कच्छके वा ।
नेपाले लाहडे वा कुक्लयतिकले सिंहले पुङ्गले वा ।।
पाञ्चालेकौशले वा विरहति सलिले जाङ्गले वा तमाले ।
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रति दिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ।।६।।

चंपायां चंद्रपुर्यां गजपुर मथुरा पावकीं उज्जयिन्यां ।
कौशांबी कौशलायां कनकपुरवरे देव पुर्यांच काश्यां ।
लंकायां राजगेहे दशपुर नगरे भद्दले वा विदेहे ।
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रति दिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ।।७।।

संसर्गे अन्तरिक्षे गिरिशिखरतटे स्वर्नंनदीनीरतीरे ।
सुरलोके नागलोके जलनिधिपुलने भूरु-प्राणान्निकुज्जे ।।
ग्रामे वा दुर्गमे वा जलथल विषमे मध्यलोके त्रिलोके ।
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रति दिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ।।८।।

इत्यं श्री जैन चैत्य स्तवनमतिशयं भक्तिभाजांस्त्रिसंध्यं ।
प्रोद्यत्कल्याण हेतुं कलमलहरणं ये पठंते विशिष्टं ।।
तेषां श्रातीर्थयात्रा फलमतुलमलं जायते नोत्तमानं ।
कार्यं सिद्धि प्रसिद्धि प्रभवति सततं चित्तमानंदकारं ।।९।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाप्य मंत्र

गृहस्थों को नित्य प्रति सामर्थ्यानुसार एकाग्र चित्त होकर जाप्य करना चाहिये ।

१—महामंत्र—

णमो अरहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

२—अरहंत सिद्ध । ३—असिआऊसा ।

४—ॐ ह्रीं ऋषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः

५ · शांति मंत्रः—

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आऊसा सर्व विघ्नविनाशनाय शान्तिम् कुरु कुरु स्वाहाः ।

६—दशलक्षण पर्व में नित्य जाप्य योग्य मन्त्रः—

१—ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय नमः
२—ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय नमः
३—ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय नमः
४—ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्माङ्गाय नमः
५—ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्माङ्गाय नमः
६—ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्माङ्गाय नमः
७—ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्माङ्गाय नमः
८—ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्माङ्गाय नमः
९—ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्माङ्गाय नम.
१०—ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय नमः

७—रतनत्रय पर्व में नित्य जाप्य योग्य मन्त्र—

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग सम्यक् दर्शनेभ्यो नमः
ॐ ह्रीं अष्टविधि सम्यक् ज्ञानेभ्यो नमः
ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकार सम्यक् चरित्रेभ्यो नमः

❀इति शुभम् ❀

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवज्जिनसेनाचार्यकृतं

श्रीजिनसहस्रनामस्तोत्रं।

स्वयंभुवे नमस्तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि ।
स्वात्मनैव तथोद्भूतवृत्तयेऽचिंत्यवृत्तये ॥१॥
नमस्ते जगतां पत्ये लक्ष्मीः भर्त्रे नमो नमः ।
विदांवर नमस्तुभ्यं नमस्ते वदतांवर ॥२॥
कामशत्रुहणं देवमामनंति मनीषिणः ।
त्वामानुमस्सुरैर्मौलिभामालाभ्यर्चितक्रमम् ॥३॥
ध्यानदुर्घणनिर्भिन्नघनघातिमहातरुः ।
अनंतभवसंतानजयोप्यासीरनंतजित् ॥४॥
त्रैलोक्यनिर्जयाव्याप्तदुर्दर्प्पमतिदुर्जयं ।
मृत्युराजं विजित्यासीज्जन्ममृत्युंजयो भवान् ॥५॥
विधूताशेषसंसारो बंधुर्नो भव्यबांधवः ।
त्रिपुरारिस्त्वमीशोसि जन्ममृत्युजरांतकृत ॥६॥
त्रिकालविजयाशेषतत्त्वभेदात् त्रिधोज्झितं ।
केवलाख्यं दधच्चक्षुस्त्रिनेत्रोसि त्वमीशिता ॥७॥
त्वामंधकांतकं प्राहुर्मोहांधासुरमर्द्दनात् ।
अर्द्धन्ते नारयो यस्मादर्धनारीश्वरोस्युत ॥८॥
शिवः शिवपदाध्यासाद् दुरितारिहरो हरः ।
शंकरः कृतशं लोके संभवस्त्वं भवन्मुखे ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वृषभोसि जगज्ज्येष्ठः गुरुर्गुरु गुणोदयैः ।
नाभेयो नाभिसंभूतेरिक्ष्वाकुकुल नंदनः । १०॥
त्वमेकः पुरुषस्कंधस्त्वं द्वे लोकस्य लोचने ।
त्वं त्रिधाबुधसन्मार्गस्त्रिज्ञस्त्रिज्ञानधारकः ॥११॥
चतुर्मांगल्यमूर्तिस्त्वं शरणं चतुरः सुधीः ।
पंच ब्रह्ममयो देवः पावनस्त्वं पुनीहि मां ॥१२॥
स्वर्गावतारिणे तुभ्यं सद्योजातात्मने नमः ।
जन्माभिषेकवामाय वामदेव नमोस्तु ते ॥१३॥
सुनिःक्रांताय घोराय परं प्रशममीयुषे ।
केवलज्ञानसंसिद्धावीशानाय नमोस्तु ते ॥१४॥
पुरुस्तत्पुरुषत्वेन विमुक्तपदभागिने ।
नमस्तत्पुरुषावस्थां भावनार्णवंविभ्रते ॥१५॥
ज्ञानावरणनिर्हास नमस्तेऽनंतचक्षुषे ।
दर्शनावरणोच्छेदान्नमस्ते विश्वदर्शिने ॥१६॥
नमो दर्शनमोहादिक्षायिकामलदृष्टये ।
नमश्चारित्रमोहघ्ने विरागाय महौजसे ॥१७॥
नमस्तेऽनंतवीर्याय नमोऽनंतसुखाय ते ।
नमस्तेनंतलोकाय लोकालोकविलोकिने ॥१८॥
नमस्तेऽनंतदानाय नमस्तेऽनंतलब्धये ।
नमस्तेऽनंतभोगाय नमोऽनंताय भागिने ॥१९॥
नमः परमयोगाय नमस्तुभ्यमयोनये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नमः परमपूताय नमस्ते परमर्षये ॥२०॥
नमः परमविद्याय नमः परमवच्छिदे।
नमः परमतत्त्वाय नमस्ते परमात्मने ॥२१॥
नमः परमरूपाय नमः परमतेजसे।
नमः परममार्गाय नमस्ते परमेष्ठिने ॥२२॥
परमर्द्धिजुषे धाम्ने परमज्योतिषे नमः।
नमः पारेतमः प्राप्तधाम्ने ते परमात्मने ॥२३॥
नमः क्षीण कलंकाय क्षीणबंध नमोस्तु ते।
नमस्ते क्षीणमोहाय क्षीणदोषाय ते नमः ॥२४॥
नमः सुगतये तुभ्यं शोभनागतमीयुषे।
नमस्तेऽतींद्रियज्ञानसुखायानिंद्रियात्मने ॥२५॥
कायबंधननिर्मोक्षादकायाय नमोस्तु ते।
नमस्तुभ्यमयोगाय योगिनामपि योगिने ॥२६॥
अवेदाय नमस्तुभ्यमकषायाय ते नमः।
नमः परमयोगींद्रवंदितांघ्रिद्वयाय ते ॥२७॥
नमः परम विज्ञान नमः परमसंयम।
नमः परमदृग्दृष्टपरमार्थाय ते नमः ॥२८॥
नमस्तुभ्यमलेश्याय शुक्ललेश्यांशकस्पृशे।
नमो भव्येतरावस्थाव्यतीताय विमोक्षणे ॥२९॥
संज्ञासंज्ञिद्वयावस्थाव्यतिरिक्तामलात्मने।
नमस्ते वीतसंज्ञाय नमः क्षायिकदृष्टये ॥३०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनाहाराय तृप्ताय नमः परमभाजुषे ।
व्यतीताशेषदोषाय भवाद्ध‍े पारमीयुषे ॥३१॥
अजराय नमस्तुभ्यं नमस्तेतीतजन्मने,
अमृत्यवे नमस्तुभ्यमचलायाक्षरात्मने ॥३२॥
अलमास्तां गुणस्तोत्रमनंतास्तावका गुणाः ।
त्वन्नामस्मृतिमात्रेण परमं शं प्रशास्महे ॥३३॥
एवं स्तुत्वा जिनं देवं भक्त्यापरमया सुधीः ।
पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं पाप शांतये ॥३४॥

इति प्रस्तावना ।

प्रसिद्धाष्टसहस्रेद्धलक्षणंत्वांगिरां पतिम्नाम्ना-
मष्टसहस्रेण त्वांतोष्टुमोभीष्टसिद्धये ॥१॥
श्रीमान्स्वयंभूर्वृषभः शंभवः शंभुरात्मभूः ।
स्वयंप्रभः प्रभुभोक्ता विश्वभूरपुनर्भव ॥२॥
विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वतश्चक्षुरक्षरः
विश्वविद्विश्वविद्येशो विश्वयोनिरनीश्वरः ॥३॥
विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः ।
विश्वव्यापी विधिर्वेधाः शाश्वतो विश्वतोमुखः॥४॥
विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः।
विश्वदृगविश्वभूतेशो विश्वज्योतिरनीश्वरः॥५॥
जिनो जिष्णुरमेयात्मा जगदीशो जगत्पतिः ।
अनंतचिदचिंत्यात्मा भव्यबंधुरबंधनः ॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युगादिपुरुषो ब्रह्मा पंचब्रह्ममय शिवः ।
परः परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठो सनातनः ॥७॥
स्वयंज्योतिरजोऽजन्मा ब्रह्मयोनिरयोनिजः
मोहारिविजयी जेता धर्मचक्री दयाध्वजः ॥८॥
प्रशांतारिरनंतात्मा योगी योगीश्वरार्चितः ।
ब्रह्मविद् ब्रह्मतत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्याविद्यतीश्वरः ॥९॥
शुद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः ।
सिद्धः सिद्धांतविद्ध्येयः सिद्धसाध्यो जगद्धितः ॥१०॥
सहिष्णुरच्युतोऽनंतः प्रभविष्णुर्भवोद्भवः ।
प्रभूष्णुरजरोऽजर्यो भ्राजिष्णुर्धीश्वरोऽव्ययः ॥११॥
विभावसुरसंभूष्णुः स्वयंभूष्णु पुरातनः ।
परमात्मा परंज्योतिस्त्रिजगत्परमेश्वरः ॥१२॥

॥ इति श्रीमदादि शतम् ॥१॥

(यहां उदकचंदनतंदुल....आदि श्लोक पढ़कर अर्घं चढ़ाना चाहिये)

दिव्यभाषापतिर्दिव्यः पूतवाक्पूतशासनः ।
पूतात्मा परमज्योतिधर्माध्यक्षो दमीश्वरः ॥१॥
श्रीपतिर्भगवानर्हन्नरजाविरजाः शुचिः ।
तीर्थंकृत्केवली शांतः पूजार्हः स्नातकोऽमलः ॥२॥
अनंतदीप्तिर्ज्ञानात्मा स्वयंबुद्धः प्रजापतिः ।
मुक्तः शक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वरः ॥३॥
निरंजनो जगज्ज्योतिर्निरुक्तोक्तिर्निरामयः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अचलस्थितिरक्षोभ्यः कूटस्थ स्थाणुरक्षयः ॥४॥
अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृत् ।
शास्ता धर्मपतिर्धर्म्यो धर्मात्मा धर्मतीर्थकृत् ॥५॥
वृषध्वजो वृषाधीशो वृषकेतुर्वृषायुधः ।
वृषो वृषपतिर्भर्ता वृषभांको वृषोद्भवः ॥६॥
हिरण्यनाभिर्भूतात्मा भृतभृद्भूतभावनः ।
प्रभवोविभवो भास्वान् भवो भावो भतांतकः ॥७॥
हिरण्यगर्भः श्रीगर्भः प्रभूतविभवोद्भवः ।
स्वयंप्रभुः प्रभूतात्मा भूतनाथो जगत्प्रभुः ॥८॥
सर्वादिः सर्वदृक् सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः ।
सर्वात्मा सर्वलोकेशः सर्ववित्सर्वलोकजित् ॥९॥
सुगतिः सुश्रुतः सुश्रुक् सुवाक् सूरिबहुश्रुतः ।
विश्रुतः विश्वतः पादो विश्वशीर्षः शुचिश्रवा ॥१०॥
सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
भूतभव्यभवद्भर्ता विश्वविद्या महेश्वरः ॥११॥

इति दिव्यादिशतम् ॥२॥ अर्घं ॥

स्थविष्ठः स्थविरो जेष्ठः पृष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठधीः ।
स्थेष्ठो गरिष्ठो वंहिष्ठः श्रेष्ठो निष्ठो गरिष्ठगीः ॥१॥
विश्वभृद्विश्वसृट् विश्वेट् विश्वभुग्विश्वनायकः ।
विश्वाशीर्विश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितांतकः ॥२॥
विभवो विभयो वीरो विशोको विजरो जरन् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विरागो विरतोऽसंगी विविक्तो वीतमत्सरः ॥३॥
विनयेजनताबंधुर्विलीनाशेषकल्मषः ।
वियोगो योगविद्विद्वान्विधाता सुविधिः सुधीः ॥४॥
क्षांतिभाक्पृथिवी मूर्तिः शांतिभाक्सलिलात्मकः ।
वायुमूर्तिरसंगात्मा वह्निमूर्तिरधर्मधृक् ॥५॥
सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सुत्रामपूजितः ।
ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञो यज्ञाङ्गममृतं हविः ॥६॥
व्योममूर्तिरमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचलः ।
सोममूर्तिः सुसौम्यात्मा सूर्यमूर्तिर्महाप्रभः ॥७॥
मंत्रविन्मंत्रकृन्मंत्री मंत्रमूर्तिरनंतकः ।
स्वतंत्रस्तंत्रकृत्स्वांतः कृतांतांतः कृतांतकृत् ॥८॥
कृती कृतार्थः सत्कृत्यः कृतकृत्यः कृतक्रतुः ।
नित्यो मृत्युंजयो मृत्युरमृतात्मामृतोद्भवः ॥९॥
ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्म ब्रह्मात्मा ब्रह्मसंभवः ।
महाब्रह्मपतिर्ब्रह्मेट् महाब्रह्मपदेश्वरः ॥१०॥
सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा ज्ञानधर्मदमप्रभुः ।
प्रशमात्मा प्रशांतात्मा पुराणपुरुषोत्तमः ॥११॥

इति स्थविष्ठादिशतम् ॥ ३ ॥ अर्घं ।

महाशोकध्वजोऽशोकः कः स्रष्टापद्मविष्टरः ।
पद्मेशः पद्मसंभूतिः पद्मनाभिरनुत्तरः ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्मयोनिर्जगद्योनिरित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः ।
स्तवनार्हो हृषीकेशो जितजेयः कृतक्रियः ॥२॥
गणाधिपो गणज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणीः ।
गुणाकरो गुणांभोधिर्गुणज्ञो गुणनायकः ॥३॥
गुणाकरी गुणोच्छेदी निर्गुणः पुण्यगीर्गुणः ।
शरण्यः पुण्यवाक्पूतो वरेण्यः पुण्यनायकः ॥४॥
अगण्यः पुण्यधीर्गण्यः पुण्यकृत्पुण्यशासनः ।
धर्मारामो गुणग्रामः पुण्यापुण्यनिरोधकः ॥५॥
पापापेतो विपापात्मा विपाप्मा वीतकल्मषः ।
निर्द्वंद्वो निर्मदः शांतो निर्मोहो निरुपद्रवः ॥६॥
निर्निमेषो निराहारी निःक्रियोनिरुपप्लवः ।
निष्कलंको निरस्तैना निर्धूतांगो निराश्रयः ॥७॥
विशालो विपुलज्योतिरतुलोचिंत्यवैभवः ।
सुसंवृतः सुगुप्तात्मा सुव्रत्सुनयतत्त्ववित् ॥८॥
एकविद्यो महाविद्यो मुनिः परिवृढ़ः पतिः ।
धीशो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विहतांतकः ॥९॥
पिता पितामहः पाता पवित्रः पावनो गतिः ।
त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परमः पुमान् ॥१०॥
कविः पुराणपुरुषो वर्षीयान्वृषभः पुरुः ।
प्रतिष्ठाप्रसवो हेतुर्भुवनैकपितामहः ॥११॥

इति महाशोकध्वजादिशतम् ॥ ४ ॥ अर्घं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीवृक्षलक्षणः श्लक्ष्णो लक्षण्यः शुभलक्षणः ।
निरक्षः पुण्डरीकाक्षः पुष्कलः पुष्करेक्षणः ॥१॥
सिद्धिदः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धात्मा सिद्धसाधनः ।
बुद्धबोध्यो महाबोधिर्वर्धमानो महर्द्धिकः ॥२॥
वेदाङ्गो वेदविद्वेद्यो जातरूपो विदांवरः ।
वेदवेद्यः स्वसंवद्यो विवेदो वदतांवरः ॥३॥
अनादि निधनोऽव्यक्तो व्यक्तवाग्व्यक्तशासनः ।
युगादिकृद्युगाधारो युगादिर्जगदादिजः ॥४॥
अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो धीन्द्रो महेन्द्रोऽतीन्द्रियार्थदृक् ।
अनिन्द्रियोऽहमिन्द्राच्र्यो महेन्द्रमहितो महान् ॥५॥
उद्भवः कारणं कर्ता पारगो भवतारकः ।
अग्राह्यो गहनं गुह्यं परार्ध्यः परमेश्वरः ॥६॥
अनन्तर्द्धिरमेयर्द्धिरचिन्त्यर्द्धिः समग्रधीः ।
प्राग्रयः प्राग्रहरोऽभ्यग्रः प्रत्यग्रोऽग्रयऽग्रिमोऽग्रजः ॥७॥
महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः ।
महायशा महाधामा महासत्वो महाधृतिः ॥८॥
महाधैर्यो महावीर्यो महासंपन्महाबलः ।
महाशक्तिर्महाज्योतिर्महामूर्तिर्महाद्युतिः ॥९॥
महामतिर्महानीतिर्महाक्षांतिर्महोदयः ।
महाप्राज्ञो महाभागो महानंदो महाकविः ॥१०॥
महामहामहाकीर्तिर्महाकांतिर्महावपुः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महादानो महाज्ञानो महायोगो महागुणः ।।११।।
महामहपतिः प्राप्तमहाकल्याणपंचकः ।
महाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः ।।१२।।
इति श्रीवृक्षादिशतम् ।। ५ ।। अर्घं ।

महामुनिर्महामौनो महाध्यानी महादमः ।
महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः ।।१।।
महाव्रतपतिर्मह्यो महाकांतिधरोऽधिपः ।
महामैत्रीमहाऽमेयो महोपायो महोदयः ।।२।।
महाकारुण्यको मंता महामंत्रो महायतिः ।
महानादो महाघोषो महेज्यो महसांपतिः ।।३।।
महाध्वरधरो धुर्यो महौदार्यो महेष्टवाक् ।
महात्मा महासांधाम महर्षिर्महितोदयः ।।४।।
महाक्लेशांकुशः शूरो महाभूतपतिर्गुरुः ।
महापराक्रमोऽनंतो महाक्रोधरिपुर्वशी ।।५।।
महाभवाब्धिसंतारिर्महामोहाद्रि सूदनः ।
महागुणाकरः क्षांतो महायोगीश्वरः शमी ।।६।।
महाध्यानपतिर्ध्याता महाधर्मा महाव्रतः ।
महाकर्मारिरात्मज्ञो महादेवो महेशिता ।।७।।
सर्वक्लेशापहः साधुः सर्वदोषहरो हरः ।
असंख्ययोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः ।।८।।
सर्वयोगीश्वरोऽचिन्त्यः श्रुतात्मा विष्टरश्रवाः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दांतात्मा दमतीर्थेशो योगात्मा ज्ञानसर्वगः ॥९॥
प्रधानमात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः ।
प्रक्षीणबन्धः कामारिः क्षेमकृत्क्षेमशासनः ॥१०॥
प्रणवः प्रणयः प्राणः प्राणदः प्रणतेश्वरः ।
प्रमाणं प्रणिधिर्दक्षो दक्षिणोऽध्वर्युरध्वरः ॥११॥
आनन्दो नन्दनो नन्दो वन्द्योऽनिन्द्योऽभिनन्दनः ।
कामहा कामदः काम्यः कामधेनुररिंजयः ॥१२॥

इति महामुन्यादिशतम् ॥६॥ अर्घं ॥

असंस्कृतः सुसंस्कारः प्राकृतो वैकृतांतकृत् ।
अंतकृत्कांतिगुः कांतिश्चिंतामणिरभीष्टदः ॥१॥
अजितो जितकामारिरमितोऽमितशासनः ।
जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशोजितान्तकः ॥२॥
जिनेन्द्रः परमानन्दो मुनीन्द्रो दुन्दुभिस्वनः ।
महेन्द्रवंद्यो योगीन्द्रो यतीन्द्रो नाभिनन्दनः ॥३॥
नाभेयो नाभिजो जातः सुव्रतो मनुरुत्तमः ।
अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वानधिकोऽधिगुरुः सुधीः ॥४॥
सुमेधा विक्रमी स्वामी दुराधर्षो निरुत्सुकः ।
विशिष्टः शिष्टभुक् शिष्टः प्रत्ययः कामनोऽनघः ॥५॥
क्षेमी क्षेमंकरोऽक्षय्यः क्षेमधर्मपतिः क्षमी ।
अग्राह्यो ज्ञाननिग्राह्यो ध्यानगम्यो निरुत्तरः ॥६॥
सुकृती धातुरिज्यार्हः सुनयश्चतुराननः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुखः ॥७॥
सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक्सत्यशासनः ।
सत्यसंधानः सत्यः सत्यपरायणः ॥८॥
स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान्दूरदर्शनः ।
अणोरणीयाननणुर्गुरुराद्यो गरीयसां ॥९॥
सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः ।
सदागतिः सदा सौख्यः सदाविद्यः सदोदयः ॥१०॥
सुघोषः सुमुखः सौम्यः सुखदः सुहितः सुहृत् ।
सुगुप्तोगुप्तिभृद्गोप्ता लोकाध्यक्षो दमीश्वरः ॥११॥

इति असंस्कृतादिशतम् ॥ ७ ॥ अर्घ ।

बृहन्बृहस्पतिर्वाग्मी वाचस्पतिरुदारधीः ।
मनीषी धिषणो धीमांञ्छेमुषीशो गिरांपतिः ॥१॥
नैकरूपो नयस्तुंगो नैकात्मा नैकधर्मकृत् ।
अविज्ञेयोऽप्रतर्क्यात्मा कृतज्ञः कृतलक्षणः ॥२॥
ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वरः ।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भः सुदर्शनः ॥३॥
लक्ष्मीवांस्त्रिदशाध्यक्षो दृढियानिनि ईशिता ।
मनोहरो मनोज्ञांगो धीरो गंभीरशासनः ॥४॥
धर्मयूपो दयायागो धर्मनेमिर्मुनीश्वरः ।
धर्मचक्रायुधो देवः कर्महा धर्मघोषणः ॥५॥
अमोघवागमोघाज्ञो निर्मलोऽमोघशासनः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरूपः सुभगस्त्यागी समयज्ञः समाहितः ॥६॥
सुस्थितः स्वास्थ्यभाक्स्वस्थो नीरजस्को निरुद्धवः ।
अलेपो निष्कलंकात्मा वीतरागो गतस्पृहः ॥७॥
वश्येंद्रियो विमुक्तात्मा निःसपत्नो जितेन्द्रियः ।
प्रशांतोऽनंतधामर्षिर्मंगलं मलहानघः ॥८॥
अनीदृगुपमाभूतो दृष्टिर्दैवमगोचरः ।
अमूर्त्तो मूर्तिमानेको नैको नानैकतत्त्वदृक् ॥९॥
अध्यात्मगम्यो गम्यात्मा योगविद्योगिवंदितः ।
सर्वत्रगः सदाभावी त्रिकालविषयार्थदृक् ॥१०॥
शंकरः शंवदो दांतो दमी क्षांतिपरायणः ।
अधिपः परमानन्दः परात्मज्ञः परात्परः ॥११॥
त्रिजगद्वल्लभोऽभ्यर्च्यस्त्रिजगन्मङ्गलोदयः ।
त्रिजगत्पतिपूजांघ्रिस्त्रिलोकाग्रशिखामणिः ॥१२॥

इति बृहदादिशतम् ॥ ८ ॥ अर्घं ।

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोकधाता दृढव्रतः ।
सर्वलोकातिगः पूज्यः सर्वलोकैकसारथिः ॥१॥
पुराणपुरुषः पूर्वः कृतपूर्वाङ्गविस्तरः ।
आदिदेवः पुराणाद्यः पुरुदेवोऽधिदेवता ॥२॥
युगमुख्यो युगज्येष्ठो युगादिस्थितिदेशकः ।
कल्याणवर्णः कल्याणः कल्यः कल्याणलक्षणः ॥३॥
कल्याणः प्रकृतिर्दीप्तः कल्याणात्मा विकल्मष ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विकलंकः कलातीतः कलिलघ्नः कलाधरः ।।४।।
देवदेवो जगन्नाथो जगद्बन्धुर्जगद्विभुः ।
जगद्धितैषी लोकज्ञः सर्वगो जगदग्रजः ।।५।।
चराचरगुरुर्गोप्यो गूढ़ात्मा गूढ़गोचरः ।
सद्योजातः प्रकाशात्मा ज्वलज्ज्वलनसप्रभः ।।६।।
आदित्यवर्णो भर्माभः सुप्रभः कनकप्रभः ।
सुवर्णवर्णो रुक्माभसूर्यकोटिसमप्रभः ।।७।।
तपनीयनिभस्तुंगो बालार्काभोऽनलप्रभः ।
संध्याभ्रबभ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरच्छविः ।।८।।
निष्टप्तकनकच्छायः कनत्कांचनसन्निभः ।
हिरण्यवर्णः स्वर्णाभः शातकुंभनिभप्रभः ।।९।।
द्युम्नभाजातरूपाभो दीप्तजांबूनदद्युतिः ।
सुधौतकलधौतश्रीः प्रदीप्तो हाटकद्युतिः ।।१०।।
शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरक्षमः ।
शत्रुघ्नोप्रतिघोऽमोघः प्रशास्ता शासिता स्वभूः ।।११।।
शांतिनिष्ठो मुनिज्ज्येष्ठः शिवतातिः शिवप्रदः ।
शांतिदः शांतिकृच्छांतिः कान्तिमान्कामितप्रदः ।।१२।।
श्रेयोनिधिरधिष्ठानमप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः ।
सुस्थितः स्थावर स्थाणुः प्रथीयान्प्रथितः पृथुः ।।३।।

इति त्रिकालदर्श्यादिशतम् ।।९।। अर्घं ।

दिग्वासा वातरशनो निर्ग्रंथेशो निरंबर ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निष्किंचनो निराशंसो ज्ञान चक्षुरमोमुहः ॥१॥
तेजोराशिरनंतौजःज्ञानाब्धिः शीलसागरः ।
तेजोमयोऽमितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्तमोपहः ॥२॥
जगच्चूडामणिर्दीप्तः सर्वविघ्नविनायकः ।
कलिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो लोकालोकप्रकाशकः ॥३॥
अनिद्रालुरतन्द्रालुर्जागरूकः प्रमामयः ।
लक्ष्मीपतिर्जगज्ज्योतिर्धर्मराजः प्रजाहितः ॥४॥
मुमुक्षुर्बन्धमोक्षज्ञो जिताक्षो जितमन्मथः ।
प्रशान्तरसशैलूषो भव्यपेटकनायकः ॥५॥
मूलकर्ताखिलज्योतिर्मलघ्नो मूलकारणः ।
आप्तो वागीश्वरः श्रेयाञ्छ्रायसोक्तिर्निरुक्तवाक् ॥६॥
प्रवक्ता वचसामीशो मारजिद्विश्वभाववित् ।
सुतनुस्तनुर्निर्मुक्तः सुगतो हतदुर्नयः ॥७॥
श्रीशः श्रीश्रितपादाब्जो वीतभीरभयंकरः ।
उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सलः ॥८॥
लोकोत्तरो लोकपतिर्लोकचक्षुरपारधीः ।
धीरधीर्बुद्धसन्मार्ग शुद्धः सूनृत पूतवाक् ॥९॥
प्रज्ञापारमितः प्राज्ञोयतिर्नियमितेन्द्रिय ।
भदन्तो भद्रकृद्भद्रः कल्पवृक्षो वरप्रदः ॥१०॥
समुन्मूलितकर्मारिः कर्मकाष्ठाशुशुक्षणिः ।
कर्मण्यः कर्मठः प्रांशुर्हेयादेयविचक्षणः ॥११॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनन्तशक्तिरच्छेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रिलोचनः।
त्रिनेत्रस्त्र्यंबकस्त्र्यक्षः केवलज्ञानवीक्षणः ॥१२॥
समन्तभद्रः शान्तारिर्धर्माचार्यो दयानिधिः।
सूक्ष्मदर्शी जितानंगः कृपालुर्धर्मदेशकः ॥१३॥
शुभंयुः सुखसाद्भूतः पुण्यराशिरनामयः।
धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्यनायकः ॥१४॥

इति दिग्वासादिशतं ॥१०॥ इत्याष्टाधिक सहस्रनामावली। अर्घं

धाम्नांपते तवामूनि नामान्यागमकोविदैः।
समुच्चितान्यनुध्यायन्पुमान्पूतस्मृतिर्भवेत् ॥१॥
गोचरोऽपि गिरामासां त्वमवाग्गोचरो मतः।
स्तोता तथाप्यसंदिग्धत्वत्तोऽभीष्टफलं लभेत् ॥२॥
त्वमतोऽसि जगद्बन्धुस्त्वमतोऽसि जगद्भिषक्।
त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः ॥३॥
त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वंद्विरूपोपयोगभाक्।
त्वं त्रिरूपैकमुक्त्यंगः सोत्थानंतचतुष्टयः ॥४॥
त्वं पंचब्रह्मतत्त्वात्मा पंचकल्याणनायकः।
षड्भेदभावतत्त्वज्ञस्त्वं सप्तनयसंग्रहः ॥५॥
दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वं नवकेवललब्धिकः।
दशावतारनिर्धार्यो मां पाहि परमेश्वर ॥६॥
युष्मन्नामावलीदृब्धविलसत्स्तोत्रमालया।
भवंतं वरिवस्यामः प्रसीदानुगृहाण नः ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इदं स्तोत्रमनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिकः ।
यः सपाठं पठत्येनं स स्यात्कल्याणभाजनं ॥८॥
ततः सदेदं पुण्यार्थी पुमान्पठति पुण्यधीः ।
पौरुहूतीं श्रियं प्राप्तुं परमामभिलाषुकः ॥९॥
स्तुत्वेति मघवा देवं चराचरजगद्गुरुं ।
ततस्तीर्थविहारस्य व्यधात्प्रस्तावनामिमां ॥१०॥

स्तुतिः पुण्यगुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः ।
निष्ठितार्थो भवांस्तुत्यः फलं नैश्रेयसं सुखं ॥११॥

यः स्तुत्यो जगतां त्रयस्य न पुनः स्तोता स्वयं कस्यचित् ।
ध्येयो योगिजनस्य यश्च नितरां ध्याता स्वयं कस्यचित्॥
यो नेतॄन् नयते नमस्कृतिमलं नंतव्यपक्षेक्षणः
स श्रीमान् जगतां त्रयस्य च गुरुर्देव पुरुः पावनः॥१२॥

तं देवं त्रिदशाधिपार्चितपदं घातिक्षयानन्तरं ।
प्रोत्थानंतचतुष्टयं जिनमिनं भव्याब्जनीनामिनं ।
मानस्तंभविलोकनानतजगन्मान्यं त्रिलोकीपतिं ।
प्राप्ताचिन्त्यबहिर्विभूतिमनघं भक्त्या प्रवंदामहे ॥१३॥

पुष्पांञ्जलि क्षिपामि ।

इति श्री भगवज्जिनसेनाचार्यं विरचित जिनसहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ स्वयंभूस्तोत्र भाषा

राजविषै जुगलनि सुख कियो, राज त्याग भुवि शिवपद लियो ।। स्वयंबोध स्वयंभू भगवान, वंदौ आदिनाथ गुणखान ।।१।। इन्द्र छीरसारजल लाय, मेरु न्हवाये गाय बजाय ।। मदनविनाशक सुखकरतार, बंदौ अजित अजितपदकार ।।२।। शुकलध्यानकरि कर्मविनाशि, घाति अघाति सकल दुखराशि ।। लह्यो मुकतिपदसुख अविकार, बन्दौं संभव भवदुखटार ।।३।। माता पच्छिम रयनमंझार, सुपने सोलह देखे सार ।। भूप पूछि फल सुनि हरषाय, बंदौं अभिनन्दन मनलाय ।।४।। सब कुवादवादी सरदार, जीते स्यादवादधुनिधार ।। जैनधरमपरकाशक स्वाम, सुमतिदेवपद करहुं प्रनाम ।।५।। गर्भ अगाऊ धनपति आय । करी नगर शोभा अधिकाय ।। वरसे रतन पंचदश मास । नमौं पदमप्रभु सुखकी रास ।।६।। इन्द्र फनिन्द्र नरेन्द्र त्रिकाल । बानी सुनि सुनि होंहि खुस्याल ।। द्वादशसभा ज्ञानदातार । नमों सुपारसनाथ निहार ।।७।। सुगुन छियालिस हैं तुममांहि । दोष अठारह कोऊ नांहि ।। मोहमहातमनाशक दीप । नमौं चंद्रप्रभ राख समीप ।।८।। द्वादशविधि तप करम विनाश । तेरहभेद चरित परकाश ।। निज अनिच्छ भवि इच्छक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दान। वंदौं पुहुपदंत मनआन ।। भविसुखदाय सुरगतैं आय। दशविध धरम कह्यो जिनराय ।। आप समान सबनि सुख देह। बंदौं शीतल धर्म स्नेह ।।१०।। समता सुधा कोपविषनाश। द्वादशांगवानी परकाश ।। चारसंघ आनंददातार। नमौं श्रियांस जिनेश्वर सार ।।११।। रतनत्रयचिरमुकुटविशाल। सोभै कंठ सुगुन मनिमाल ।। मुक्तिनार भरता भगवान। वासुपूज्य बंदौं धर ध्यान ।।१२।। परम समाधिस्वरूप जिनेश। ज्ञानी ध्यानी हित उपदेश ।। कर्मनाशि शिवसुख विलसंत। बन्दौं विमलनाथ भगवंत ।।१३।। अन्तर बाहिर परिग्रह डारि। परमदिगम्बरव्रतको धारि ।। सर्वजीवहित-राह दिखाय। नमौं अनंत वचनमनलाय ।।१४।। सात तत्त्व पंचासतिकाय। अरथ न वो छ दरब बहु भाय ।। लोक अलोक सकल परकाश। बन्दौं धर्मनाथ अविनाश ।।१५।। पंचम चक्रवरति निधिभोग। कामदेव द्वादशम मनोग। शांति करन सोलम जिनराय। शांतिनाथ बंदौं हरषाय ।।१६।। बहुथुति करै हरष नहिं होय। निंदे दोष गहै नहिं कोय ।। शीलवान परब्रह्मस्वरूप। बंदौं कुंथुनाथ शिवभूप ।।१७।। द्वादशगण पूजे सुखदाय। थुतिवन्दना करै अधिकाय ।। जाकी निजथुति कबहुँ न होय। बन्दौं अरजिनवर पद दोय ।।१८।। परभव रतनत्रय-अनुराग। इहभव ब्याह-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय वैराग ।। बालब्रह्मपूरनव्रतधार । बन्दौं मल्लिनाथ जिनसार ।।१९।। बिन उपदेश स्वयं वैराग । थुति लौकांत करै पगलाग ।। नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहिं । बंदौं मुनिसुव्रत व्रत देहिं ।।२०।। श्रावक विद्यावन्त निहार । भगतिभावसों दियो आहार ।। बरसे रतनराशि ततकाल बंदौं नमिप्रभु दीनदयाल ।।२१।। सब जीवनकी बन्दी छोर । रागरोष द्वै बन्धन तोर ।। रजमति तजि शिवति-यसो मिले । नेमिनाथ बन्दो सुखमिले ।।२२।। दैत्य कियो उपसर्ग अपार । ध्यान देखि आयो फनिधार ।। गयो कमठ शठ मुखकर श्याम । नमौं मेरुसम पारस-स्वाम ।।२३।। भवसागरतैं जीव अपार । धरमपोत में धरे निहार ।। डूबत काढे दया विचार । वर्द्धमान बंदौं बहुबार ।।२४।।

दोहा—चौबीसौं पदकमलजुग, बंदौं मनवचकाय ।
'द्यानत' पढ़ै सुनै सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरी चाह

मैं देव नित अरहंत चाहूं, सिद्ध का सुमिरन करो।
मैं सूरि गुरु मुनि तीन पद ये साधुपद हिरदय धरौं॥
मैं धर्म करुणामय जु चाहूं, जहां हिंसा रंचना।
मैं शास्त्र ज्ञान विराग चाहूँ, जासु में परपंच ना॥१॥

चौबीस श्रीजिनदेव चाहूं- और देव न मन बसै।
जिन बीस क्षेत्रविदेह चाहूं, वं दते पातक नसै।
गिरनार शिखर सम्मेद चाहूँ, चम्पापुर पावांपुरी।
कैलाश श्रीजिनधाम चाहूँ भजत भाजे भ्रमजुरी॥२॥

नवतत्वका सरधान चाहूं और तत्व न मन धरौं।
षट् द्रव्य गुण परजाय चाहूँ ठीक तासों भय हरों॥
पूजा परम जिनराज चाहूं और देव न हूँ सदा।
तिहुँकाल की मैं जाप चाहूँ, पाप नहिं लागै कदा॥३॥

सम्यक्त्व दर्शन ज्ञान चारित, सदा चाहूँ भावसो।
दशलक्षणी मैं धर्म चाहूँ, महा हरख उछावसों॥
सोलह जु कारण दुख निवारण, सदा चाहूँ प्रीतिसों।
मैं चित्त अठाई पर्व चाहूँ महामंगल रीतिसों॥४॥

मैं वेद चारों सदा चाहूँ, आदि अन्त निवाहसों।
पाये धरम के चार चाहूँ अधिक चित्त उछाहसों॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं दान चारों सदा चाहूँ भवनवशि लाहो लहूँ ।
आराधना मैं चारि चाहूँ, अन्त में ये ही गहूं ॥५॥
भावना बारह जु भाऊँ, भाव निरमल होत हैं ।
मैं व्रत जु बारह सदा चाहूँ त्याग भाव उद्योत है ॥
प्रतिमा दिगम्बर सदा चाहूँ ध्यान आसन सोहना ।
वसुकर्म तै मैं छुटा चाहूँ शिव लहूँ, जहं मोह ना ॥६॥
मैं साधुजन को संग चाहूं प्रीति तिनहासो करों ।
मैं पर्व के उपवास चाहूँ अवर आरंभ परिहरो ॥
इस दुःख पंत्तमकाल माहीं कुल शरावक मैं लह्यो ।
अरु महाव्रत धरि सको नाहीं, निबल तन मैंने गह्यो ॥७॥
आराधना उत्तम सदा, चाहूँ सुनो जिनरायजो ।
तुम कृपानाथ अनाथ द्यानत दया करना न्यायजी ॥
वसुकर्मनाश विकाश ज्ञानप्रकाश मोको दीजिये ।
करि सुगतिगमन समाधिमरण सुभक्ति चरणनदीजिये ।८।

मंगलाचरण ।

चिदानंद चैतन्यके, गुण अनंत उर धार ।
भाषा पद्मपुराणको, भाषूं श्रुति अनुसार ॥१॥
पंच परमपद पद प्रणमि, प्रणमि जिनेश्वरवानि ।
नमि जिंनप्रतिमा जिनभवन, जिनमारग उर आनि ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋषभ अजित संभव प्रणमि, नमि अभिनन्दन देव ।
सुमति जु पद्म सुपार्श्व नमि, करि चन्द्राप्रभसेव ॥३॥
पुष्पदंत शीतल प्रणमि, श्रीश्रेयांसको ध्याय ।
वासुपूज्य विमलेश नमि, नमि अनत के पाय ॥४॥
धर्म शांति जिन कुन्थु नमि, अर मल्लि यश गाय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि नमि, नमि पारस के पाय ॥५॥
वर्द्धमान वरवीर नमि, गुरुगौतम मुनि बंद ।
सकल जिनंद मुनिंद, नमि, जैनधर्म अभिनन्द ॥६॥
निर्वाणादि अतीत जिन, नमो नाथ चौबीस ।
महापद्म परमुख प्रभू, चौवीसों जगदीश ॥७॥
होंगे तिनको वंदिकर, द्वादशांग उरलाय ।
सीमंधर आदिक नमूं, दश दूने जिनराय ॥८॥
विहरमान भगवान ये, क्षेत्र विदेहमझारि ।
पूजैं जिनको सुरपती, नागपती निरधार ॥९॥
द्वीप अढाईकेविषै, भये जिनेन्द्र अनंत ।
होंगे केवलज्ञानमय, नाथ अनंतानंत ॥१०॥
सबको बंदन कर सदा, गणधर मुनिवर ध्याय ।
केवलि श्रुतकेवलि, नमूं आचारज उवझाय ॥११॥
बंदूं शुद्ध स्वभावको, धर सिद्धनको ध्याय ।
संतनको परणाम कर, नमि दृग व्रत निज ज्ञान ॥१२॥
शिवपुरदायक सुगुरु नमि, सिद्धलोक यश गाय ।
केवल दर्शन ज्ञानको, पूजूं मन वच काय ॥१३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यथाख्यात चारित्र अरु, क्षपकश्रेणि गुण ध्याय ।
धर्म शुक्ल निज ध्यानको, बंदूं भाव लगाय ॥१४॥
उपशम वेदक क्षायिका, सम्यग्दर्शन सार ।
कर वंदन समभाव को, पूजूं पंचाचार ॥१५॥
मूलोत्तर गुण मुनिनके, पंच महाव्रत आदि ।
पंच समिति अरु गुप्तित्रय, ये शिवमूल अनादि ॥१६॥
अनित्य आदिक भावना, सेऊं चित्त लगाय ।
अध्यातम आगन नमूं शांतिभाव उरलाय ॥१७॥
अनुप्रेक्षा द्वादश महा, चितवैं श्रीजिनराय ।
तिनकी थुति करि भावसों, षोडश कारण ध्याय ॥१८॥
दशलक्षणमय धर्मकी, धर सरधा मनमांहि ।
जीवदया सत् शील तप, जिनकर पाप नसांहि ॥१९॥
तीर्थंकर भगवानके, पूजूं पांच कल्याण ।
अबर केवलिनको नमूं, केवल अरु निर्वाण ॥२०॥
श्रीजिनतीरथक्षेत्र नमि, प्रणमि उभयविध धर्म ।
थुतिकर चउविध संघकी, तजकर मिथ्या धर्म ॥२१॥
वंदूं गौतम स्वामिके, चरण कमल सुखदाय ।
वंदूं धर्म मुनींद्रको, जंबू केवलि ध्याय ॥२२॥
भद्रबाहुको कर प्रणति, भद्र भाव उरलाय ।
बंदि समाधि सुतंत्रको ज्ञानतणे गुणगाय ॥२३॥
महाधवल अरु जयधवल, तथा धवल जिनग्रंथ ।
वंदूं तन मन वचन कर, जे शिवपुरके पंथ ॥२४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षटपाहुड नाटक जु त्रय, तत्त्वारथसूत्रादि ।
तिनको वंदूं भाव कर, हरैं दोष रागादि ॥२५॥
गोमटसार अगाध श्रुत, लब्धिसार जगसार ।
क्षपणसार भवतार है, योगसार रसधार ॥२६॥
ज्ञानार्णव है ज्ञानमय, नमूं ध्यानका मूल ।
पद्मनंदिपच्चीसिका, करैं कर्म उन्मूल ॥२७॥
यत्याचार विचार नमि, नमूं श्रावकाचार ।
द्रव्यसंग्रह नयचक्र फुनि, नमूं शांति रसधार ॥२८॥
आदिपुराणादिक सबै, जैन पुराण बखान ।
वंदू मन वच काय कर, दायक पद निर्वान ॥२९॥
तत्त्वसार आराधना,-सार महारस धार ।
परमातमपरकाशको, पूजूं बारंबार ॥३०॥
बंदु विशाखाचार्यवर, अनुभव के गुण गाय ।
कुन्दकुन्दपद धोक दे, कहूँ कथा सुखदाय ॥३१॥
कुमुदचंद अकलंक नमि, नेमिचंद्र गुण ध्याय ।
पात्रकेशरीको प्रणमि, समतभद्र यशगाय ॥३२॥
अमृतचंद्र यतिचंद्रको, उमास्वामिको बंद ।
पूज्यपादको कर प्रणति पूजादिक अभिनंद ॥३३॥
ब्रह्मचर्यव्रत बंदिकर, दानादिक उरलाय ।
श्रीयोगीन्द्रमुनींद्रको, वंदू मन वच काय ॥३४॥
वंदू मुनि शुभचंद्रको, देवसेन को पूज ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करि वदन जिनसेनको, जिनके सम नहिं दूज ॥३५॥
पद्मपुराणनिधानको, हाथ जोडि सिरनाय।
ताकी भाषा वचनिका, भाखूं सब सुखदाय ॥३६॥
पद्मनाम बलभद्रका, रामचंद्र बलभद्र।
भये आठवें धार नर, धारक श्रीजिनमुद्र ॥३७॥
तापीछे मुनिसुव्रतके, प्रगटे अतिगुणधाम।
सुरनरवंदित धर्ममय, दशरथके सुत राम ॥३८॥
शिवगामी नामी महा, ज्ञानी करुणावंत।
न्यायवंत बलवंत अति, कर्महरण जयवंत ॥३९॥
जिनके लक्ष्मण वीर हरि, महाबलि गुणवंत।
भ्रातभक्त अनुरक्त अति, जैनधर्म यशवंत ॥४०॥
चंद्र सूर्यसे वीर ये, हरैं सदा पर पीर।
कथा तिनों की शुभ महा, भाषी गौतम धीर ॥४१॥
सुनी सबैं श्रेणिक नृपति, धर सरधा मनमांहि।
सो भाषी रविषेणने, यामैं संशय नांहि ॥४२॥
महा सती सिता सुभा, रामचंद्रकी नारी।
भरत शत्रुघन अनुज हैं, यही बात उरधारि ॥४३॥
तदभव शिवगामी भरत, अरु लवअंकुश पूत।
मुक्त भये मुनिवरत धरि, नमैं तिन्है पुरहूत ॥४४॥
रामचंद्रको करि प्रणति, नमि रविषेण ऋषीश।
रामकथा भाखूं यथा, नमि जिनश्रुति मुनिईश ॥४५॥

5265

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi